ओ३म्

सामगानम्

(सामवेदसंहिताया गानप्रकारम्)

(विक्रमसंवत् १५३१=सन् १४७४ की मूलप्रति के आधार पर प्रकाशित)

सम्पादक

विरजानन्द दैवकरणि

(संस्कृतव्याकरण-दर्शन-इतिहासाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति)

निदेशक

हरयाणाप्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय

गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

प्रकाशक

प्राचीन भारतीय इतिहास शोध परिषद्

११९, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-४९

शुभाशंसा

प्रस्तुत ग्रन्थ में सामवेद की कौथुम शाखा का साम-पाठ दिया गया है। सामान्यत: सामवेद के संस्करणों में ऋक्पाठ ही उपलब्ध होता है। सामगान में स्तोभ आदि से अलंकृत, स्वरों से ध्वनि के शिखरों को छूते हुए, पावन मन्त्रों में अनुपम शक्ति-संचार होता है। आज से १३३ वर्ष पूर्व सत्यव्रत सामश्रमी ने कलकत्ता से सामपाठ प्रथम वार प्रकाशित किया था। यह कलान्तर में पत्र जीर्ण होने के कारण अप्रयोज्य होता गया, और अप्राप्य भी। १९४२ और १९४५ में श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी ने औंध (महाराष्ट्र) से इसका अक्षरयोजन करके नया संस्करण निकाला। आधी शताब्दी हो गई और आज सामवेद का सामगान रूप अतिदुर्लभ हो गया है।

श्री विरजानन्द दैवकरणि जी ने इस ऐतिहासिक न्यूनता की पूर्ति करने के लिए प्रस्तुत सामगान सम्पादित और प्रकाशित किया है। आप एक भव्य आचार्य-परम्परा के शिरोमणि हैं। परमपूज्य परमहंस स्वामी ओ३मानन्द जी सरस्वती से व्याकरण, दर्शन, इतिहास और वैदिक वाङ्मय की शिक्षा और दीक्षा पाकर, आप उनकी विलक्षण सरस्वती-साधना को आगे बढ़ा रहे हैं। उसी की अनुवृत्ति में सिद्धान्त-वाचस्पति श्री विरजानन्द जी का यह वैज्ञानिक संस्करण, वैदिक अनुसन्धान और गायन के लिए अनोखी देन है। पहिली बार आपने मूल हस्तलिखित ग्रन्थ से साम-पाठ प्रस्तुत किया है। हस्तलिपि ५३० वर्ष पुरानी है (सन् १४७४) और इसमें शुद्धता का ऊँचा स्तर है। इस समय वैदिक परम्परा पूर्णत: जीवित थी और इसके ज्ञान से आलोकित यह हस्तलिपि स्वयं में राष्ट्रीय धरोहर है। पहली वार एक ऋचा के अनेक गान-रूप प्रस्तुत किए गये हैं—जैसेकि प्रथम मन्त्र **''अग्न आ याहि...''** की तीन गायन विधाएँ दी गई हैं। कई बार एक ही मन्त्र के १६ ढंग से गायन के रूप लिखे गये हैं।

श्री दैवकरणि जी ने मूल हस्तलिपि को पूर्णत: यथावत् मुद्रित किया है। हस्तलिपि की छोटी-से-छोटी विशेषता सुरक्षित रखी है। यह असाध्य कार्य उन्होंने संगणक (कम्प्यूटर) पर स्वयं करवाया है—घोर अध्यवसाय, सूक्ष्मेक्षिका और गहन निष्ठा-भक्ति का परिणाम है। मुद्रण इतना स्पष्ट है, अक्षरों का परिमाण इतना नयन-सुख है, और पृष्ठ-विन्यास इतना आकर्षक है कि सामगान का अध्ययन और सप्तस्वरीय गायन अब सुविधा से हो सकेगा। इस वैज्ञानिक संस्करण से सामपाठी विद्यार्थियों को समस्त सामवेद सुलभ हो जाएगा। सामवेद भारतीय संगीत का सर्वप्राचीन ग्रन्थ है, जिसमें गायन के लिए स्वरों का विधिवत् संकेत है, और उसमें जोड़े जानेवाले स्तोभ भी पूर्णत: निर्दिष्ट हैं। भारतीय संगीत के इतिहास के लिए भी यह संस्करण-रत्न विशिष्ट महत्त्व का है।

श्री दैवकरणि जी ने सामगान के इस शुद्ध, वैज्ञानिक और सुस्पष्ट मुद्रित, सम्पादन से वैदिक साहित्य के संरक्षण और संवर्धन में ऐतिहासिक योगदान दिया है। अपने गुरुवर्य स्वामी ओ३मानन्द जी की त्यागमयी परम्परा को अक्षुण्ण ही नहीं रखा, अपितु संवर्धित किया है। भारतीय संस्कृति के अध्ययन-परायण, अन्वेषक, मननशील विद्वानों के लिए यह ग्रन्थ चिन्तामणि के समान अक्षय जाज्वल्यमान ज्योति-स्तम्भ है।

लोकेश चन्द्र

पूर्व-सासंद १९७४-१९८६
अध्यक्ष,
सरस्वतीविहार, जे २१-२२, हौजखास,
नई दिल्ली - ११० ०१६

प्रकाशकीय

महर्षि दयानन्द के संस्कार विधि आदि ग्रंथों में सामवेदोक्त वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्यगान की चर्चा पढ़ते रहे, लेकिन इससे सम्बन्धित कहीं भी कोई विस्तृत जानकारी ग्रंथ के रूप में प्राप्त नहीं हो सकी। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के संस्थापक एवं मेरे पूज्य पिता श्री स्वर्गीय दीपचन्द आर्य जी ऋषिकृत ग्रंथों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए सदैव तत्पर एवं प्रयासरत रहते थे। एक दिन दैवयोग से सामगान की कागज पर हस्तलिखित अति प्राचीन प्रति दृष्टिगत हो ही गई। अतीव उत्साह के साथ प्रयास करके वह दुर्लभ प्रति हस्तगत की गई। इस प्रति में पृष्ठ आगे पीछे लगे हुए थे और एक तरफ से पढ़ सकने की स्थिति में नहीं थी। इसी बीच एक दिन सढ़ौरा वाले डॉ० सुरेन्द्र जी आयुर्वेदाचार्य से भेंट हो गई। मैंने उनसे उस प्रति का जिक्र किया तो उन्होंने उसको देखने की तीव्र इच्छा व्यक्त की। अन्ततः मेरी प्रार्थना पर उन्होंने पूरे मनोयोग से अत्यन्त परिश्रम करके उस दुर्लभ प्रति को सुव्यवस्थित किया।

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का उद्देश्य ही आर्ष-ग्रंथों का प्रचार-प्रसार करना है, ऐसा स्मरण दिलाते हुए श्री डॉ० सुरेन्द्रकुमार द्वारा इसे प्रकाशित करने की प्रेरणा एवं ट्रस्ट के यशस्वी प्रधान श्री आचार्य राजवीर जी शास्त्री के आशीर्वाद से सामगान की यह अलभ्य पुस्तक पाठकों को सुलभ हो सकी है। इस ग्रंथ के प्रकाशन में मेरे अग्रज भ्राता श्री विरजानन्द दैवकरणि ने यदि सहयोग न किया होता तो यह महत्त्वपूर्ण कार्य न जाने कब हो पाता। एतदर्थ मैं भ्राता श्री दैवकरणि जी का आभार व्यक्त करता हूँ। मेरी पूजनीया माता श्रीमती बुद्धिमती जी आर्या ट्रस्ट के कार्यों में मुझे हमेशा प्रेरणा करके मेरा उत्साहवर्धन करती रहती है। इस महती-कृपा के लिए मैं उन मातृचरणों को नमन करता हुआ इस अमूल्य कृति को पाठकों की सेवा में समर्पित करता हूं।

महर्षि-अनुचर

धर्मपाल आर्य

मंत्री-आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

४५५, खारी बावली, दिल्ली-६

दिल्ली

दिनांक २८ अप्रैल, २००४

ओ३म्

प्राक्कथन

सर्वज्ञाननिधान परमकारुणिक परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानवों के उत्कर्ष हेतु अपने ज्ञान का एकांशमात्र वेदरूप में देकर मनुष्यमात्र पर अत्यन्त कृपा की है। यह सारा ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध है। चारों वेदों में पढ़े हुए पुरुषसूक्त में कहा है कि ये वेद भगवान् की ओर से अवतरित हुए हैं। जैसे—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाᳬसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

—यजुर्वेद ३१.७

यस्मादृचो अपातक्षन्यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

—अथर्ववेद १०.७.२०

इन चारों वेदों के प्रमुख विषय निम्न प्रकार से हैं—

ऋग्वेद=ज्ञानकाण्ड, यजुर्वेद=कर्मकाण्ड, सामवेद=उपासनाकाण्ड, अथर्ववेद=विज्ञानकाण्ड

परमात्मा की ओर से आदित्य (सूर्य) ऋषि के हृदय में प्रगट सामवेद में परमेश्वर कैसा है, उसकी उपासना कैसे की जाये, उसकी उपासना करने से क्या लाभ हैं इत्यादि का वर्णन है।

सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद है। इसमें गानविद्या का वर्णन करते हुए सामगान के कितने भेद हैं, उसके गाने की पद्धति क्या है इत्यादि का विस्तार से कथन किया गया है।

गीतिषु सामाख्या —जैमिनीय मीमांसादर्शन २.१.३६

जिन मन्त्रों का गान किया जाता है उन गीतिविशिष्ट मन्त्रों को साम कहते हैं।

सहस्त्रवर्त्मा सामवेदः —महाभाष्य (१.१.१)। सामवेद की एक सहस्त्र शाखायें हैं।

सामगान करने में प्राण की=दीर्घप्राण की आवश्यकता होती है। इसीलिए यजुर्वेद में कहा है—**साम प्राणं प्रपद्ये** (यजुर्वेद ३६.१)।

उद्गातेव शकुने साम गायसि (ऋग्वेद २.८.१२.२)

सामगान करनेवाला उद्गाता कहलाता है।

वेदानां सामवेदोऽस्मि—वेदों में सामवेद की सर्वाधिक गरिमा है, यह कहकर योगिराज श्री कृष्ण ने भी गीता में सामवेद की महत्ता स्वीकार की है।

उत्तर ऋक्पद १८.२ में लिखा है—**सामगः सर्वत्र देवगुरुः**—सामगान करनेवाला सर्वत्र देवगुरु होता है।

पुराकाल में ऋषियों ने सामवेद के मूल मन्त्रों के आधार पर अनेक प्रकार के गानों का निर्माण किया था। ये गान ग्रामे गेय (वेय प्रकृति) गान और आरण्यक गान नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका प्रारम्भ महर्षि वामदेव ने किया था, इसलिए ये गान वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्यगान

नाम से भी प्रसिद्ध हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में लिखा है—मंगलकार्य अर्थात् गर्भाधानादि संन्यास संस्कारपर्यन्त पूर्वोक्त और निम्नलिखित सामवेदोक्त वामदेव्यगान अवश्य करें। इसी प्रकार पूरे संस्कारविधि ग्रन्थ में १२ वार यह लिखा है कि—संस्कारों की समाप्ति पर सामवेद के वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्य का गान करना चाहिए। इस गान का निदर्शन ग्रन्थान्त में परिशिष्ट ३ में देखिए।

सामवेद के पढ़ने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के वेदारम्भ प्रकरण में लिखा है—सामब्राह्मण और पदादि तथा गानसहित सामवेद को दो वर्ष...के भीतर पढ़ें.....पुनः सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद, जिसमें नारदसंहितादि ग्रन्थ हैं, उनको पढ़के स्वर, राग, रागिणी, समय, वादित्र, ग्राम, ताल, मूर्च्छना आदि का अभ्यास यथावत् तीन वर्ष के भीतर करें।

सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

...गान्धर्ववेद कि जिसको गानविद्या कहते हैं, उसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि को यथावत् सीखें, परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्र-वादनपूर्वक सीखें और नारदसंहिता आदि जो-जो आर्षग्रन्थ हैं, उनको पढ़ें, परन्तु भड़ुवे, वेश्या और विषयासक्तिकारक वैरागियों के गर्दभशब्दवत् व्यर्थ आलाप कभी न करें।

इस प्रकार सामवेद और उसके ब्राह्मण ग्रन्थसहित पाँच वर्षों में सामगान सीखने का विधान किया है।

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है—**का साम्नो गतिरिति ? स्वर इति होवाच** (१.८.४)

शिलक शालावत्य ने चैकितायन दाल्भ्य से पूछा—साम की गति क्या है ? दाल्भ्य ने कहा—स्वर=षड्जादि सातस्वर। स्वर की गति प्राण है, प्राण की गति अन्न है, अन्न के विना प्राण बलवान् नहीं होता, प्राण की न्यूनता में स्वर नहीं निकलता, अतः सामगान की गति=आश्रय=आधार प्राण है। प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय ये दस प्राण हैं।

बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा है—

तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद भवति हास्य स्वं तस्य वै स्वर एव स्वम् (१.३.२५)

निश्चय से जो उस इस साम के स्व=सामत्व को जानता है उस वेत्ता का वही सामत्व है, (मधुर कण्ठ) स्वर ही साम का सामत्व है।

छान्दोग्योपनिषद् के द्वितीय प्रपाठक में अनेकविध सामोपासना करने की चर्चा मिलती है। यथा—**समस्तस्य खलु साम्न उपासनं साधु.....**। सम्पूर्ण सामवेद के तत्त्व का विचारना सामोपासना कहाती है। साम पाँच प्रकार का है, तीन उद्गाताओं द्वारा गाया जानेवाला साम **हिंकार,** प्रस्तोता द्वारा गेय गान **प्रस्ताव,** एक उद्गाता द्वारा बोला गया साम **उद्गीथ,** प्रतिहर्त्ता द्वारा गेय साम **प्रतिहार** और सब मिलकर जिस सामगान को गायें, वह **निधन** कहाता है। इसी प्रकार वृष्टि, जल, ऋतु, पशु, प्राण, वाक्, आदित्य, मृत्युजय, प्राण में गायत्र, अग्नि में रथन्तर, मिथुन में वामदेव्य, आदित्य में बृहत्, पर्जन्य में वैरूप, ऋतु में वैराज, पृथिव्यादि में शक्वरी, पशुओं में रेवती, अंगों में यज्ञायज्ञिय, अग्न्यादि देवों में राजन, त्रयीविद्या में पाँच और सात प्रकार की सामोपासना का विधान है। सामगान के विनर्दादि गुण और अग्नि, प्रजापति, सोम, वायु, इन्द्र,

ओ३म्

प्राक्कथन

सर्वज्ञाननिधान परमकारुणिक परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानवों के उत्कर्ष हेतु अपने ज्ञान का एकांशमात्र वेदरूप में देकर मनुष्यमात्र पर अत्यन्त कृपा की है। यह सारा ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध है। चारों वेदों में पढ़े हुए पुरुषसूक्त में कहा है कि ये वेद भगवान् की ओर से अवतरित हुए हैं। जैसे—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

—यजुर्वेद ३१.७

यस्मादृचो अपातक्षन्यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

—अथर्ववेद १०.७.२०

इन चारों वेदों के प्रमुख विषय निम्न प्रकार से हैं—

ऋग्वेद=ज्ञानकाण्ड, यजुर्वेद=कर्मकाण्ड, सामवेद=उपासनाकाण्ड, अथर्ववेद=विज्ञानकाण्ड

परमात्मा की ओर से आदित्य (सूर्य) ऋषि के हृदय में प्रगट सामवेद में परमेश्वर कैसा है, उसकी उपासना कैसे की जाये, उसकी उपासना करने से क्या लाभ हैं इत्यादि का वर्णन है।

सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद है। इसमें गानविद्या का वर्णन करते हुए सामगान के कितने भेद हैं, उसके गाने की पद्धति क्या है इत्यादि का विस्तार से कथन किया गया है।

गीतिषु सामाख्या —जैमिनीय मीमांसादर्शन २.१.३६

जिन मन्त्रों का गान किया जाता है उन गीतिविशिष्ट मन्त्रों को साम कहते हैं।

सहस्त्रवर्त्मा सामवेदः —महाभाष्य (१.१.१)। सामवेद की एक सहस्त्र शाखायें हैं।

सामगान करने में प्राण की=दीर्घप्राण की आवश्यकता होती है। इसीलिए यजुर्वेद में कहा है—**साम प्राणं प्रपद्ये** (यजुर्वेद ३६.१)।

उद्गातेव शकुने साम गायसि (ऋग्वेद २.८.१२.२)

सामगान करनेवाला उद्गाता कहलाता है।

वेदानां सामवेदोऽस्मि—वेदों में सामवेद की सर्वाधिक गरिमा है, यह कहकर योगिराज श्री कृष्ण ने भी गीता में सामवेद की महत्ता स्वीकार की है।

उत्तर ऋक्पद १८.२ में लिखा है—**सामगः सर्वत्र देवगुरुः**—सामगान करनेवाला सर्वत्र देवगुरु होता है।

पुराकाल में ऋषियों ने सामवेद के मूल मन्त्रों के आधार पर अनेक प्रकार के गानों का निर्माण किया था। ये गान ग्रामे गेय (वेय प्रकृति) गान और आरण्यक गान नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका प्रारम्भ महर्षि वामदेव ने किया था, इसलिए ये गान वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्यगान

नाम से भी प्रसिद्ध हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में लिखा है—मंगलकार्य अर्थात् गर्भाधानादि संन्यास संस्कारपर्यन्त पूर्वोक्त और निम्नलिखित सामवेदोक्त वामदेव्यगान अवश्य करें। इसी प्रकार पूरे संस्कारविधि ग्रन्थ में १२ वार यह लिखा है कि—संस्कारों की समाप्ति पर सामवेद के वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्य का गान करना चाहिए। इस गान का निदर्शन ग्रन्थान्त में परिशिष्ट ३ में देखिए।

सामवेद के पढ़ने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के वेदारम्भ प्रकरण में लिखा है—सामब्राह्मण और पदादि तथा गानसहित सामवेद को दो वर्ष...के भीतर पढ़ें.....पुनः सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद, जिसमें नारदसंहितादि ग्रन्थ हैं, उनको पढ़के स्वर, राग, रागिणी, समय, वादित्र, ग्राम, ताल, मूर्च्छना आदि का अभ्यास यथावत् तीन वर्ष के भीतर करें।

सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

...गान्धर्ववेद कि जिसको गानविद्या कहते हैं, उसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि को यथावत् सीखें, परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्र-वादनपूर्वक सीखें और नारदसंहिता आदि जो-जो आर्षग्रन्थ हैं, उनको पढ़ें, परन्तु भड़ुवे, वेश्या और विषयासक्तिकारक वैरागियों के गर्दभशब्दवत् व्यर्थ आलाप कभी न करें।

इस प्रकार सामवेद और उसके ब्राह्मण ग्रन्थसहित पाँच वर्षों में सामगान सीखने का विधान किया है।

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है—**का साम्नो गतिरिति ? स्वर इति होवाच** (१.८.४)

शिलक शालावत्य ने चैकितायन दाल्भ्य से पूछा—साम की गति क्या है ? दाल्भ्य ने कहा—स्वर=षड्जादि सातस्वर। स्वर की गति प्राण है, प्राण की गति अन्न है, अन्न के विना प्राण बलवान् नहीं होता, प्राण की न्यूनता में स्वर नहीं निकलता, अतः सामगान की गति=आश्रय=आधार प्राण है। प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय ये दस प्राण हैं।

बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा है—

तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद भवति हास्य स्वं तस्य वै स्वर एव स्वम् (१.३.२५)

निश्चय से जो उस इस साम के स्व=सामत्व को जानता है उस वेत्ता का वही सामत्व है, (मधुर कण्ठ) स्वर ही साम का सामत्व है।

छान्दोग्योपनिषद् के द्वितीय प्रपाठक में अनेकविध सामोपासना करने की चर्चा मिलती है। यथा—**समस्तस्य खलु साम्न उपासनं साधु.....**। सम्पूर्ण सामवेद के तत्त्व का विचारना सामोपासना कहाती है। साम पाँच प्रकार का है, तीन उद्गाताओं द्वारा गाया जानेवाला साम **हिंकार,** प्रस्तोता द्वारा गेय गान **प्रस्ताव,** एक उद्गाता द्वारा बोला गया साम **उद्गीथ,** प्रतिहर्त्ता द्वारा गेय साम **प्रतिहार** और सब मिलकर जिस सामगान को गायें, वह **निधन** कहाता है। इसी प्रकार वृष्टि, जल, ऋतु, पशु, प्राण, वाक्, आदित्य, मृत्युजय, प्राण में गायत्र, अग्नि में रथन्तर, मिथुन में वामदेव्य, आदित्य में बृहत्, पर्जन्य में वैरूप, ऋतु में वैराज, पृथिव्यादि में शक्वरी, पशुओं में रेवती, अंगों में यज्ञायज्ञिय, अग्न्यादि देवों में राजन, त्रयीविद्या में पाँच और सात प्रकार की सामोपासना का विधान है। सामगान के विनर्दादि गुण और अग्नि, प्रजापति, सोम, वायु, इन्द्र,

बृहस्पति और वरुण इन आचार्यों द्वारा गाये सामगान और इनके कर्त्तव्यादि का वर्णन इस उपनिषद् में प्राप्त होता है। इससे ज्ञात होता है कि पुराकाल में सामवेद गान के सहस्त्रों भेदों का प्रचलन था। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र एक-एक सहस्र प्रकार से गाया जाता था।

सामविधान ब्राह्मण में लिखा है—**स्वरो वाव साम्नः स्वम्** (१.१.३)

निश्चय से साम का स्वत्व=सामत्व स्वर ही है।

स्वर क्या है ? सामवेद के गायन समय में सात स्वर प्रयुक्त होते हैं—**क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र** और **अतिस्वार्य।** उच्चारण में ये स्वर क्रमशः नीची-नीची आवाज में होते जाते हैं। **ऋक्प्रातिशाख्य** (१३.४२) में इन स्वरों को **यम** नाम से अभिहित किया गया है। इसी प्रकार **तैत्तिरीयप्रातिशाख्य** (२३.११-१२) में भी इन सात स्वरों को **यम** कहा है।

उपर्युक्त सात स्वरों में पाँच स्वरों के द्वारा अधिकतर साम गाये जाते हैं। छह स्वरों से गाये जानेवाले साम स्वल्प हैं तथा सातों स्वरों से गान योग्य साम अत्यल्प ही हैं।

इन्हीं सात स्वरों के अवान्तर स्वर भी होते हैं। जैसे—**प्रत्युत्क्रम, अतिक्रम, कर्षण, स्वार, विनत, प्रणत, उत्स्वरित, अभिगीत।** इन सात स्वरों में प्रत्येक स्वर की पाँच-पाँच श्रुतियाँ होती हैं। जैसे—**मृदु, मध्या, आयता, दीप्ता** और **करुणा।**

इन्हीं के भेदोपभेद भी होते हैं। जैसे—

ऊता, प्रह्वयसा, त्सिबा, वारा, मही।

इनका विशद व्याख्यान नारदीय शिक्षा और लोमशिनी शिक्षा आदि ग्रन्थों में किया है, वहाँ से जान लेना चाहिए।

अन्य तीन वेदों की अपेक्षा सामवेद में उदात्तादि स्वरों का अंकन सीधी=(।) और लेटी हुई=(—) रेखाओं के द्वारा न होकर एकादि संख्याओं के द्वारा किया जाता है। जैसे—**उदात्त का चिह्न**=१, **स्वरित का चिह्न**=२, **अनुदात्त का चिह्न**=३। पाणिनीय अष्टाध्यायी में इनके लक्षण इस प्रकार दिए हैं—**उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः।** (१.२.२९-३१)। **उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः**—अष्टाध्यायी १.२.४०। **सन्नतर** और **प्रचय** ये दो स्वर इनसे अतिरिक्त हैं।

सामवेद के मन्त्रों पर १.२.३ से अतिरिक्त २ क, उ, र ये चिह्न भी मिलते हैं। इनका अभिप्राय है—

जहाँ दो उदात्त अक्षर एकसाथ आ जायें वहाँ प्रथम उदात्त अक्षर पर '१' लिखते हैं। दूसरा उदात्त अक्षर विना चिह्नवाला ही रहता है। उससे परे वाले स्वरित पर '२ र' लिखा रहता है। अनुदात्त से परे वाले स्वरित को भी '२ र' से चिह्नित करते हैं। इससे पूर्व के अनुदात्त अक्षर पर '३ क' यह संकेत होता है। यदि दो उदात्त अक्षर साथ-साथ हों और उनसे परे अनुदात्त अक्षर हो तो प्रथम उदात्त अक्षर पर '२ उ' चिह्न मिलता है। दूसरा उदात्त अक्षर विना चिह्न के रहता है।

इस विषय का भी विस्तृत वर्णन नारदीय शिक्षा में देखा जा सकता है।

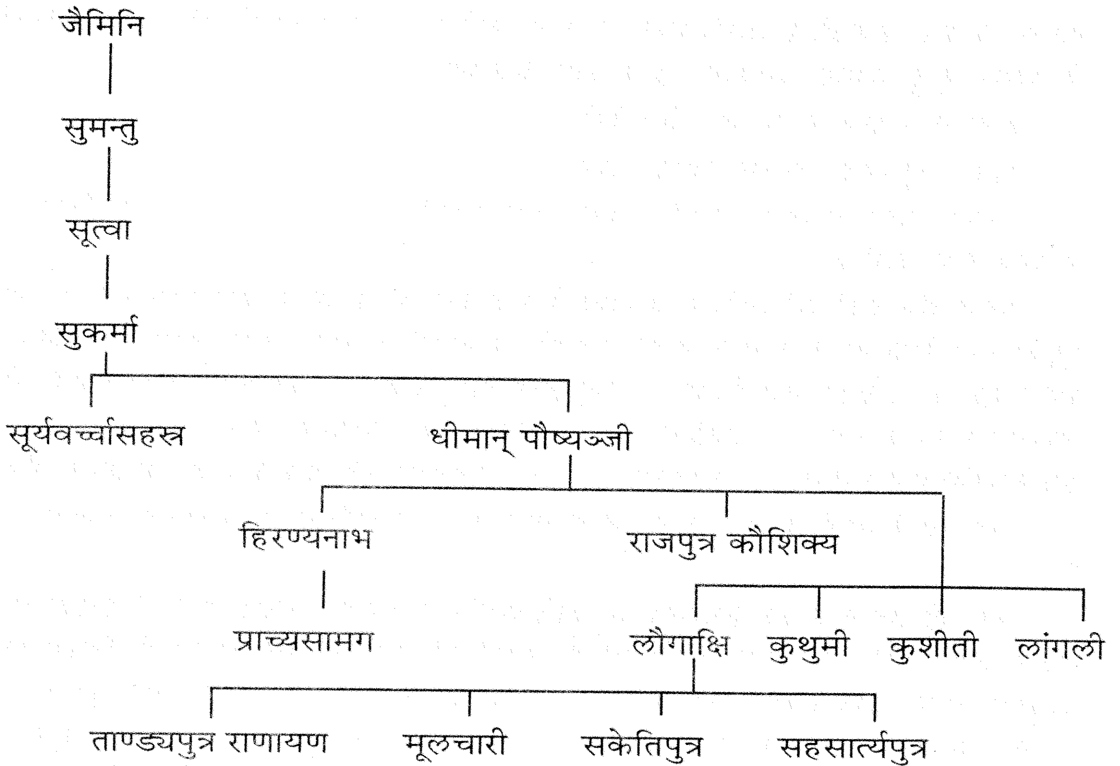
त्रिमात्रं सामसु—(ऋक्तन्त्रम् २.४.९) सामवेद के उच्चारण में अक्षरों को तीन मात्रा के समान लम्बित करना चाहिए। हाथ की नाड़ी का एक स्पन्दन एक मात्रा के बराबर होता है, अतः नाड़ी के तीन वार स्पन्दन करने के समान साम मन्त्रों के उच्चारण में समय लगाना चाहिए।

वेदमन्त्रों के गायन में विभिन्न छंदों के अनुसार सात स्वर और भी होते हैं। जैसे—षड्ज,

ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। इन्हीं सात स्वरों के आदिम अक्षरों को लेकर लोक में **'सा, रे, गा, मा, पा, धा, नि'** ये सात स्वर प्रसिद्धि पाए हुए हैं। ये स्वर क्रमशः गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती छन्दों के गान में प्रयुक्त होते हैं। इन छन्दों के सहस्त्रों भेदोपभेद महर्षि पिंगलाचार्यकृत छन्दः शास्त्र से जान लेने चाहिएँ। छन्दः शास्त्र के मेरे द्वारा किए गए हिन्दी अनुवाद में इन सभी भेदों का परिशिष्ट में अतिविस्तृत वर्णन दिया है। इन भेदोपभेदों को यदि गणित की दृष्टि से लिखें तो ३३ अंकों की लम्बाई में ये भेद लिखे जायेंगे।

सामवेदसंहिता के तीन संस्करण इस समय प्राप्त हैं। कौथुमी शाखा गुजरात में, जैमिनीय शाखा कर्णाटक में तथा राणायणीय शाखा महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है। राणायणीय शाखा के भी नौ प्रकार मिलते हैं। जैसे—राणायणीय, शाक्षयणीय, सत्यमुद्गल, मुद्गल, भरास्वन्व, याज्ञन, कौथुम, गौतम और जैमिनीय।

सामवेद की शाखा परम्परा अति प्राचीन है। यह गुरु परम्परा प्राचीन ग्रन्थों में यत्र-तत्र उपलब्ध होती है। जैसे—



इस राणायण ऋषि की राणायणीय संहिता में पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक दो विभाग हैं। पूर्वार्चिक में ग्रामगेय गान और आरण्य गान हैं। उत्तरार्चिक में ऊहगान और ऊह्यगान हैं।

प्रस्तुत सामगानग्रन्थ की प्राप्ति

सन् १९९७ में मैं आर्यसमाज नयाबास (खारीबावली) दिल्ली में ठहरा हुआ था। वहाँ एक सज्जन श्री अशोककुमार वर्मा ३०/१२९ नारियल बाजार, मेस्टर्न रोड, कानपुर (उत्तर प्रदेश) वाले भी रुके हुए थे। वार्त्तालाप प्रसंग में उन्होंने अष्टाध्यायी (मूल), यास्कीय निघण्टु मूल और

निरुक्त की प्राचीन पाण्डुलिपियाँ दिखाईं। इन तीनों ग्रन्थों के १२० पत्रे थे। अतः वर्त्तमान प्रचलित भाव के अनुसार उनका मूल्य १२०० रुपये था। मैं इन पाण्डुलिपियों को लेना चाहता था, परन्तु मेरे पास उस समय केवल ४०० रुपये थे। इतनी न्यून राशि लेकर वह व्यक्ति पुस्तक देने में असमर्थता दिखा रहा था। अस्तु! आर्यसमाजस्थ अनेक सज्जनों के विनम्र आग्रह करने पर उस महानुभाव ने ४०० रुपये लेकर तीनों पाण्डुलिपियाँ मुझे दे दीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या आपके पास ऐसे हस्तलेख और भी हैं? तो उन्होंने सामगान से सम्बद्ध एक पाण्डुलिपि दिखाई और इसका मूल्य ५००० रुपये बताया। उसी समय खारीबावली में स्थित श्री धर्मपाल आर्य, संचालक आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट से मैंने इसकी चर्चा की तो उन्होंने कहा इसके निवास पर जाकर देखो, यदि और भी ग्रन्थ हों तो मैं ट्रस्ट के लिये अन्य पुस्तक भी क्रय कर लूँगा और उन्होंने मुझे तथा डॉक्टर सुरेन्द्रकुमार (आर्यनगर झज्जर) को सभी पुस्तकें देखने का आग्रह किया। हम दोनों ने श्री अशोककुमार वर्मा पुस्तक विक्रेता के निवास उत्तमनगर (दिल्ली) में जाकर अनेक पाण्डुलिपियाँ छाँट लीं। उनका मूल्य २५ हजार रुपये के लगभग था, सो श्री धर्मपाल आर्य ने सब पुस्तक क्रय कर लिये। उन पाण्डुलिपियों का विक्रय करने पर मुझे ४०० रुपये में दी गई पाण्डुलिपियों का खेद पुस्तक विक्रेता को नहीं रहा तथा वह अति प्रसन्न हो गया। इस सामगान पुस्तक की मूलप्रति अब 'आर्षसाहित्यप्रचारट्रस्ट खारीबावली (दिल्ली)' के पुस्तकालय में सुरक्षित है। दिदृक्षुजन वहाँ जाकर पुस्तक देख सकते हैं। इसकी फोटोस्टेट प्रति मेरे पास तथा पण्डित सुरेन्द्र शास्त्री शिमला के पास भी है।

प्रस्तुत सामगान पुस्तक का विवरण

यह सामगान ग्रन्थ जो आपके हाथ में है, इसकी उपलब्ध मूल पाण्डुलिपि ३×१० ईंच आकार के हस्तनिर्मित कागज पर विक्रमसंवत् १५३१ में पौष बदि पञ्चमी (सन् १४७४ ईसवी) को लिखी थी। ज्ञात हो कि यह प्रति भी ताडपत्र पर लिखित प्राचीन पुस्तक से लिपिबद्ध की गई थी। ताडपत्रों पर लिखे ग्रन्थ के प्रत्येक पत्रे के मध्य एक छिद्र होता है, जिससे उस छिद्र के भीतर डोरी डालकर ग्रन्थ के पत्रे इधर-उधर होने से बचाए जा सकें। इस छिद्र के चारों ओर थोड़ा-थोड़ा स्थान छोड़कर अक्षर लिखे जाते हैं जिससे डोरी के हिलने-डुलने से निकट के अक्षर विकृत न हो जाएँ। धार्मिक ग्रन्थ की प्रतिलिपि सर्वथा तदनुरूप ही की जाती थी। इसीलिए कागज पर की गई इस प्रति में भी प्रत्येक पत्रे के मध्य चतुष्कोण स्थान छोड़ा गया है। पुस्तक के आरम्भ में मूलग्रन्थ के पत्रों के चित्र देखकर यह स्पष्ट ही समझा जा सकता है। विक्रमसंवत् १५३१ (सन् १४७४ ईसवी) में लिखे इस ग्रन्थ में २०७ पत्रे हैं। प्रत्येक पत्रा पतले-पतले दो पत्रों को जोड़कर तैयार किया गया है, अर्थात् एक ही पत्रे पर दोनों ओर न लिखकर दो पत्रों पर एक-एक ओर लिखकर उनके खाली पृष्ठभाग को जोड़कर एक पत्रा बनाया है। ग्रन्थ का आरम्भ **ओं श्रीगणेशाय नमः** लिख कर किया है।

इसमें सामवेद पूर्वार्चिक षष्ठप्रपाठक के द्वितीय अर्द्ध तक के ५८५ मन्त्रों के ११९७ गान लिखे हैं और तीन पर्व तथा १७ प्रपाठक हैं। साममन्त्र ११४ तक आग्नेयपर्व है, इसमें १८० गानभेद हैं। साममन्त्र ११५ से ४६६ तक ऐन्द्रपर्व है, इसमें ६३३ प्रकार के गान हैं। साममन्त्र ४६७ से ५८५ तक पावमानकाण्ड है, इसमें ३८४ गान हैं। इस प्रकार कुल गान ११९७ हैं। सामगान ग्रन्थ में लिखा हुआ संख्या २५७ (क) **स त्वा०** इत्यादि मन्त्र आजकल सामवेद में नहीं

मिलता। यह मन्त्र सामवेद की किस शाखा का है, यह अन्वेषण करना चाहिए। पुनरपि **'मेडिं न त्वा०'** (मन्त्र ३२७) तथा **'आ त्वा गिरो०'** (मन्त्र ३४९) से पूर्व लिखे **'अर्द्धवेय'** और **'वेयगान'** पदों से गान का नाम ज्ञात किया जा सकता है। मूलग्रन्थ में आरम्भ के २७ पत्रों में तथा ७६ से ८४, १४१ से १५७ और १७३ से १७७ तक प्रति पृष्ठ ६-६ पंक्तियाँ तथा शेष पत्रों में प्रति पृष्ठ ७-७ पंक्तियाँ लिखी हैं। अति प्राचीन पुस्तक होने से कुछ पृष्ठ फट गये थे, अत: उनकी प्रतिलिपि किसी अस्पष्ट लेखवाले दूसरे लेखक ने की है। इनमें पत्रे के बीच में छिद्र के लिए रिक्त स्थान नहीं छोड़ा है। ऐसे १४ पृष्ठ हैं (देखिये पृष्ठ ५)। इस सामगान ग्रन्थ के अन्तिम पृष्ठ पर एक सूचना संस्कृत में लिखी है। उसका अनुवाद इस प्रकार है—''यह पाण्डुलिपि संग्राम कायस्थ ने भाद्रपद बदि षष्ठी सम्वत् १६६८ (सन् १६११ ईसवी) में एक रुपये में केशवहरि से क्रय की थी। इसके लिए भटभीम और जोशीराम, भलापुरा वासी साक्षी थे।'' भलापुरा ग्राम किस प्रदेश में स्थित था यह भी अन्वेषण का विषय है। मेरे विचार से यह ग्राम राजस्थान में हो सकता है।

इस गानग्रन्थ में प्रारम्भ से ६८वें मन्त्र तक तथा मन्त्र संख्या ३७२ से लेकर अन्तपर्यंत गानविशेषों के नामों का संकेत नहीं किया है। बीच में वैश्वज्योतिष, याम, श्यैत, शुक्र, काश्यप आदि सामगानों के २८० नामों का निर्देश किया हुआ है। मूलग्रन्थ में लिखते समय प्रतिलिपिकर्त्ता द्वारा जहाँ अशुद्ध अक्षर लिखा गया था, उसे काटा नहीं गया, अपितु उसके ऊपर (॥) ऐसी दो खड़ी रेखायें लगाकर उसे निषिद्ध किया गया है। जहाँ पूरी पंक्ति भूल से दुबारा लिखी गईं, उसपर हरताल फेरकर पीला किया गया है। अनुदात्त चिह्न तथा अन्य चिह्न विशेषों को लालस्याही से लिखा गया है। शेष सारा ग्रन्थ काली स्याही और मोटी कलम से लिखा हुआ है। प्रतिलिपि करते समय छूटे हुए पदों को लिखित पृष्ठ के ऊपर, बराबर अथवा नीचे लिखकर उसके अन्त में पंक्ति की संख्या १-२-३ आदि लिखी हैं, जिससे इसे उसी पंक्ति का भाग मानकर वहीं लिखा-पढ़ा जाये।

मूलगान ग्रन्थ में केवल गान के प्रकार लिखे हैं। इस गान के ऊपर ऋषि, छन्द, देवता और स्वरयुक्त साममन्त्र हमने जोड़े हैं, जिससे पाठकों को यह सुविधा हो सके कि यह गान किस मूलमन्त्र का है। यह गान **महावामदेव्य** है अथवा **वामदेव्य,** इसका निर्णय सामगायक ही कर सकते हैं।

मन्त्रों में पाठाधिक्य

इस सामगान में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनमें कुछ अंश मूलमन्त्रों में नहीं हैं, वे बाहर से जोड़े गए हैं। इसका विस्तृत विवरण परिशिष्ट संख्या १ में देख सकते हैं।

विक्रमसंवत् १५३१ (सन् १४७४ ईसवी) में देवनागरी लिपि का जो रूप भारतवर्ष में प्रचलित था, उसके अनुसार इस सामगान ग्रन्थ में कुछ ऐसे रूप मिलते हैं जो आज की लिपि से भिन्न हैं। जैसे—आज की लिपि में—**ष्ला**, पुरालिपि में-**ष्णा। ड्ठ=ऊ। स्क=स्तु। द्य=द्यु। -ा्=रु। दाव=दिवे। ारा=रो। ातो=तौ। योानो=योनौ।**

प्रदेश विशेष की उच्चारण परम्परा भिन्न होने से कहीं-कहीं शकार को **'स'** तथा यकार को **'ज'** लिखा है। कहीं-कहीं लकार को **'ल'** इस प्रकार भी बनाया है। अनेक अक्षरों को चिह्न विशेष से चिह्नित किया गया है। जैसे—**'यिँ' 'शाॅ'** इत्यादि। एक चिह्न **'२'** यह भी है। इनका अभिप्राय और उच्चारण प्रकार परम्परागत सामग विद्वान् जान सकते हैं। **बर्हि** और **पिबन्तु** जैसे

बकार युक्त कुछ पदों में बकार को प्रायः वकार लिखा है।

यद्यपि सन् १९६१ में गुरुकुल झज्जर में अध्ययन करते समय पण्डित सत्यदेव जी वाशिष्ठ भिषगाचार्य ने हमें कुछ सामगान सिखाया था। पुनरपि सामगान के विषय में मैं अज्ञबालवत् हूँ। तथापि सामगान ग्रन्थ प्रकाशन सम्बन्धी यह प्रयास इसलिए किया है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों का अद्भुत और गहन ज्ञान सुरक्षित रह सके और इस कार्य से मैं ऋषि ऋण से कुछ सीमा तक अनृण हो सकूँगा, ऐसा विश्वास है। इस प्रकार का गानग्रन्थ प्रकाशित वा अप्रकाशित अभी तक मेरी दृष्टि में नहीं आया था। सामवेद की कौथुमीशाखा से सम्बद्ध ग्रामेगेय (वेय प्रकृति) गानात्मक प्रथमभाग विक्रम सम्वत् १९९९ (सन् १९४२) में तथा आरण्य गानात्मक द्वितीयभाग सन् १९४५ ईसवी में स्वाध्याय मण्डल औंध (सतारा, महाराष्ट्र) से प्रकाशित हुआ था, परन्तु उसकी शैली इस सामगान ग्रन्थ से मेल नहीं खाती, अतः इस दुर्लभ ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। उस ग्रन्थ में १७ प्रपाठक तथा ११९८ गान प्रकार हैं। इस ग्रन्थ में ११९७ गानभेद हैं। स्वाध्याय मण्डल से प्रकाशित ग्रन्थ में प्रथम प्रपाठक के द्वितीय अर्ध में ३७ गान हैं, जबकि हमारे इस ग्रन्थ में ३६ गान लिखे हैं। इसके उदाहरण परिशिष्ट ४ में देखिए।

धन्यवाद

इस ग्रन्थ की प्राप्ति हेतु प्रथम धन्यवाद श्री धर्मपाल आर्य, वर्त्तमान प्रधान आर्यकेन्द्रीयसभा, दिल्ली (संचालक आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली) को है जिनके कारण यह दुर्लभ ग्रन्थ उपलब्ध हो सका। भारत सरकार के राष्ट्रीय अभिलेखागार जनपथ नई दिल्ली को भी धन्यवाद है, जिसकी कृपा से इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु आर्थिक अनुदान मिला है। ग्रन्थ के कम्प्यूटरीकरण हेतु मैंने अनेक स्थानों पर यत्न किया, किन्तु लिपि की अनभिज्ञता और दुरूहता के कारण किसी ने भी स्वीकृति नहीं दी। अन्त में श्री विजयकुमार झा, अधिपति-भगवती लेज़र प्रिंट्स, नई दिल्ली ने इस गुरुतर भार को इस अनुबन्ध से स्वीकार किया कि कम्प्यूटर पर आपको साथ बैठकर मुद्रण कराना होगा, सो कई मास तक पुराने अक्षरों का अभ्यास कराकर इस कठिन कार्य को पूर्ण किया। आचार्य श्री हरिदेव जी गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) का भी मैं अत्यन्त अभारी हूँ जिनके द्वारा प्रदत्त सुविधा से यह दुष्कर कार्य सु-सम्पन्न हो सका। इस ग्रन्थ के आवरण की साज-सज्जा और सुन्दर चित्रण हेतु श्री कुलदीप जी खोखर कनिष्ठ अभियन्ता विकासनगर, रोहतक ने बहुमूल्य सुझाव देकर अनुगृहीत किया है, एतदर्थ वे भी धन्यवादार्ह हैं। इसका प्रूफ देखना भी अति दुष्कर कार्य था। एक भी अक्षर अनुमान से नहीं देखा जा सकता। प्रत्येक अक्षर मूलप्रति को सामने रखकर देखा गया है। प्रतिलिपिकर्त्ता द्वारा अनवधानतावश की गई भूलों को यथामति सुधार कर नीचे टिप्पणी दे दी है। इस बात पर भी पूरा ध्यान दिया है कि एक भी अशुद्धि न रहने पाये। पुनरपि सामगान के विशेषज्ञ ही इसकी त्रुटियों से अवगत करा सकते हैं। यदि इस ग्रन्थ में कोई व्यतिक्रम हो गया हो अथवा कोई अशुद्धि रह गई हो तो अवगत कराने पर उसे अगले संस्करण में शुद्ध कर दिया जाएगा।

विदुषां वशंवद

—विरजानन्द दैवकरणि

पुरातत्त्वसंग्रहालय

गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

१४.२.२००४

विषय-सूची

प्रपाठकानुसार गानसंख्या

आग्नेयपर्व

प्रपाठक	साममन्त्र	कुलमन्त्र	गानभेद
प्रथम अर्द्ध प्रपाठक	२० तक	२०	३४
प्रथम प्रपाठक	४१ तक	२१	३६
द्वितीय अर्द्ध प्रपाठक	६७ तक	२६	४०
द्वितीय प्रपाठक	९० तक	२३	३१
तृतीय अर्द्ध प्रपाठक	११४ तक	२४	३९
		योग :	१८० गानभेद

ऐन्द्रपर्व

प्रपाठक	साममन्त्र	कुलमन्त्र	गानभेद
तृतीय प्रपाठक	१२८ तक	१४	३१
चतुर्थ अर्द्ध प्रपाठक	१४४ तक	१६	३४
चतुर्थ प्रपाठक	१६० तक	१६	३६
पञ्चम अर्द्ध प्रपाठक	१७८ तक	१८	३५
पञ्चम प्रपाठक	२०८ तक	३०	३५
षष्ठ अर्द्ध प्रपाठक	२३६ तक	२८	३७
षष्ठ प्रपाठक	२४८ तक	१२	३५
सप्तम अर्द्ध प्रपाठक	२६३ तक	१५	३३
सप्तम प्रपाठक	२८४ तक	२१	३६
अष्टम अर्द्ध प्रपाठक	३१३ तक	२९	३६
अष्टम प्रपाठक	३३१ तक	२९	३६
नवम अर्द्ध प्रपाठक	३४५ तक	१४	३१
नवम प्रपाठक	३७० तक	२५	३५
दशम अर्द्ध प्रपाठक	३८३ तक	१३	३४
दशम प्रपाठक	४०० तक	१७	३५
एकादश अर्द्ध प्रपाठक	४१८ तक	१८	३६
एकादश प्रपाठक	४३८ तक	२०	३८
द्वादश अर्द्ध प्रपाठक	४६६ तक	२८	४२
		योग :	६३३ गानभेद

पावमानकाण्डम्

द्वादश प्रपाठक	४६९ तक	३	३१
त्रयोदश अर्द्ध प्रपाठक	४७६ तक	७	३८
त्रयोदश प्रपाठक	४९६ तक	२०	३५
चतुर्दश अर्द्ध प्रपाठक	५११ तक	१५	३६
चतुर्दश प्रपाठक	५१५ तक	४	३०
पञ्चदश अर्द्ध प्रपाठक	५२४ तक	९	३६
पञ्चदश प्रपाठक	५४० तक	१६	३०
षोडश अर्द्ध प्रपाठक	५५३ तक	१३	३९
षोडश प्रपाठक	५६५ तक	१२	३५
सप्तदश अर्द्ध प्रपाठक	५७७ तक	१२	३९
सप्तदश प्रपाठक	५८५ तक	८	३५
		योग :	**३८४ गानभेद**

अग्नेयपर्व	११४ मन्त्र	१८० गानभेद
ऐन्द्रपर्व	३५२ मन्त्र	६३३ गानभेद
पावमानकाण्ड	११९ मन्त्र	३८४ गानभेद
कुलयोग :	**५८५ मन्त्र**	**११९७ गानभेद**

।। सामगान की पाण्डुलिपि का प्रथम पत्रा ।।

।। सामगान की पाण्डुलिपि का द्वितीय पत्रा ।।

॥ सामगान की पाण्डुलिपि का दशम प्रपाठक (मन्त्र संख्या ४००)॥

॥ सामगान की पाण्डुलिपि का एकादश प्रपाठक (मन्त्र संख्या ४०१)॥

॥ सामगान की पाण्डुलिपि का द्वितीय प्रपाठक (मन्त्र संख्या ९०-९१) ॥

॥ सामगान की पाण्डुलिपि का अन्तिम पत्रा (संवत् १५३१) ॥

ओ३म्

[सामवेदसंहिताया गानम्]

[ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥]

[१. अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥]

[१] ओ४ग्ना४यि४ ।आ२या२ही२३वोयितोया४२उयि२। तो या ४२उ यि२। गृणानो२ह२। व्य२दातोया४२उयि२। तो या ४२उ यि २। ना यि हो२ता सा ऽ२३। त्सा ऽ२उयि२उबा३२३४अ५हो५वा५। ही३२३४षी५ ॥ १ ॥

[२] अ४ग्न५आ४या५हि५वी४। त या यि। गृणानो हव्यदाता ऽ२३ या२यि२। नि होता सत्सि२। बर्हा ऽ२३यि३षी२। बर्हा ऽ२उ३यि२उ षा३२३४अ५हो५वा५। ब२र्ही२३षी ऽ२३४५ ॥ २ ॥

[३] अ४ग्न५आ४या५हि५। वा४ऽ५यि५त५या४यि४। गृणानो हव्या दा२ऽता२३ये२। नि२हो२उ ता३२३४ सा५। त्सा ऽ२३ यि३। बा२३। हा ऽ२३४यि४षो५६हा५इ५ ॥ ३ ॥

[ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—शङ्कुमती पिपीलिकामध्यागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥]

[२. त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥]

१. त्व४म५ग्ने५य५ज्ञा४ना५म्५। त्व४म५ग्ना४यि५यज्ञा४ना५म्५। त्व४म५ग्ना४यि४। य२ज्ञाना२होता। विश्वेषा२हाऽ२३यि३ता२ः। दे२वै[1]२भाऽ२३यि३र्म्मा२। नु३षे३ज२ना। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ४॥

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

३. अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥

१. अ५ग्निं५दू५ता५म्५। वृ२णीमहायि। होताराऽ२३म्वि२। श्व२वेदसाम्। अस्य याऽ२३ज्ञा२। आ। अ२३हो३वा२। स्या सुक्र२तु२म्२। इडाऽ२३जा२३४ऽ३। ओऽ२३४यि५डा५॥५॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः॥

१. अ५ग्नि५र्वृ५त्रा५। णाऽ२यि२जा३२३४अ५हो५वा५। घा३२३४ना५त्५। द्र२वि२ण२स्युर्व्विप२न्यया२। ओयिसमिद्धाऽ२३२शू२। क्रायाहु२त२ः। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ ६॥

२. अ३ग्नी२रौ३हा४वा४ हा५यि५। वृ५त्रा४णी५। जाङ्घा२३ना२त्२। अहो२३वा२३। द्रविणा३२३४स्यु५ः ओयिवोयि-पन्यया४२। समाये२३। धाऽ२शू३२३४अ५हो५वा५। क्र२या-हुता३२३४५ः॥ ७॥

३. ओ४ग्नी५ः। वृ२त्राणि जङ्घनात्। अ३हौ२हो३२३४वा५। द्र२वि२ण२स्युर्व्विप२न्यया। अ३हौ२हो३२३४वा५। समिद्ध२शु२क्रया। अ३हौ२हो३२३४वा५। हो४ऽ५तो५६हा५। यि५॥ ८॥

१. अत्र 'दे२वे२' इति पाठः स्यात्। —सम्पादकः

ऋषिः—उशनाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५. प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम् ॥

१. प्रे४ष्ठं५वा४ः। अता२३यि३थी२म्२। स्तौषेमि२त्र२म्२। इ२वप्राऽ२३या२म्२। अग्नायिरा२३था२३म्३। नावाऽ२३हा२३४ऽ३यि३। दाऽ२३४यो५६हा५यि५ ॥ ९ ॥

२. प्रे४ष्ठ५म्व५ः। ओ४हा४यि४। अताऽ२३यि३थी२म्२। स्तु२षा२यि२मि२त्रा२३म्३। इवाऽ२ुप्रा३२३४या५म्५। अ२हो२ऽयि। अग्ने२राथाऽ२३म्३। नाऽ२३वे४ऽ३। दा२३४५यो५६हा५यि५ ॥ १० ॥

३. प्रे५ष्ठ५म्वो५हा५उ५। अतिथायिम्। स्तुषे मित्रमिवप्राऽ२३या२म्२। अग्नाये२३। राऽ२ुथा३२३४अ५हो५वा५। न२वेदिया३२३४५म्५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६. त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य ॥

१. त्व५न्नो५या५। ग्ने२महो२भि२ः। पाहोयिवी२३श्वा२। स्या अराते२ः। उताद्वा२ऽयिषा४२ुः। मर्त्य२स्य२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५डा। ५ ॥ १२ ॥

२. त्वा४न्त्व४न्नो५अ५ग्ने५म४। हो५६भा५यि५ः। पा२हिविश्वा अ२३हो२। स्या अ२३हो२। आ राते२ः। उताद्वा२ऽयिषा४२ुः। मर्त्ताऽ२ु या३२३४अ५हो५वा५। स्या३२३४५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७. एह्यू षु ब्रवाणि तेऽ ग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥

१. ए५ह्यू५षू२३ब्र४वा४णा५६यि५ता५यि५। अग्नइत्थेतरागा४२उ यि२राः। ए२भा४२उयि२र्व्वर्द्धा। सया ऽ२३हा२३४ऽ३यि३। दूऽ२३४भो५६हा५यि५ ॥ १४ ॥

२. ए५ह्यू५षू५ब्र५वौ५हो४णा४यि४ता५यि५। अग्नइत्थेतरा२ऽ गी२३रा२ः। ए२भि२उर्व्वा३२३४र्द्धा५। सयाऽ२३हा२३४ऽ३ यि३। दूऽ२ ३४भो५६हा५यि५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८. आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात्।
अग्ने त्वां कामये गिरा ॥

१. आ५ते५व५त्सा५ः। मनोय२म२त्२। परमा२त्२। चि२त्त्सधाऽ २३स्था२त्२। अग्नायित्वा२३ङ्का२३ ॥ म४यो४वा५। गा४ऽ५ यि५रो५६हा५यि५ ॥ १६ ॥

२. आ४ते५व५त्सो४म४नो५य५म५त्५। ऐ४या४हा५यि५। प२र२ माच्चित्सधस्थादैयाऽ२३होयिया। अग्नेत्वाङ्कामयऐयाऽ२३ होयिया। गि२रा२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९. त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥

१. त्वा५म५ग्रे५पू५ष्का५६रा५द५धि५। आथ२र्व्वा२। ना। यिः। अँमा ऽ २ुन्था३२३४ता५। मू३२३४र्ध्नो५। वा३२३४यि४ श्वा५। स्य४वो४वा५। घा४ऽ५तो५६हा५यि५॥ १८॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २र ३ २
१०. अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवो ह्यसि नो दृशे॥

१. अ४ग्ने५वि४व५स्व५दा४भ५रो४। वा४हा५यि५। अ२स्म२ भ्य२मू२ता२३यायिमहे२। ओं। वा२३हा२यि२। २। दायिवो२ऽ हिया४२ु। ओं वा२३ हा२यि२। ओं। वा२३हा२३यि३। साऽ२ुयि २ुना३२३४औ५हो५वा५। दृ२शे२ऽऽ॥ १९॥ दशति [:]॥

ऋषिः—आयुङ्क्ष्वाहिः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २३ १ २
११. नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय॥

१. न४म५स्तौ५। हो४ग्ना५यि५। ओजसा२३यि३। गृणाऽ२ुन्ता३२ ३४यि४दे५। वाकृँष्टया ४२ुः। अमाये२३ः। आऽ२ुमा३२३४ अ५हो५वा ५। त्र२म२र्द२या३२३४५॥ २०॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २३ १ २ १ २ ३ २
१२. दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा॥

१. दू५ता४ऽ३म्३वो२३वि४श्व४वे५द५सा५म्५। ह२व्य२वा- हाम्। अँमाऽ२ुर्त्ता३२३४या५म्५। याजिष्ठ२म्२। ऋ। जसे२३ हा२यि२। गिर२रा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि ५। डा५॥ २१॥

ऋषिः—प्रयोगः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३. उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः । वायोरनीके अस्थिरन् ॥

१. उ५प५त्वा५जा५ । मयो२ँगि । र२ओयियँद्यू४२ुः ॥ दायिदिश२
ती२ ऋ२ह२वि२कृ । त२ । ओयियँद्यू४२ुः । वा२योरा॒२३नी२ु ।
क३या २३स्था४॒५यि५रा५६५६न्६ । अश्वा२३गावा॒२३
४५ः ॥ २२ ॥

२. उ५प५त्वा५जा५मा५६यो५गि५रा५ः । दायिदिश२तायिः ।
हॅवी॒२ुष्का३२३४र्त्ता५ः । वा५यो५र५ना५हा५यि५का४या५ ।
स्थायिरा२ु । अ३हो३२३४वा ५ई४डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४. उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ॥

१. उ२पात्वा॒२३ग्ने४दि४वे५दि५वा५यि५ । दोषा४२ुवास्ता४२ुः ।
धि२या वयम् । नामो४२ुभारा४२ु । त२येमा॒२३सा२३४॒३
यि३ । ओ॒२३४५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५. जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥

१. जा४रा५[1]बोधा४२ुबोधा४२ु । तद्विविड्ढायि । वि२शे२वायिशे४२ु ।
यज्ञा॒२३ । या३या२३४ओ५हो५वा५ । स्तोमं२रु२द्राय दृ२शी२
काम् ॥ २५ ॥

२. ज५रा५बो५धो४वा५ । ताद्विवि२ड्ढायि । वि२शायिवा॒२३यि३
शे२ । य२ज्ञि२याय । स्तोमां२रूद्रा॒२३या४ । दृ५ । शी३को२३
४५यि५ । डा५ ॥ २६ ॥

---

१. हस्तलेखेऽत्र '५' संख्या द्विस्कृत्य लिखिता । —सम्पादकः

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६. प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि॥

१. प्र२तित्याऽ२३ञ्चा४रु४म५ध्व५रा५म्५। गो२पी२था। या। प्राहूरु या३२३४सा५यि५। म२रुद्भिः२ः। आ। ग्रा। आ२ग२ही। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ २७॥

ऋषिः—शुनःशेपः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१७. अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः।
सम्राजन्तमध्वराणाम्॥

१. आश्वारु। अ३हो३२३४वा५। ना त्वारु। अ३हो३२३४वा५। वा४र५ वं५तं५वं५द४ध्या४। आग्नारु। अ३हो३२३४वा५। न४मो५भि५स्सं५म्रा४जं५ता४म्४। आध्वरा२णाम्। अऽ२३ हो४वा५। हो४ऽ५यि५डा५॥ २८॥

२. अ४श्वं५न४त्वा५वा४र५वं५ता४म्४। व२न्दध्याअग्निन्न-मोभायिः। सं२म्राज२। त२माध्वरा२३४। अ३हो४वा५। इहा३२ ३४हा५यि५। अ३हो२३ऽरु। या३२३४अ५हो५वा५। णा३२३ ४५म्॥ २९॥

३. अ५श्व५न५त्वा५अ५हो४हा५यि५। वा२रारुवा३२३४ता५ म्५। वं२दाध्याऽ२३४हा५यि५। अग्नायिन्नमा२३४। अ३हो४ वा५। इहा३२३४हा५यि५। उ२हु२वा३२३४भि५ः। स२म्राज२ तामँध्वरा२३४। अ३हो४वा५। इहा३२३४हा५यि५। अ३हो२३ ऽ२३४। णा४म्४। ए५हि५या५६हा५। हो४ऽ५यि५ डा५॥ ३०॥

ऋषिः—प्रयोगः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८. और्वभृगुवच्छुचिमप्रवानवदा हुवे। अग्निं समुद्रवाससम् ॥

१. अ५र्व्व५भृ५गु५व४त्४। ओ४हा४यि४। शू३२३४ची५म्५।
आप्रवा२न२। व२दा४२हुवा४२यि२। हुव२ओयि। अग्ना४२
यिं२समू४२। समु२ओ। द्रा२वाससा२३ऽउवाऽ२३४५ ॥ ३१ ॥

२. अ५र्व्व५भृ५गु५व४च्छु४चि५म्५। ए४ऽ५। शु४ची४म्४।
आप्रवा२न२। व२दाऽ२३हु ३वा२यि२। हु२वाऽ२३यि३।
हु२व३ए२। अग्नायिं२सा२३मू२। स२मूऽ२३। स२मु३ए२३।
द्राऽ२वा३२३४ अ५हो५वा५। स२सा२३मेऽ२३४५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—प्रयोगः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९. अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥

१. अ५ग्नि४मिं५धा५नो४म४न५सौ५। हौ४हो४वा४हा५यि५धि३
य४ं४स५चेत५मौ५। हो२हा२३। होऽ२३४र्त्ति४या४ः। अग्ना-
ये२३म्३। आऽ२यिं२धा३२३४अ५हो५वा५। वि२स्वभी
३२३४५ः ॥ ३३ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०. आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि ॥

१. आ४दि४त्प्र४त्ना४ऽ५स्य५रे५त४सा४ः। ज्योतिष्पश्यन्तिवा-
सा४२राम्। परोया४२दिध्यतायि। दि२वि। होयि। २। अ२हो-
अ२होवाऽ२३४५हा५उ५वा५ ॥ ३४ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—प्रयोगः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
२१. अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥

१. अ५ग्निं५वो५वृ५धा४न्ता५म्५ । आध्वरा२णा२म्२ । पु२रूता-मौ२ । हो२वा२३हा२यि२ । आछा४२नाप्त्रेऽ२३ । स२होऽ२३४ वा५ । स्वा४ऽ५तो५६हा५यि५ ॥ १ ॥

२. अ५ग्निं५वा५६ए५ । वृ२धंताम्। अध्वराणाम्पुरूतममच्छा४२ हो२ऽयि। नाऽ२३प्त्रे२ । स२हास्वाऽ२३४५ता ५६५६यि६ ॥ ई३२३४ति५ ॥ २ ॥

३. अ५ग्निं४व५ः । ओं४हा४ । यि४वृधाऽ२३न्ता२म्२ । अध्वराणां-पुरू२ऽता२३मा२म्। २ । अ२च्छा२न२त्रो३२३४हा५यि५ । साहा २३हा२ । स्व२ता। अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ २
२२. अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद्विश्वं न्या३त्रिणम्। अग्निर्नो वंसते रयिम्॥

१. आग्ना२ओं३२३४वा५ । ति२ग्म्मे२ना२३शो ॥ चायिषा२ओं३२ ३४वा५ । या२ंसा२ओं३२३४वा५ । वायिश्वान्निया। त्रायिणा२ ओं३२३४वा५ । अ२ग्निर्नो२व२ं२स२ते२र२३यी२ऽम्॥ ४ ॥

२. ओ४हा५ । ओं४ग्री५ः । ता३२३४यि४ग्मे५ । ना२शो२चा३२३४ यि४षा५ । य२ंसाऽ२द्वा३२३४यि४श्वा५म्५ । नि२य२त्रा३२३४ यि४णा५म्५ । अ२ग्निर्नो२व२ंसा२ता३२३४अ५हो५वा५रा३ २३४यी५म्५ ॥ ५ ॥

३. अ५ग्नि४स्ति५ग्मे४न५शो५चि४षा५। इ४हा४। यंसद्विश्वंन्य-
त्रिणा४रुम्२। इहा२। अ२ग्निर्नोवंसता४रुयि२। इहा२३। रा२
३४या५६हा५यि५॥ ६॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२३. अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम्॥

१. अग्नायिमृडाऽरु। म३हाऽरुआ३२३४सि५। अयआदाऽरुयिरु।
व३युंरजा३२३४ना५म्५। इयेथ बाऽ२३हि३रा२३सा४ऽ५
दा५६५६म्६॥ ७॥

२. अ३ग्ने४मृ४ड३म४हा३३अ४सि५। ओ३हा२३ओ४हा५। अ३
य४आ३दे४व४यु३ञ्ज४न५म्५। ओ३हा२३ओ४हा५। इ२ये
थाऽ२३बारु। हि३रा२३सा४ऽ५दा५६५६म्६॥ ८॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२४. अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति स्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह॥

१. अ५ग्ने५रा२३क्षा४णो५अ४४हु४सा५ः। प्रतिस्मदेव२रीषाऽ२३
ता२ः। त२पायिष्ठाऽ२३यि३रा२। ज२रोदाऽ२३हा२३४ऽ३।
ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ९॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२५. अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः॥

१. अ५ग्ने५यू२३ङ्क्ष्वा४हि५ये४ता४वा५। आश्वासोदेव२साधाऽ
२३वा२ः। अ२रम्वाऽ२३हा२। ति२याशाऽ२३वा२३४ऽ३ः।
ओऽ२३ ४५यि५। डा५॥ १०॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२६. नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्। सुवीरमग्न आहुत ॥

१. नि५त्वा५ । हो२३यि३ । न४ । क्षि४या५ । वायिश्प२तायि । द्यु२ मन्त२म्२ । धायि । माहे२वा३२३४या५म्५ । सु५वो४हा४यि४ । रा२मग्ना२ओऽ२३४वा५ । हो४ऽ५तो५६हा५यि५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—विरूपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२७. अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥

१. अ५ग्नि५र्मू५र्द्धा५दी५६व५ष्क५कू५त्५ । पाती४२ुष्पार्थी४२ु । वि२या॒अयाम्। आपा४२ु२रायिता४२ु । सि२जिन्वाऽ२३ता २३४ऽ ३यि३ । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२८. इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥

१. इ५म५मू५षू५ । त्व२मास्माऽ२३४का५म्५सानी ४२ु२होयि । गाया४२ुहो । त्र२न्नव्याऽ२३३सा२म्२ । आग्ने४२ुहोयि । दायिवा४२ुहो । षु२प्रावोऽ२३चा२३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—गोपवनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२९. तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः। स पावक श्रुधी हवम् ॥

१. तं५त्वा५गो५पा५ । वानोऽ२ुगा३२३४यि४रा५ । ज२नायिष्ठ२ दाग्नियाऽ२ुगा३२३४यि४रा५ः । स२पौ२वा२ुओ३२३४वा५ । कौ२वाओ३२३४वा५ । श्रु४धी४ऽ५ह५वा५म्५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २ ३ २३ २३ १ २ २ ३१ २ ३ १ २
३०. परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

१. प४र्यौ५ ।हो४यि४वा४जा५ ।प२तायिष्का२ऽवी४२ुः ।आग्निऋ ह२व्या२ । नायैक्रमी४२ुत्२ । दधाऽ२३त्३ । राऽ२ुत्ना ३२३४अ५हो५वा५ ।नि२दा२शुषे३२३४५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ २ ३१२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
३१. उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

१. उ४दु५त्य४म्४ ।ओ४हा४यि४ ।जातॅवेऽ२ुदा३२३४सा५म्५ । दे२वं वहा। ती के२ुता३२३४वा५ः ।दाऽ२३४ऋ४शे४हा५ यि५ ।वायिश्वा२य२सू ।र्याम् ।अऽ२३हो४वा५ ।हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २
३२. कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम् ॥

१. क५वि५म५ग्नी५म्५ । उ२पाऽ२३ । स्तूऽ२ुहा३२३४अ५हो५ वा५ ।स२त्यध२र्म्मा२ण२म२ध्व२रे।दे२वा२म्२ ।अ२मी२व२ चाताऽ२३ना२३४ऽ३म्३ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—सिन्धुद्वीप आम्बरीषः, त्रित आप्त्यो वा ॥ देवता—अग्निः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २उ ३ १ २
३३. शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥

१. श५न्नो५दे५वी५ः ।अ२भिष्टाऽ२३या२३४यि४ ।श५न्नो५भ५ वा५ ।न्तु२पीताऽ२३या२३४यि४ ।शं५यो५र५भि५ ।स्त्र२व। तूऽ२ुना३ २३४ ।अ५हो५वा५ ।ऊ३२३४पा५ ॥ १८ ॥

२. हु३वा२३होऽ२३४यि४।श४न्नो४दे५वी५:।अ४भि४ष्ट५या५ यि५।हु३वा२३होऽ२३४यि४।श४न्नो४भ५व५।न्तु४पी४त५ या५यि५।हु३वा२३होऽ२३४यि४।शं४यो४र५भि५।स्त्र४वं४ तु५ना५:।हु३वा२३हौऽ२३।वा३२३४अ५हो५वा५।ऊ३२३४ पा५॥१९॥

ऋषि:—उशना:॥ देवता—अग्नि:॥ छन्द:—गायत्री॥ स्वर:—षड्ज:॥

३४. कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते।गोषाता यस्य ते गिर:॥

१. कस्यानू२ऽनांऽ२३।प३री२३णा३२३४सी५।धियो जिन्वाऽ२३ सि३स२त्पा३२३४ता५यि५।गोषा२ता२याऽ२३।स्याऽ२३ता ३२३४अ५हो५वा५।उ२पू२।गी३२३४रा५:॥२०॥

२. ओ२हो२यि२हू२३वाऽ२३यि३।हु२व३ए२।क२स्य२नू२ना२ ३म्३पा४ऽ३री२ण३सि५।ओ२हो२यि२हू२३वाऽ२३ यि३। हु२व३ए२।धि२यो२जि२न्वा२३सी४ऽ३स२त्प३ता५ यि५। ओ२हो२यि२हू२३वाऽ२३वाऽ२३यि३।हु२व३ए२।गो२षा२ ता२य२३।स्य३ता२३यि३गा४ऽ५यि५रा५६५६॥२१॥

[इति] दशति:॥

ऋषि:—शंयु:॥ देवता—अग्नि:॥ छन्द:—बृहती॥ स्वर:—मध्यम:॥

३५. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम्॥

१. य५ज्ञा५य५ज्ञा५। वो२अ२ग्न२या२३यि३। गिराऽ२३गि३रा २३४।हा३हो२३यि३।चा द२क्षा३२३४सा५यि५।प्रप्रा२वं२

यममृतं जा२। ता वे२ऽदासा४२म्२। प्रि२यम्मित्राम्। न२शं
सिषाम्। ए३हि३या२। अ३हौ३हो३२३४५यि५। डा५॥ २२॥

२. य४ज्ञा३य४ज्ञा५। हो२यि२। वो२३ग्न२य३ए२३४। हि५या५।
गि३ रा३गि२रा। चाऽ२द३क्ष२सायि। प्र२प्रा३व२याम्। अ२
मृतं जा२३। तवेऽ२दा३२३४सा५म्५। प्रि२यम्मित्राम्। न२शं
सिषाम्। ए३हि३या२। औ३हो३२३४५यि५। डा५॥ २३॥

३. याज्ञायाज्ञा४२। वोअग्नाया४२यि२। गायिरागायिरा४२।
चादक्षासा४२यि२। प्रप्रावाया४२म्२। अ२मृतं जा२३।
तवेऽ२दा३२३४सा५म्५। प्रायम्मायित्रा४२म्२। नाशंसाऽ
२३यि३षा२३४ऽ३म्३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २४॥

४. य४ज्ञा३ऽ५य५। ज्ञा४ऽ३वो२३ग्ना४या५यि५। गायिरागिरा।
चा२३दाक्षा२३सा२यि२। प्रप्रा२व२यममृतम्। जाताऽ२३
वा२। हुंमायि। दा२३सा२म्२। प्रायम्मित्रन्न२शाऽ२ं२सि३
षा२उ२। वा२३४५॥ २५॥

ऋषिः—भर्गः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३६. पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो॥

१. पा५हि५नो२३अ४ग्न५ए४क४या५। पाहि यु२त२। द्वि२
ताया२ऽया४२। पाहि गी२। र्भि२स्ति२सृ२भि२ः। ऊ२
र्ज्जाम्पा२ऽ ता४२यि२। पाहिच२तौ३। हो२३वा२। सृ२भिर्व्वाऽ
२३सा २३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २६॥

२. पा५हि५नो५अ५ग्र५ए५क५या५६ए५ । पा२ । होयिउ२ । ता । द्वि२ता३उ३ । या२३या२ । पाहोऽ२ुयि२ुगा३२३४यि४र्भी५: । तायिसृभि२: । ऊ२र्जाम्पाता२ु । अ३हौ३हो३२३४वा५ । पाऽ २३४ । हि४हा५ यि५ । च२तासृभा२ु । औ३हौ३हो३२३४ वा५ । वाऽ२३४सा४उ४ए५हि५या५६हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २७ ॥

३. पा४हि३नो४अ५ग्र५ए५ । क३या२३ । पाऽ२३४ । हि४यु५ त५द्वि५ती५ । या४या५ । पा४हि३गी४र्भि३स्ति४सृ३भि४ रू५ज्र्जा५म्५ । पा२३ता२यि२ । पाहोयिचा२३ता२३४ । हा५ओ४वा५ । सृभि२र्व्व२सो२ । उपा३२३४५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—शंयुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३७. बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत् पावक दीदिहि ॥

१. बृ२हाद्भीऽ२३र४ग्ने४अ४र्च्चि४भि४ऋ४हा५उ५ । शु२क्रायिणदे२व२शो२चिषा । २ । भराद्वा२ऽजेऽ२३ । होवा२३हा२यि२ । समिधा२न२:या विष्ठीयाऽ२३ । होवा२३हा२यि२ । रे२वात्पा२ऽवाऽ२३ । होवा२३हा२यि२ । कादीदि२हि२ । इ । डाऽ२३-भा२३४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २९ ॥

२. बृ५ह५द्भि५र५ग्ने५अ५र्च्चि५भी५६रे५ । शु२क्रायिण दे२व२ शो२चिषा२ । भराद्वा२ऽजेऽ२३ । ओ३ँवा२ । समिधा२न२: । याविँष्ठियाऽ२३ । ओ३ँवा२ । रे२वात्पा२ऽवाऽ२३ । ओ३ँवा२ । का दीदि२हि२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३८. त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम् ॥

१. त्वेआऽ२३ । ग्रे४स्वा४हु४त४हा५उ५ । प्रि२यासस्स२तु२सू२ रय२ः । यंतारो२ऽया ऽ२३४यि४ । म४घ३वा४नो५ज४ना५ । ना२३ म्३ । ऊर्व्वं दयाऽ२३हा२ । त२गोनार्२म्२ । इडाऽ२३भा २३४ऽ३ । ओऽ२३४५ । यि५ । डा५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३९. अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः ॥

१. अ४ग्ने५ज४रि५त५र्व्वि५श्प४तिः । अ५हो४वा४ । ए४हि५ या५ । हा५उ५ । त२पा२नो दे२व२र२क्षस२ः । अप्रोषा२ऽ यिवा४२उन्२ । गार्हपता२३यि३ । माहा॑ऽ२उआ३२३४सी५ । दिवाः । पायौ२वा२उओं३२३४वा५ । हा२३हा२यि२ । दु४रो४ऽ५ णा५युः५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

२. अ३ग्ने४ज३रि४त५र्व्वि५ । श्प३ती२३ः । ताऽ२३४पा४नो४दे५ व५ र५ । क्ष४सा५ः । तापानो देवरक्षसो । अप्रोषी२३वा२न्२ । गृह२ प२तायि । माहा॑ऽ२उआ३२३४सी५ । ओ३ऽ४हा५ । ह३हा२उ यि२उदि३व३स्पा२यूऽ२३४५ः । ओ३ऽ४हा५ । ह३हा२उयि२उ । दु३रो३ण२यूऽ२३४५ः । ओ३ऽ४हा५ । ह३हा२३४ऽ३यि३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४०. अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥

१. अ५ग्ने५वि५वा५हा५उ५। स्वा२३दूषा२३सा२ः। चायित्रा२३ः३हा२यि२। राधो२३हा२३यि३। अमाऽ२र्त्ता३२३४या५। आदा२ऽ शुषे४२। जातवे२दः२। व२हातू२ऽवा४२म्२। अ२द्याहोयि। दाऽ२३यि३वाः२। उ२षः। बूऽ२धा३२३४औ५हो५वा५। हु२ वे२वसू३२३४५ ॥ ३४ ॥

२. अ५ग्ने५वि५व५स्व५दु५षा४सा५ः। चि२त्रंरोधो२अमा२र्त्ति२य२। आदा२ऽशुषे४२। जातवे२द२ः। व२हातू२ऽवा४२म्२। अ२द्यादाऽ२३यि३वाः२। उ२षः। बूऽ२धा३२३४औ५हो५वा५। वि२दा२वसू३२३४५ ॥ ३५ ॥

ऋषिः—तृणपाणिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४१. त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः ॥

१. त्वन्नाऽ२३श्चि४त्र४ऊ५त्या५। व२सो राधा२। सि२चोदा२ऽया२३। आस्या२रा३२३४या५ः। त्वमग्ने२। र२थायिरासा२३यि३। वीदा२गा३२३४धा५म्५। तु२चाऽ२३हा२यि२। तु२ना। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ ३६ ॥

[इति] प्रथमः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
४२. त्वमित् सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतः कविः।
१ २र ३ १ २ ३ १ २
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥

१. हा५उ५त्व५मि५त्स५प्र५था५अ५सि५हा५उ५।आग्नेत्रा२त२:। ऋ२ताष्कँवा ऽ२३४यि४:। हा३हो२यि२। त्वाम्विप्रा२स२ स्समिधा२।ना दीदिवा२३४:।हा३हो२यि२।आविवासा२३४। हा३हो२३।ति२वो ऽ२३४वा५।धा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ १ ॥

२. त्वं५त्वा५६मे५। इ२त्स२प्रा२३थायासा२यि२। आ३२३४ सी५।आग्नेत्रा२त२:ऋ२ताष्कँवा ऽ२यि२:।का३२३४वी५:। त्वाम्विप्रा२स२स्समिधा२।ना दीदिवो२।दा३२३४यि४वा५:। आविवा२सा ऽ२३हा२। ति२वेधा ऽ२३सा२३४ ऽ३:। ओ ऽ२ ३४५यि५।डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४३. आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम्।
१ २ ३ २३ १ २ ३ १ २
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम् ॥

१. आ३नो४अ५ग्ने५व५यो५वृ४ध५म्५।ए२३४।र३या२३४५ यि५म्५।पा२वा२३काशँ ऽसा ऽ२३या२म्२।रास्वा२च२न२ उपमा२ ते२॥ पूरुस्पृहा४२म्२।सुनायितायिसू२३हा२यि२। य३श३ स्त२राम्।औ ऽ२३हो४वा५।हो४ऽ५यि५।डा५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
४४. यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।
२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥

१. यो५वि५श्वा२३दा४य५ते४व४सू५। होता४२मान्द्रो४२। जनानाम्। माधो४२र्न्नापा४२। त्राप्रथमान्यस्मै। प्रास्तो४२मा याऽ२३। न्तु२वोऽ२३४वा५। ग्रा४ऽ५यो५६ही५यि५॥ ४॥

२. यो५वि५श्वा५द५य५ते५व५सु५हा५उ५। होता४२मान्द्रो४२। जनानाम्। ओवा२। २। माधो४२र्न्ना पा४२। त्राप्रथमान्यस्मै॥ ओ वा२। २। प्रास्तो४२मा याऽ२३। न्तु२वोऽ२३४वा५। ग्रा ४ऽ५यो५६हा५यि५॥ ५॥

३ यो५वि५श्वा५द५य५ते५व५स्वो५हा५। ओ५हा५६ए५। होता२। मं२द्रोजना२ना२म्२। ओ३ँहा२। ओ३ँहा२। ओ३ँहा २३ए२३४। म३धो२३४र्न्न३पा२। त्रा प्रथ२। मा२नायस्मा२ यि२। ओ३ँहा२। ओ३ँहा२३ए २३४। प्र३स्तो२३४मा३या२३। तु२वोऽ२३४वा५। ग्रा४ऽ५यो५६हा५पिवै५॥ ६॥

४. यो५वि५श्वा५द५य५ते५व५सू५६ए५। होता मंद्रो जनानाम्। माधो२ऽर्न्नापौ२। वा२३२। त्रा प्रथमान्यस्मै। प्रास्तो२ऽमायौ२। वा२३२। त्व२ग्रये२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ७॥ [इति] दशतिः॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

४५. एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्॥

१. एनं५ना५वो५अ५ग्नि५न्ना४म४सा५ऊर्ज्जोन२पा२। तामा२ऽ हुवे४२। प्रायंञ्चे२ति२ष्ठ२म२र२ति२म्२। सु२वाध्वा२ऽ रा४२। म्२वि२श्वास्या२ऽदू४२। ताममृ२त२म्२। इडाऽ२३ भा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ ८॥

२. एु५वै५ना५वो५अ५ग्नि५न्न५म५सा५हा५उ५। ऊर्ज्जोंन२पा२। तामा२हुवे॑ऽ२३। हा२उ२। प्रायंञ्चे२ति२ष्ठ२म२र२ति२म्२। सु२वाध्वा२ऽराऽ२३म्३। हा२उ२। वि२श्वास्या२ऽदुऽ२३। हा२उ२। ताममृ२त२म्२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५ यि५। डा५॥ ९॥

३. एु५ना४वो५अ५ग्नि४मे४ऽ५न४म५सा४। ऊ२र्ज्जोंनपा२त२ माहु२वे२। प्राऽ२३या२म्। चायितिष्ठ२म्२। आरति२म्। सु२वाध्वा२ऽरा४२म्२। वि२श्वास्या२ऽदू४२। ताममृ२त२ म्२। इडाऽ२३भा२३ ४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ १०॥

४. एु५ना४वो५अ५ग्नि४न्न४म५सो५। जो५न५पो४वा५। तामाहु२ वे२। प्राऽ२३या२म्२। चायितिष्ठ२म२। राऽ२३ती२म्२। स्व२ध्व२रम्। विश्वस्याऽ२३दू२। ताममृ२त२म्२। इडाऽ२३ भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ११॥

ऋषिः—भर्गः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

४६. शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते।
अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि॥

१. शे४षे४व४ना४ऽ५यि५षु५मा५तृ४षू४। सान्त्वा२मर्त्ता२स२ः। इन्धाऽ२३ता२यि२। आतन्द्रो२ह२व्यंवाह२। सायि। हेवीऽ२उ- ष्का३२३४र्त्ता५ः। आदिद्दे२वायि। षु२राजाऽ२३सा२३४ऽ३ यि३। ओऽ२३४५यि५। डा५। णौ॥ १२॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४७. अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥

१. अ५द५र्शि५गा५तु५वि५त्त५मा५६ए५ । यास्मिन् । व्र२ता नियार२द२धुः । उपो षु जा२३हा२३हा२यि२ । त२मारि२य२ स्य२वर्द्ध२न२म्२ । अग्नायिन्नक्षा२३ । हा२३हा२ । तु२नो२ गिर२ः । इडा ऽ२३ भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ कौ ॥ १३ ॥

ऋषिः—मनुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४८. अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे ।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम् ॥

१. अ५ग्नि५रु५क्था५यि५रे । पु३रो२३हा४यि४ता५ः । ग्रा२वाणो२ बा । हि३रा२३ध्वा४रा५यि५ । रेचा यामि मरुतो ब्रह्माण-स्पाता४२ुयि२ । दायिवा४२ुआवाऽ२३ः । व२रोऽ२३४वा५ । णा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ गो ॥ १४ ॥

२. अ५ग्नि५रु५क्था५औ५हो४हो४हा५यि५ । पु३रौ२वा२ुओ ३२ ३४वा५ । हि४ता४ः । ग्रा२वाणो२ब । हि३रौ२वा२ु ओ३२३४ वा५ । ध्व४रा४ यि४ । ऋ२चौ३हो२ । यामि मरुतो ब्रह्माणॅ-स्पाता४२ुयि२ । दायिवा४२ु आवाऽ२३ः । व२रोऽ२३४ वा५ । णा४ऽ५यो५६हा५ यि५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—सुदीतिपुरुमीढौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४९. अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम्।
अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरोऽ ग्निः सुदीतये छर्दिः ॥

१. अ५ग्नि४मी५। डि३ष्वा२३४औ३हो४वा५। आवसे२। गाथा२ भिर२शशी२। र२शौचा२३यि३षा२म्२। अ२ग्नि२रायायि। पुरुमा२३यि३ढा२। श्रु२तन्नरो। अग्निस्सू२३दी२। त२यायि छा२३४५र्ही५६५६:। दक्षा२३या२३४५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५०. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः।
आ सीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे ॥

१. श्रु३धी२३। श्रू२३४। धि४श्रु४त्क५र्ण५व४। ह्नि४भा५यि५:। दे२वैरग्नेस२। यावा२३भी२:। आसीदतु वऋहिषि मित्रो अर्या२३मा२। प्रा२तर्या२३वा२३। भा२उयिरुरा३२३४अ५ होप५वा५। ए२३। ध्व२र३आ२ ॥ मै ॥ १७ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५१. प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥

१. प्र५दै४वो५दा५सो४ग्नी५:। दे२व इन्द्रो न२मज्मना। अनुमा२३ ता२। रं पृथिवीम्वि२वावृतायि। तस्थौना२३। का२। स्या शार्म्म२णि२। इडा२३भा२३४२३। ओ२३४५यि५। डा५ ॥ पी ॥ १८ ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

५२. अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि।
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पृण॥

१. अ५ध५ज्मा५ओ४वा५। धवादा२ऽयिवा४२ुः। बृ२ह२तो रोचाना२ऽदाधी४२ु। आ। यौ। हौ२हो२३वा२। वार्द्धा स्व२त२ न्वा२। गायिरा२ऽममा४२ु। आ जाता सौ२। हौ२हो२३वा२ ३४। हा५। हा२उ२वा२३। क्रा२तो२पृ२णा३२३४५॥ १९॥

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

५३. कायमानो वना त्वं यन्मातॄरजगन्नपः।
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभुवः॥

१. का४या४मा४नो४ऽ५व५ना५तु४वा४म्४। य२न्मात्रे२रा। जाग२न्ना३२३४पा५ः। न२त२त्ते२अ२ग्ने२३। प्रमृषे२३हा२३ यि३निवाऽ२ुर्त्ती३२३४ना५म्५। य२दूराऽ२३यि३सा२ुन्२ु। इ३हा३भु२वा। अ२३हो४वा५हो४ऽ५यि५। डा५॥ २०॥

२. ए४का४या५। मानो। व३ना२ुतू३२३४वा५म्५। ओ२ुयि२ु। तू३२३४वा५म्५। उ४हु४वा४हा५यि५। अ३होँ२३ऽयि य२ न्मात्रे२रा। जाग२न्ना३२३४पा५ः। आ३२३४पा५ः। उ४हु४वा४ हा५यि५। अ३होँ२३ऽयि। न२तत्त२आ। ग्ना२३ यि३प्रमृषा२३ यि३। निवाऽ२ुर्त्ता३२३४ना५म्५। ता३२३४ना५म्५। उ४हु४ वा४हा५यि५। अ३होँ२३ऽयि। य२दूरे२सान्। इहा२ुभू२३४ वा५ः। भू३२३४वा५ः। उ४हु४वा४हा५यि५। अ३होँ२३२ुया३ २३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥ २१॥

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५४. नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥

१. नि५त्वा५म५ग्ना५यि५। म२नु२र्द्दा३२३४धा५यि५। ज्योतिर्ज्ज२ना२। या शश्वाता४२ुयि२। दी२। दायि। थ क२। ण्वाऽऋ तजा२३। तऊऽ२ुक्षा३२३४। यि४ता५ः॥ यन्न२म२स्याऽ२३। ताऽ२ुयि२ुक्रे३२३४। अ५हो५वा५। ष्टा३२३४। या५ः॥ २२॥

२. हो४वा४यि४। नि४त्वा४म५ग्ने५म४नु५र्द्दे५धे५। हो४वा४यि४। ज्योतिर्ज्जनाय शश्वते दायिदे२ऽथक२। ण्वाऽऋत[१]जा२३ऽ। तेऊऽ२ुक्षा३२३४यि४ता५ः। य२न्नामाऽ२३स्या२३। ताऽ२ुयि२ुक्रे३२३४अ५हो५वा५। ष्टा३२३४या५ः॥ २३॥

[इति] दशतिः ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५५. देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम्।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद् वो देव ओहते ॥

१. दे५वो४ऽ३वो२३द्र४वि४णो५दा५ः। पू२र्णाम्विव२ष्ट्वा२सिच२म्२। ऊद्वा२ऽसिंचा४२ु। ध्व२मुपवा२पृ२ण२ध्व२म्२। आदिद्वोदे४२ु। व ओ ह२ते२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ २४॥

१. मूलग्रन्थेऽत्र......ऋव......इति लिखितम्। —सम्पादकः

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५६. प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥

१. प्रै५तू२३ब्र४ह्मा५ण४स्प४। तीप५ः। प्र२दायिवियें२। तु२सूनृता २३। अछाऽ२उवा३२३४यि४रा५म्५। नर्यम्प२। ङ्क्ति२राधा२ऽ साऽ२ ३म्३। देवाऽ२उया३२३४ज्ञा५म्५। नाऽ२उया३२३४अ५ हो५वा५। तू३२ ३४ना५ः ॥ २५ ॥

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—यूपः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५७. ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥

१. ऊ२र्ध्व२ऊ२षु२णा२३ऊताऽ२३४या५यि५। तिष्ठा देवो न सविता। ऊर्ध्वोवाऽ२३जा२। स्या सनि२ता२। यादञ्जिभी४२उः। वा२घाद्भी४२उः। वीवी४२उ। ह्व२यामाऽ२३हा२३४ऽ३यि३। ओऽ२३४५यि५। डा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५८. प्र यो राये निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत्।
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम् ॥

१. प्र४यो४रा४या४ऽ५यि५नि५नी५ष४ता४यि४। मर्तो यस्ते व२ सो दाशत्। सवीराऽ२३धा२ ॥ ता अग्न२उ२। उक्क्थ२श२ꣳ२ सिनम्। त्मना साऽ२३हा२। स्त्र२पोषाऽ२३यि३णा२३४ऽ३ म्३। ओऽ२३-४५यि५। डा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५९. प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम्।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे यं समिदन्य इन्धते ॥

१. प्र५वा४ः। य२ह्वंपुरू ऽ२ ३णा२। म्२। वि२शा न्देव२यता ऽ२ ३ यि३ना२म्२। अ२ग्निंसूक्ते भिर्व्वचोभिर्वृ२णीमा ऽ२ ३हा२ यि२। या४सा४२मायिदा४२न्२। य इन्ध२ते२। इडा ऽ२ ३भा २ ३४ ऽ३। ओ ऽ२ ३४५यि५। डा५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—उत्कीलः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
६०. अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥

१. अ५य५म५ग्नि५स्सु५वी५र्य५स्य५हा५उ५। आयिशे२हि२ सौभाग२स्या२। होवा२ ३हा२यि२। रा२यईशे२स्वपत्य२। स्या गो२ऽमाता ऽ२ ३ः। होवा२ ३हा२यि२। ई२शेहा ऽ२ ३यि३व्रे२ ३। होवा२ ३हा२। त्राहाथा२ना२म्२। इडा ऽ२ ३भा२ ३ ऽ४ ऽ३। ओ ऽ२ ३४५यि५डा५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
६१. त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च वार्यम् ॥

१. त्व४म५ग्ने५गृ५ह४प५ता४यि४ः। त्वंहोता नो२अध्वरायि। त्वम्पो ऽ२ ३ता२। वायिश्ववा२। र२ प्रचायिता२ः। अ३हो२ ३४ वा३हा२यि२। याक्षायि या ऽ२ ३सी२ ३। होवा२ ३हा२यि२। च२ वारा ऽ२ ३या२ ३४ ऽ३म्३। ओ ऽ२ ३४५यि५। डा५ ॥ ८ ॥ ३० ॥

२. त्व४म५ग्रे५गृ५ । हा४ऽ५प५ती४ः । त्वꣳ२ुहो३२३४ता५ । नो२ अ२ध्वा३२३४रा५यि५ । त्वाऽ२ुम्पो३२३४ता५ । वि२श्वा२ुवा ३२३४रा५ । प्र२चे२ता२३ः । यक्षाये२३ । या२ुसा३२३४औ५ हो५वा५ । च२वारिया३२३४५म्५ ॥ ३१ ॥

३. त्व५मा२३ग्रे४गृ५हा४प४ती५ः । त्वꣳहोता२नो२अध्वररे२ । त्वाऽ२३म्पो३ता२ु । अ३हो२३४यि४ । अ४हौ । ५ । वा३हा२ यि२ । वायिश्ववा२ । र२प्रचा । येता२ुः । अहो२३४यि४ । अ४ होवा३हा२यि२ । यक्षायियासा२ु । अ३हो२३४यि४ । अ४हो५ । वा३हा२यि२ । व२वाराऽ२३या२३४ऽ३म्३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २
६२. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्त्तास ऊतये ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥

१. स५ । खा५य५स्त्वा५अ५हो४हो४हा५यि५ । व२वृ२ु । मा३२३४ हा५यि५ । दे२वंमर्त्ता२३हा२३ । स ऊऽ२ुता३२३४या५यि५ । अ२पान्नपा[1]२३ । त४ꣳ४सु५ । भा३गौ२ । वा२३हा२३यि३ । सूदꣳ२ुसा३२३४सा५म्५ । सु२प्रतूऽ२३र्त्ती२म्२ । अ२नेहाऽ२३ सा२३४ऽ३म्३ । ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ छै ॥ ३३ ॥

ऋषिः—श्यावाश्ववामदेवौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
६३. आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् ।
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र
इडस्पदे नमसा रातहव्यं सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥ १ ॥

---

१. मूलपाठेऽत्र '......न्नप२३' इति लिखितम् । —सम्पादकः

१. आ४जु५हो५ता४। ह२विषा मर्ज्या४२ध्वा उ वा४२। नि होतारंगृहपतिं दधा४२यि२ध्वा उ वाऽ२३४। इ३डा२३४स्प३ दा२यि२। नमसा रात२हाव्या४२म्२। सापर्य२ता। याजातं२ पाऽ२३। स्ति४यो४वा५। आ४ऽ५नो५६हा५यि५। दू॥ ३४॥

ऋषिः—उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—जगती॥
स्वरः—निषादः॥

६४. चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावन्वेति धातवे।
अनूधा यदजीजनदधा चिदा ववक्षत्सद्यो महि दूत्यां३ चरन्॥

१. ओयि। चित्रइछायिशो२ऽस्तरुणऽ२३। स्या४ऽ३व२क्ष३थ५ः। ओयि। न यो मातारा२ऽवनुवाऽ२३यि३। ती४ऽ३धा२त३वे५। ओयि। अनूधा यादजीजनाऽ२३त्३। आ४ऽ३धा२चि३दा५। ओयि। ववक्षत्साद्यो२ऽमहिदूऽ२३। ति३या२३ञ्चा४ऽ५रा५६ ५६न्६। दू२त्यञ्चरन्महे३२३४५॥ श्रौ॥ ३५॥

२. चि५त्रा५६ए५। ए२३ऽ२३४। शि४शो५स्त४रु५ण५स्य५व५ क्ष४थ५ः। क्ष४थ५ः। हि५हि५हि५या५६हा५उ५। ए२३ऽ२३४। न४यो४मा४त४रा५व५न्वे४ति५धा४त४वे५। त४वे५। हि५हि५ हि५या५६हा५उ५। ए२३ऽ२३४। आ४नू५धा४य४द४जी५ज५ न५द४धा४चि५दा४चि४दा५। हि५हि५हि५या५६हा५उ५। ए२३ऽ२३४। व४व४क्ष५त्स५द्यो४म४हि५दू५ति४य५ञ्च४र५ न्५। च४र५न्५। हि५हि५हि५या५६। हा५उ५। वा५। ए२३। क्रे२तून्॥ ङो॥ ३६॥

ऋषिः—बृहदुक्थः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

६५. इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व।
संवेशनस्तन्वे३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥

१. ओ३ऽ४हा५। ह३हा२३२। इ२दन्तए। का२३म्परः। ऊ२त३ए४
का५म्५। तृ२ती<u>ये</u>ना। ज्यो<u>ति</u>षा२३। स२म्वि३श४स्वा५।
संवेशनाः। त२नु<u>वे</u> चा२रु३रे४धी५। ओ३ऽ४हा५। ह३हा२
यि२। प्रि२<u>यो</u> <u>दे</u>वा। न२३म्परा। मा२३४ऽ३यि३। जा२३
ना४ऽ५यि५त्रा५६यि५ ॥ ३७ ॥

ऋषिः—कुत्सः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

६६. इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥

१. इ३मा२ः२स्तो३२३४मा५म्५। अ२र्ह२हा२ते३२३४जा५।
ता<u>वे</u>दसे२३। होयि। र३था२मी३२३४वा५। स२म्मा२हे३२३४
मा५। मा<u>नी</u>२षया२३। होयि। भ३द्रा२ही३२३४ना५ः। प्र२मा२
ती३२३४ रा५। स्य। स२ः२सदे२३। होयि। अ३ग्ना२यि२
सा३२३ख्या५। यि५। मा२रा२यि२षा३२३४मा५। वाय२न्तवा
२३। हो२३४५ यि५। डा५ ॥ ३८ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

६७. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥

१. मू५र्द्धो४हो४हा५यि५। न२न्दा३२३४यि४वा५ः। अरतायिम्।
पृथी२३व्या२ः। <u>वै</u>२श्<u>वा</u>नराम्। ऋ२तआ। <u>जा</u>२त३म४ग्री५म्५.

क२वी२ःसम्राजमतिथायिम्। जेनाऽ२३ना२। म्२। आ२सन्नष्पा। त्रा२३ञ्जनाया२३४ऽ३। ता२३दा४ऽ५यि५वा५६५६ः॥ ३९॥

२. हो४वा५यि५। मू५र्द्धो४हो५यि५। नं२दायि। वा२३अरातिरु म्पृ३थी४व्या५ः। इ२हो२इ२या२३। इ३ॅया२। वै२श्वानराम्। ऋे२तआ। जा२उत३म४ग्नी५म्५। इ२हो२इ२या२३। इ३ॅया२। क२वि२ःसंम्प्रा। जा२३मति। थि२उञ्ज३ना४ना५म्५। इ२हो२इ२ या२३। इ३ॅया२। आ२सन्नष्पा। त्रा२३ञ्जनाय२उन्त३दे४वा५ः। इ२ हो२इ२या२३। [१]इेऽ२उ। या३२३४। अ५हो५वा५। ई३२३ ४५॥ ४०॥

इत्यर्द्धः प्रपाठकः॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

६८. वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः।
तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिं न गिर्ववाहो जिग्युरश्वाः॥

१. वि४त्व४त४। ओ४हा४यि४। आपो न पर्व्वतस्य२पाऽ२३ष्ठा२ त्२। ऊ२क्थे२भिरग्ने जनयन्त२दाऽ२३यि३वा२ः। तन्त्वा गिरस्सुष्टुतयो वाज२याऽ२३न्ती२। आ२जिन्न गायिर्व्वेवाऽ२३ हा२३ः। जाये२३। ग्यूऽ२उरा३ २३४अ५हो५वा५। अ२श्वाऽ२३ ४५ः॥ १॥

२. हा५। य३या२उयि२उदि३वो४हा५यि५। वि४त्व५त्५। आपो। न२पर्व्व। त२उस्य३पृ४ष्ठा५त्५। हा५। य३या२उयि२उदि३वो४हा५ यि५। उ४क्था५यि५। भिरा। ग्ने२३जन। यं२उत३दे४वा५ः।

१. अत्र 'एऽ२' इति स्यात्। —सम्पादकः

हा५ । य३या२उदि३वो४हा५यि५ । तं४त्वा५ । गिराः । सु२ष्टु२
तयः । वा२उ ज३यं४ती५ । हा५ । य३या२उयि२उदि३वो४हा५यि५ ।
आ४जी५म्५ । न गायिर्व्वाऽ२३हा२३ः । जाये२३ । ग्यूऽ२उरा
३२३४अ५हो५वा५ । अ२श्वाऽ२३४५ः ॥ २ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २
६९. आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।
३ २ ३ १ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् ॥

वामदेव्यम्—

१. आ४वो५रा५जा४ । न३म२ध्व३ । र२उस्य३रु४द्रा५म्५ । हो ।
ता२ । राम् । स२ । त्ययजा२३म्३ । रो२उद३सी४यो५ः । अ२ग्निं
पु । रा । त२न२यि३ । त्नो२उर३चि४त्ता५त्५ । हिरण्य२ । रू ।
पा२३मवा । सा२३४ऽ३यि३ । का२३र्णू४ऽ५ध्वा५६म्६ ॥
दे ॥ ३ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३ २उ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७०. इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि ॥

वैश्वज्योतिषे द्वे—

१. इं३धा२३ऽ२३४यि४ । हा५उ५ । ३ । रा४जा५स४म५र्यो४न४ ।
मो४भि५रो४भी५ःओ४भी५ः । हा५उ५ । ३ । य३स्या२३ऽ२३४ ।
हा५उ५ । ३ । प्र४ती५का५मा४हु५तं५घृ५ । ता४यि४ना५ ।
आ४यि४ ना५ । आ४यि४ना५ । न३रा२३ऽ२३४ः । हा५उ५ । ३ ।

हप्व्ये४भि५ री५डा५ते५स५। बा४धा५बा४धा५:। बा४धा। आ३ग्ना२३ऽ२३४यि४। हा५उ५।३। अ२ग्र२मुषसाऽ२३ म३ शा२उ२। वा२३ ची३२३४५॥ री॥ ४॥

२. हौहो४२ु। २। हौहोयि। इं२धे२रा२जा२स२म२र्यो२ना२३ मोभी४२ुः। ओभी४२ुः। २। य२स्य२प्र२ती२क२मा२हु२तं२ घ्रे२३ तायिना।४२ु। आयिना४२ु। २। न२रो२ह२व्ये२भी२री२ ड२ते२सा२३बाधा४२ु। बाधा४२ुः। हौहो४२ु। २। हौहोयि। आ२ग्नि२र२ग्र२मु२षसाऽ२३म३शा२उ२। वा२३ची३२३ ४५:॥ ५॥

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

७१. प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति।
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध॥

याम द्वे—

१. प्र२के२तुना। बृ२ह२ता या। ति२यग्नायिः। होइहोवा२३होइ। आ२रो२दसायि। वृ२ष२भो रो। र२वीतायि। होयिहोवा२३ हौयि। दि२व२श्चिदा। ता२दुपमाम् उ२दानाट्। होइहोवा२३ होयि। अ२पा२मुपा। स्थे२महिषो। व२वर्द्धा। होयिहोबा२ हा२३ऽउ। बाऽ२३। दे२३। दिवाऽ२३४५म्५॥ ६॥

२. हा५। हा२अ२होर्२ुयि२ु। प्रा३२३४के५। तुना। बृ२ह३ता२३। या२ुति३य४ग्नी५:। हा५। हा२अ२होर्२ुयि२ु। आ३२३४रो५। दसायि। वृ२ष३भो२३। रो२ुर३वी४ती५। हा५। हा२अ२हो२ु

यि२ु । दी३२३४वा५ः । चिदा । ता२३दुप । मा२ुमु३दा४न५ट्५ ।
हा५ । हा२अ२हो२ुयि२ु । आ३२३४पा५ । म्५उपा।स्थे२३
महिषो२ुव३व४र्था५ । हा५हा२अ२हो२ु । वा३२३४अ५ । हो५
वा५ । ए२३ । दिवाऽ २३४५म्५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिपाद्विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७२. अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥

इन्द्रस्य वैराजे द्वे—

१. हा५उ५ । ३ । आ४ग्नी५म्५ । न२राः । ३ । दी२३धिति । भि२र३
र४ण्यो५ः । हा५उ५३ । हा४स्ता५ । च्यु२ताम् । ३ । ज२नयात२
प्र३श४स्त५म्५ । हा५उ५३ । दू४रा५यि५ । दृ२शाम् । ३ ।
गृ२हपति२म३थ४व्यु५म्५ । हा५उ५३ । वा५ । ई३२३ ४५ ॥ ८ ॥

२. हा५उ५३ । आ४ग्नी५म्५ । न२राःदी२३धिति । भि२र३र४
ण्यो५ । ण्यो५ । ण्यो५ः । हा५उ५३ । हा४स्ता५ । च्यु२ताम् ।
ज२नय । त२प्र३श४स्त५म्५ । स्त५म् । २ । हा५ । उ५३ । दू४रा५
यि५ । दृ२शाम् । गृ२हपाति२म३थ४व्यु५म्५ । व्यु५म्५ । २ ।
हा५उ५३ । वा५ । ई३२३४५ ॥ ९ ॥

[इति] दशतिः ॥

ऋषिः—बुधगविष्ठिरौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७३. अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ ॥

श्यैतम्—

१. अ४बो५धि५या४। ग्नायिस्स२मि। धा२जना२ॅना२म्२। प्रता-
यिधे२३नू२म्२। इ२वा२य२तीमुषासा२म्२। यह्वाई२३वा२।
प्रवा यामु२। जिह्वा२ना२ः। प्रभानाऽ२३वा२ः। स२स्त्र२ते२
नाक२मच्छ२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५।
डा५॥ १०॥

ऋषिः—वत्सप्रीः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २
७४. प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरैरमूरं पुरां दर्माणम्।
१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २
नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम्॥

शुक्रम्—

१. प्र४भू५र्जा४यं५ना४म्४। म३हा२३४ऽ३म्३वि२पो३धा५म्५।
मू२रै२रमूरं पुरान्दॅर्म्माऽ२३णा२म्२। न३या२३४ऽ३न्त२ङ्गी३
र्भि५ः। व३ना२३४ऽ३धि२यं३धा५ः। ह४रि५श्म५श्रु५न्न४व४
र्म्म५णा५६। हा५उ५वा५। ध२ना२३र्च्चीऽ२३४५म्॥ ११॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—पूषा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
७५. शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २
विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥

१. शु५क्रं४ते५अ५न्य४द्य५ज५त४म्४। त५आ५६न्या५त्५।
विषुरूपे अहनी द्यौः। ईंवाऽ२३सी२। वायिश्वाहिमायाअव-
सायि। स्वधा२३वा२न्२। भ२द्रा ते२। पू। षा२३निह। रा२ति३
र४स्तु५। ति४ रा४ऽ५स्तु५हा५उ५वा५॥ १२॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७६. इडामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥

कौत्सम्—

१. इ५डा५म५ग्ना५यि५। पु२रु२दा२३। सं२ुस३नि४गो५ः। श४श्व४त्त४मं३ह३व४मा५ना५। य३सा३२३४धा५। स्यान्नस्सूनुस्तनयः। विजा२३वा२३। आ४ग्ने५सा४ता५यि५। सु३मा२३४ऽ३। ती२३ः। भू४तु४हा५उ५वा५। स्मा३२३४५यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—वत्सप्रीः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७७. प्र होता जातो महान्नभोविन्नृषद्मा सीददपां विवर्ते।
दधद्यो धायी सुते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥

काश्यपे द्वे—

१. प्र४हो४ता५जा५ता४ः। म२हान्नभोविनृषद्माऽ२३सी३दा२त्२। अ२पां विवर्त्तायि। दधद्योऽ२३ धा२। या२यि२। सु२ते२व२यां सियं३ता२उ२। वा२। वासूनि२वि२ध२। ताऽ२ु। या३२३४अ५हो५वा५। त२नू२३पाऽ२३४५ः ॥ १४ ॥

२. प्र४हो४ता५जा५त४ः। उ५हु४वा४हा५यि५। माहा४२ुन्नाभो५२ु। वायिनृषद्मासीददपाम्विवाऽ२३र्त्ता२यि२। आअ२३हो२। इहा२। दाधा४२ुद्योधा४२ु। यायिसुतेवयांसियता-वसूऽ२३नी२। आअ२ ३हो२। इहा२। वि२ध२तायेर३। तनूऽ२ुपा३२३४अ५हो५वा५ह२ विष्मते३२३४५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७८. प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु ॥

घृताचेरांगिरसस्य सामम्—

१. प्र५सं५म्रा५जा५म्५ । अ२सु२रा२३ । स्या२ुप्र३ श४स्तां५म्५ । पुं२सष्कृष्टायि । ना२३मनु । मा२ुदि३य४स्या५ । इं२द्र२स्ये२ वा२३४ऽ३प्र२त२व३ । स२स्कृ३तॉनी५ । वं२दद्वारा२ वंदमा२ ना२ । विवाऽ२ुष्टू३२३४अ५हो५वा५ । वी३२३४ शा५ः ॥ १६ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
७९. अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइवेत् सुभृतो गर्भिणीभिः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ २
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥

भरद्वाजस्य प्रासहम्—

१. अ५र५ण्यो५ः । नि२हि२तो२जा२३४ऽ३त२वे३दा५ः । ग३र्भ४ इ४वे३त्सु३भृ४तो५ । ग५र्भि३णा३२३४यि४भी५ः । दि२ वेदिवईड्योजागृवाऽ२३द्भी२ुः । हा३२३४वि५ । ष्मा३२३४ द्भी५ः । म५नु५ ष्ये४ऽ५भि५र५ग्नि४ः । ए५हि५या५६हा५ । हो४ऽ५ । यी५ । डा५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—पायुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८०. सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अनु दह सहमूरान् कयादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥

राक्षोघ्नम्—

१. अ३हा२ । वो२३हा२ । वो३२हा२ । स२नादग्नायि । मृ२णसि । या२तु३धा४ना५न्५ । न२त्वारक्षा । सी२३पृत । ना२सु३जि४ ग्यू५ः । अ२नुदहा । स२हमू । रा२न्क३या४दाः५ । अ३हा२ । वो२३हा२ । २ । मृ२तायिहे२त्याः । मु२क्षतद्दा२३४ऽ३यि३ । वी२३या४ऽ५या५६५६ः ॥ १८ ॥

[इति] दशतिः ॥

ऋषिः—गय आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

२ ३ १ २३ १ २ ३ २३ १ २
८१. अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो ।
१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २३ १ २
प्र नो राये पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥

१. आग्ना२उओ३२३४वा५ओ२जि२ष्ठा२३मा । भारा२उओ३२३४ वा५ । द्यु२म्नमस्मभ्य२म२ध्रि२गो२३ । ओयि । प्राना२उओ३२३४ वा५ । रा२येपनी२य२से२३ । ओयि । रात्सा२उओ३२३४वा५ । वाजा२य२ पंथा३२३४५म्५ ॥ १९ ॥

२. अ४ग्ने४हा५उ५ । ओजि । ष्ठामा२ऽभारा२ । अ३हो३२३४वा५ । द्यु२म्नमस्म । भ्यामध्रीगा२ । अ३हो३२३४वा५ । प्रनो राये । पानी२ऽयासा२ । अ३हो३२३४वा५ । रात्सी४२२वाजा४२ । य२पोवा२३ओऽ२३४वा५ । था४ऽ५वो५६हा५यि५ ॥ २० ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८२. यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
आजुह्वद्धव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम् ॥

आ [ा] ग्नेयम्—

१. य३दि४वी४रो३अ३नु४र्ष्य५त्। ऐ२या२३४ऽ३ई२३४या५।
अ४ग्नि३मिं४धी५त५मौ। ५। होऽ३हा२३। होऽ२३४। त्तिं४या
४:। आजू४रुह्वाद्धाऽ२३। व्यमाऽरुनू३२३४षा५क्५। शर्म्म
भ२। क्षायि। त दा२३हा२३यि३। वा२३ओऽ२३४वा५। व्या
३२३४म्५॥ २१॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

८३. त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि संच्छुक्र आततः।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे॥

यामम्—

१. त्वे२षास्तेऽ२३धू४म४ऽऋ४ण्व४ति४हा५उ५। दि२वि२सं२
शु२क्रा२३आताता२३:। सू४रो४न४ही४हा५उ५। द्यु२ता-
तूवा२३म्३। कृ४पा४प४वा४हा५उ५। क२रोचाऽ२३सा२
३४ऽ३यि३। ओ२३ ४५यि५। डा५॥ २२॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

८४. त्वं हि क्षैतवद् यशोऽ ग्ने मित्रो न पत्यसे।
त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि॥

आग्नेयं बृहत्—

१. त्व४ं४हि४क्षै४त५व५द्य४श५:। ई४प५इ४या४हा५यि५।
अग्नायिमि२। त्रो। नाप२र्त्य३२३४सा५यि५। आअ२३४५हो५।
इ४या४हा५यि५। त्वंवि। चा। र्षणेऽरुश्रा३२३४वा५:।

आअ२३४होप्र । इ४या४हा५यि५ । वासा२३उ३वा२ । पु२ ।
ष्टायिम् । नापु२ष्या३२ ३४सी५ । आअ२३४हो५ । इ४या४
हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—मृक्तवाहा द्वितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८५. प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते ॥

कौमुदस्य स [ा] मम्—

१. प्रा५त५र५ग्रा५यि५ष्पू५द्रु५प्रि५या५ः । वि२शास्त२वे२ताऽ
२३ । अ२ति३था२यि२ः । वायिश्वे यास्मी२३न्३ । अमाऽ२ु
र्त्ता३२३४या५यि५ । हव्याऽ२३ं३होयि । मर्त्ता२३हो । स२
इन्धाऽ२३ता२३४ऽ३ यि३ । ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—वसूयव आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८६. यद् वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो ।
१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
महिषीव त्वद् रयिस्त्वद् वाजा उदीरते ॥

यद्वाहिष्ठीये द्वे—

१. य४द्वा४हि५ष्ठं५त४दा४ । ग्रयायि । बृहदर्च्चं वि२भावाऽ२३
सा२ उ२ । माही४२ुषायिवा४२ु । त्वद्रयिः । त्वद्वाऽ२३जा२ः ।
उ२दीराऽ२३ता२३४ऽ३यि । ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ २५ ॥

२. य४द्वा४हि५ष्ठं५त४द५ग्न४ये५ । य५द्वा५हि५ष्ठो४वा५ । त२
दग्नयायि । बृहदा२३र्च्चा२ु । वि२भावसाउ । महिषाऽ२३
यि३वा२ । त्वद्रयिः । त्वद्वाऽ२३जा२ः । उ२दीराऽ२३ता२३४
यि३ । ओऽ२३४५ यि५ । डा ॥ २६ ॥

ऋषिः—गोपवनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८७. विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥

विशोविशीयम्—

१. विशोविशोहुं। वोअतिथायिम्। वाजयंताः। पूरूप्रीयारम्। अग्निंवो। दूरा याम्। हुंमायि। वाचाः। स्तूषेहायि। ओहुवायि। शू षा। हुम्मा। स्यामा। न्माभायि। एहियाहा। होयि। डा॥ २७॥

१. विशो विशो हुं। वो अतिथायिम्। वाजयंताः। पूरूप्रीयारम्। अग्निंवो। दूरायाम्। हुंमायि। वाचाः। स्तूषेहायि। ओहुवायि। शूषा। हुम्मा। स्यामा। न्माभायि। एहियाहा। होयि। डा॥ २७॥

ऋषिः—पूरुरात्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८८. बृहद् वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये ।
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः ॥

प्रजापतेश्च कनिनीके द्वे—

१. बृ५ह५द्व५या५ः। हि२भाना२३वा२यि२। आर्च्चादि२वा२। य२अग्ना२३या२यि२। यम्मित्रन्न। प्राशस्ता या४२युयि२। मर्त्तासो२३दा२३। धि४रोवा५। पू४५रो५६हा५ यि५॥ २८॥

२. बृ५ह५द्व५यो५हि५भा५ना५६वा५यि५। आर्च्चादि२वा२। य२ अग्ना२३या२यि२। यम्मित्र२न्न२। प्राशस्ताया४२युयि। मर्त्ता२ सो२द२। धायिरे२ऽपूरा२। अ ३हो३वा३हा२३४ अ५हो५वा५। वा२३हा२३४५ः॥ २९॥

ऋषिः—गोपवनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८९. अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।
यः स्म श्रुतर्वन्नार्क्षे बृहदनीक इध्यते ॥

श्रौतर्वणम्—

१. अ५ग५न्म५वृ५ । त्रा२३हान्ता२३मा२म्२ । ज्यायिष्ठ२म२ । ग्निमाना२३ वा२म्२ । यस्माऽ२३होयि । श्रु२तर्वन्नारक्षायि । बृहाऽ२३द्वोयि । आनीक२या२३ऽउवाये२३ । ध्या३२३४ ते५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—वामदेवः, कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वतः; उभौ वा ॥
देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

९०. जातः परेण धर्मणा यत् सवृद्भिः सहाभुवः ।
पिता यत्कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः कविः ॥

१. जा२त२ष्प२रे२णा२३धा । इ३हा२ । म२णा । इ३हा२ु । यो३२३४ नी५म्५ । योनिमिंद्रश्च२ग२छ२थ२ः । य२त्स२वृ२द्भि२स्सा२३हा । इ३हा२ । भु२वाः । इ३हा२ु । यो३२३४नी५म्५ । योनिमिन्द्रश्च२ ग२च्छ२थ२ः । पि२ता२य२त्क२श्या२३पा । इ३हा२ । स्या२ग्नायि । इ३हा२ु । यो३२३४नी५म्५ । योनिमिंद्रश्च२ग२च्छ२थ२ः । श्र२द्धा२ मा२ता२मा२३नूः । इ३हा२ । क२वायि । इ३हा२ु । यो३२३४नी५म् । योनिमिंद्रश्च२ग२च्छ२था३२३४५ः ॥ ३१ ॥

[इति] द्वितीयः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—अग्निस्तापसः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

९१. सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥

बार्हस्पत्यम्—

१. सोऽमप ःपराअजापनंपवअरुपणाअम्अ। अरग्निमन्वारभारमर
हे२३। होवा२३हा२यि२ आ२दि२त्यंविष्णु२ः२। सूर्य२म्२।
होवा२३हा२यि२। ब्र२ह्माणाऽ२३ञ्चा२३। होवा२३हा२यि२।
ब्रेहा३ॅउ३वा२३। पा३२३४तीपम्प ॥ १ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अङ्गिराः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

९२. इत एत उदारुहन् दिवः पृष्ठान्या रुहन्।
प्र भूर्जयो यथा पथोद् द्यामङ्गिरसो ययुः ॥

यामम्—

१. आरो३ॅहा२न्२। ३। इ२त२ए२त२ऊ२३दारू२ऽहा४२ु न्२।
दि२व२ष्पृ२ष्ठा२नी२३यारू२ऽहा४२ुन्२। प्र२भू२र्ज्ज२यो२
या२३था पा२ऽथा४२ु। उ२द्या२म२ङ्गि२रा२३सो या२यू४२ुः।
आरो३ॅहा२न्२। २। आऽ२३रोऽ२ु। हा३२३४। औ५हो५वा५।
ऊ३२३४पपॅ ॥ २ ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितो देवलो वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

९३. राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि।
ईडिष्वा हि महे वृषं द्यावा होत्राय पृथिवी ॥

१. रा५ये५अ५ग्ने५म५हा४यि४ त्वा। दानाय समिधीमाऽ२३हीर।
आयिडी४रुष्वाही४रु। म२हे वृषन्। द्यावा४रुहोत्रा४रु। य२
पोवा२३ओऽ२३४वा५। था४ऽ५यि५वा५६हा५यि५।५॥३॥

२. रा२याया ऽ२३ग्ने४म४हे४त्वा४हा५उ५। दानाय समिधीमाऽ२३
हा२यि२। आइडायिष्वा२३हा२३यि३। माहे२ुवा३२३४ऋ४
षा५न्५। द्यावा हो२३त्रा२३। य२पोऽ२३४वा५। था४ऽ५यि५
वो५६हा५यि५॥४॥

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ २३ २
९४. दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्मेति वेरु तत्।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत्॥

त्वाष्ट्री साम—

१. दऽ४ध४न्वे४वा४ऽ५य५दी५म४नू४। वोचद्ब्रह्मेतिवेरुतत्।
पारिविश्वा४रु। नि२का व्या। नायिमिश्चक्रौ२वा२ु। ई३२३४
वा५। भु२वात्। अऽ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥५॥

ऋषिः—पायुः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

१ २३ १२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
९५. प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३क २र ३क २र
यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्ज वीर्यम्॥

अगस्त्यम्—

१. प्र३त्य४ग्ने५। हो२ुयि२ु। ह३र४सा४ह४रा५६ए५। शृ२णाहि२
वाऽ२ुयि२ु। श्व३ता२३४५ः। पा३२३४री५। या२तु२धानस्य२
र२क्षसो३। बाऽ२३ला२म्२। नियुब्ज२वोऽ२३४वा५। री३२
३४या५म्५॥६॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१ २ ३ १ ३ ३ २ ३ १ २ ३ ३ ३ २
९६. त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
यजा स्वध्व रं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥

मानवम्—

१. त्व४म५ग्ने५ । त्व४म५ग्ना४यि४ । व२सूः२रिहा । रुद्राः२आऽ२३ दी२ । ति२या२उता । यजासूऽ२३वा२ । ध्व२रं जनम् । मनुजाऽ२३ता२म्२ । घृ२त२प्रुष२म्२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २
९७. पुरु त्वा दाशिवाँ वोचेऽ रिरग्ने तव स्विदा ।
३ १ २ ३ २उ ३१ २
तोदस्येव श र ण आ महस्य ॥

तौदे द्वे—

१. पु५रु४ । त्वा२दाशिवाङ्वोचाये२३ । आ४री५रा४ग्रा५यि५ । ता२वस्विदा । तो२दस्येव शरण आऽ२३होयि । महाऽ२३ होये२३ । स्यो२ । या३२३४अ५हो५वा५ । ई३२३४५ ।५ ॥ ८ ॥

२. पु५रु४त्वा५दा५शि५वा४ । ङ्वो५चे५ । आ२री२रा३२३४ग्रा५ यि५ । ता२व२स्वा३२३४यि४दा५ । तो४द३स्ये४व५श५र५ । ण३यो३२३४हा५यि५ । मा३ऽहा२ऽ३ । हुंमाये२३ । स्योऽ२ । या३२३४ अ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ ९ ॥

दैर्घतसानि त्रीणि—

३. पु५रु४त्वा५दा५शि५वा४ङ्वो५ । चे५चे५[1] । अ२रायिराऽ२३४ ग्रा५यि५ । ता२व२स्वा३२३४यि४दा५ । तो२दास्याऽ२३४यि४

१. अत्र 'चे५' इत्यधिकं प्रतीयते मूलगानग्रन्थे । —सम्पादकः

वा५। शा२रा२ुणा३२३४या५। मा२३हा४ऽ५स्या५६५६।
ए२३ऽ॥ १०॥

४. पु५रु५त्वा२३दा४शि५वा४ङ्वो४चे५। अ२रिर। ग्रायि। तवाऽ२ुस्वा३२३४यि४दा५।तो३२३४दा५।स्या३२३४यि४वा५। शा२रा२ुणा३२३४या५।मा२३हा४ऽ५स्या५६५६॥ ११॥

५. पु२रुत्वाऽ२३दा४शि४वा४ङ्वो४चे४हा५उ५।हा२ु।अ३होऽ३ हा२ु।ओ३२३४वा५।अ२रिरग्रे२तवस्वि२दा।हा२ु।अ३होऽ३ हा२ु।ओ३२३४वा५।तो२दस्ये२व२श२र२णआ।हा२ु।अ३ होऽ३हा२ु।ओ३२३४वा५।ए२३।म२हस्या३२३ ४५॥ १२॥

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

१८. प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽ ग्नये भरता बृहत्।
विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे॥

१. प्र५हो५त्रे५पू५।र्व्वि२यं वचो।अग्नयाऽ२३यि३भा२।र२ता-बृहत्।विपाञ्ज्योऽ२३ती२।षि२[१]बाये२३।भ्राऽ२ुता३२३४ अ५हो५वा५।न वे२धसे३२३४५॥ १३॥

२. प्र५हो५त्रा२३यि३पू४र्व्वि५यं४व४चा५ः। अ२ग्नये२भरता३ बे२।हाऽ२३त्३।वि२पा३ज्यो३ता२ुयि२ु।षी३२३४[२]बि५। भ्र३ता२३यि३। नाऽ२३वे४ऽ३। धाः२३४५सो५६हा५ यि५॥ १४॥

---

१. मूलपाठेऽत्र 'वा' इति लिखितम्।
२. मूलपाठेऽत्र 'वि' इति लिखितम्। —सम्पादकः

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

९९. अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥

प्रजापतेः श्रुधीये द्वे—

१. अ४ग्ने४वा४जा४ऽ५स्य५। गो५म५तो४वा४। ई२शा। न२स्सा ह२ सो३य२हो। अ२स्मायिदे२हि२जातवे२दो२म। हाऽ२३ यि३। श्र३वा२उ२वा२। श्रूधिया४२ु। एऽ२३हि३या२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५ ॥ १५ ॥

२. अ५ग्ने५वा५ज५स्य५गो५हुं५। म५तो४हो४हा५यि५। ई२शान२ स्सा। हासो२ुया३२३४हो५। आस्मे२ऽदायिही२३। जा४त५। वे३दा२३ः। माऽ२३ही४ऽ३। श्रा२३४५वो५६हा५यि५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१००. अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवां देवयते यज।
होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः ॥

प्रजतेः सदो हविर्धानानि त्रीणि—

१. अ५ग्ने५य५जि५ष्ठो५अ५ध्व५रा५६ए५। दे२वा२न्दे२व२। या२३तायिया२ऽजाऽ२ु। हु३वा२३। हो३ँवा२। होतामं२द्र२ः। वि२राजा२ऽसीऽ२ु। हु३वा२३हो३ँवा२। अ२तिस्रा‍ऽ२३यि३ धा२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५। डा५ ॥ १७ ॥

२. अ५ग्ने५। इ२या२३४ऽ३ई२३४या५यजिष्ठो अध्वरायि। देवान्देवयते४२ु। हौहो४२ु। याजा४२ु। होता४२ु मान्द्रो४२ु।

विराजा२३सी२। आ५२। ति३या२३४अ५हो५वा५। स्त्री३२ ३४धा५:॥ १८॥

३. अ५ग्न५ई४या५। ओ४वा५। यजिष्ठोअध्वरायि। देवान्दा५२३ यि३वा२। याते२ऽयाजा४२। होता२३उ३वा२। मं२द्रो२वी२३ रा५२३। जा५२सा३२३४अ५हो५वा५। अति२स्त्रिधा३२३ ४५:॥ १९॥

ऋषि:—त्रित:॥ देवता—पवमान:॥ छन्द:—उष्णिक्॥ स्वर:—ऋषभ:॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
१०१. जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा॥

१. ज५ज्ञा५न५स्सा५। स२मा२। त्तृभायि:। मेधा२मा३२३४शा५। स२त२श्रायायि। अँया५२। ध्रू३२३४वा५:। रया५२३यि३ णा२म्। चिकाये२३। ता५२दा३२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४ पा५॥ २०॥

ऋषि:—इरिम्बिठि:॥ देवता—अदिति:॥ छन्द:—उष्णिक्॥ स्वर:—ऋषभ:॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१०२. उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्यागमत्।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सा शन्ताता मयस्करदप स्त्रिधः॥

अर्कजभम्—

१. उ५त५स्या२३नो४५दि५वा४म४ती५:। आदिति२रू२। ति२ यागा२ऽमा४२त्२। साशंता२३ता२३। मा४। य५:। क३ रा२ओ३२३४वा५। अ४प४५५स्त्रि५धा५:। हो४५५यि५। डा५॥ २१॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०३.ईडिष्वा हि प्रतीव्यां३ यजस्व जातवेदसम्।
चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्॥

अगस्त्यस्य च राक्षोघ्नम्—

१. ई२डायिष्वाऽ२३हि४प्र४ती५वि५या५म्५। याजस्व२ जा। त२वे३द२साऽ२३म्३। च२रि३ष्णु३धू२। मा३२३४म५। गृ३ भा२३यि३। ताऽ२शो३२३४अ५हो५वा५। ची३२३४ षा५म्॥ २२॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०४.न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः। यो अग्नये ददाश हव्यदातये॥

१. न५तो४वा४। स्या३२३४मा५। य२या चाऽ२३ना२। रि२ पुरीशीत२मा२३ऽउवाऽ२३। ती३२३४या५ः। योअग्नये२ँद२ दा। श हव्यदोऽ२३४वा५। ता३२३४ये५॥ २३॥

ऋषिः—ऋजिष्वा भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०५.अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम्॥

अगस्त्यस्य च राक्षोघ्नम्—

१. अ३प४त्यं३वृ४जि५न५म्५। रि३पू२म्२। स्ते२ना३२३४५म्५। अ२ग्ना२यि२। दु२राधाऽ२३या२३४म्४। द३वि४ष्ठ५म५स्य५ स५त्५। प३ता२३यि३। काऽ२३र्द्धी४ऽ३। सू२३४५४गो५६ हा५यि५॥ २४॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३क २र ३ १ २ ३ १ २
१०६. श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह॥

१. हा५उ५श्रु५ष्ट्य५ग्ने५न५व५स्य५मे५हा५उ५। स्तो२मास्य२ वायि। र२वि२श्पताये२३४। ऐ५ही५हा५उ५हो४वा५। नि२ मा२यिनाः। त२पसा२राऽ२३४। ऐ५ही५हा५उ५हो४वा५। क्षासाऽ२३४ः। ऐ५ही५हा५उ५हो४वा५। द२ह२ए२३४। हि५या५६हा५। हो४ऽ५यि५। डा। ५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—प्रयोगो भार्गवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१०७. प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये॥

इन्द्रस्य प्रमाꣳहिष्ठीयानि चत्वारि—

१. प्र५म५ꣳ५हा२३यि३ष्ठा४य४गा५य५ता५। ऋ२ताव्ने४२ु। बृहते शुक्रा२३शो४ऽ३। चा३२३४यि४षा५यि५। उ२पाअ२३ हो२। स्तोतासो२३आ४ऽ३। ग्ना२३४५यो५६हा५यि५ ॥ २६ ॥

२. प्र४मꣳ४हि५ष्ठा५य५। गा४ऽ५य५ता४। ऋ२ता४२ुऽ२ऽ। व्ने४२ु। बृ२हाता२ऽयिशू४२ु। क्र२। शोचाऽ२३यि३षा२यि२। उ२प२। स्तुतौ४२ु। हुवायि। हो३वा२३। स२ओऽ२३४वा५। ग्ना४ऽ५ यो५६हा५यि५ ॥ २७ ॥

३. प्र३म३ꣳ३हि४ष्ठा५य५गा५। इ२या२३४ऽ३ई२३४या५। यतऽ ऋताव्नेबृहते शुक्र२शौ४२ु। हौ४२ु। हुवा४२ुयि२। चायिषा४२ु यि२। उपा२३होयि। स्तुता२३होसो२अग्नाऽ२३या२३४ऽ३ यि३। ओऽ२३४ऽ५यि५। डा५ ॥ २८ ॥

४. प्र४म४ꣳ४हि५ष्ठा५य५गा५य५त५ । प्र५म५ꣳहि५ष्ठो४वा५ । यागायरतर । ऋता ऽ२३न्ना२३४ । यि४ । बृ४ह४ते३शु४क्र४ शो५ । चा२३यि३षा२यि२ । उ२पौ२हो२वा२३हा२यि२ । स्तु२तौ२ हो२वा२३हा२३ । स२ओ ऽ२३४वा५ । ग्रा४ऽ५यो५६हा५ यि५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०८. प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः ।
यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥

भरद्वाजस्य वा—

१. प्रासो२३हा२यि२ । आग्ने२३हा२यि२ । त२वा२३ऽउवा ऽ२३ । ती३२३४भि५ः । सु२वीराभि२स्त२र२ति२वाजक२र्म्म२भि२ः । यास्या२३हा२यि२ । त्वाꣳसा ऽ२३ । ख्य४मो४वा५ । वा४ऽ५ यि५थो५६हा५यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०९. तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे । देवत्रा हव्यमूहिषे ॥

सौभराणि त्रीणि—

१. तं५गू४ऽ३र्द्धा२३या४सु४व५र्ण५रो४वा५ । दे२वासोदेवमरा४ रुतायिं दैधा ऽ२३ । हो । न्वा३२३४यि४रा५यि५ । दे२व२त्राहा । व्यमू३हा२३ । हा ऽ रुयि रुषा३२३४अ५हो५वा५ । ऊ३२३ ४५ ॥ ३१ ॥

२. तं५गू५र्ध्द५या५सु५व५र्णा४रा५म्५। दे२वासो२दायि। व२म३ र२ता२३यि३म्३। द२ध३न्वि३रा२। उ२वा२३। दे३२३४ वा५। त्रा२हा२३। व्य४मो४वा५। हा४५यि५षो५६हा५ यि५॥ ३२॥

३. तं५गू५र्ध्द५या५स्वौ५हो४र्णा४रा५म्५। देवा२सो३२३४दे५। वमरता२यि२म्२। दा३२३४धा५। न्वा३२३४यि४रा५। यि५। हा२हो३२३४हा५। देवा२त्रा३२३४हा५। व्य३मू२३ हा४५यि५। षा३२३४५यि५॥ ३३॥

ऋषिः—प्रयोगो भार्गवः; सौभरिः काण्वो वा॥ देवता—अग्निः॥
छन्दः—ककुबुष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २३ १ २ ३ २ ३ २
११०. मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः।
२ ३ १ २ ३२
यः सुहोता स्वध्वरः॥

सौभरस्य सामनी द्वे—

१. मा४। ना४ः। हृ२णी३ऽथाऽतिथी२३म्३। वासू२रा३२३४ ग्नी५ः। पु२रौ२हो२वा२३हा२यि२। प्र२शौ२हो२वा२३हा२३। स्त२ओ२३४वा५। आ४५यि५षो५६हा५यि५॥ ३४॥[1]

२. मा४नो४हा५उ५। हा२३४। र्णी४था४अ३ति४थि५म्५। वा२ सू२रा३२३४ग्ना५यि५ः। पु२रौह२होयि। प्र२शौह२हो। स्ता२ ३४ए४षा४ः। ए५हि५या५६हा४। हौ४५यि५। डा५॥ ३५॥[1]

---

१. मन्त्रोक्तस्य 'यः सुहोता स्वध्वरः' इत्यस्य पादस्य गानं मूलपाठे न विद्यते। —सम्पादकः

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२
१११. भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः ।
३ २ ३ १ २र
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥

दैवानीकम्—

१. भ४द्रो३ऽ४न५ः । हो२यि२ । अ३ग्नि४रा४हु४ता५६ए५ । भ३ द्रा३रा२तायिः । सु२भगाभा२३ । द्रोऽ२ध्वा३२३४रा५ः । भ२ द्राऊऽ२३ता२३ । प्राऽ२३शा४ऽ३ । स्ता२३४५यो५६हा५ यि५ ॥ ३६ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
११२. यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥

गौतामम्—

१. या३ऽ५जि५ । ष्ठं५त्वा४ऽ३वा२३वृ४म४हा५यि५ । दे२वंदेवत्रा होताऽ२३रा२म्२ । आमर्त्ति२य२म् । आस्यैं याज्ञाऽ२३ । स्याऽ२३ सू४ऽ३क्रा२३४५तो५६हा५यि५ ॥ ३७ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
११३. तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासाहा सदने कं चिदत्रिणम् ।
३ १ २र ३क २र
मन्युं जनस्य दूढ्यम् ॥

जमदग्नेः सांवर्गम्—

१. त४द४ग्ने४द्यू४ऽ५म्नं५ । आ५भ५रो४वा४ । य२त्सासाऽ२३हा२ । सदाऽ२३ना२यि२ । कं२चि२दत्राऽ२३यि३णा२म्५ । मान्युञ्-

नस्य दूऽ२३होऍ। ढाऽ२३४या४म्४। एृ५हि५या५६हा५।
हो४ऽ५यि५।डा५॥ ३८॥

ऋषिः—विश्वमना: ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

११४.यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे।
विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति॥

१. यर्द्वाऊऽ२३वि४श्प४ति५शि५ता५:।सुप्रीतो२मनुषो२वि२
शे।विश्वायिदाऽ२३ग्नी२:।प्रति२रक्षाऽ२ु।सि३से३ध२ता।
अर३ इहो४वा५।हो४ऽ५यि५।डा५॥ ३९॥

[इति] आग्नेयं पर्व्व, अर्द्धप्रपाठकः॥

[इति प्रथमोऽ ध्यायः॥ १॥ द्वादशः खण्डश्च॥ १२॥]

[अथ] ऐन्द्रं पर्व

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २ २उ ३ २ ३ १ २
११५. तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने॥

रौद्रे द्वे—

१. त५द्वौ५हो४वा५। गायाऽ२ु। सु३ता२ुयि२ुसा३२३४चा५। पुरुहू२ता२। य२सात्वा२ऽना४२ुयि२। शंयत्। हा। अ२३ हो२ुयि२ु। गा३२३४वा५यि५। नाऽ२ुशा३२३४अ५हो५वा५। ए२३। किनेऽ२३४५॥ १॥

२. त५द्वो५गा५या५। सु२ता२ुयि२ुस२चा२३। पूरूऽ२३हू३ ता२३४। हा३हो२३। या स२त्वा३२३४ना५यि५। शं२यद्गाऽ २३वे२। न२शौ४२ु। हौ४२ु। हुवोऽ२३४वा५। का४ऽ५यि५ नो५६हा५ यि५॥ २॥

मार्गीयवे द्वे—

३. त५द्वो५गा५य५सु५ते५स५चा५६ए५। पु२रु२हू२ताय सत्वने२। पुरुहू२ता२। यासँत्वाऽ२३ना२३४यि४। शं४य५त्५। गौ२वा२ुओं३२३४वा५। नाऽ२३शा४ऽ३। का२३४५यि५ नो५६हा५ यि५॥ ३॥

४. त५द्वो५गा५य५सु५ते५स५चा५६ए५। पु२रु२हू२ताय सत्व-नायि। शंयद्गाऽ२३वे२। ऐ४२ुहो२ऽआऽ२३यि३ही२। न२ शाऽ२३। काऽ२ुयि२ुना३२३४अ५हो५वा५। इ३२३ ४५॥ ४॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३१ २र
११६.यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः। तेन नूनं मदे मदेः ॥

१. य४स्ते४नू४ना४ऽ५ २ं५श५त५क्र४ता४उ४। इंद्रद्युम्नितमो मा४२ुदाः। ते२ननूनाऽ२३म्मा२। दायिमौं३उँ३वा२३। दे३२ ३४५ः॥५॥

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २ ३२ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
११७.गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया ॥

मैटते द्वे—

१. गा४व५ः। ए४गा४वा५ः। उ२प२व२। दा२३। वाऽ२ुदा३२३४ अ५हो५वा५। वा३२३४टे५। म२ही२ुया३२३४ज्ञा५। स्य३ रा२३। स्याऽ२ुरा३२३४अ५हो५वा५। प्सू३२३४दा५। उ२भा२ु का३२३४र्णा५। हि३रा२३हाऽ२ुयि२ुरा३२३४अ५हो५वा५। ण्या३२३४ या५ ॥ ६ ॥

२. ओ२ुयि२ुगा३२३४वा५ः। उ२प२वा२३दा। वादा२ुओ३२३४ वा५। म२ही[1]यज्ञस्य२र२प्सुदा२३। ओ२ुऊ३२३४भा५। कार्णा२ुओ२३४वा५। हि२र२ण्ययाऽ२३४५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
११८.अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥

श्रौतकक्षे द्वे—

१. अ३रा२३४म्४। अ४श्वा४य४। गा५या५द्ता५। श्रूतक२ क्षा३। राङ्गावा२ुयि२ु। आ३२३४रा५म्५। हा२३हा२यि२। इ।

१. मूलग्रन्थेऽत्र 'यज्ञस्य' इत्यस्य स्थाने 'जँज्ञस्य' इति लिखितम्। —सम्पादकः

द्रास्याऽ२३धा२ । हुम्माये२३ । म्नो२ु । या३२३४अ५हो५वा५ । ई३२३४ति५ ॥ ८ ॥

२. अ४र५म४श्वा५य५गा५य५ता५ । र५म५श्वो४वा५ । या गा़य२ त२ । श्रुत२क२ । क्षाऽ२३ । हा२३हा२३यि३ । आराऽ२ुङ्गा३२ ३४वा५ । यि । आरमिंद्रा२३ । हा२३हा२ । स्याधा२म्ना । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २र ३२ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २
११९.तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत् ॥

तन्वस्य पार्थस्य सामनी द्वे—

१. त२मिंद्राऽ२३म्वा४ज४या५म५सि५ । माहेवृ२त्रा२ । य२हान्ता२ ऽवे४२ु । स२वाऋषा२ऽवाऽ२३ । ष२भोऽ२३४वा५ । भू४ऽ५ वो५६हा५यि५ ॥ १० ॥

२. त२मिंद्राऽ२३म्वा४ज४या४म४सि४हा५उ५ । माहेवृ२त्रा२ । य२ हान्ता२ऽवेऽ२३ । होवा२३हा२यि२ । स२वाऋषा२ऽवाऽ२३ । होवा२३हा२ । ष२भोऽ२३ । भूऽ२ुवा३२३४अ५हो५वा५ । ए२३ । दा२वसू३२३४५ ॥ ११ ॥

वासिष्ठम्—

३. त५मिं५द्रं५वा५ज५या५म५सी५६ए५ । म२हा२३हा२यि२ । वृ२त्रा३ॅयाँहन्तवे४२ु । ओ४२ु । ई४२ु३ॅया२ । ओमोवा२ । स२ हे२ वारिषा४२ु । ओ४२ु । ई४२ु । ३ॅया२ । ओमोवा२ । वृ२ष२ । भोऽ२ु । या३२३४अ५हो५वा५ । भू३२३४वा५त्५ ॥ १२ ॥

इडानाꣳसंक्षारः—

४. अ२हो२यि२हु२वा२३होयि। त२मिं२द्रं२वा२३जा४ऽ३या२ुम३ सि५। अ२हो२यि२हु२वा२३होयि। म२हे२वृ२त्रा२३या४ऽ३ हं२ुत३वे५। अ२हो२यि२हु२वा२३होयि। स३वा२ुऋ२ुषा३२ ३४वृे५। ष२भो२भु२व२त्२। इडाऽ२३भा२३। ए४ही४डा५। हो४ऽ यि५। डा५॥ १३॥

ऋषिः—इन्द्रमातरो देवजामयः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१२०. त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं सन्वृषन्वृषेदसि॥

सार्यात्तानि त्रीणि—

१. हा५उ५त्व५मिं५द्रा५। ब२लादधि२। हा२३उ३हा२उ२। सहसो२जा२। ताओ२ऽजसा२३ः। हा२३उ३हा२उ२। त्वाꣳ सन्वृषा२३न्३। हा२३उ३हा२उ२। वृ२षाये२३त्३। आऽ२ु सा३२३४अ५हो५वा५। वृ२धे२ऽऽ॥ १४॥

२. त्व५मिं५द्र५ब५ला५द५धी५६ए५। सहसो२जा२। ताओ२ऽ जस२ुः। इ३या२३होयि। इ३या२ुयो३२३४वा५। त्वाꣳसन्वृष२ न्। इ३या२३होयि। इ३या२ु३यो३२३४वा५। वृ२षाये२३त्३। आऽ२ु सा३२३४अ५हो५वा५। म२हे२ऽऽ॥ १५॥

३. त्व५मिं५द्र५ब४ला५द४धि५स४ह५सा४। जाता४२ुः। ओज साऽ२३४ः। इ४हो५इ५हा४। त्वाꣳसन्वृषा२३४न्४। इ४हो५ इ५हा४। वृ२षाये२३त्३। आऽ२ुसा३२३४अ५हो५वा५। ई३२ ३४हा५॥ १६॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २

१२१. यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि ॥

इन्द्राण्याः साम—

१. य५ज्ञ५इं५द्र५म५व५र्द्धा५६या५त्५। य२द्भूमिम्। व्या५। व्यँवाऽ२ र्त्ता२३४या५त्५। चा३२३४क्रा५। णा३२३४ओ५। पाशं२दि२वि। च२क्रा३ण२ओऽ२३। पाऽ२शाँ[1]३२३४अ५ हो५वा५। दी३२३४वि५॥ १७॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३२उ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

१२२. यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥

गौसूक्तम्—

१. य४दिं५द्रा५हं४य४थौ५। हौ४हो४वा४हा५यि५। तु५वा४म्४। ई२शीयवस्व२अ४२। हुवायि। हुवाये२। काई४२। त्२। स्तो२ता मे गो स२खौ४२। हुवायि। हुवाये२। साया ऽ२३त्३। होऽ२३२३४अ५हो२वा५। अ२ग्निराहु२ता३२३४५:॥ १८॥

आश्वसूक्तम्—

२. आ२अ३हो४वा४। हा५यि५। य५दिं५द्रा५हा५म्५। य२था। त्वम्। ऐ२ही२यै३ही२ऽ। आयिशीय२व२स्व२[2]आयिकईत्। ऐ२ही२यै३ही२ऽ। आ४२यि२। स्तोता४२मायिगो४२। स२ खाऽ२३। साऽ२या३२३४ अ५हो५वा५। [3]शु२क्रआहु२ता३२ ३४५:॥ १९॥

---

१. मूलग्रन्थेऽत्र 'साँ' इति लिखितम्। २. मूलग्रन्थेऽत्र 'श्व२' इति लिखितम्।
३. 'शुक्र आहुत' इत्यधिकः पाठः। —सम्पादकः

ऋषिः—मेधातिथिराङ्गिरसः प्रियमेधः काण्वश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१२३.पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय ॥

गौवितम्–

१. प४न्यं५प५न्य५मि४त्४। सो५ता५६रा५ः। पन्यं पन्यमित्सो२ऽ
ता२३राः२। आ। धा२व२त३। म२दि३या४या५। सोमं वी२।
राऽ२३। य३शू२३रा४ऽ५या५६५६ ॥ २० ॥

ऋषिः—मेधातिथिराङ्गिरसः प्रियमेधः काण्वश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१२४.इदं वसो सु तमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन् ररिमा ते ॥

गाराणि त्रीणि–

१. इ५दं५व५सा५उ५। सु२त४। माऽ२३न्धा२ः। पिबा२ॅसु२पू२।
ण२ मुदाऽ२३रा२३४म्४। अ३ना२३४भ३या२३यि३न्ऽ३।
र४रो४ वा५। मा४ऽ५तो५६हा५यि५ ॥ २१ ॥

२. इ५दा४ऽ३म्३व२सो३सु४त४मं४धाः५। पि२बासूऽ२३पू२३।
णमूऽ२ुदा३२३४रा५म्५। आऽ२३ना२। भा४२ुयायिन्। रराँऽ
२३। हा२उ२वा२३। माते३२३४५ ॥ २२ ॥

३. इ५दं५व५सो५सु५त५मं५धा५६ए५। पि२बा२सु२पू३ॅर्णामुँदरौ
२। हो२३वा२। पिबासुपूर्णामूँदरौ२। हो२३वा२। आनाभा२३
यी२न्२। ररिमा२ताअ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—सुकक्षश्रुतकक्षौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २
१२५.उद् घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥

सौपर्णानि त्रीणि—

१. उ५द्घे५द५भ्यो४वा५ । श्रूता२मा३२३४घा५म्५ । वृ२षाभ२
न्ना । रिँया२रुपा३२३४सा५म्५ । आ४रुस्ताराऽ२३मे२ । षायिसू
२रि२या । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

२. उ५द्घे५द५भि५श्रु५ता५मा५६घा५म५म्५ । वृ४ष४भ३न्न४
र्या५ । हुं । पा३२३४सा५म्५ । आस्ता२३उ३वा२ । रा२मायि ।
षि२सूऽ२ ३४वा५ । रा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ २५ ॥

विलम्बसौपर्णम्—

३. उ४द्घे४द५भि४श्रु५ता४म५घ५म्५ । ई४य५इ४या४हा५यि५ ।
वृ४ष४भ३न्न४र्या५ । हा२३हा२३यि३ । पऽ२३४सा५म्५ ।
आस्ता२३उ३वा२३ । राऽरुमा३२३४अ५हो५वा५ । षि२सू२
रि२या३२३४५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—सुकक्षश्रुतकक्षौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१२६. यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥

साकालम्—

१. ध४द४द्य४का४ऽ५च्च५वृ५त्र४हा४न्४ । उ२दगाअभि२सूराऽ२
३ या२ । सार्व्वा४रुम्२ । तादिंद्र२तायेर३ । हुं । वा२३४५शो५६
हा५ यि५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१२७. य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । इन्द्रः स नो युवा सखा ॥

भारद्वसवे द्वे—

१. य४आ४हा५उ५ । आनाया४२ुत्२ । आनायाऽ२३त्३ । पाराऽ२ु वा३२३४ता५ः । सुनीतीतू४२ु । सुनीतीतूऽ२३ । व्र्वाशं२या३२ ३४ दू५म्५ । इन्द्रस्साना४२ुः । इंद्रस्सानाऽ२३ः । यूऽ२ु३वा३२ ३४ अ५हो५वा५ । सा३२३४खा५ ॥ २८ ॥

२. य४आ४न५य४त्४ । प५रा५वा५६ता५ः । सुनीतीतुर्व्वशा२ऽ या२३दू२म्२ । इन्द्रस्स नो युवा२ऽसा२३खा२ । इं२द्रो३२३४ ग्रा५यि५ । इं२द्राअ२३हो३२३४ । ग्रा५यि५ । आयिंद्रो२अ२ । ग्राऽ२ु । या३२३४अ५हो५वा५ । ई३२३४न्द्रा५ः ॥ २९ ॥

ऋषिः — श्रुतकक्षः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१ २   ३ २   २ ३ १ २ ३ १   २र
१२८. मा न इन्द्राभ्याऽऽ३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत् ।
२ ३ १ २ ३ २
त्वा युजा वनेम तत् ॥

तान्वे द्वे—

१. मा५न५इं५द्रा५भि५या५दा४यि४शा५ः । सूरोअ२क्तु२ । षु२वायाऽ२३मा२३४३४[1]त्४ । तु३वा२३४यु३जा२ । व२ना- यिमाऽ२३ ता२३४ऽ३त्३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३० ॥

२. मा५ना४ऽ३आ२३यिं३द्रा४भि४या५दि५शा५ः । सू२रो२ुआ३२ ३४क्तू५ । षू२आ२ुया३२३४मा५त्५ । त्वायुजावनौ३ँहो२ । म२तौ४२ु । हुवायि । अ३ँहो३२३४५वा५६५६ । ए२३ । ययुऽ२ ३४५ः ॥ ३१ ॥

॥ [इति] तृतीयः प्रपाठकः ॥

---

१. अत्र '३४' संख्येयं द्विष्कृत्य विस्मृत्या लिखितेति प्रतीयते । —सम्पादकः

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१२९. एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर॥

रोहितकुलीये द्वे—

१. एु४न्द्र५सा४। न२सिं२रयिम्। सजित्वानं२स२दासा२३हा२म्२। वा२३ऋ३षी२। ष्ठामूत२या२३ऽउवाये२३। भा३२३४रा५॥ १॥

२. एु४न्द्र५सा५न५सा४यि४म्४। र२या४२ुयि२म्२। स२जित्वानं२स२दासाऽ२३हा२म्२। वाऋषी४२ुष्ठामूऽ२३। त२योऽ२३४वा५। भा४ऽ५रो५६हा५यि५॥ २॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१३०. इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम्॥

१. इंद्राम्। इँद्रम्वाया४२ुम्२। महा। मँहाधाना४२ुयि२। इन्द्राम्। इँन्द्रमर्भा४२ुयि२। हवा। हँवामाहा४२ुयि२। युजाम्। युँञ्जम्वृत्रा४२ुयि२। षुवा। षुँवज्रिणाऽ२३४ऽ३म्३। ओ२३४५यि५। डा॥ ३॥

२. इ५न्द्रं५व५या५म्५। महा। मँहाधानाऽ२३यि३। आअ२३हो२। इह२। इ२हिवाला२ु। ओ३२३४वा५। इं५द्र५म५र्भा५इ५। हवा। हँवामाहाऽ२३यि३। आअ२३हो२। इह२। इ२हिवाला२ु। ओ३२३४वा५। यु५जं५वृ५त्रा५यि५। षुवा। षुँवज्रिणाऽ२३म्३। आअ२३ हो२। इह२। इ२हिवाला२ु। ओ३२३४वा५। ई३२३४हा५॥ ४॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३१. अपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे । तत्रादददिष्ट पौंस्यम् ॥

सहस्रबाहवीयधृषतः—

१. अ५पि५ब५त्का५द्रू५६व५स्सु५ता५म्५ । इंद्राहो४रुयि२ । सहाहो४रु । स्राबा२ऽहुवे४रु । त२त्रादाऽ२३दि२ । ष्ट२पौ४रु । हौ४रु । हुवा४रु यि२ । ईई्या२ । सि२याम् । अऽ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३२. वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र नोनुमो वृषन् । विद्धी त्वा३स्य नो वसो ॥

मारुतम्—

१. व२यमाऽ२३४यिं४द्रा५त्वाऽ२३याऽरुवा३२३४अ५हो५ वा५ । अ२भिप्रनोनु२मो२वृ२ष२न् । २ । वि२द्धारुयिरुतु३वा२३ । स्याऽरुना३२३४अ५हो५वा५ । वा३२३४सो५ ॥ ६ ॥

२. हा५उ५व५य५मिं५द्रा५ । त्वा४रुयावा४रुः । अभिप्रनोनुमो४रु वारिषा४रुन्२ । वि२द्धा४रुयि२तूवा४रु । स्य२नोऽ२३वाऽरु सा३२३४अ५हो५वा५अ२स्म भ्यं२गा२तु२वित्त२मा३२३४५ । म्५ ॥ ७ ॥

दिवोदासम्—

३. व५य५मिं५द्रा५ । त्वाया२३वा२ः । अभिप्रनोनुमो२ऽवा२३ऋ३ षा२न्२ । वि२द्धीरुतू३२३४वा५ । ओ३२३४हा५यि५ । स्य४ नो४वा५ । वा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ ८ ॥

४. व५या५मौ४हो५ । इं४द्रा५ । त्वाया२३वा२: । अभिप्रनोनुमो२ऽ वा२३ऋ३षा२न्२ । वि२द्धी२त्वो३२३४हा५यि५ । स्यानो२३ हा२यि२ । व२सा । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ९ ॥

५. व३या२मौ३हो४वा४हा५यि५ । इं४द्रा५ । त्वा२अ३हो४वा४हा५ यि५ । या४वा५: । आऽ२३भि२ । प्राऽ२३नो२ । ओइनुमो वाऽ२३ऋ३षा२न्२ । वाऽ२३यि३द्धी२ । तूऽ२३वा२३ । स्याऽ२ ना३२३४ अ५हो५वा५ । वा३२३४सो५ ॥ १० ॥

ऋषि: —त्रिशोक: ॥ देवता —इन्द्र: ॥ छन्द: —गायत्री ॥ स्वर: —षड्ज: ॥

१३३. आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥

एध्मवाहानि त्रीणि—

१. आ५घा५ये५अ५ग्नि५मिं५धा४ता५यि५ । स्तृ२णन्तिबर्हिरानु षाक् । ये२षामिंद्रो युवाइहा । ऊवाइ । ऊवोऽ२३४ । वा५ । सा४ऽ५खो५६ हा५यि५ ॥ ११ ॥

२. आ५घा५य५इ४हा४ । ग्नि२मायि । धाता२ओ३२३४वा५ । ई३२ ३४हा५ । स्तृ२णं२ति२ब२ऋ२ही२३रा । नूषा२ओ३२३४वा५ । ई३२३४हा५ । ये२षाऽम् । आयिंद्रा२ओ३२३४वा५ । ई३२३४ हा५ । युवा । युंवाऽ२सा३२३४५खा५६५६ । ई३२३४ हा५ ॥ १२ ॥

३. अ५हो५आ५घा५या५६ए५ । ग्नि२मायिंधाता२ । अ३हो३२३४ वा५ । स्तृ२णै२ति२ब२ऋ२ही२३राऽनूषा२ । अ३हो३२३४

वा५। ये२षामायिंद्रा२। अ३हो३२३४वा५। यु३वा२३।
सा॒२३४खा४। उ५हु५वा५६हा५उ५। वा५॥ १३॥

ऋषिः—त्रिशोकः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१३४. भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हं तदा भर॥

१. भि५। ध्यो४हा४यि४। वायिश्वाअपा। द्वायिषा२ओ३२३४ वा५। पारा२ओ३२३४वा५। बाधोजहायि। मार्धा२ओ३२३४ वा५। वसु२स्पा२र्ह२हन्तदाभ२रा३२३४५॥ १४॥

ऋषिः—कण्वो घौरः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१३५. इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्। नि यामं चित्रमृञ्जते॥

१. इ२हेवा॒२३शृ४ण्व४ए५षा५म्५। कशाहस्तेषुया२॒द्वा२३दा२ न्२। नि२या२मं२ची२३त्रा४॒३मृं२ज३ता५यि५। नि२यामं२ चायि। त्रॅमा॒२रं२जा३२३४ता५यि५। ए३हि३या२३४। अ३ हो४वा५। ए२हि२यौहोयि। ए२हि२यौहो॒२३यि३। ए३२३४ हि५॥ १५॥

ऋषिः—त्रिशोकः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१३६. इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम्॥

पौषम्—

१. इ४म३उ४त्वा४वि३च४क्ष५ते५। ए२३। स४खा४या५ः। इंद्र सोमा॒२३यि३ना२ः। होयिहोवा२। पु२ष्टावा॒२३न्ता२ः। होयिहोवा२३। य२थो॒२३४वा५। पा४॒५शो५६हा५ यि५॥ १६॥

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३७.समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः ॥

सिन्धुसामम्—

१. समस्यामा४२ु । न्या२वेविशाः । विश्वानामा४२ु । ता२कृष्टयाः । समुद्राये४२ु । व२सिंधाऽ२३वा२३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ डा ॥ १७ ॥

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३८.देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम् । वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥

हाविष्मते द्वे—

१. दे५वा५ । ना५म्५ । इ३दा२ुओ३२३४वा५ । ओवा२ुओ३२३४ वा५ । मा३२३४हा५त्५ । त२दावृणायि । माहा२ुओ३२३४ वा५ । वा३२३४या५म्५ । वृ२ष्णामस्मा । भ्यामा२ुओ३२३४ वा५ । ता३२३४ ये५ ॥ १८ ॥

२. हा५उ५दे५वा५ना५मि५द५वो५म५ह५त्ता५उ५ । त२दा-वृणा२३यि३ । माहे२ुवा३२३४या५म्५ । ऐ४२ुहो२ऽआऽ२३ यि३ही२ । वृष्णामाऽ२३स्मा२ । भ्य२मूऽ२३ । ताऽ२ुया३२३४ अ५हो५वा२ । ह२विष्मते३२३४५ ॥ १९ ॥

हाविष्कृते द्वे—

३. दे५वा५ना५मि५द५वे५हा५उ५मा४हा५त्५ । त२दावृणायि । महायिवाऽ२३या२म्२ । वृष्णा४२ुहो२ऽयि । आऽ२३स्मा२ । भ्य२मूऽ२३ । ताऽ२ुया३२३४अ५हो५वा५ । ह२वि२ष्कृते३२-३४५ ॥ २० ॥

४. दे५वा५ना५मि५द५वो५मा४हा५त्५। तादावृ२णी२। म२हा-यिवाऽ२३या२म्२। वृष्णामाऽ२३स्मा२३। भ्य२मू२३४ऽ-वा५। ता४ऽ५यो५६हा५यि५॥ २१॥

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१३९. सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः॥

काक्षीवतम्—

१. सो५मा२३ना४ॅ४स्व४र४णा५म्५। कृ२णूहि२ब्र। ह्म२ण२ स्पताये२३। ओ२३४। हा३हो२यि२। कक्षायिवाऽ२३न्ता२ म्२। य२अ३हो२युयि२उ। अ३हो२ऽ२३४वा५। शा४ऽ५यि५जो५६ हा५ यि५॥ २२॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४०. बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्॥

औषसम्—

१. बो५ध५न्म५ना५:। इदा४२उ स्तूना४२उ। वृ२त्रहा२भू। रॅया२उ [1]सू२३३४ति५:। शृणा२३४अ४हो५। तु३श३क्र२आ। शि। षाम्। अऽ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि। डा५॥ २३॥

ऋषिः—श्यावाश्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४१. अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्। परा दुःष्वप्न्यं सुव॥

भरद्वाजस्य मौक्षे द्वे—

१. अ५द्य४नो५दे५व५स५वि५त५:। अ४हो५वा४। [2]इ२हश्रु

१. अत्र प्रकृतवत् 'सू२३४' अथवा 'सू ३२३४' एवं पाठः स्यात्।
२. 'इह श्रुधि', 'दक्षाय' तथा 'अस्मभ्यं गातु वित्तमः' पदानीमानि मन्त्रे न सन्ति।' --सम्पादकः

धायि। प्रजावाऽ२३त्सा२। वी२स्सौभगाम्। परादूऽ२३ष्वा२३। होवा२३हा२। ष्नि२यःसूऽ२३४५वा५६५६। [1]दक्षा२३याऽ२३४५॥ २४॥

२. अ३द्या२३४। नो४दे४व५सा५। वि४ता५ः। प्र२जा२वत्सा। वी२ स्सौभगाम्। पारा२३दू४ष्वा५। ष्नि२य२ः२सुवोवा२३। ओऽ२३। वा३२३४अ५हो५वा५। [1]अ२स्मभ्यं२गा२तु२वित्त२मा३२३४ ५म्५॥ २५॥

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
१४२. क्वा३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तं सपर्यति॥

भारद्वाजानि त्रीणि—

१. कुऽ२३४व४स्य४वा४ऽ५वा४ऽ५ऋ५ष५भो५यु४वा४। तु२वि२ ग्रीवो४२। अ२नानताः। ब्रह्मकाऽ२३स्ता२म्२। ऐ४२। हो२ऽआऽ२३ यि३ही२। स२पर्या२३ता२३४ऽ३यि३। ओऽ२३४५यि५ डा५॥ २६॥

२. कु४वा५कु४वा५। स्य२वृ२षा२३भोयुँवा३ँ। ओ२३४। हा३हो२यि२। तु२वि२ग्री२वो२आ२३नानैँताँ३ः। ओ२३४। हा३हो२यि२। ब्रह्माऽ२३। काऽ२स्ता३२३४अ५हो५वा५। स२पर२र्य२ती३२३४५॥ २७॥

३. ऐ५ही५यै५ही५। क्वा५स्य५वृ५ष५भो५यु४वा४। ऐ५ही५यै५ही५। तु५वि५ग्री५वो५अ५ना५न४ता४ः। ऐ५ही५यै५ही५।

---

१. 'इह श्रुधि', 'दक्षाय' तथा 'अस्मभ्यं गातु वित्तमः' पदानीमानि मन्त्रे न सन्ति।' —सम्पादकः

ब्र५ह्मा५क५स्त५ऽ५स५प५र्य४ती४। ऐ५ही५यै५ही५। अऽ२ यि२। हि३या२३४अ५हो५वा५। आ३२३४यि४ही५॥ २८॥

ऋषिः—वत्सः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४३. उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत॥

शाक्त्यसामनी द्वे—

१. उपह्व२रायि। गिरा४२युयि२णाम्। सङ्गमे२चा। नदा४२युयि२ नाम्। धियाऽवि२प्रो। अजाय२ता। अयाम्। अ२या२३ऽउ। वाऽ२३। ऊ२३४पा५॥ २९॥

२. इ३दा२मी३२३४दा५म्५। इ२दामि२द३क२म्२। इ३दा२मी३२३४दा५म्५।[1] उ५प५ह्व२रे२गी२३रायिणा२म्२। इ३दा२मी३२३४ दा५म्५। इ२दामि२द३क२म्२। इ३दा२मी३२३४ दा५म्५। सं२ग२मे२च२ना२३दायिना२म्२। इ३दा२मी३२३४ दा५म्५। इ२दामि२द३क२म्२। इ३दा२मी३२३४दा५म्५। धि२या२वि२प्रो२आ२३जायाता२। इ३दा२मी३२३४दा५म्५। इ२दामि२द३क२म्२। इ३दा२३मा४ऽ५यि५दा५६५६म्६। गोष्प२देपृट्॥ ३०॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४४. प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं मंहिष्ठम्॥

१. [2]प्र५सं५म्रा५जा५म्५। चात्रृषा४२णायिना४२म्२। आयिंद्रा ४२ऽ२स्तोताऽ२३। नव्याऽ२ङ्गा३२३४यि४र्भी५ः। नारा४२न्ना त्रृषाऽ२३। ह४म्मो४वा५। हा४ऽ५यि५ष्ठो५६हा५यि५॥ ३१॥

१. मूलपाठेऽत्र 'उ५२प५२' एवं लिखितम्।
२. 'प्र' अस्मादग्रे २,४,५ एतासु काचित्संख्या विद्यतेऽस्पष्टत्वान्न ज्ञायते। —सम्पादकः

२. प्र४सं५म्रा५जो४हा४यि४। चात्रृषाणि२३ना२म्२। आयिंद्राः स्तो२३ता२३। नव्याऽ२ङ्गा३२३४यि४र्भी५ः। ना५र३मो२ यि२। नृ३। षा५। ह३मो२३यि२। म४ः४हा४ऽ५यि५ष्ठा५म्५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ३२॥

प्रस्तोकौ द्वौ—

३. प्र३सं४म्रा३जं४च५। ष३णा२३ऽ२३४यि४ना५म्५। इं२द्राः स्तो२३ता२३। नव्याऽ२ङ्गा३२३४यि४र्भी५ः। न४रं५नृ५षा४हं५ मा४ऽ५ः५हि५। आ५६हा५उ५वा५। ष्ठा३२३४५ म्५॥ ३३॥

४. प्र४सं५म्रा४जं५च५ऋ५ष५णी५ना४मिं४द्र५ः५स्तो५ता५ न४। व्य५ङ्गा५६यि६र्भी५ः। इंद्रः स्तोता नव्यङ्गाऽ२३यि२र्भी२३४ः। न४रं५नृ५षा४ह५म्५। मा४ऽ५ःहि५ष्ठा४म्४। स२ह२मै२है३ँ हे। ऽ२। या३२३४अ५हो५वा५। मः२ही२३ष्ठाऽ२३४५ म्५॥ ३४॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
१४५. अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः। इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः॥

औपगवे द्वे—

१. अ५पा५दु५सि५। प्रि२यन्धसाः। सुदक्षाऽ२३स्या२। प्र२हो२ षिणः। इन्दो राऽ२३यिं३द्रा२ः। य२वाशाऽ२३यि३रा२ः। ऐ२। हियाऽ२ यि२। हि३या२३४अ५हो५वा५। ए२३। उप२३ऽ२३ ४५॥ १॥

२. अ५पा५दू२३शिप्रि४यं५ध५सा५ः। सु२दक्षस्यप्रहोषिणाः। इं२ दौ४२ु। हौ४२ु। हुवाऽ२३यि३। आ२३४यिं४द्रो५। य५वा५ शा४ यि४रा५ः। ऐ२। हा४२ुएऽ२३। हि३या२३४अ५हो५वा५। ए२३। उपा२३ऽ२३४५॥ २॥

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४६. इमा उ त्वा पुरूवसोऽभि प्र नोनुवुर्गिरः। गावो वत्सं न धेनवः॥

त्वाष्ट्रीसामम्—

१. इ५मा५उ५त्वा५। पुरू४२ुवासा४२ुउ२। अभि[1]प्रनोनवू४२ुग्गीयि राऽ२ु। अ३होर२ऽयि। गा२वो२वात्साऽ२३म्३। नाऽ२३धे४ऽ३। ना२३४५वो५६हा५यि५॥ ३॥

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४७. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥

त्वष्टुरातिथ्ये द्वे—

१. आ४त्रा५। [2]हा२गोरमन्वता उ वाऽ२३। होवाऽ२३होयि। नाम त्वष्टुरपी चिया उ वाऽ२३। होवाऽ२३होयि। इ२त्था चंद्रमसो गृहा उ वाऽ२३। होवाऽ२३होऽ२ु। वा३२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥ ४॥

२. हा४वा४त्रा५। हा२गोरमन्वता उ वाऽ२३। होयियाऽ२३। हा४२ु ऊ वा। यि। नाम त्वष्टुरपीचियामिया उ वाऽ२३होवाऽ२३ हा४२ु२ इया। इ२त्था चंद्रमसो गृहा उ वाऽ२३। होइयाऽ२३। हा४२ु ऊ वाऽ२ु। या३२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा॥ ५॥

---

१. मूलवेदेऽत्र 'प्र नोनुवुः' इति पाठः।

२. मूलग्रन्थेऽत्र 'ता२' इति लिखितम्। 'हा२' इत्युचितः पाठः। —सम्पादकः

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २ ३ १ २
१४८. यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभुवत् सचा ॥

१. य५दिं५द्रो५या५। नाया ऽ२३त्३। ओमो२३म्३। ओ४वा५। रितोमहीरापाऽ२३ः। ओमो२३म्३। ओ४वा५। वृषावृँषाऽ२ु। त३मा२३४अ५हो५वा५। तत्र२पूरषाभुरवरत्सचा३२३४५ ॥ ६ ॥

२. य५दिं५द्रो५अ५न५य५द्रि५ता५६ए५। महीरापा४२ुः। महीरापाऽ२३ः। वाऋषं२ता३२३४मा५ः। तत्रापूषा२३। पूऽ२ुषा३२३४अ५ हो५वा५। भुरवरत्सचा३२३४५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
१४९. गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम्। युक्ता वह्नी रथानाम् ॥

श्यावाश्वे द्वे—

१. गौ५र्द्धं५या५६ए५। ति२म२रु२ता२३म्३। श्रवास्युँर्म्मा३ँ। ता२म२ुघो३२३४ना५म्५। युक्तावँह्नायिः। र३था२३। नाऽ२ुमा३२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५ ॥ ८ ॥

२. गौ५र्द्धं५य५ति५म५रु५ता५६मे५। श्र२व२स्युर्म्मा२ँता मघोना२ँम्२। उ२हुवाऽ२३हा२यि२। यु२क्तावाऽ२३ह्नि२ः। उ२हूवा२३। हा२ुयि२ु। र३था२नाम्। अऽ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
१५०. उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम् ॥

प्रजापतेः सुतꣳरयिष्ठीये द्वे—

१. उ२पनोऽ२३ह४रि४भि५स्सु५तो४वा५ । या२हि मदा२३ना३ म्प२ । ताऽ२३ । यि३ । उ२प३नो२३ । हा२३ओऽ२३४वा५ । रा३२३४यि४भी५ः । सु२ताम् । अऽ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा ॥ १० ॥

२. उ५प५नो५हा५हो४हा५ । रा४यि४भी५ः । सूऽ२३ता२म्२ । याहिम२दा२ । नाम्पाऽ२३ता२यि२ । उ३पा२नो३२३४हा५ । राऽ२यि२भा३२३४अ५हो५वा५ । सु२तꣳरयि२ष्ठाऽ२३ ४५ः ॥ ११ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३२ १ २ ३ १ २र
१५१.इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे । अच्छावभृथमोजसा ॥

इष्टाहोत्रीयम्—

१. इ५ष्टा५हो४त्रा५ः । आसृ२क्षा३२३४ता५ । इं२द्रम्वृधा । तौऽ२ ध्वा३२३४रा५यि५ । आच्छा२३वो४भृे५[1] । थ३मो२३जा४ऽ५ सा५६५६ । ए२३ । उ२द२धिन्निधी२ऽः ॥ १२ ॥

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ २उ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१५२.अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह । अहं सूर्यइवाजनि ॥

निधनकामम्—

१. अ४ह४मि४द्धा४ऽ५यि५ । पि५तु५ष्प४रा४यि४ । मे२धामृतस्य जग्रहा । अ२हꣳसूर्याः । इॅवाऽ२३४ । हा३ॅहो२यि२ । जनि । होयि । २ । अ२होअ२होवाऽ२३४५हा५उ५ । वा५ ॥ १३ ॥

---

१. अत्र 'भ्रे५' इति पाठः स्यात् । —सम्पादकः

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५३.रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

वाजदावर्यम्—

१. रे५व५ती५र्न्ना५ः । सधाऽ२मा३२३४दा५यि५ । इंद्राऽ२यि२ सा३२३४न्तू५ । तु२विवा४२जाः । क्षूऽ२३मा२ । तो४२या । भि२र्म्मोऽ २३४वा५ । दा४ऽ५यि५मो५६हा५यि५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—शुनःशेपो वामदेवो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५४.सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम् । देवत्रा रथ्योर्हिता ॥

सोमाः पौषम्—

१. सो५म५ष्पू५षा५ । च२चायिततु२ः । अ३या२यो३२३४वा५ । वायिश्वासाः२सु२क्षि२[१]ती२ । ऽ३नाम् । अ३या२यो३२३४ वा५ । दायिर्वत्रा राऽ२३ । थि३यो२३ऋ३हा४ऽ५यि५ता५६ ५६ । गावोरॅअश्वा३२३४५ः ॥ १५ ॥

[इति] दशतिः ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१५५.पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥

वैतहव्यानि त्रीणि—

१. पा४न्त५मा४वो५अं४न्ध५सा४ः । इं२द्रामाभी२ । प्र२गाया ता२३ । हा२३हा२यि२ । वि२श्वासाह२म्२ । श२ताक्रातू२३

१. हस्तलेखेऽस्पष्टत्वान्नैव ज्ञायतेऽत्र 'तौ२ । ३ नाम्' एवं पाठोऽथवोपरि दर्शित इवास्ति ।
—सम्पादकः

म्३ । हा२३ हा२यि२ । मः२हाइष्ठंचा२३ । हा२३हा२ । ष२ णाऽ२ुयि२ु । ना३२३४अ५हो५वा५ । ऊ२३ऽ२३४ पा५ ॥ १६ ॥

२. पा४न्त५मा४वो५अं४ध५स५ः । इ४हा४ । इं२द्र२मभायि। प्र२गा२ यता४२ु । इहा२ । विश्वासाहः२शता४२ुक्र२तूम् । इहा२ । मः२२ुहा४२ुयि२ष्ठं२चा । इहा२ । ष२णा४२ुयि२नाम् । इहा३२ ३४५ ॥ १७ ॥

ओकोनिधनम्—

३. पा३ऽ५न्त५म्५ । आ४ऽ३वो२३अं४ध४सा५ः । आयिंद्रा- मभायि । प्रॅगाऽ२ुया३२३४ता५ । विश्वाऽ२ुसा३२३४हा५म्५ । शा२३ ताक्रा२३तू२म्२ । मःहि२ष्ठं२चक्रष२ । णाये२३ । नाऽ२ुमा३२३४५अ५हो५वा५ । ओ२३का३२३४५ः ॥ १८ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१५६. प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत । सखायः सोमपाव्ने ॥

शाक्त्यसामानि षट्—

१. प्रवइंद्राऽ२ु । य३मा२ुदा३२३४ना५म्५ । प्र२वा४२ुइन्द्रा । अ२३ हो२ु । या३२३४मा५ । हा२३ना२म्२ । ह२रा४२ुअश्वा । अ२३ हो२ु । या३२३४गा५ । या२३ता२ । स२खा४२ुयास्सो । अ२३ होर२३ । मापोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५०नो५६हा५ यि५ ॥ १९ ॥

२. प्रवा४२ुइंद्रा । अ२३हो२ु । या३२३४मा५ । दा२३ना२म्२ । हरा४२ु । अश्वा । अ२३हो२ु । या३२३४गा५ । या२३ता२ । सखा४२ुयास्सो । अ२३हो२३ । मापोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५ ०नो५६हा५यि५ ॥ २० ॥

३. प्र२व२ईइ३ॅया२। ईइ३ॅया२। इंद्रोईइ३ॅया२। ईइ३ॅया२ु। या३२३४मा५। दा२३ना२म्२। ह२र२ईइ३ॅया२ईइ३ॅया२। आश्वोइ३ॅया२। ईइ३ॅया२ु। या३२३४गा५। या२३ता२। स२ख२ईइ३ॅया२। ईइ३ॅया२। यास्सोईइ३ॅया२। ईइ३ॅया२३। मापोऽ२३४वा५। आ४ऽ५ञ्नो५६हा५यि५॥ २१॥

४. प्र२वौ२होवा४२ु। इंद्रौहोवा२ु। या३२३४मा५। दा२३ना२म्२। ह२रौ२होवा४२ु। आश्वौहोवा२ु। या३२३४गा५। या२३ता२। स२खौ२हौवा४२ु। यास्सौहोवा२३। मापोऽ२३४वा५। आ४ऽ५ञ्नो५६हा५यि५॥ २२॥

५. प्र२वो२दा२३दा। अ२३हो२। इंद्रोददा। अ२३हो२ु। या३२३४मा५। दा२३ना२म्२। ह२रि२दा२३दा। अ२३हो२। आश्वोददा। अ२३हो२ु। या३२३४गा५। या२३ता२। स२खि२दा२३दा। अ२३ हो२। यास्सोददा। अ२३हो२३। मापोऽ२३४वा५। आ४ऽ५ञ्नो५६हा५। यि५॥ २३॥

६. प्र४व५ः। प्र५वा४ः। इं२द्रा२यें२द्रा२। यमादा२ऽना४२ुम्२। ह२रा२यि२ह२र्य२श्वा२। यगाया२ऽ२ता४२ु। सखाया२३स्सो२३। मापोऽ२३४वा५। आ४ऽ५ञ्नो५६हा५यि५॥ २४॥

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१५७. वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते॥

काण्वे द्वे—

१. व५यं५वा४या५म्५। ऊ३२३४त्वा५। ता२दी२ुदा३२३४र्था५ः। इं३द्र४त्वा५यं४त५ः। स३खा३२३४या५ः। २। क३।

ण्वा२३ऽ२३४:। उ४क्थे४भि५र्ज्ज५रं५ते५। ए५हि५या५६
हा५।हो४ऽ५यि५।डा५॥ २५॥

२. व५य५मू२३त्वा४त४दि४द४र्था५:। ऐहीहा४रुयि२। व२
यमुत्वातदिदार्था इंद्र त्वायंतस्स२खाऽ२३याऽ२ु:।
का३२३४ण्वा५:। ऊ। क्थायि। भि२ज्जाऽ२३४वा५।
रं२ता२३या३२३४५॥ २६॥

ऋषि:—श्रुतकक्ष:॥ देवता—इन्द्र:॥ छन्द:—गायत्री॥ स्वर:—षड्ज:॥

१५८.इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिर:। अर्कमर्चन्तु कारव:॥

गौरीवीते द्वे—

१. इं४द्रा५य५म४द्व५ना४यि४। सु२ताम्। इंद्रायमद्वने सु२ताम्।
प२रायिष्टोऽ२३भा२। तु२नोगिरो। अर्क्कमाऽ२३र्च्चा२।
तु२काराऽ२३वा२३४ऽ३:।ओऽ२३४५यि५।डा५॥ २७॥

२. इं५द्रा५य५ म५द्व५ने५हा५उ५।ओयिसू२३ता२म्२।परिष्टो२।
भा।तुँनोऽ२३हा२यि२।गायिरा४रु:।परिष्टोभातु।ओनोऽ२३
हा२यि२।गाइरा४ रु:।अर्क्काऽ२३म्३।आऽरुर्च्चा३२३४
अ५हो५-वा५।ए२३।तु२का२३२वाऽ२३४५:॥ २८॥

श्रौतकक्षम्—

३. इं४द्रा५य५म४द्व५ने५सु५त४म्४।इं५द्रा५य५मो४वा५।द्वा२३
नायिसू२३ता२म्२। परिष्टो२। भाऽ२३। हा२३हा२३। तू
नोऽरुगा३२३४यि४रा५:। आर्क्कमर्च्चा२३। हो२३हा२।
तु२काराऽ२३ वा२३४ऽ३:।ओऽ२३४यि५।डा५॥ २९॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५९.अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥

सौमित्रे द्वे—

१. अ५यं५त५आ५[1]।द्र२सोमो।होवा२३होयि।नि२पूतोआ२३।धीब२ऋ२हा३२३४यि४षी५।आयिही२म२स्याऽ२३।द्राऽ२ुवा३२३४अ५हो५वा५।पी३२३४बा५ ॥ ३० ॥

२. अ५यं५त५इं५द्र५सो५ऽ४मा५ः।निपूतोअधिबा४२ुऋ२हायिषी४२ु। ऐ२हो४२ुयि२मास्या। द्र२वा२पायिबा४२ु। आयिहीमस्याद्र२वा२३ऽउ वाऽ२३।पी३२३४बा५ ॥ ३१ ॥

इहवद्दैवोदासम्—

३. अ४यं३त४इं४द्र४सो३ऽ४म५ः।नाऽ२३४यि४।पू४तो५अ४धि५ब५ऋ५हि४षि५।निपूतोअधि२बऋहऽ२३यि३षी२।ऐ२होयिमाऽ२३स्या२।द्र२वापाऽ२३४५यि५बा५६५६।ई३२३४हा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—प्रजापतिः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६०.सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

रैणवे द्वे—

१. सू४रू५। प२कृत्नुमूत२यायि। सु२दुघा२म्२। इव गो४२ु। दुह२या२३ऽउवाऽ२३।ऊ२३४पा५।जु२हूमाऽ२३सी२द्यविद्यवि२या२३ऽउवाऽ२३।ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ ३३ ॥

---

१. मन्त्रानुकूलमत्र 'आ' इत्यस्य स्थाने 'आयि' अथवा 'इ' इति स्यात्। —सम्पादकः

२. सु५रू५हा५उ५। प२कृत्नुमू४२ुतायाा४२ुयि२। सु२दुघा२म्२। इवगो४२ु। दुहे२। ऐ२ही२यै३ही२ऽ। जु२हौ४२ु। हौ४२ु। हुवा४२ुयि२। मासी४२ु। द्यविद्यवि। ऐ२ही२यै३ही२ऽ॥ ३४॥

३. सु२रू२प२कृ२त्नू२३मूता२३४या५यि५। ओयिसुरूप कृत्नूमू२ऽताया४२ुयि२। ओयिसुदुघामिवागो२ऽदुहा४२ु। यि२। जुहूमसाऽ२ुयि२ु। द्य३वि२द्या३२३४वी५। ऐ४ही५। जूहू४२ुमासी४२ु। द्य२विद्या। वीवीऽ२३। आ४अ५हो५यि५। आ४अ५हो५६वा५। ए२३। द्य२वी२३ईऽ२३४५॥ ३५॥

४. सु४रू५प५क्रे४। त्नूमू४२ुत२यायि। सु२दुघामी२३। वागो२ु दू३२३४हा५यि५। सु४दु५घा५मा४। वागो४२ुदु२हायि। जु२हूमाऽ२३सी२३। द्याऽ२३वी४ऽ३। द्या२३४५वो५६हा५ यि५॥ ३६॥

[इति] चतुर्थः प्रपाठकः॥

ऋषिः—त्रिशोकः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१६१. अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥

१. अ५भि४त्वा५वृ५ष५भा५सु५ता४यि४। सूतꣳसृ२जा२। मि२ पायिता२ऽया४२ुयि२। त्र्यं२पावा२ऽयाऽ२। श्नु२हा२३ऽ उवाये२३। मा३२३४दा५म्५॥ १॥

२. अ५भि५त्वा५वृ५ष५भा५सु५ते५अ५भ्या५हा५उ५। त्वा२ व्रे२३षाभा२ऽसूता४२ुयि२। सूतꣳसृ२जा२। मि२पायिता२ऽ याऽ२ुयि२ु। त्र्यं३पा२३होयि। वि३या२३हो। श्नु२हीमाऽ २३दा२३४ऽ३म्३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २॥

३. अ५भि४त्वा५वृ५ष५भा५सु५ते४। सु५त५ऽ५सृ५जो४वा५। मि२। पी२ता या४२ुयि२। सु२तऽसृजा२मि२। पीताऽ२३ या२यि२। त्राऽ२३म्पा२३। वाऽ२ुया३२३४अ५हो५वा५। श्नु२ ही२मदां३२३४५म्५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—कुसीदी ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६२. य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥

कौत्से द्वे—

१. या३हीरन्द्राऽ२३। च४म५से४षु४वा४ई४या५। सोमश्च२मूषु ते२सु२तः। सोमश्च२मू२। षु२तायिसूऽ२३ता२ः। पाइबे२३ व्दा२यि२। आस्या२३हा२यि२। त्व२मीशाऽ२३यि३षा२३४ ऽ३यि३। ओऽ२३ ४५यि५। डा५ ॥ ४ ॥

२. य५इं५द्रा५चा५मा५६से५षु५वा५। सोमश्चमूषुता२ऽयिसू२३ ता२ः। सो२म२श्च२मू२३। षू२३तायिसू२३ता२ः। आऽ२ यि२। पि२बे२द२स्यो३२३४हा५यि५। त्व३मा२३यि३शा४ऽ५ यि५ षा५६५६यि६ ॥ ५ ॥

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६३. योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥

सौमेधानि त्रीणि—

१. यो४गे५यो५गे५त५व४स्त४रा४म्४। वाजेवा२जे२ह२वा२म२ हे२। स२खायाऽ२३ई२३। द्र२मूऽ२३४वा५। ता४ऽ५यो५६ हा५यि५ ॥ ६ ॥

२. योऽ५गेऽ५योऽ५गेऽ५तऽ५वऽ५स्ताऽ५६राऽ५मऽ५। वाजेँ२वाजेँ२हवा२ऽम२ हे२३। होवा२३हा२यि२। साखा४२ुयाईऽ२३। होवा२३हा२ यि२। द्र२मूऽ२३। ताऽ२ुया३२३४अ५हो५वा५। ऊ२३ऽ२३४ पा५॥ ७॥

३. योऽ५गेऽ५योगेऽ५तऽ५वाऽ५हाऽ५उऽ५स्ता४राऽ५म्ऽ५। वाजेवा२जे२। ह२ वा४२ुमाहायि। हूवायि। अ२३हो३२३४वा५। साखा२य२इ। द्रमू४२ुतायायि। हूवायि अ२३हो३२३४वा५। स३खा३य२आ। हूवा४२ुयि२। ॲ२३हो३२३४५वा५६५६। द्र२मू२३तयेऽ२३-४५॥ ८॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१६४.आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखायः स्तोमवाहसः॥

१. आ३तू२३४। ए४ता४नि४षी५दा५६ता५। इं२द्र२मभाइ। प्र२गा२ यता। साखा२य२स्तोम। वा। अ२३हो२। ववाऽ२ु हा३२३४सा५ः। ह२यायि। साखा२य२स्तोम। वा। अ२३हो२। हुम्माऽ२३। हा२३४५सो५६हा५यि५॥ ९॥

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१६५.इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते। पिबा त्वा३स्य गिर्वणः॥

अंगिरसानि त्रीणि—

१. इ५दा५६मे५हि२या२३नू ओ२ऽजासा४२ु। सूतः२राधा२। नाम्पा२ऽता४२ुयि२। पिबातुवस्यागिर्ँव्वाणाऽ२३४ः। पि३बा २३४तु३वा२३। स्याऽ२ुगा३२३४अ५हो५वा५। वा३२३४ णा५ः॥ १०॥

२. इ५द५ऽ५हि५या५ऽ४अ४हो५। नूऽ३ओ२जा३२३४ सा५। सूतऽ२राधा२। नाऽ३ऽ२मूऽ२। पा३२३४ता५यि५। पिबातु-वस्याऽ२३। ग४। वा४हा५यि५। वाऽ२३४णा४ः। ए५ हि५या५६ हा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ११॥

राधुच्छंदसं क्रोचम्—

३. इ५द५ऽ५ह्य५नू५६ओ५ज५सा५। सु२तऽराधा२। नाम्पातौ२। हो२ वा२३हा२यि२। पि२बातुव२। स्य२गायिर्व्वाणौ२हो२ वा२३ हा२यि२। पि२बातुवौ२। हो२वा२३हा२। स्य२ गाये२३४। वाऽ२ना३२३४अ५हो५वा५। घृ२त२श्चुता३२ ३४५ः॥ १२॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१६६. महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः॥

वाम्रानि त्रीणि—

१. म४हा४ऽ४इं५द्रा५ः। पु२र२श्चनो। मा२ऽही४२त्वामा४२। स्तु२ व२। ज्रिणायि। द्यौ४२र्नाप्रा४२। थि२नाशाऽ२३वा२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५डा५॥ १३॥

२. म५हा५हा५इं४द्रा५ः। पू२३राश्चा२३नो२। महाऽ२यि२त्वा३२ ३४मा५। स्तु२वौ३ऽहौ२३। ह४वा४ऽ५ज्रि५णा५यि५। द्यौर्न्नप्राथि२ नाशँवाऽ२३ः। द्यौ। ऽ२र्न्ना३२३४प्रा५। थि२नौ३ऽ हौ२३। ह४वो४वा५। शा४ऽ५वो५६हा५यि५॥ १४॥

३. म४हा४इं४द्रा४ऽ५ष्पु५र५श्च४ना४ः। मा३हि२त्वा३ऽ२३२३ मा२। स्तु३व२ज्रा३ऽ२३ऽ२३यि३णा२यि२। द्यौ२र्न्ना३ऽ२३ऽ २३प्रा२। थि३ना३श२वा३ऽ२३ऽ२३२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५ यि५। डा॥ १५॥

ऋषिः—कुसीदी काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१६७. आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥

गौरिवीते द्वे—

१. आ५तू५न५आ५[1]। द्र२क्षुमाऽ२३न्ता२म्२। चायित्रं ग्रा२भाऽ २३ः३हा२यि२। संगृ४२भाया। म४हा२ह२स्तो३२३४हा५ यि५। दक्षा४२ यि२णायिना। महाऽ२३। हाऽ२स्ता३२३४अ५ हो५वा५। दक्षि२ णे२३नाऽ२३४५॥ १६॥

२. आ५तू५न५इं५द्र५क्षु५मा४न्ता५म्५। चित्राऽ२ः२ग्रा३२३४ भा५ म्५। सं२गृभा३२३४या५। मा३हा२३। हाऽ२स्ता३२३४ अ५हो५वा५। दक्षि२णे२ना३२३४५॥ १७॥

औपालवेणवे द्वे—

३. आ४तू४न५इ४। द्र५क्षु५मा५६न्ता५म्५। चि२त्रङ्गाभः सङ्गृभा४२या। चि२त्रङ्गाभःसमग्रे। अ२३हो२यि२। भा३२३४या५। ऐ२होयि। महाहस्तीदक्षाऽ२३होयि। औ२ होवा३हो३२३४ वा५। णा४ऽ५ यि५नो५६हा५यि५॥ १८॥

४. आ५तू५न५इं५द्र५क्षू५मा५६न्ता५म्५। चि२त्रङ्गाभः सङ्गृभाया। चि२त्रङ्गाभःसम्। ग्रेऽ२३। ई२३४हा५। भा३२

१. मन्त्रेऽत्र 'इन्द्र' इति पठितं परं गाने 'इ' इत्यस्य स्थाने 'आ' इति लिखितम्। —सम्पादकः

३४या५ । ऐ२होयि महाहस्तीदक्षाऽ२३होयि । अ२हो । वा३
हो३२३४वा५ । णा४ऽ५यि५नो५६हा५यि५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २र ३१ २ ३ १ २ ३२ ३२ ३ २ ३ १ २
१६८.अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥

१. अ४भी५अ४भी५ । प्र२गो३ॅपातिँङ्गिरा४२ु । इंद्रमर्च्चयाथा२ऽ विदाऽ२ुयि२ु । सू३नु२३ः३होयि । सत्यो३२३४हा५ । स्याऽ२ु सा३२३४अ५हो५वा५ । प२ती२३मेऽ२३४५ ॥ २० ॥

२. अ४भी५अ४भी५ । प्र२गो । प२ति३ङ्गि२रा । इन्द्राम् । अ३र्च्चा२ु या३२३४था५ । हुं३ॅहुं२३ । आऽ२३४यि४वि४दा४यि४ । सू४नुः ३स४त्य३स्य४सा५ । हुं३ॅ । हुं२३ । ओऽ२३४वा५ । पा४ऽ५ तो५६हा५यि५ ॥ २१ ॥

महागौरिवीतम्—

३. अ५भि५ । प्र३गो२३ । प४तिं४गि५रा५ । इंद्रमर्च्चयथाविदाऽ२३ यि३ । सूनुःसत्या२३ऽ२३ । स्य४सा४ऽ५त्प५ता५यि५म्५ । सूनुःसत्या२३ऽ२३ । स्य४सो४वा५ । पा४ऽ५तो५६हा५ यि५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
१६९.कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥

वाचस्सामनी द्वे—

१. क५या५न५श्ची५ । त्र२आभू२३वा२त्२ । ऊ२तायिस२ । दा । वार्द्ध२स्सा३२३४खा५ । कयाशा२३ची२३ । ष्ठाऽ२३या४ऽ३ । वा२३४५र्त्तो५६हा५यि५ ॥ २३ ॥

२. होऽ५वाऽ५यि५ । होऽ५वाऽ५यि५क५याऽ५न५श्चि५ । त्र२आभू२३ वा२३४त्४ । होऽ५वाऽ५यि५ । होऽ५वाऽ५ऊ५तीऽ५स५दा५ । वृ२धास्सा२३खा२३४ । होऽ५वाऽ५यि५ । होऽ५वाऽ५यि५क५याऽ५ सं५[१]चा५यि५ । ष्ठ२या । वाऽ२त्तां३२३४अ५ होऽ५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ २४ ॥

३. का३ऽ५याऽ५ । न५श्चा४ऽ३यि३त्रा२३आ४भू४वा५त्५ । ऊ । ती स२दावृध२स्स । खा । अ२३हो३हा२यि२ । कयाऽ२३श३ चा२यि२ । ष्ठ३यौ३हो२३ । हुंमा४२ । वाऽ२र्त्तो२३ऽ५हा२ यि२ ॥ २५ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७०. त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम् । आ च्यावयस्यूतये ॥

सत्रासाहीये द्वे—

१. त्य५मु५वा५ः । स२त्रा२साहा४२म्२ । विश्वासु गीरिषूआ२ऽ याता४२म्२ । आच्याऽ२३ । वाऽ२या३२३४अ५हो५वा५ । सि२यू२३तयेऽ२३४५ ॥ २६ ॥

२. त्या२३४म्४ । उ४व५स्स५त्रा५सा४ह५म्५ । ओ५६वा५ । विश्वासु गीर्ष्वाया४२ताम् । आ४२च्यावाऽ२३या२ । सियौ३हो२ । वा३हा२३४ऽ३यि३ । ताऽ२३४यो५६हा५ यि५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७१. सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिं मेधामयासिषम् ॥

---

१. अत्र सकारस्य स्थाने शकारः स्यात् । —सम्पादकः

१. सा४दा५ । सस्पतायिमॅद्भुता२ु । ओ३२३४वा५ । प्राया२ुओ३२ ३४वा५ । आयिंद्रा । स्या का२ुमा३२३४५या५६५६मृ६ । स२ निम्मे२ॅधामया२सि२षा३२३४५मृ५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७२. ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः । उत श्रोषन्तु नो भुवः ॥

१. हा२यि२ । आ२ऽप्सू२ुदा३२३४क्षा५ः । २ । ये२ते२पं२था२ आ२३धोदिॅवाऽ२३४५ःहा२यि२ । आ२प्सू२ुदा३२३४क्षा५ः । २ । ये२ भि२र्व्य२श्वा२३मायिरॅयाऽ२३४५ः । हा२ुयि२ु । उ३ता२ुश्रो३२३४षा५ । तु२नोऽ२३ । भूऽ२ुवा३२३४अ५ हो५वा५ । ई३२३४ती५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७३. भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो । यदिन्द्र मृडयासि नः ॥

सोमसामम्—

१. भ५द्रं५भा४द्रा५मृ५ । न२आभाऽ२३रा२३ । आ४यि४षा५मू४ र्जा५मृ५ । श२तक्राऽ२३ता२३उ३ । या४दिं५द्रा४मृ५ । डाऽ२ु या३२३४अ५हो५वा५सी३२३४ना५ः ॥ ३० ॥

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७४. अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना ॥

१. अ३स्ति४सो३मो४अ४य३ॅसु४त३ः । अ४ । स्ते४आ४स्ति५ । सो३ मो४अ४य३ॅ३सु४त३ष्पि३ब४न्त्य५स्य५म५ । रु३तो३२ ३४हा५ यि५ । उ४त४स्व४रा४ऽ५जो४वा५ । श्वा४ऽ५यि५ नो५६हा५ यि५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—इन्द्रमातरो देवजामयः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१७५. ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । वन्वानासः सुवीर्यम् ॥

त्वाष्ट्रीसामम्—

१. ई॒५ङ्खय॒५यं५त्तीप॒५५: । अ२पा४२ुस्यूवा४२ुः । आयिंद्रञ्जा२त२म्२ । ऊपा२ऽसाता४२ुयि२ । व२न्वाना॒ऽ२३सा२ः । सु२वीरिया२३ऽउवाऽ२३ । वृ२धेऽऽ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—गोधा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २
१७६. न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि । मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥

गोधासामम्—

१. न५कि५दे॒५वा५ः । इ२नायि । इनीमासा२३यि३ । मासीइँया२ । न५कि५या॒५यो५ । प२या । पयामासा२३यि३ । मासीइँया२ । मं५त्र५श्रु५त्या५म्५ । च२रा । चरामासा२३यि३ । मासीइँया२ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—दध्यङ्ङाथर्वणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१७७. दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण । स्तुहि देवं सवितारम् ॥

१. दो॒४षो॒५आ॒५गा४त्४ । बृ२हद्गा॒या । द्युमद्गाऽ२३मा२न्२ । आ॒थर्व्व३णा२३ । स्तु२हि । औइँहो२३४यि४ । दे॒२वा२३म्३ । स४वो४वा५ । ता४ऽ५रो५६हा५यि५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ २ ३ १ २र ३क २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१७८. एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥

एषस्सामम्—

१. एृ५षो५उ५षा५: । आपूर्व्विर्या२ । व्युच्छरति२ । होवा२३हा२ यि२ । प्रि२यादाऽ२३यि३वा२३४: । स्तु३षा२३यि४वा३ मा२३ । शिव२नोऽ२३४वा५ । ब्रे४ऽ५होे५६हा५यि५ ॥ ३५ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७९.इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर्नव ॥

१. इंद्रोदधीचो अस्थभिरिया४२ुई३ॅया२ । वृ२त्राण्यप्रतिष्कुत इया४२ुई३ॅया२ । ज२घान नवतीर्न्नव इया४२ु । ईऽ२ु । या३२ ३४ । अ५हो५ वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ १ ॥

२. इं५द्रो५द५धा५यि५ । चो२ुअ२स्था३२३४भी५: । वृ२त्राणिया । प्रा२तिष्कुताः । ज२घानाऽ२३ना२ु । व३त्तीर्न्न२वा । अ२३हो४ वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८०.इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महाँ अभिष्टिरोजसा ॥

१. इं५द्रे५हि५मा५हा५उ । त्सी२३आन्धा२३सा२: । वायिश्वे२ भि२स्सोऽ२३हा२३ । माप२र्व्वा३२३४भी५: । महाऽ२३ । आऽ२ुभा३२३४अ५हो५वा५ । ष्टि२रोजसा३२३४५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८१.आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥

१. आ३तू२उअ३हो५। २। न२इंद्र२वृत्रा ऽ२३४हा५न्५। अ२स्मा क२मर्द्ध२म्२। आगा ऽ२३ही२। गाही४२उ। माहा४२उन्माही ऽ२३। भि२रू ऽ२३४वा५। ता४ऽ५यि५भो५६हा५यि५॥ ४॥

ऋषिः—वत्सः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१८२. ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥

१. हा५। हा२उ२वा२३। ओजस्तदस्य२ति२त्वि२षे२ऽ२३४। हा५। हा२उ२वा२। उ२भेयत्समवर्त्त २या३२३४त्४। हा५। हा२उ२-वा२३। इंद्रश्चर्मेॅ२व२रोदसी३२३४५:॥ ५॥

२. ओ४ज४स्त४दा४ऽ५स्य५ति५त्वि४षा४इयि४। उ२भेयत्सम वर्त्तयादा२ऽयिंद्र ऽ२३:। चा ऽ२उर्म्मा३२३४अ५हो५वा५। व२ रोदसी३२३४५॥ ६॥

ऋषिः—शुनःशेपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१८३. अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे॥

१. अ४या३ऽ५मु५। ता४ऽ३यि३सा२३मा४त४सा५यि५। कापो त२इ२। व२गार्भा२ऽधीं४२उम्। वाचा४२उस्ताच्ची ऽ२३त्३। न२ओ ऽ२३४वा५। हा४ऽ५सो५६हा५यि५॥ ७॥

ऋषिः—वातायन उलः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१८४. वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत्॥

प्रतीचीनेदं कांक्षीतम्—

१. वा४त५आ४वा५तु५। भा४ऽ५यि५ष५जा४म्४। शांभुम२ य२:। भु२नोर्हृदा ऽ२३४यि४। हा३हो२यि२। प्रनआयूंःषी२३ ता२। रि२षात्। औ ऽ२३हो४वा५। ई४डा५॥ ८॥

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८५.यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा । न किः स दभ्यते जनः ॥

१. य४ः४र४क्ष५न्ति५प्र४चे५त५सा४ः । वरुणोमित्रोअर्याऽ२३ मा२ । नाकायिस्साऽ२३दा२ । हुम्माये२३ । भ्याऽ२ुता३२३४ अ५हो५ वा५ । जा३२३४ना५ः ॥ ९ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८६.गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया । वरिवस्या महोनाम् ॥

१. ग५व्यो४षु४णो५य४था५पु५रा४ । अ२श्व२यो२तरथा । याव२ रि२व२स्या । म२ । होमाऽ२३ । हो३ना२३४अ५हो५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ १० ॥

२. ग५व्यो५षु५णो५य५था५पु५रा५६ए५ । अ२श्व२यो२ऽतरथा ४२ु । या । व२रिवा४२ुस्या । म२हो । महोऽ२ना३२३४अ५हो५ वा५ । ई३२३४५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८७.इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम् । एनामृतस्य पिप्युषीः ॥

शैखण्डिनम्—

१. इ५मा५स्त५इ । न्द्र२पृश्नयो घृतं दूइॅहा२ु । अ३होइॅहा२३ । हा२३ यि३ । ताआऽ२ुशा३२३४यि४रा५म्५ । ए३ना२३४मृ३ता२३ । स्य२पोऽ२३४वा५ । प्यू४ऽ५षो५६हा५यि५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८८.अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत । यत् सोमेसोम आभुवः ॥

१. अ५या५धि५या५च५ग५व्या५६या५। पुरुणा२३। म२न्२ु पू३२३४रू५।ष्टूतौ२।वा२३ऽ२।य२त्सो२मे३सो२म३आ२। यासोमैं२सो।मऽओऽ२३४वा५।भू४ऽ५वो५६हा५यि५॥१३॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१८९.पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥

१. पा५व५का५न५ई४या५।स२रास्वा२ऽती४२ु।वाजेभि२र्वा२। जि२नायिवा२ऽती४२ु। [1]यंज्ञाऽ२३म्३।वाऽ२ुष्टु३२३४अ५ हो५वा५।धि२यावसू३२३४५ः॥१४॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१९०.क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्। स नो वसून्या भरात्॥

१. क४इ५म४म्४। उ५हु४वा४हा५यि५। ना२हू२३षायिषू२ऽ वा४२ु। आयिंद्र२सोम२। स्य२तार्प्या२ऽया४२ुत्२। सनो२ वसू२।नि२याभा२ऽरा४२ुत्२।सानो२वसू२नि२।आऽ२३। भ३रा२उ२वा२।आगहि२येहिताइमे२ऽ॥१५॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१९१.आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥

सौमेरम्—

१. आ५या५हि५सू५।षु२माहा२ऽयिते४२ु।२।आइंद्रसोम२म्२। पि२बाइम२म्२। पि२बाआ२ऽयिमाऽ२ुम्२ु।ए३दं३ब२र्ह२ हायिः।स२दोमाऽ२३मा२३४ऽ३।ओऽ२३४५यि५।डा५।१६।

---

१. मूलग्रन्थेऽत्र 'जंज्ञा......' इति लिखितम्। —सम्पादकः

ऋषिः—वारुणिः सत्यधृतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९२.महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः । दुराधर्षं वरुणस्य ॥

१. म३हा२उयि२उत्रा३२३४यि४णा५म्५ । अवा४२उरस्तू । द्यु३क्षं२ मा३२३४यि४त्रा५ ।स्या४२उर्यम्णाः ।दु३रा२उधा३२३४ऋ४षा५ म्५ ।व२ रौहो ऽ२३४ ।वा५ ।णा४ऽ५स्यो५६हा५यि५ ॥ १७ ॥

२. म५हि५त्री२णा५म५व५र५स्तू५६ए५ ।द्यु२क्षं मित्रस्यार्यम्णाः । दु२राधाऽ२३ऋ३षा२म्२ ।व२रौहो४२उ ।हुम्मा४२उ ।ण२ ।स्योऽ२उ । या३२३४अ५हो५वा५ ।हा२ओवा२ ।ओवा३२३ ४५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९३.त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः । स्मसि स्थातर्हरीणाम् ॥

धरासाकामाश्वम्—

१. त्वावतो२३ ।हौ३ऽहो२३ऽयि ।पुरूव२सो२३ ।हौ३ऽहो२३ऽयि । व२यमिंद्रा२३ ।हौ३ऽहो२३ऽयि ।प्रणेता२३ः ।हौ३ऽहो२३ऽयि२ । स्मसि स्था२ता२३ः ।हौ३ऽहो२३ऽयि ।हरीणा२३म्३ ।हौ३ऽहो२३ ऽ२३४५यि५डा५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—प्रगाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९४.उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥

यामम्—

१. उ५त्वा५मं५दं५तु५सो५हो४मा५ः ।कृ२णौहो ।ष्व२रौहोधा२ अद्रिवाः ।अ ।वब्राऽ२३ह्मा२ ।द्विषा४२उः ।हा४२उ यि२ ।अ३हो २३ऽये२३ । जाऽ२उहा३२३४अ५हो५वा५ । ए२३ । ययूऽ२३ ४५ः ॥ २० ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २र
१९५.गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥

हरिश्रीनिधनम्—

१. गि४र्व्वं४ण५ष्या५हि४न५सु५त४म्४ । गि४र्व्वं५ण५ष्या४ । हिनस्सुता४२ । म्२ । मधोर्धाराभि२राहो४२ । ज्यासेऽ२३ । हा२उ२वा२ । इंद्रात्वा ऽ२३दा२ । त२माये२३त्३ । याऽ२शा३२३४अ५हो५वा५ । ह२री२३श्रीऽ२३४५: ॥ २१ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २र ३ २ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
१९६.सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन् । न देवो वृतः शूर इन्द्रः ॥

वैतहव्यम्—

१. सा४दा५ । व२इं२द्रा२३: । च२र्कृषा४दा५ । उ२पो२नु२सा२३: । सापर्य२न्२ । न३दे२वाऽ२३: । वृ३ता२३४ऽ३: । शू२३४ऽ३ । रा२३आ४ऽ५यिं५द्रा५६५६: ॥ २२ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २उ ३ १ २
१९७.आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥

आसितम्—

१. आ५त्वा५वि५शं५त्विं५दा५६वा५: । स२मु२द्रमिव२सिंध२व२: । स२मु२द्रमि । व२सिंधऽ२३वा:२ । न त्वामिद्रातिरि२च्य२ते । न२त्वामाऽ२३यिं२द्रा२ । ति२रिच्याऽ२३ताऽ२३४ऽ३ । यि३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
१९८.इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणीरनूषत ॥

१. इं५द्र५मि३द्गा२थि३नो४बृ५हा५त्५ । इं२द्रामर२क्कीयि । भिर
र२क्किर्कणाः । इं२द्रंवाणी२३ः । हा२३हा२यि२ । अ४नू४ऽ५ष५
ता५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः— श्रुतकक्षः ॥ देवता— इन्द्रः ॥ छन्दः— गायत्री ॥ स्वरः— षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१९९.इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम् ॥

१. इं४द्र५इ५षे४द५दा५तु५न५ः । ओ४हा४यि४ । ऋ२भु२ । क्षणऽ२
म्२ । ऋ३भु२ऽ२रा३२३४यी५म्५ । वा२जी२द२दा२तु३
वा२३ । वा२जीददा । तु२वोऽ२३४वा५ । जा४ऽ५यि५नो५६
हा५ यि५ ॥ २५ ॥

२. इं५द्र५इ५षे५द५दा५तु५ना५६ए५ । ऋ२भु२क्षणमृ२ । भू४२ऽ
२३म्३ । र३यी२३४ऽ३म्३ । वाऽ२३जी२ । द२दा४२ओऽ२३ ।
तु४वो४वा५ । जा४ऽ५यि५नो५६हा५यि५ ॥ २६ ॥

ऋषिः— गृत्समदः ॥ देवता— इन्द्रः ॥ छन्दः— गायत्री ॥ स्वरः— षड्जः ॥

१ २ ३ २ ३२ ३ २ ३ १ २र २उ ३ १ २र
२००.इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥

अभयंकरः—

१. इं५द्रो५अ५ङ्गा५ । म२हद्भऽ२३या२म्२ । आभी२ष२द२ ।
प२चुच्याऽ२३वा२३४त्४ । स३हा२३४यि४स्थि३रा२३ः । वि४
चो४वा५ । षा४ऽ५णो५६हा५यि५ ॥ २७ ॥

ऋषिः— भरद्वाजः ॥ देवता— इन्द्रः ॥ छन्दः— गायत्री ॥ स्वरः— षड्जः ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ १ २ ३ २उ ३ १ २
२०१.इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः । गावो वत्सं न धेनवः ॥

त्वाश्रीसामम्—

१. इ५मा५उ५त्वा५ । सु५ता२यि२सुतायि । नक्षंता ऽ२३यि३गी२ ३४ः । व४न५ः । गा२३यि३रा२ः । गावोवा२३त्सा२३म्३ । न२धो ऽ२३४ ऽवा५ । ना४ ऽ५वो५६हा५यि५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ २ ३१ २ ३२ ३ १२ ३ १२ ३२३ १२
२०२.इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये । हुवेम वाजसातये ॥

१. इं५द्रा५नु५पू५ । ष२णावा ऽ२३या२म्२ । साख्याय२ । सु२वस्ता ऽ२३या२यि२ । हूवे४२मावा ऽ२३ । ज२सो ऽ२३४वा५ । ता४ ऽ५ यो५६हा५यि५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २र २ ३२उ ३ २
२०३.न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन् । न क्येवं यथा त्वम् ॥

१. न४ । क्ये४ना४की५ । आयिंद्रत्वदुत्तराम् । न२ ऽज्यायो२ । अस्ता ऽ२३यि३वृ२ । हुं३ । हुं२ । त्रा३२३४हा५न्५ । नक्ये२ । वंया ऽ२३था२ । हुं३ । हुं२३४ ऽ३म्तू२३४५वो५६हा५ यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३१ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ २३१ २
२०४.तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः । समानमु प्र शंसिषम् ॥

१. त५र५णि५वा५ः । जना ऽ२३ना२म्२ । त्र२दंवाजा२३हा२३ । स्या गो२मा३२३४ता५ः । स२माना ऽ२३मू२ । प्र४शा४ ऽ५ंसि५ षा५म्५ । हो४ ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
२०५.असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। सजोषा वृषभं पतिम्॥

वैरूपम्–

१. अ५सृ५ग्र५मा५इं५द्रा५६ते५गि५रा५ः। प्राती४२ुत्वामू४२ुत्। अ२हा२। सता। साऽ२जो४२ुषावा४२ु। ष२भ४२ुम्२पति२ म्२। ओऽ२३४५यि५डा५॥ ३२॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
२०६.सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रास्पान्त्यद्रुहः॥

१. सु४नी४थो४घा४ऽ५स५म५र्त्ति४या४ः। यंमरुतो२ंयमर्य२मा। मि२त्रास्पान्त्य२द्रुह२ः। ऊ। ऊ। वा२हा२३ऽउवा४२ु। अति२ द्विषा३२३४५ः॥ ३३॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २र
२०७.यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर॥

तौभम्–

१. अ२हो२वा२अ२हो३२३४वा५। ओ५६हा५। य२द्वी२डा२वी२३ न्द्रा ४ऽ३य२त्स्थि३रा५यि५। अ२हो२वा२अ२हो३२३४वा५। ओ५६ हा५। य२त्प२र्श२शा२ने२३पा४ऽ३रा२भृ३त५म्५। अ२हो२वा२अ२हो३२३४वा५। ओ५६हा५। व२सु२स्पा२ र्हा२३न्ता४ऽ३दा२ु भ३र५। अ२हो२वा२अ२हो३२३४वा५। ओ५६हा५। हो४ऽ५यि५ डा५॥ ३४॥

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २ ३१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२
२०८.श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे॥

श्रौतम्—

१. श्रु५ता४म्४वो। वृत्रहंतमम्। प्रशर्द्धं च ऋष२णाऽ२३
यि३ना२म्२।आ२शायिषाऽ२३यि३रा२ु।ध३से३महा।अ२३
हो४वा५।हो४ऽ ५यि५डा॥ ३५॥

[इति] पञ्चमप्रपाठकः॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२०९.अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः।अरं शक्र परेमणि॥

आभीश्यवम्—

१. अ५र५न्त५इ५द्र५श्र५व५से५।ए५ग२मायिमशू२र२त्वावता२
३ः।होवा२३हा२यि२।अराꣳशा२ऽक्राऽ२३होवा२३हा२यि२।
प२ रायिमाऽ२३णा२३४ऽ३यि३।ओऽ२३४यि५।डा५॥ १॥

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२१०.धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्।इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः॥

१. धा५ना५वं३त२ुङ्क३र४म्भि५णा५म्५।अपूपवंतमू२ऽक्थी२३
ना२म्२।इं२द्रा२ुप्रा३२३४ता५ः।ओ३२३४हा५यि५।जु४षो४
वा५।स्वा४ऽ५नो५६हा५यि५॥ २॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२११.अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः।विश्वा यदजय स्पृधः॥

क्षुरपविम्—

१. अ५पा४म्फे४ने५न५न४मु५चे४ः। शिरइ२। द्रोत्। अ॑वाऽ२ु
र्त्ता३२३४या५ः। वायिश्वाऽ२३। याऽ२ुदा३२३४अ५हो५
वा५।ज२य२स्पृधा३२३४५ः॥ ३॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१२.इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः । तेषां मत्स्व प्रभूवसो ॥

१. इ५मे५त५आ । द्र२सोमाः । होवा२३होयि । सु२तासोये२३ । चासो२तू३२३४वा५ः । ते३ऽ४षा५म्५ । हा२३हा२यि२ । मात्स्वप्र२भूऽ२३४वा५ । वा४ऽ५ । सो ५६हा५यि५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१३.तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय ॥

१. तु४भ्य४ऽ४हा५उ५ । सु२तासस्सोमाः । स्तीर्णम्बाऽ२३ऋ३ही२ः । विभा४२हो२ऽयि । वाऽ२३सा२उ२ । स्तोता२३उ३वा२३ । भ्यआऽ२यि२ । द्र३म्रे२३४अ५हो५वा५ । डा३२३४या५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१४.आ व इन्द्रं कृविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥

कौत्से द्वे—

१. आ५व५इं५द्रा५म्५क्रि२विंयथा । वाजयाऽ२३न्ता२ः । श२ताक्रतुम् । मं२हिष्ठाऽ२३२सी२ । चायाउ३वा२३यि३ । दू३२३४भी५ः ॥ ६ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१५.अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया । इषा सहस्रवाजया ॥

१. अ५त५श्चि५दिं५द्र५न५उ५पा५६ए५ । आयाहि२श२ । त२वाजाऽ२३या२३४ । इ२षा२३४स३हा२३ । स्त्र२वोऽ२३४वा५ । जा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१६.आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद्वि मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ॥

औषसम्—

१. आ५बुं५दं५वृ५ । त्र२हाद । दायि । जातष्पृच्छा२३त् । विमा ऽ२ु ता३२३४रा५म्५ । क२उग्रा ऽ२३ष्के२ । हाशृण्विर२ेर२ । इडा ऽ २३भा२३४ ऽ३ । ओ ऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ८ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१७.बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधः कृण्वन्तमवसे ॥

भारद्वाजम्—

१. बृ५ब५दु५क्थ५ऽ५हा५६वा५म५हा५यि५ । साप्र्रा४२ुकारा ४२ु । स्न२मू२ । तयायि । सा२ऽधा४२ुष्काण्वा ऽ२३ । त२मो ऽ२ ३४वा५ । वा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१८.ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान् । अर्यमा देवैः सजोषाः ॥

कौत्ससामानि—

१. ऋ५जु५नी५ती४नो५व४रु५ण५ः । इ४हा४ । मि२त्रोनयति२ विद्वा ऽ२३न्त्सा२ः । इहा२ । अ२र्या२मादा ऽ२३यि३वा२यि२ । इहा२ । सजोषा२ँउ३वा२३ । ई२३४हा५ ॥ १० ॥

ऋषिः—ब्रह्मातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१९.दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत् । वि भानुं विश्वथातनत् ॥

औषसम्—

१. दू२रादी॒ऽ२३हे४व४य५त्स५ता५ः। अ२रु२णप्सु२शिश्वाऽ२३यि३ता२त्२। वि२भानूऽ२३म्वि२। श्वाथा२न२त्२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ११॥

ऋषिः—विश्वामित्रो जमदग्निर्वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२२०.आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू॥

१. आ३नो४मि५त्रा५। व२रु२णा२३। अ२होवाऽ२३४घृ४तै३र्ग्ग३व्यू४ति५मु५। क्ष२ता२३म्३। अ२होवा४२। माध्वा२रजा२ँ२सि२सू२३। अ२होवा४२। क्र२तू२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १२॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२२१.उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे॥

मरुत्सामम्—

१. उ५दु५त्त्ये५सू५ना५६वो५गि५रा५ः। काष्ठा२य२। ज्ञायि। षुँवाऽ२त्ना३२३४ता५। वा२श्राआऽ२३भी२३। ज्ञूऽ२३या४ऽ३। ता२३ ४५वो५६हा५यि५॥ १३॥

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२२२.इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाँसुले॥

विष्णुसाम—

१. इ५दा५६मे५। विष्णूऽ२ः। वि३च२क्रा३२३४मा५यि५। त्रायिधानि२। द२धायिपा२ऽदा४२म्२। समू४२होर२ऽऽ। ढाऽ२३मा२३। स्याऽ२पा३२३४अ५हो५वा५। ए२३। सु२ले२ऽऽ॥ १४॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२३.अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय। अस्य रातौ सुतं पिब॥

कौत्सप्रम्—

१. अ५ती५हि५मा५। न्यु२षा४२वायिणा४२म्२। सु२षु२वां सा४२म्२। होयि। ऊपै२ऽराया ऽ२। अ३स्य३रा२ताऽ२३उ३। सूऽ२ता३२ ३४अ५हो५वा५। पी३२३४बा५॥ १५॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२४.कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिद्ध्यस्य वर्धनम्॥

काश्यपम्—

१. क३दु४प्र३चे४त५से५। म३हा२३यि३। वाऽ२३४चो५दे५वा५ हा५उ५। व४चो४दे५वा५। य२शस्याऽ२३ता२३४यि४। त३ दा२३४यि४द्धि३या२३। स्य२वोऽ२३४वा५। धा४ऽ५नो५६ हा५यि५॥ १६॥

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२५.उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्॥

बार्हदुक्थे द्वे—

१. उ५क्थं४च५नो४हा४यि४। श२स्यमानम्। नागोराऽ२३यी२ः। आचिकेता। न२गायाऽ२३त्रा२म्२। गी२। यमाऽ२ना३२३४ अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥ १७॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२६.इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः। हरिवान्त्सुतानां सखा॥

१. इं५द्र५उ५क्था५यि५।भिरम्मान्दायिष्ठोर३।वाजा२ुना३२३४ ञ्आ५।वाजपरतिरः।हराऽरयि२ुवा३२३४न्त्सू५।तानारॅं रस।खा।अर३होऽवा५।हो४ऽ५यि५।डा॥ १८॥

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२२७.आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः। महाँइव युवजानिः॥

कौत्सानि त्रीणि—

१. आ४या५ही४।उपनरस्सुरतम्।होवार३हारयिर।वाजेरॅंभिर म्मार्हृणीरयरथार३ः। होवार३हारयिर। मरहाॅंइवर युवाऽर३।होवार३हार३यि३।जाऽर२ुना३२३४अ५हो५वा५। ऊर३ऽर३४ पा५॥ १९॥

ऋषिः—कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२२८.कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः। दीर्घं सुतं वाताप्याय॥

१. ओ४र२ु होरऽयिऽ।कदा२ुव३सो५।स्तोत्रार३म्३।हरर्य३ता४ आ५। ओ४र२ु होऽयि। अ३व२ुश्म३शा५।रु३धा२ुदू३२३४ वा५ः।ओ४र२ुहोरऽयि।दी३र्घंॅर२ुसु३त५म्५।वा३तार३४ऽ३। पीर३ या४ऽ५या५६५६।ई३२३४५॥ २०॥

२. क३दार३४अ३हो४वा५।वसो।स्तोत्रार३म्३।हरर्य३ता४ आ५।अवार३४।अ३हो४वा५।श्मशाऽर२ु।रु३धा२ुदू३२३४ वा५ः।दी३र्घार३४अ३हो४वा५।सुताऽर३म्३।वा३तार३४ऽ ३।पीर३या४ऽ५या५६५६॥ २१॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२९.ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु । तवेदं सख्यमस्तृतम् ॥

औद्ध्र्वसद्मने द्वे—

१. ब्रा५ह्म५णा५दी५ । द्र२रा२धसाः । पि२बा२सोमा४२म्२ । ऋ२तूः२रनू । त२वे२दाःसाऽ२३ । ख्याऽ२३मा४३ । स्ता२३४५ त्तों५६हा५यि५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२३०.वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥

१. व५यं४घा५ते५अ४पि५स्म५सा४यि४ । स्तो२ता२ इंद्रगिर्व्वणाः । ववाऽ२३होयि । तूवन्नोजी४२ । ववाऽ२३हो । न्व२सोऽ२३ । माऽ२पा३२३४अ५हो५वा५ । ए२३ । उपा३२३४५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद उदलो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२३१.एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः । सत्राजिदुग्र पौंस्यम् ॥

१. ए५न्द्र५पृ५क्षु५का५सु५ची५६दे५ । नृ२म्णा२म्२ । त२नू२ षू२३धायिहा२ऽयिना४२ः । सात्रा२जि२दु२ । ग्र२पौऽ२३ः३सि३ या२उ२ । वा२३ । ऊ२३४पा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२३२.एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः ॥

१. ए५वा५हो२३अ४सि४वी५र५यू५ः । ए२वाशू२ऽरा४२ः । उताऽ २३स्थि३रा२ः । आयिवा२ते२रा । धियाऽ२३म्म३ना२उ२ । वा२३ । स्तौ२षे२३४५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३३. अभि त्वा शूर नोनुमोऽ दुग्धाइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥

१. अ५भि५त्वा५शू५ । र२नोनुँमा४२ुः । ओयिनू२३मा२ः । आदुग्धा२इ२ । व२धायिनँवा४२ुः । ओयिना२३वा२ः । आयिशान२म२ स्य२ज२ग२त२ः । सु२वार्दृश२म्२ । आद्रे२३ शा२म्२ । आयिशान२ मि२ । द्र२तास्थुष२ः । आऽ२३ । स्थूऽ२ु । षा३२३४ । अ५हो५वा५ । स्थु२ष२स्थुषा३२३४५ः ॥ २६ ॥

२. अ५भि५त्वा२३शू४र५नो४नु४मा५ः । आदुग्धा२इ२व२ । धायिनाऽ२३वा२ः । आयिशान२म२स्याजग । ताः । सुँवाऽ२ु द्रैं३२३४शा५म्५ । ई२शानाऽ२३मी२ । द्रातस्थु२ष२ः । इंद्राऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५डा ॥ २७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३४. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥

भारद्वाजे द्वे—

१. त्वा५मि५द्धी५ । हवा४२ुमहे२ । आ । अ२३हो३वा३हा२उ२ वा२३ । ऊ२३४पा५ । सा२तौ२वा२ज२ । स्या२३का४२ुरव२ः । आ । औ२३हो३वा३हा२उ२वा२३ । ऊ२३४पा५ । त्वांवृत्रायि-षुइ२ । द्र२सा४२ु त्पति२म्२ । आ । अ२३हो३वा३हा२उ२ वा२३ । ऊ२३४पा५ । नरस्त्वाङ्काष्ठा२ । सु२आ४२ुर्व्वत२ः । आ । अ२३हो३वा३हा२उ२वा२३ । ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ २८ ॥

२. त्वा४मि४ब्धि४ह४वा५म५हे।५सा५तौ५वा५जो४वा५।स्याका २ऽरावा४२ुः। त्वावृत्रायिषु इंर्द्र२स२त्२। पातिन्नारा४२ुः। त्वाङ्का२३ष्ठा२। सु२अर्वाऽ२३ता२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५ यि५डा५॥ २९॥

ऋषिः—बालखिल्याः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२३५.अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति॥

सान्नते द्वे—

१. अ५भि५प्र५वा५ः। सु२राधाऽ२३सा२म्। इंद्रमर्च्चयाथा२ऽ विदाऽ२३४यि४। यो३जा२३४रि३तृ२३। भ्योमघवापूरू२ऽ वासू४२ुः।सहाऽ२३।स्राऽ२ुयि२ुणा३२३४अ५हो५वा५।व२ शिक्षती३२३४५॥ ३०॥

२. अभायिप्रेवाऽ२ुः।सु३रा२ुधा३२३४सा५म्५।इंद्रामॅर्च्चाऽ२३। याऽ२ुथा३२३४अ५हो५वा५।वी३२३४दे५।योजरि२तृभ्यो२ म२घवा२ॅपु२रू२वसू२ः।स२हा२।स्रे२णे२वा२३शाये२३। क्षाऽ२ुता३२३४अ५हो५वा५।सु२भू२३तयेऽ२३४५॥ ३१॥

श्यैतम्—

३. अ४भि३प्र३व४स्सु५रा५।ध३सा२३४अ३हो४वा५।आयिंद्र-म२र्च्च२। य२थाविदाऽ२३४यि४। ओ५६हा५। योजरि२ तृभ्य२ः। माघाऽ२३वा२। पुरूऽ२ु। वा३२३४सू५ः। स२ हस्रेणायिवा२३शा२।हुंम्माये२३।क्षाऽ२ुता३२३४अ५हो५ वा५।वा३२३४सू५॥ ३२॥

ऋषिः—नोधाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३६. तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥

नविकम्—

१. तं४व५ः । ए४दा४स्मा५म्५ । ऋ२ती२षह२म्२ । हा४२ुयि२ । आऔ२३हो२ । इहा२ । वासोर्म्म२दा२नमंध२सा२३ः । हा४२ुयि२ । आअ२३हो२ । इहा२ । अ२भिवत्सन्नस्वसरे२षु२धे२नवा२ँः । हा४२ुयि२ । आअ२३हो२ । इहा२ । इंद्र२म्२ । हा४२ुयि२ । आअ२३ हो२ । इहा२ु । गी३र्भा२ुयि२ुः । ना३२३४अ५हो५वा५ । वामहे३२ ३४५ ॥ ३३ ॥

अभीवर्त्तः—

२. तं५वो४ऽ३दा२३स्मा४मृ४ती५ष५हो४वा५ । वासोर्म्म२न्दा२ । न२मान्धा२ऽसा४२ु । आभिवत्सा२३ऽ२३४म्४ । न३स्व३स४रे५ । षु२धायिना२ऽवा४२ुः । इं२द्राङ्गा२ऽयिर्भी२ुः । न३वा२३ । माऽ२३४५ । हा३२३४५यि५ ॥ ३४ ॥

आभीवर्तम्—

३. तं३वो४द४स्म३मृ४ती५ । ष३हा२ुओ३२३४वा५ । वासोर्म्मन्दानमंधासा४२ुः । आभिवत्सन्न स्वसरेषू धे२ऽनावा४२ुः । ओ३ँवा२ । इं२द्रंगाऽ२३४यि४र्भी५ः । न२वामाऽ२३४५ हा५६५६यि६ । भ२ गा२३याऽ२३४५ ॥ ३५ ॥

नौधसम्—

४. तं३वो५द४स्म३मृ४ती५ । ष३हा२३म्३ । वाऽ२३४ । सो४र्म्म५न्दा५न५म५ । न्धा४सा५ः । अ२भि२व२त्स२न्न२स्व२स२रे२

षू२३धायि। नाऽ२३वा२ः। इन्द्रङ्गीर्भायिन्नी२३वा२। हु३। हुं२३। हुं३॑। हुं२। न२वा२ु न२ुवो३२३४वा५। मा४ऽ५हो५६ हा५यि५॥ ३६॥

५. ताऽ२३४म्४। वो४द५स्म४मृ५ती५। षा४हा५म्५। व२सो-र्म्मन्दा। ना २३माऽन्धा२३सा२ः। आऽ२३भी२। वात्सन्न२। स्वस२। रायि। षूधे२ुना३२३४वा५ः। आऽ२३यिं३द्रा२स२। गायिर्भिन्न२वोऽ२ ३४वा५। मा३२३४हे५॥ ३७॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः॥

ऋषिः—कलिः प्रागाथः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२३७. तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम्॥

लौशे द्वे—

१. ता४रो५। भायिर्व्वो[1]वि२दा२३ऽउवाऽ२३। वा३२३४सू५म्५। इंद्राँ२स२बाध२ऊ२तये२॑। बृ२हात्। बृ२हा२३ऽउ। वा४२ु। गायन्त२स्सु२तसो२मे२अ२ध्व२रे। हु२वेभाऽ२३रा२म्२। नाकारि२ण२म्२। इडाऽ२३भा२३ऽ४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १॥

२. ता४रो५। भायिर्व्वोवि२दा२३ऽउवाऽ२३। वा३२३४सू५म्५। इंद्राँ२र२बाध२ऊ२तये२॑। बृ२हाद्गा२ऽया४२ु। तास्सु-तसो४२ु। मे२अध्वरायि। हु२वेभाऽ२३रा२म्२। नाकारि२ण२म्२। इडाऽ२३ भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'र्नो' इति पाठोऽस्ति। —सम्पादकः

क्षुल्लककालेयम्–

३. त५रो५भि५व्वों५वि५द५द्वा५सू५म्५ । इं२द्रा२म्२ । इं२द्रं२ स२बा२ धा२३ऊता२ऽया४रुयि२ । बृ२हा२त्२ । बृ२ह२द्गा२ यं२त२स्सु२त२सो२मा२३आध्वा२ऽरा४रुयि२ । हु२वा२यि२ । हु२वे२भ२र२न्न२का२रि२ण२म्२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

कालेये द्वे–

४. त५रो५भि५व्वों५वि५दा५ऽ४द्वा४सू५म्५ । इं२द्रं२स२बा२३ । धऊऽरु ता३२३४या५यि५ । बृ२हात् । बृ२हा२३उ । वा४रु । गायन्त२सु२तसो२मे२अ२ध्व२रे । हु२वेहोयिभाऽ२३रा२म्२ । नाका२रि२ण२म्२ । इऽडाऽ२३भा२३४ऽ३ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ४ ॥

कालेये द्वे–

५. तरोऽ२३भि३व्वों२ । वि४दा ४ऽ५द्व५सू५म्५ । इं२द्रं२स२ बा३धाऊ२ऽतायाइँयि३ । ओ२३४वा५ । ओ३२३४वा५ । बृ२ह२द्गा२य२न्तः२सु२त२सो३मा अध्वराइँयि३ । ओ२३४-वा५ । ओ३२३४वा५ । हुवायिभराम् । नाकारुरा३२३४इ-४णा५म्५ । ओऽ२३४वा५ । ओ३२ ३४५यि५ । डा५ ॥ ५ ॥

६. तरोभिव्वोंऽरु । वि३द२द्वा३२३४सू५म्५ । इं२द्रा२रुस२बा३-धाऊ२ऽ ताया४रुयि२ । अइँहो२३वा२ । २ । बृ२ह२द्गा२यं२-तस्सु२त२सो३ माअध्वरा४रुयि२ । अइँहो२३वा२ । २ । हुवायिभा२ऽरा४रुम्२ । अइँ हो२३वा२ । २ । नाकारि२ ण२म्२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ २३४५यि५ । डा५ ॥ ६ ॥

महाकालेयम्—

७. त५रो५भा२३यि३र्व्वो४वि५द४द्व४सू५म्५। इ२न्द्राःसबा। ध२ऊ३ त२याऽ२३यि३। बृ२ह३द्गा३या२३। ताऽ२३४ः। सु४त३सो४ मे५अ५। ध्वा२३रा२यि२। हुवायिभ३रौ२। वा२३४ऽ३ओ२३४वा५। न४का४ऽ५रि५णा५म्५। हो४ऽ५ यि५। डा५॥ ७॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२३८. तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम्॥

एषिरे द्वे—

१. त५र५णि५री५त्५। सि३षा२३सा४ती५। वा२जाम्पु२राम्। धि२या२युजा। आवा२३आ४यि४न्द्रा५म्५। पु२रूहू२तम्। न२मे२गायिरा। नायिमी२३न्ता४ष्टे५। वा२सुद्रुहाऽ२३४५ म्५॥ ८॥

२. त४रा४हा५उ५। णि२रि२त्सी२३षासति२। ह२या२यि२। २। वाजंपु२र२म्२। धि२यायूजौ२। हो२वा२३हा२यि२। आवइं- द्रम्पु२रु२[१]हू२त२म्२। न२मायिगायिरौ२। हो२वा२३हा२यि२ ने२मिं२त२ष्टे२वा२३सा। अ२३हो३वा३हा२३४औ५हो५ वा५। उ२पू२। हू३२३४वा५म५॥ ९॥

गौरीविते द्वे—

३. त४र३णि४रि३त्सि४षा५। सा२३ती४। वा४जं५पु४रं५ध्या५ यु५जा४। वाजम्पुरन्ध्यायुजा। वआऽ२३यिं३द्रा२३४म्४। पु४ रु४हू४ त३न्न४मे५। गा२३यि३रा२। ने२मायिंताऽ२३ष्टे२। व२ सुद्रुव२म्२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओ२३४५यि५। डा५॥ १०॥

१. हस्तलेखेऽत्र नष्टलेखत्वाल्लिपिकर्त्रा 'हु२' इति लिखितः। —सम्पादकः

४. त४र३णि४रि३त्सि४षा५। स३ती२३। वाऽ२३४। जं४पु४र५न्धि५या५। यु४जा५। वाजम्पुरंध्यायुजावइंद्रम्पुरुहूतन्नमा४२ यि२गायिरा४२। हा४२ऊऊवायि। ने२मिन्तष्टेवसोवा२३ओऽ २३४वा५। द्रू४ऽ५वो५६हा५यि॥ ११॥

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२३९. पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः॥

पृष्ठम्—

१. पि५बा४ऽ३सु२त३स्य४र४सि५ना५ः। मत्स्वाइंद्रगोमताऽ२३ होयिया। आ२पिन्नोंबोधिसधमाद्येवृधाऽ२३होयिया। अ२स्माः आऽ२३वा२। तु२तायिधाऽ२३या२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १२॥

शौल्कम्—

२. पि५बा५सु५त५स्य५र५सि५नो५हा५उ५। मत्स्वानइंद्र२ गोमाऽ२त३ः। हा२ओ३२३४वा५। आ२पिन्नोंबोधिसधमादि२ येवाऽ२र्द्धे३। हा२ओ३२३४वा५। अ२स्माःअवंतु२तेधाऽ२ य३ः। हा३ओ३२३४ वा५। ई३२३४५॥ १३॥

जमदग्नेरभीवर्तम्—

३. पि५बा५सु५त५स्य५र५सि५नो५म५त्स्वा५हा५उ५। ना४२ः। इन्द्रा४२गोमताऽ२३हा२उ२। आ२पिन्नों२बो२। धि२सार्ध मा४२। दियेवृधाऽ२३। हा२उ२। अ२स्माःअँवाऽ२३। हा२। तु३ते२३होऽ२। या३२३४अहो५वा५। धि२य२तु३२३ ४५॥ १४॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
२४०.त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥

कौल्मालाबर्हिषे द्वे—

१. तु५वा४ऽ३ः३होर३ए५हि४चे५र५वा५यि५। वि२दाभगं-वसू४२त्ताया२३४यि४।उ५द्वा५वृ५ष५स्व५म५घा४वा५न्५। ऐ२होयि।गा४२विष्टयायि।उदिंद्राऽश्वमोवा२३ओऽ२३४वा५। ष्टा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ १५ ॥

२. त्व५ः५ह्यो५हि५चे५रा५६वा५यि५। वि२दाभगंवसूत्ता२ऽ याऽ२३४यि४। उ४द्वा५वृ५ष५स्व५। मा४ऽ५घ५वा४न्४। आयिहि२ यायि।ग२वि२ष्टाया४२यि२।उदिंद्रा४२अश्वमी। ओ२३ऽम्।ओ३२ ३४वा५।ष्टा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २
२४१.न हि वश्चरमं च न वसिष्ठः परिमंसते।
३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥

जनित्रे द्वे—

१. न५हि५वा२३श्चा४र५मं४च४ना५। हु२वेहो४२यि२। वसिष्ठष्परायिमिंःसाता४२यि२। अ२स्माकमद्यमरुताऽ२ः। सु३ता२यि२सा३२ ३४चा५।वायिश्वे२३होयि।पिबा२३हो। तु२काऽ२३। माऽ२ यि२ना३२३४अ५हो५वा। ज२नित्राऽ २३४५म्५ ॥ १७ ॥

२. न३हि३व४श्च५र५म५म्५। च३ना२३। व४सि४ष्ठा५ः। होयि२। परायिमँ२ःसाताऽ२३४यि४। अ४स्मा३क४म४द्य३म४ रु४त५ः। सु३ता२३यि३सा४चा५। वायिश्वेपि२बं२तु२कौ३ॅ। हो२३ऽये२३। माऽ२ुयि२ुना३२३४अ५हो५वा५। ज२नी२३ त्राऽ२३४५म्५॥ १८॥

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
२४२. मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत॥

मैधातिथम्—

१. मा५चि५द५न्य५दो४हा५यि५। वि३शा२३ः३सा४ता५। सखाया४२ुहो२ऽयि। माअ२३हो२। रायिषा२उ२वा२। ण्याता२ उ२वा२। इंद्रमित्स्तोता वृषणाअ२३हो२। साचा२उ-२वा२। सूता२उ२वा२। मुहुरुक्थाअ२३हो२। च२शा। अ२हो। वा३हो३२३४वा५। सा४ऽ५तो५-६हा५यि५॥ १९॥

ऋषिः—आङ्गिरसः पुरुहन्मा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
२४३. न किष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम्।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा॥

वैखानसम्—

१. न५कि५ष्टा२३का४र्म्म५णा४न४शा५त५। य२श्चा का२रा। स२दा३ वृ२धाऽ२३म्३। स२दा३वृ३धा२म्२। इं२द्रान्न२या। ज्ञै२ुर्व्वि३श्व२ गूऽतेर्मा२ॅर्भ्व२साऽ२३म्३। त२मृ३भ्व३सा२म्२। अ२धार ष्टं २धा। ष्णु२मो३जसाऽ२३। ष्णु२मो३ज३ सा२३४ऽ३। ओ२३४५यि५। डा५॥ २०॥

गौरूहन्मनम्—

२. न३कि४ष्टं३ङ्क३र्म्म४णा५न५श५त्५। हो२३४यि४। य५श्चच५-का२३रा४स५दा४वृ४धा५म्५। आयिद्रा४२ुन्नाया४२ु। ज्ञैर्व्विश्व गूर्त्तार्मृभ्वासा४२म्२। अधा४२ुहो२ऽ। ष्टाऽ२३ध्रे२३४। हा५ ओ४वा५। ष्णु२मोजसा३२३४५॥ २१॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२४४. य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः।
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विह्रुतं पुनः॥

ाकर्षम्—

१. य५ऽऋ५ता२३यि३ची४द५भि४श्रि४षा५ः। पूरा४२ुजात्रू४२ु। भ्य२आ२तृदा२३ः। होवा२३हा२यि२। सांन्धा४२ुतासा४२ुम्२। धायिम्म२घवा२ँपु२ँपु२रू२वसु२ः। होवा२३हा२यि२। नायिष्का४२ुर्त्तावी४२ु। ह्रु२तं२पुन२ः। ह्रो। वाऽ२ु। हा३२३४। अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥ २२॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

२४५. आ त्वा सहस्त्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये॥

वत्वारि भारद्वा[जा]नि—

१. आ५त्वा५स५हा५। स्त्र२माशा२ऽता४२म्२। यूक्तार२थे२हिर२रण्य२ये२। ब्रह्मायू२ऽजा४२ुः। हारय२इ२। द्र२कायिशा२ऽयिनाऽ२३४ः। वहांन्तू२ऽसोऽ२३। माऽ२ुपा३२३४अ५हो५ वा५। ता३२ ३४ये५॥ २३॥

२. अ५हो५आ५त्वा५स५हा५६ए५ । स्त्र२माशा२ऽता२ऽ२३४म्४। हा३हो२यि२ । यूक्तार२थे२हि२र२ण्य२ये२ । ब्रह्मायू२ऽजा२ ३४ः । हा३हो२यि२ । हारय२इ२ । द्र२कायिशा२ऽयिना२ऽ२३४ः । हा३हो२यि२ । वहान्तू२ऽसो२ऽ२३४ । हा३हो२ । म३पी२३ । ता२ऽ२३४या४यि४ । उ५हु५वा५६हा५उ५ । वा५ ॥ २४ ॥

३. आ४त्वा५स२ह४स्त्र५मा४श५त४मा४ । यु२क्तारथेहि२रण्यये । ब्र२ह्म२युजोहरयइंद्र२केहो४रुयि२ । शायिना२ऽ२३ः । हा२उ२ वा२ । वहंतुसोम२पौ३हो२३ । हुम्मा२ऽरु । त३या२३यि३ । ओ२ऽ२ ३४वा५ । ऊ३२३४५ ॥ २५ ॥

४. आ३त्वा४स४ह३स्त्र४मा ५ । श३ता२रुम्२ । आ३त्वा४स५हा५ । स्त्र२माशत२म्२ । आ२ऽ२यि२हि२या३२३४हा५यि५ । यूक्तार२-थे२ हि२र२णा२ये२ । ब्रह्मायू२ऽजा२ऽ२३ः । आ२ऽ२यि२हि२ या३२३४हा५यि५ । हारय२इ२ । द्र२कायिशा२ऽयिना२ऽ२३ः । आ२ऽ२यि२हि२या३२३४हा५यि५ । वहान्तू२ऽसो२ऽ२३ । आ२ऽ२-यि२हि२या३२३४हा५यि५ । म२पीता२ऽ२३या२३४ऽ३यि३ । ओ२ऽ२३४५यि५ । डा ॥ २६ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
२४६. आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥

वाम्राणि त्रीणि—

१. आ५मं५द्रै५रा५ । [यिं—] द्र२ह२रि२भा२यि२र्या२हि२म२यू२ रा२३रोमाभा२३यि३ः । मा४त्वा५का४यि४ची५त्५ । नि२ये२रु मू३२३४री५त्५ । न२पा२शिनाः । अ२ति२धान्वे४रु । व२ताः२ऽ २३ । आ२ऽरुयि२रुहा३२३४अ५हो५वा५ । वा३२३४या५ः ॥ २७ ॥

२. आ४मं५द्रै४रिं५द्र५। हा४ऽ५रि५भा४यि४ः। या२हि मयूर२ रोमभायिः। मात्वाकाऽ२३यि३ची२त्२। नायिये मु२रि२त्२। न२पाशाऽ२३यि३ना२ः। अ२तायिधाऽ२३न्वे२। व२ताःऽ२३। अऽ२ुयि२ुहा३२३४अ५हो५वा५। व२यो२३भीऽ२३४५ः॥ २८॥

३. आ४मं५द्रै४रिं५द्र५। हा४ऽ५रि५भी४ः। या२हि मयूर२रोम भाउ। वा४२ु। मात्वा४२ु। केचिन्नियेमुरिन्न२पाशिनाउ। वा४२ु। आती४२ु। धन्वेव२ता२३ऽ[1]ऽ२३। ई३२३४हि५॥ २९॥

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२४७. त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः॥

गौङ्गवम्—

१. त्व५मा२३ः३गा४प्र५श४ंसि४षा५ः। दायिवा४२ुः। शविष्ठ३ मा२३। र्ता४ंया५म्५। न२त्वदन्यो मघवाऽ२३नाऽ२ु। स्ति३ मा२३र्डा४यि४ता५। आइंद्रब्र२। वा। अ२३हो२। मि२तोऽ २३४वा५। वा४ऽ५चो५६हा५यि५॥ ३०॥

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२४८. त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः॥

यशः सामम्—

१. त्व४मिं५द्रा४। य२शाः। असायि। ऋ२जी२षीशवस२ः। पतायिः। त्वं२वृ२त्रा२णी२३हाः२ुसि३या२। प्रतीनाए४२ु। कइत्पूरू४२ु। अनू४२ुहो२ऽ। तश्च२। षाऽ२ुणा३२३४अ५हो५ वा५। धा३२३४ र्त्ती५ः॥ ३१॥

१. अत्रैकमक्षरं घृष्टमतो नैव पठितुं शक्यते किन्तदिति। —सम्पादकः

साध्रम्–

२. त्व५मा२३यिं३द्रा४य५शा४अ४सा५यि५। ऋ२जायिषी२ शाऽ२ु। व३सा२३४५ः। पा३२३४ती५ः। त्वंवृत्राणिहः२स्य२ प्र२तीन्येक२इत्पु२। रू। आना२ुओ३२३४वा५। ताश्चा२ु ओ३२३४वा५। ष४णा४ ऽ५यि५धृ५तीः५। हो४ऽ५यि५। डा॥ ३२॥

वैरूपम्–

३. हा५उ५त्व५मिं५द्रा५। या२शा२ुआ३२३४सी५६। हा५उ५। ऋ२जा२ुयि२ुषी३२३४शा५। वा२स२ऽस्पा३२३४ती५६ः। हा५उ५। त्वं२वृत्रा। णी२हःसिया। हा५उ५। प्र२ती२ुना३२३४ ए५। क२इत्पूऽ२३४रू५६। हा५उ५। अ२नुत्ताऽ२३४श्चा५६। हा५उ५। षाऽ२ुणा३२३४अ५हो५ वा५। धा३२३४ र्त्ती५ः॥ ३३॥

समीचीनः–

४. हा५उ५त्व५मिं५द्रा५। य२शाअसि२। होयि।२। होये२३४। हा५उ५। ३। ऋ२जी२षीशवस२स्पति२ः। होयि।२। होये२३ ४। हा५उ५। ३। त्वंवृत्राणिहः२स्य२प्र२तीन्येक२इत्पु२रू। होयि। २। हौये२३४। हा५उ५३। अनुत्त२श्च२ऋ२ष२णी२ धृति२ः। होयि।२। होये२३४। हा५उ। २। हा५उ५ वा५। सुवर्म्महा३२३४५॥ ३४॥

५. हो५त्व५मिं५द्रा५। य२शाअसि२। होये२३। हो३२३४५। ऋ२जी२षीशवस२स्पति२ः। होये२३। हो३२३४५। त्वंवृत्रा-णिहः२स्य२प्र२ तीन्येक२इत्पु२रू। होये२३। हो३२३४५।

अनुत्त२श्च२ऋ२ष२णी२ धृति२:।होये२३।हो३२३४वा५६।
हा५उ५वा५।सुवर्म्मया२३ ४५:॥ ३५॥

[इति] षष्ठप्रपाठकः॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

२४९.इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये॥

यौत्कश्रूचम्—

१. इं४द्र५मि४द्दे५व४ता४। तयायि। इंद्रंप्रयति२यध्वा२३रा२
यि२।आयिंद्रा४२म्२।स२मी२के वनिनो ह२वामा२३हा२
यि२। आयिंद्रा४२म्२। धानस्य२सो२३४वा५। ता३२३४
ये५॥१॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

२५०.इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत॥

१. इ५मा४उ५त्वा५पु५रू५व५सो५गि४र५:ए४ऽ५। गि४रा४५
वार्द्ध२न्तु३या३म२मा२३।पा२व३क२व३र्णा२:।शुचयो-
वी२३पा२। हुं३ हुं३। चा३२३४यि४ता५:। अ२भिस्तोमैर२
नौ४२। हुवायि। हो३वा२। ष२ता। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५
यि५।डा॥ २॥

आन्त्राणि त्रीणि—

२. इ५मा५उ५त्वा५पु५रू५वा५सो५हा५उ५। गिरोव२र्द्ध२। तूया२ऽममाऽ२३। इ३हा३हा२होयि। इ२हो३२३४वा५। पा२व२कवर्णा२श्शु२चय२ः। इ३हा३हा२होयि। इ२हो३२३४वा५। वि२प२श्चि। तो। अभिस्तोमैः। इ२हा३हा२होयि। इ२हो३२३४वा५। अ२नूऽ२३। षाऽ२ता३२३४औ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥ ३॥

३. इ४मा३उ४त्वा५पु५रू५। व३सा२३उ३। गाऽ२३४यि४। रो४व५र्द्ध५न्तु५या४ः। म४मा५। पा२व२कवर्णा२श्शुचयो२ वि२प२श्चि। ता। अ२३हो२। आअ२३हो२। अ२भिस्तोमैर२ नौ४२३। हुवायि हो३॑वा२। ष२त४। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५ यि५। डा५॥ ४॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

२ ३ १ २र ३ २३ १ २
२५१. उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते।
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव॥

वासिष्ठानि त्रीणि—

१. उ५दु५त्ये५मा५। धू२मत्तमाऽ२३गा२यि२र२स्तो३२३४मा५सा ईरताये२३। सा२त्रा२जा३२३४यि४ता५ः। धा२ना२सा३२३४आ५। क्षी२तोता४याऽ२३ः। वा२जा२या३२३४न्ता५ः। र३था२३आ४ऽ५यि५वा५६५६॥ ५॥

२. उ४दु४त्ये४मा४ऽ५धू४म४त्त४मा४ः। गिरस्तोमासआ४रुयिर-
राता४रु यिर। सर२त्रा२जितोधना४रुसाअ। क्षि२तो२
ताया४रुः। वाजयंतोरथा२३ऽउवाऽ२३। ई३२३४वा५॥ ६॥

३. हं३२३४उ३दु४त्ये३म३धु४म५। त३मो३२३४हा५यि५।
गायिरा४रुस्तोमाऽरु। स३आ२३४५यि। रा३२३४ते५। स२
त्रा२जितोरँ ध२न२साअक्षितो२त२या३२३४५ः। हं३२३४
५। वा४ज४य३तो४र४था५ः। इ३वो३२३४हा५यि५। वा२ज२
यंतो२रथा२इ२। वा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ७॥

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

२५२. यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब॥

१. य२थागौऽ२३रो४अ४पा५कृ५ता५म्५। तृष्यन्नेतिय२वेराऽ२३
यि३णा२म्२। आ२पि२त्वेनष्प्रपित्वेतूय२मागाऽ२३ही२।
कण्वे४रुषु२सूऽ२३। साऽरुचा३२३४अ५हो५वा५। पी३२३४
बा५॥ ८॥

२. ओ२वारुओ३२३४वा५। या४था५। गौ२रो२अ२३पाकृतम्।
ओ२३४। हा३हो२यि२। त्तृ२ष्य२न्ने२ति२या२३वायिरिणम्।
ओ २३४। हा३होरुयिरु। आ३२३४पी५। त्वेनष्प्रपित्वेतू-
यामा२ऽगहि३। ओ२३४। हा३हो२यि२। कण्वे४रुषु२सूऽ२३।
साऽरुचा३२३४अ५हो५वा५। पि२बा२३ईऽ२३४५॥ ९॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
२५३. शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
२ ३ १ २र ३१ २ ३ २३१२ ३ १ २
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥

हारायणानि त्रीणि—

१. शप्गध्यूप्षुप। शर्चायिपता२ुयि२ु। ई३२३४न्द्राप्। विश्वा२-भी२३रूतिभा२ुयि२ुः। भा३२३४गाप्म्प्। न२हि२त्वा२-य२शा२३साम्वसु२ु। वी३२३४दाप्म्प्। अनूऽ२३। शूऽ२ुरा-३२३४अप्होप्वाप्। चरारॅम२सी३२३४प् ॥ १० ॥

२. श४ग्ध्यू४ष्वौ४हो४ऽप्यिप्शप्चीप्प४ता४यि४। आयिंद्रविश्वा भिरूतिभिः। भगान्ना२३ही२। त्वायशसाम्। वसू२३हा२यि२। वायिदा४२ुम्२। अनुशूरचरोवा२३ओऽ२३४वाप्। मा४ऽप् सोप्६हाप्यिप् ॥ ११ ॥

३. श४ग्ध्यू३षु३श४चीप्। प३ता२ुयि२ु। श३ग्ध्यू४षुप्। श२ चायिपते२। आऽ२यि२हि२मा३२३४हाप्ः। आयिंद्रविश्वा२। भि२रूतिभि२ः। आऽ२यि२हि२मा३२३४हाप्ः। भागन्न२हि२ त्वा२य२श२स२म्२। व२सूविद२म्२। आऽ२यि२हि२ मा३२ ३४हाप्ः। अनुशू२ऽराऽ२३। आऽ२यि२हि२मा३२३४ हाप्ः। च२रामाऽ२३सा२३४ऽ३यि३। ओऽ२३४प्यिप्। डाप् ॥ १२ ॥

ऋषिः—रेभः काश्यपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २
२५४. या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वां असुरेभ्यः ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥

वाम्राणि त्रीणि—

१. या३होरुयिरु। ई३२३४न्द्रा५। भुरजा२३आभा२ऽरा४रुः। सुवाऽ२३हा२। व्वाँ२अ२सू२३रायिभा२ऽया४रुः। स्तोता२३ हा२। रमिन्मघवन्नस्यावर्द्धाया४रु। य्ययिचा२३हा२यि२। त्वे२वृ२क्त२बऋहाऽ२३यि३षा२३४ऽ३ः। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ १३॥

२. या५ई५द्र५भु५ज५आ५भा५६रा५ःसु२व२व्वाम्२अ२सुरेऽ२रु भा३ २३४या५ः। हारु। अ३हो३२३४हा५। स्तो३ता३र२ मायित्। माघ२व२न्ना। स्यवाऽरुर्द्धा३२३४या५। हारु। अ३ हो३२३४हा५। ये२चत्वाऽ२३ यि३व्रे२३। हारु। अ३हो३२३४ हा५। क्त२बऋहाऽ२३यि३षा२३४ऽ३ः। ओंऽ२३४५यि५ डा५॥ १४॥

३. या४ई५द्र५भु४ज५आ४भ५र५ः। उ५हु४वा४हा५यि५। सुवव्वाँ २असुरे२भ्यः। उ२हुवाऽ२३हा२यि२। स्तो२तारमिन्मघ२व२ न्न२। स्याबं र्द्धाया४रु। उ२हुवाऽ२३हा२यि२। ये२चत्वाऽ२३ यि३व्रे२। उ२ हुवाऽ२३हा२। क्त२बऋहाऽ२३यि३षा२३४ऽ ३ः। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ १५॥

ऋषिः—जमदग्निः॥ देवता—आदित्याः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२५५. प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो।
वरूथ्ये३ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत॥

वरुणसामानि त्रीणि—

१. प्र५मि५त्रा५य५प्रा५हा५उ। आ४रुर्यम्णायि। सचा४रुहो। थि२यौ४रु। हुवायि। आ२र्त्तावसाउ। वरा४रुहो। थि२यौ४रु-

हुवायि। वरुणे। छादी२यंवचाः। स्तोत्रा४२ुः२हायिरा२जौ४२ु।
हुवा। सू२गायता२३ऽउवाऽ२३। ओ२३४पा५॥ १६॥

२. प्र५मि५त्रा५य५प्रो२हो४वा५। आर्यम्णा२ु। अ३हो२३४यि४।
अ२होवा२। साचथ्य२म्। ऋ२तावासा२ु। अ३हो२३४यि४।
अ२होऽ३ वा२। वारूथ्ये२व२रु२णे२छ२दि२याम्वाचा२ु।
अ३हो२३४यि४। अ२हो३वा२। स्तोत्रः। राजा२ु। अ३हो२३४
यि४। अ२हो३वा२। [1]षू२गायाता। अ३हो२३४यि४। अ२
होईया२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५डा५॥ १७॥

३. प्र२मि५त्रा५य५प्रा५र्य५म्णो४वा५। ओं४वा५। साचथ्य२म्२।
ऋ२तावा२ऽसा४२ुउ२। वाऽ२३रू२। थाऽ२३या२यि२।
वरुणे२छ। दायाऽ२३ः३हा२यि२। वचो३आ२। स्तो२त्रः
राजसु२ गा२यर२त२। स्तोऽ२३त्रा२म्२। राजसु२गौ३। हो२३ऽ
२३४। वा५। या४ऽ५तो५६हा५यि५॥ १८॥

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
२५६. अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्॥

वषट्कारणिधनम्—

१. अ४भि३त्वापू४र्व्व३पी४त५ये५। अ५भि५त्वा२३पू४र्व्व५पी४
त४या५यि५। इं२द्र२स्तो२मे२भी२३रायवा४२ुः। भि२राया२ऽ
वाऽ२३ः। ओमो३वा२। स२मी२ची२ना२ुस२ऽऋ२भ२व२
स्सा२३मा स्वरा४२ुन्२। स२मास्वा२ऽराऽ२३न्३। ओंमोवा२।

१. अत्र 'षू'इत्यस्य स्थाने 'सू' इति स्यात्। —सम्पादकः

रु२द्रा२गृ२णं२ता२३पूर्व्विया४रुम्२।त२पूर्व्वा२ऽया२ऽ२३म्३[1]

...म्ओ२रु। वा३२३४। औ५हो५वा५ऊ३२३४पा॥ १९॥

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
२५७.प्र व इन्द्राय बृहते मरुते ब्रह्मार्चत।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा॥

मारुतम्—

१. प्र४व५इं४द्रा५य५बृ५ह५ते४।प्र५वा४ः।इं२द्रा२या२३येहा२ऽ ते२२३। ओमो३वा२। म२रु२तो२ब्र२ह्मा२३आर्च्चा२ऽ ता२२३। ओमो३वा२। वृ२त्रं२हाना२। ति२वृ२। त्राहा२२३ ओमो३वा२। श२ताक्रतु२ः। वा३२३४ज्रे५। ण३शा२३। हा२३हा२।त४पा४ऽ५र्व्व५णा५।हो४ऽ५यि५डा५॥ २०॥

२५७क. [2]स त्वा हिन्वति धीतिभिः संश्रवसे स त्वा रिणति धीतिभिः विश्रवसे।स त्वा ततक्षुर्धीतिभिः सत्यश्रवसे सं त्वा शिशति धीतिभिः॥

सांश्रवसः—

१. सात्वाहि२न्व२। ति२धायितायिभी२३ः। ताऽरुयिरु। भा३२३४। अ५हो५वा५। सं२स्र२व२से२३सात्वारि२ण२। ति२धायितायिभी२३ः। ताऽरुयिरुभा३२३४औ५हो५वा५। विश्र२व२से२३। सात्वात२त२। क्षु२र्द्धायितायिभी२३ः। तारुयिरुभा३२३४।अ५हो५वा५।स२त्य३ऽ२श्र२व२ से२३। [3]सांत्वाशि२श२। ति२धायिता२ऽयि२भी४रुः। [ता] यिभि४रुः।॥ २१॥

---

१. अत्र '३'त्रिसंख्याया अग्रेऽनुदात्तयुतं किमक्षरमिति न ज्ञायते हस्तलेखेऽस्पष्टत्वात्।

२. अयं मन्त्रः सामवेदेऽद्यत्वे नोपलभ्यते, कस्मिंश्चिच्छाखाग्रन्थे स्यादयं मन्त्र इत्यन्वेष्यम्।

३. मूलगानग्रन्थेऽस्मादारभ्यामन्त्रांतं 'बृहदिन्द्राय...' इति मन्त्रस्यारम्भे लिखितम्। —सम्पादकः

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३ १ २र ३ १२ ३ १ २
२५८.बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
येन ज्योतिर जनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥

श्रवसः—

२. बृ२ह२दि२द्रा२या२३गाया२ऽता४२। याता४२। मा२रु२तो२ वृ२त्रा२३हान्ता२ऽमा४२मु्२। तामा४२म्। ये२न२ज्यो२ति२र२ ज२न२य२न्ने२३ता वा२ऽर्द्ध४२ः। वार्द्धा४२ः। दे२व२न्दे२ वा२या२३जाग्र२ऽवी४२। ग्रेवी४२। [१]सांत्वाशि२श२। ति२धा यितायिभी२३ः। ताऽ२यि२। भी३२३४। अ५हो५वा५। श्रवसे३२३४५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
२५९.इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ ७ ॥

१. इं२द्राअ२३हो२। क्र२तु२न्ना२३आभा२ऽरा४२। पि२ताऔ२३ हो२। पु२त्रे२भी२३योया२ऽथा४२। शि२क्षाअ२३हो२। णो२- अ२स्मि२न्पु२रु२हू२तयामा२ऽनी४२। जीवाऽ२३ः। ज्योऽ२ता ३२३४अ५हो५ वा५अ२शी२म२ही३२३४५ ॥ २३ ॥

२. ई४द्र४क्र४तू४ऽ५न्न५आ५भ४रा४। पि२तापुत्रेभि२योयथा। शिक्षाणोऽ२३आ२। स्मायिन्पुरु२हू२। तयामा२ऽनी४२। औ४२। हौ४२। हुवायि। औ२३हो३२३४वा५। जी२वाज्योऽ २३ती२ः। अ२ शीमाऽ२३हा२३४ऽ३यि३। ओंऽ२३४५यि५। डा५ ॥ २४ ॥

---

१. अस्मादारभ्यामन्त्रसमाप्तेरंशोऽयं पूर्वमन्त्रस्यास्ति। —सम्पादकः

३. इं५द्र४क्र३तु४न्न५आ५। भ३रा२रओं३२३४वा५। पि५ता५पू-
२३त्रे४भि५ यो४य४था५। हं३२३४५। पि४ता३पु४त्रे३-
भि४य५:। याथा ऽ२३४हा५यि५। शा४यि४क्षा५णो४आ५-
स्मा३यि३न्पु४रु५हू५त५ या५। मानोऽ२३४हा५यि५। जी४
वा५ज्यो४ती५:। अ२शोऽ२३४ वा५। मा४ऽ५हो५६हा५
यि५॥ २५॥

ऋषिः—रेभः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२६०. मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये।
१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परावृणक्॥

आंगिरसे द्वे—

१. मा५न५इं५द्रा५। परावा२३र्णा२क्२। भवा नस्सधमा२ऽदी२३
या२यि२। त्वन्नऊती त्वमिन्नआपी२३या२म्२। मा न इंद्र
परावृ२वृणा२३ऽ उवाऽ२३। ऊ२३४पा५॥ २६॥

२. मा३न४इं५द्र५प४रा५। वृ३णा२रक्२र। मा३न४इं५द्रा५। प२
रावाऽ२३र्णा२क्२। भवॉ२न२स्स२ध२मादाऽ२३या२यि२।
त्वन्न ऊती४२र। त्वमिन्ना४२रआपियाम्। मा२नाआऽ२३यिं३
द्रा२। प२रावाऽ२३ र्णा२३४ऽ३क्३। ओऽ२३४५यि५
डा५॥ २७॥

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
२६१. वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रस्य प्रस्त्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते॥

आष्कारणिधनकाण्वम्—

१. व५यं५घा२३त्वा४सु४ता५वं४ता५:। आपो न२वृ२। क्त२बाऽ २३ऋ३हि३षा२३२। वा२३२प२वित्र२स्या। प्र२स्त्र३व२ णायि२। षु२वृत्राऽ२३४हा५न्५। पा२३री२। स्तोतार२:। आसाऽ२३४५ ता५६५इ५ध्या३२३४५षू५॥ २८॥

वैष्टम्भम्—

२. [1]औं४होे५वा४। व५यं४घ५त्वा५सु५ता४वं५तः। [1]औं४हो५-वा४। अहोयि। आपो न वृक्तबर्ह्हिषः। पवायित्रा२३स्या२। प्रस्त्रवणेषु वा२ऽर्त्रा२३हा२न्२। औ२हो२३यि३। औहोयि। परिस्तोता रआसते। परायिस्तो२३ता२ु। र३आ३स२ता। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५डा५॥ २९॥

अभिनिधनकाण्वम्—

३. अ५हो४हो४हा५यि५। आ४यि४ही५। वा४या५म्५। घा-३२३४त्वा५। सूर्ता२ुवा३२३४न्ता५:। आ२पो२ुना३२३४ वृ५। क्ता२बर्ह्हिषाः। ऐ२होयि। आ३२३४यि४ही५। पा२वि२ु त्रा३२३४स्या५। प्रा२स्त्रा२ु वा३२३४णे५। षू२वृत्रहान्। ऐ२ होयि। आ३२३४यि४ही५। पा२ रि२ुस्तो३२३४ता५। र३ आ२३सा४ऽ५ता५६५६यि६। आ३२३४ भी५॥ ३०॥

महावैष्टम्भम्—

४. व५यं४घ५त्वो४हा४यि४। सु५ता५वं५तो४वा५। आपोन२वृ२। क्त२बार्ह्हा२ऽयिषा२३:। होवा२३हा२यि२। प२वित्रस्य२प्र२ स्त्रवणे२। षु२वार्त्रा२हाऽ२३न्३। होवा२३हा२यि२। परायि स्तो२ऽताऽ२३। होवा२३हा२। र२आऽ२३। साऽ२ुता३२३४-औ५हो५वा५। दी३२ ३४शा५:॥ ३१॥

---

१. 'औ' इत्यस्य वर्तमानप्रचलितलिप्यां 'ऐ' इति रूपं ज्ञातव्यम्। —सम्पादकः

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
२६२. यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३१ २र ३ १ २
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या ॥

श्नौष्टीगवम्—

१. ओ५हा५यि५य४दिं५द्र५ना४। हु५षी५षू५६वा५। ओजो४२ु-नाम्र्णा४२ुम्२। च२कृ२ष्टि। षू। ऐ४२ुही२ऽआयिही४२ु-हा४२ुऊऊवायि। या२ऽ द्वा४२ुपांचा४२ु। क्षि२ती२नाम्। ऐ४२ु-ही२ऽ२आयिही४२ु। हा४२ु ओहुवायिद्यु३म्नमाऽभर२। रा। ऐ४२ुही२ऽआयिही४२ु। हा४२ुऊऊवायि। सा२ऽत्रा४२ु-वायिश्वा४२ु। नि२पौ३ंसि। या। ऐ४२ुही२ऽआयिही४२ु। हा४२ुऊऊवाऽ२ु। या३२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४ पा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
२६३. सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता।
२ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥

वृषकम्—

१. स५त्य४मि५त्था४वृ४षा४ऽ५यि५द५सा४यि४। वृषजूतिर्न्नो-विता४२ु। वृषाह्युग्रार्शृण्विषा४२ुयि२। प२रा२वतायि। वृषोऽ २३र्वा२। व२ तायिश्रूऽ२३ता३२३४ऽ३ः। ओंऽ२३४५यि५। डा५ ॥ ३३ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६४.यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन्।
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति ॥

घाते द्वौ द्वेगातम्—

१. य५च्छ५क्रा२३सी४प५रा४व४ती५। यादर्व्वा२ व२। ति२ वार्त्रा२ऽहाऽ२उन्२उ। अ३ता२३ः। हौ३हो२३वा२। त्वागीर्भिर्द्युग-दिंद्राके२ऽशिभी४२उः। सुताऽ२३। वाःऽ२उआ३२३४अ५हो५वा५। ए२३। विवा२ँस२ती३२३४५ ॥ १ ॥

२. य४च्छ५क्रा४सी५प५रा५व४ति५य५दो४हा४यि४। र्व्वा२ वा२३तायिर्वॄँत्राहाऽ२३४न्४। अ३ता२३४स्त्वा३गा२ यि२। भायिर्द्युग२दि२। द्राके२ऽशिभी४२उः। सुताऽ२३। वाःऽ२उ आ३२३४अ५हो५वा५। विवा२ँस२ती३२३४५ ॥ २ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६५.अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्।
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥

कार्तयशम्—

१. अ५भि४वो५वी५र४मं४ध५सा४ः। म२दे२षू२३गाया४२उ। गिर रामाहा२३। वीचे२उता३२३४सा५म्५। इं४द्र५न्ना५मा४। श्रूत्यंः शा२का२ऽउयि२उ। ना३२३४अ५हो५वा५। व२चो२उया३२३४५। [था] ॥ ३ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६६.इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥

१. इं४द्र४त्रि४धा४ऽ५तु५श५र४णा४म्४। त्रि२वरूथं॰सु२-वस्तयायि। छर्दिर्य्याऽ२३च्छा२। माघव२ द्भ्य२ः। चामँह्याऽ-२३ञ्चा२। या२वयाऽ३दी२। द्यूमे४२भि२या। औ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६७.श्रायन्तइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥

श्रायन्तीम्—

१. श्रा५यं५त५इ५व५सू५ऽ४रा४या५म्५। विश्वा४२यि२दिंद्रा४२। स्यभा४२क्षाता। वासूनि२जा२तोजनिमा२। नि२योजा२ऽसा४२। प्रतिभा२गन्नदीँ२धि२म२ः। प्राऽ२३ती२। भागान्ना२३दा२। हुं। धि३मा२३ः। ओऽ२३४वा५। हे३२३४५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६८.न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः।
एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते ॥

वामम्—

१. न३सी४म३दे४व५आ५। हा२३हा२३यि३। पाऽ२३४। त४त्प४तो४वा५। इष॰हो४२यि२। दीर्घाहो४२। योमँर्त्ताया४२ः। आयितग्वा२चि२त्२। य२आयिताशो२। यु३या२उ२वा२३।

ऊ२३४पा५ । जता४२ुयि२ । आयिंद्रो४२ुहारी४२ु । यु२य़ो़ऽ२३ ।
जाऽ२ुता३२३४औ५हो५वा५ । ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२　३　१　　२ ३ २　३ १ २　३ १ २
२६९.आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत।
२ ३　१ २　３　　१ २　　　　　　३　१　२
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥

वासिष्ठानि त्रीणि—

१.　आ४न५ः । ए४वि४श्वा५ । सु२हाव्या४२ुम्२ । आयिंद्र२ंस२म२ । त्सूभू२ऽषाता२ु । ऊ३२३४पा५ । हा२३हा२यि२ । ब्रह्मा२णि२ सवना२ु । नि३वृ३त्र२हान् । प२रमाऽ२३ज्या२ः । आर्च्या२३ हा२यि२ । ष२मा । औ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ७ ॥

२.　आ५नो५वि५श्वा५षु५हा५हा४व्या५म्५ । इद्र२ंसमत्सुभूषतो । पब्राऽ२३ह्मा२ । णि२सवना । नि२वृत्रहान् । प२रमाऽ२३ज्या२ः । आर्च्या२३हा२यि२ । ष२मा । औ२३हो४वा५ ॥ हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ८ ॥

वैयश्वम्—

३.　आ५नो५वि५श्वा५सु५हा४व्या५म्५ । इ२न्द्रा२म्२ । स२म२ त्सु२भू२ष२त२ । उ२पाब्रा२ऽह्मा४२ु । णि२स२व२ना२नि२वृ२ त्र२ह२न्२ । प२रामा२ऽज्या४२ुः । ऋ२ची़षाऽ२३मा२३४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१　२र　३ २उ　３　१　२　　　३ २
२७०.तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम्।
३　१　　२र　　３ १　२　　　३ १　२　३　१ २
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥

निधनकामम्—

१. त४वे४दिं४द्रा४ऽ५व५मं५व४सू४। त्वं पुष्य२सि२म२ध्य२मम्। सात्रा२ वा३२३४यि४श्वा५। स्याप२र२मस्य२रा२ज२सि२। नकि२ष्ट्वा३२३४गो५। षूव्रेण्वाऽ२३ता२यि२। होवा२३ होयि। हो। वा२हा२३ऽ उवाऽ२३४५॥ १०॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

२र ३ १२ ३२ ३ २ ३ १२
२७१. क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
अलर्षि युध्म खजकृत् पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः॥

इन्द्रप्रियाणि त्रीणि—

१. क्वे५य५था५। कु२वे२दसा४रुयि२। औहो४रु। औहोयि। औ२३ हो३२३४वा५। पु२रु२त्रा२चायित्। हि२ते२मना४रुः। औहो४रु। औहोयि। औ२३हो३२३४वा५। अ२ल२र्ॠ२षियू। ध्मा२खजक्रे४रुत्२। औहो४रु। औहोयि। औ२३हो३२३४ वा५। पु२रं२दरा। प्र२गा२यात्रा४रुः। ४रुः। औहो४रु। औहोयि। औ२३हो-३२३४वा५। अ३गा२३। साऽरुयिरुषू३२ ३४अ५हो५वा५। सु२शंऽसाऽ२३४५ः॥ ११॥

२. कु४वा५कु४वा५। याथा। कु२वे२दसायि। ऊवायि। अ२३ हो३२३४५। पु२रु२त्रा२चायित्। हि२ते२मनाः। ऊवायि। अ२३हो३२३४५। अ२ल२र्ॠ२षियू। ध्मा२खजक्रेत्। ऊवायि। अ२३हो३२३४५। पु२रं२दरा। प्र२गा२यात्राः। ऊवायि। अ२३ हो३२३४५। अ३गा२३। साऽरुयिरुषू३२३४अ५हो५वा५। सु२शा२३ऽ३साऽ२३४५ः॥ १२॥

३. क्वे२य२थ२कू२३वायिदाऽ२३४सी५ । पुरुत्रा२चिरत्२ । हिर
तायिमाऽ२३ना२ः । आलऋषि२ । युऽध्माखजक्रे२३त्३ । हा२
उ२वा२ । पुर२ंदाऽ२३रा२ । प्र२गा२यात्रा४२ुः । अ२गाऽ२३ ।
साऽ२ुयि२ुषू३२३४अ५हो५वा५ । प्सू३२३४५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—कलिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७२. वयमेनमिदा ह्योऽ पीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥

१. व५य५मे५ना५म्५ । आऽ२ुयि२ुदा३२३४अ५हो५वा५ । ही३२
३४या५ः । अपीपे२मे२हवज्रिणम् । तास्मा४२ुऊवा४२ु । द्यस-
वनायि । सूतम्भारा४२ु । आ२नूनाऽ२३म्भू२ । षातश्रु२ते२ ।
इडाऽ२३ भा२३४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५डा५ ॥ १४ ॥

पौरुहन्मनम्—

२. व५य५मे५ना५म्५ । इदा४२ुहायाः । अ२पौहोयि । पे२मौहोयि ।
इ३ । हा२वज्रिणाम् । त२स्म्मा२उवा । द्या२सवनायि । सू२
तम्भारा । आ२नौहो । न२म्भौहो । षा२तश्रुता२३ऽउर्वऽ२३ ।
ऊ२३४पा५ ॥ १५ ॥

वसिष्ठसामासितम्—

३. व४य३मे४ना५ । मि५दा५ । हि३या२ुओ३२३४वा५ । इ४या४
हा५यि५ । हु२वेहो४२ुयि२अपीपेमेहावज्रिणा४२ुम्२ । तस्माउ-
वद्यसवनायि । सूतम्भारा४२ु । ई३या२ । आ२नूनाऽ२३४म्भू५ ।
ष२ताश्रूऽ२३४५ता५६५६यि६ । श्र२वा२३साऽ२३४५-
यि५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७३. यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥

१. यो५रा५जा२३च४ऋ४ष५णा४यि४ना५म्५। याता२रथे२। भि२ राध्रा२ऽयिगू४२उः। ध्रायिगू४२उः। वायिश्वासा२३म्३। तरुता२३।२।पार्त्ता२उना३२३४ना५म्५।ज्यायिष्ठं२यो२वा। त्राहा२उगा३२३४र्णो५ यि५। त्र४र्हं४ऽ५गृ५णा५यि५। हो४ऽ५ यि५। डा५॥ १७॥

प्राकर्षणम्—

२. यो३रा३जा४च५। ष३णा२३ऽ२३४यि४ना५म्५। याता-रथेभि२रध्रा ऽ२३यि३गू२ः। विश्वासान्तरुतापृतनाऽ२३ना२म्। ज्याऽ२३यि३ष्ठा२म्२। योवृत्र२होवा२३ओऽ२३४वा५। गा४ऽ५र्णो५६हा५यि५॥ १८॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७४. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥

अभयंकरम्—

१. य५त५आ२३यिं३द्रा४भ५या४म४हा५यि५। ततोनोअभ२-यङ्काऽ२३र्द्धी२। मघवञ्छग्धि तव तन्न२ऊताऽ२३या२यि२। वि२द्वायिषोऽ२३वी२। मा र्ध्रोज२हि२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १९॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २
२७५.वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणाꣳसत्रं सोम्यानाम्।
३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा॥

कवषे द्वे—

१. वा५स्तो५ष्प५ता५यि५। ध्रु२वा। स्थूणा२ओऽ२३४वा५। अꣳसत्र२ꣳ२सो२म्यानाॅ२ॅम्२। द्र२प्सष्पुराम्भेत्ताशश्वताऽ२३ यि३ना२म्२।आ३२३४यिं४द्रा५ः।मुनीॅ२ॅ।ना२३ऽउवाऽ२३। सा३२३४खा५॥२०॥

२. वा३स्तो४ष्प५ते५ध्रु५वा५।स्थू३णा२३।आऽ२३४।स४त्र५ꣳ ५सो५।म्या४ना५म्५।द्र२प्सष्पुराम्भेत्ताश२श्वताऽ२३-यि३ ना२म्२।आऽ२३यिं३द्रा२ः।मुनीॅ२ॅ।नोऽ२३४वा५।सा३२३४ खा५॥२१॥

ऋषिः—जमदग्निः॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२७६.बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि।
३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि॥

सूर्यसामम्—

१. ब५णम५हाꣳ२३अ४सि४सू५र्या५। बाडादि२त्य२। म२हाꣳ आ२ऽसाऽ२३४यि४।म४ह३स्ते४स४तो३म४हि४मा३ प४नि५। ष्टा२३ मा२। म२ह्नादाऽ२३यि३वा२३। म२होऽ२३४ वा५। आ४ऽ५ सो५६हा५यि५॥२२॥

ऋषिः—देवातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
२७७.अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ यदिन्द्र ते सखा ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति सभामुप ॥

आश्वे द्वे—

१. अ४श्वी५अ४श्वी५ । र२थी२सू२३रूपा२ऽई४२उत् । २ । गोमा-ड्य२दि२ । द्राते२ऽसाखा४२उ । श्वात्रा४२उभाजा४२उ । वयसास-च२तेसाऽ२३दा । चंद्रायिर्या२३ती२३ । साऽ२३भा४ऽ३म्३ । ऊ२३४५पो५६हा५यि५ ॥ २३ ॥

२. अ५श्वी५र५थी५सु५रू५पा५६ई५त्५ । गोमाड्यदिंद्रते सखाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२उईया । श्वा२त्रा भाजा वयसा सचते सदाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२उइया । चंद्रायिर्या२ऽती४२उ । साभामु२प२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ २
२७८.यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
१ २ ३२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥

वैरूपम्—

१. य२द्यावाऽ२३इं४द्र४ते५श५ता५म् । श२तंभूमीरुतस्यू४२उः । न त्वावज्रिन्त्सहस्र२ः[१]सूर्याअनू४२उ । ना जा४२उतामाऽ२३ष्ट२रोऽ-२३४वा५ । दा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ २५ ॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'श्र२ः' इति लिखितम् । तन्न शुद्धम् । —सम्पादकः

ऋषिः—देवातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ २उ ३ २ ३क २र ३ २ ३ १ २
२७९. यदिन्द्र प्रागपागु दग्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३१ २ ३ १ २
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥

१. य४दिं५द्र५प्रा४ग४पा४क्४। उदाक्। न्यग्वाहूय२सेनृभि४२ुयि२ः। सिमापुरूनृषूतोअ। सि२यानवा४२ुयि२। आसी४२ुप्राशा४२ु। ध२तोवीर२३ ओऽ२३४ वा ५। र्व्वा४ऽ५ शो५६हा५ यि५ ॥ २६ ॥

२. य५दिं५द्र५प्रा५ग५पा५गू५दा५६गे५। नायग्वा२हू२। य२सायिनृभी२३ः। हा २ु। अ३हो३२३४हा५। सिमाँ२पु२रूनृषू२तो२अ। सि२यानवेऽ२३। हा२ु। अ३हो३२३४हा५। असायि-प्राशा२३। हा२ु। अ३हो३२३४हा५। धाऽ२ुतू३२३४ अ५हो५वा५। र्व्वा३२३४शे५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २र ३ १ २र
२८०. कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति ।
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥

कौसुदे द्वे—

१. क५स्त५मिं५द्रा५। त्व४२ुवासा४२ुउ२। आमर्त्योदधऋषतायि। श्र२द्धा२हायिते४२ु। माघ२व२न्पा। रियायिदा२ऽयिवीऽ२ु। वा३जी२वाजा४२ुम्२। सि२षाऽ२३। साऽ२ुता३२३४अ५हो५वा५। ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ २८ ॥

२. क३स्त३मिं४द्र५त्वा५। व३सा२३उ३। आऽ२३४। म४र्त्यो५द५ध५। ष४ता५यि५। श्र२द्धा२हायिते४२ु। माघ२व२न्पा। रियायि। दायिवी२ुओ३२३४वा५। ऊ३२३४पा५। वा३जी२

वाजा४२ुम्२। सिर्षा२३। सा२ुता३२३४अ५हो५वा५।
ऊ३२३४पा५॥ २९॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
२८१.इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
हित्वा शिरो जिह्वया रारपच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत्॥

वाचस्सामम्—

१. इं५द्रा५ग्नी५अ५पा५दि५या५६मे५। पूर्व्वागा४२ुत्२। पद्वतायि-
भा२ऽया४२ुः। हित्वाशिरोजि२ह्वयारा। रापच्चारा४२ुत्२।
त्रिं२शत्पदा। नि२याऽ२३। क्राऽ२ुमा३२३४अ५हो५वा५।
ऊ२३ऽ२३४ पा५॥ ३०॥

ऋषिः—बालखिल्याः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२८२.इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः॥

त्राम द्वे—

१. इं४द्र५ने४दी५य५ए४दि५। हा४यि४। मि५त४मे५। धा५। भिर
रूतिभिः। आशंतऽ२३मा२। शंतमाभिर२भिष्टिभिः।
आस्वाऽ२३ पे२। स्वाअ२३हो४ऽ३। पि२भिरॅरो३२३४५यि५।
डा५॥ ३१॥

२. इं४द्र५ने४दी५य५ए४दि५। हा४यि४मि५त४मे५। धा५। भि५
रू५ति४भा४यि४ः। आशन्तमशंतमा४२ुभायिः। आँभिष्टिभिः।
आस्वा४२ुपायिस्वाऽ२३। हा४ऽ३। पि२भि२रो३२३४५यि५।
डा५॥ ३२॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २३ १ २
२८३.इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम्।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम्॥

प्रहितौ द्वौ—

१. इ५त५ऊ५ती५। वो२३ओजा२३रा२म्२। अँ३हो२३वा२। प्र२हे२ता२र२मप्राही२३ता२म्२।अ३ँहो२३वा२।आ२शु२-ञ्जे२ता२रा२३ॱ३हायिता२३रा२म्२। अ३ँहो२३वा२। र२थायितममतूर्त्ताऽ२३४न्तू५।ग्रि३या२३।वाऽ२र्व्द्धा३२३४ अ५हो५वा५।स्तु२षे२ऽऽ॥ ३३॥

२. इ५त५ऊ५ती५वो५अ५जा५६रा५म्५। प्र२हे२तारमप्रहित-मुहुवाऽ२३होयि।आ२शुञ्जेतार२ॱ।हायितारमुहुवाऽ२३हो। र२थी२।तमाऽ२म्२।अ३तू२र्त्ता३२३४न्तू५ग्रिया२३।वाऽ२र्व्द्धा३२३४अ५हो५ वा५।स्तौ२३षा३२३४५यि५॥ ३४॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

१ २र ३ १ २ ३ २उ ३ १ २र
२८४.मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन्।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २र
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि॥

आत्रे द्वे—

१. मो५षु५त्वा५वा५। घाताऽ२३४५ः। चा३२३४ना५। आ२रे अस्मन्निरीरॅ२र२म२न्२।आरा२ऽत्ता द्वा४२।साधेमादा४२म्२। नाआ ग२हि२।आयिहॅवासा४२न्२।ऊपश्रु२धि२।इडाऽ२३ भा२३४ऽ३।ओऽ२३४५यि५।डा५॥ ३५॥

२. मो५षु५त्वा५वा५घ५त५श्च५ना५६ए५। आरा अस्मन्निरी रमा४२उन्२। हा४२ऊऊवा४२उ। यि२। ऊऽऽ। आ२रात्ताद्वास धमादा४२उम्२। हा४२ऊ ऊवा४२उयि२। ऊऽ२ न२आ२उगा३२ ३४ही५। आयिह। वासौ२वा२उओ३२३४वा५। उ२ पश्रूऽ२३ धा२३४ऽ३ यि३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ३६॥

[इति] सप्तमः प्रपाठकः॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२८५. सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे।
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित् पृणते मयः॥

गौरीवीते द्वे—

१. सु५नो५त५सो५म५पा५व्ना५६ए५। सोममिंद्राऽ२३। होवा२३ हा२। य२वज्राऽ२३यि३णा२यि२। पचता२पक्तायिरवसे२ कृ२। णू। ध्वा२ऽमीऽ२३ध्वा२यि२। पृ२। णात्। आयित्प्रे२३ हा२। ण२तायिमाऽ२३या२३४ऽ३ः। ओंऽ२३[४]५। डा५॥ १॥

२. सु४नो३त४सो५म५पा५। आ३व्ना२उओ३२३४वा५। इ४या४ हा५यि५। सोममिंद्रा४२उ। हुवे४२उहुवे४२उहो। यावेज्रिणा४२उ यि२। पचतापक्तायिरवसे२कृ२। णू। ध्वा२ऽमीऽ२३ध्वा२ यि२। पृ२। णान्। आयित्प्रे२३हा२। ण२तायिमाऽ२३ याऽ२३४ऽ३ः। ओं२३४५यि५। डा५॥ २॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

२८६. यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम्।
सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे॥

१. य३स्स४त्रा४हा३वि३च४ऋ४ष५णी५: । इं५द्र५ता२३ऽ३हू४ म५हे४व४या५म्५ । इंद्रंतंऽहूम२हेवाऽ२३या२म्२ । सहस्रमन्यो तुविनृम्ण२सत्पाऽ२३ता२यि२ । भ२वासाऽ२३ मा२ । त्सूनोवृ२ धे२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—पुरुच्छेपः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२८७. शचीभिर्नः शचीवसू दिवानक्तं दिशस्यतम् ।
मा वां रातिरुप दसत्कदा च नास्मद्रातिः कदा च न ॥

साम—

१. श४ची४भि४र्न्ना४ऽ५: श५ची५व४सू४ । दिवानक्तंन्दि२शस्य- ताम् । मावा४रुम्२ । रा२तिरुपदसत्क२दाचना । आस्मा४रुत्२ । रातिष्क२दोऽ२३४वा५ । चा४ऽ५नो५६हा५यि५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२८८. यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः ।
आदिद् वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्तारं विव्रतानाम् ॥

पञ्चाणि त्रीणि—

१. य५दा५क५दा५ । चाऽरुमा३२३४औ५ होवा५ । ढू३२३४षे५ । स्तो२ताजरे२त२मर्त्ति२या२३: । आदिद्वन्दे२ । तावँरुणाऽ २३४म्४ । वि३पा२३४गि३रा२ । धार्त्ता२राम्वीऽ२३ । व्राऽरुता ३२३४औ५ हो५वा५ । ना३२३४५म्५ ॥ ५ ॥

२. य५दा५क५दा५च५मा५हा५उ५ । ढूषा४रुयि२स्तोता४रु । ज२ रा२इ२ । त२म२र्त्तियः । आदिद्वन्दारु । अ३होर्३हा२३ । हा२३ यि३ । तावाऽरुरू३२३४णा५म्५ । वि२पा२गिरा । धर्त्तारंव्यारु ।

अ३होइँहा२३ । हा२यि२ । व्राताना२म्२ । इडा२२३भा२३४२३
ओ२२३४५यि५ । डा५ ॥ ६ ॥

३. य४दा३२४क५ । दा३२४च४मी५ । ढु३षा२३यि३ । स्तो४ता५ ।
ज२ रा२यि२ । त२मार्त्तीया२३ः । आदायिद्वंदा२३यि३ । तावा२
रू३२३४णा५म् । वि५पा५ । गि३रौ२वा२ओं३२३४वा५ ।
ध५र्त्ता५ । रं३व्यौ२वा२ओं३२३४वा५ । व्र४ता४२५ना५म्५ ।
हो४२५यि५ डा५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२८९. पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
यः सम्मिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥

सोभरे द्वे—

१. पा४हि५गा५आ४ । ध२सोमा२२३दा२यि२ । आयिंद्राय२मे२ ।
धि२ याता२२३यि३था२यि२ । यस्सम्मिश्लो२हरियो२र्यः ।
हायिरैण्या-या४२ । आयिद्रोवा२३ज्री२३ । हि२रो२२३४वा५ ।
ण्या४२५यो-५६हा५ यि५ ॥ ८ ॥

२. पा५हो४पा४ही५ । गा२अं२ध२सोमा२२३दा२यि२ । आयिंद्रा
य२मे२ । धि२याता२२३यि३था२यि२ । यस्सम्मिश्लो२हरि
योर्यः । हायिरैण्याया४२ः । आयिद्रोवा२३ज्री२३ । हि२रो२२३४
वा५ । ण्या४२५यो५६हा५यि५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९०. उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥

वैयश्वम्—

१. उ५भ५य५ऽ५श्रृ५ण५व५च्चना५६ए५। आयिंद्रोऽ२अ२र्वांगि-
दंवचाऽ २३ः। होवा२३हा२यि२। स२त्रा̱चिया̱२म२घवा̱ऽ२न्̱२।
सो। मापा२३हा२यि२। ता३२३४या५यि५। धि२या̱शविष्ठ
आऽ२३होयि। ग२मात्। अऽ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५
डा५॥ १०॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२९१. महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे।
२ ३१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ॥

सुस्त्रा इतीये द्वे—

१. म५हे̱५च५नो४वा५। त्वा२अ२द्रा३२३४यि४वा५ः। प२रा̱२
शु२ल्का̱२। या२३दायासा२३यि३। न४स५। ह३स्रा२३।
याना̱यु२ ता̱२। य२वाज्रायिवो२३। न४श५। ता̱३या२३।
शाऽ२३ता४ऽ३। मा२३४५घो५६हा५यि५॥ ११॥

२. म५हे̱५चा२३न४त्वा̱५अ४द्रि४वा५ः। पारा̱शु२ल्का̱२। य२दा
या२ऽसा४२यि२। नसहस्रा४२। यना̱यु̱ता̱यावॆज्रिवा४२ः।
न२शाताऽ२३या२। श२ताऽ२३। माऽ२घा३२३४औ̱५हो̱५
वा५। म२हो̱विशे२ऽऽ॥ १२॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

१ २ ३ २ ३२उ ३ १ २
२९२. वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे॥

इन्द्राण्याः साम—

१. व४स्या५ऽऽ५इं५द्रा५सि५मे५ । हा४उ४पि४तू५ः । उ३ता२ुभ्रा३२ ३४तू५ः । अ२भूञ्जातौ२ । वा२ुओ३२३४वा५मा२तोचामौ२ । वा२ुओ३२३४वा५ । छ२द२य२थः२ । सा२३मावासौ२ । वा२ुओ३२३४वा५ । व२सूत्वानौ२ । वा२ुओ३२३४वा५ । य२रोऽ-२३४वा५ । धा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९३. इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥

सौभवम्—

१. इ३मा२३४यि४ । इ४म४इ४ । द्रा५य५सु५न्वा५६यि६ । रा५ यि५ । सोमासोदध्याशिराः । ताऽऽ२आमदायवज्रहस्त-पीतायायि । हराऽ२३ हो । भ्याऽऽयाऽ२३हो । हि२योऽ२३ । काऽ२ुआ३२३४ अ५हो५वा५ । ऊ३२ ३४पा५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९४. इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥

गार्त्समदम्—

१. इ४म४इं४द्रा४ऽ५म५दा५य४ता४यि४ । सोमाश्चिकित्र-उक्थिनाः । मा२ऽधो४रुष्पापा४२ु । नउपनोगिराश्शा२ऽर्णू४२ु । रा२स्वस्तोऽ२३त्रा२ । य२गिर्व्वाऽ२३णा२३४ऽ३ः । ओऽ२३ ४५यि५ । डा५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—मेधातिथिमेध्यातिथी; विश्वामित्र इत्येके ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९५.आ त्वा३ऽ द्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम्।
इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरङ्कृतम्॥

वाच्यस्साम—

१. आ५त्व५द्या५सा५६ब५दर्दु५घा५म्५। हु२वायिगा२र्य२त्रवे२ प२स२म्२। आयिंद्राऽन्धे२३नू२म्२। सु२दुघा२म्२। आ। निँयाऽ२मा३२३४यि४षा५म्५। उ२रुधाऽ२३रा२म्२। अ२ रङ्काऽ२३र्त्ता२३४ऽ३म्३। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ १६॥

ऋषिः—नोधाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९६.न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः।
यच्छिक्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदा मिनाति ते॥

बार्हदुक्थम्—

१. न४त्वा५बृ५ह४। तो४ऽ५द्र५या४ः। वरन्तइन्द्र२वीडाऽ२३ वा२ः। याच्छिक्षासी४२। स्तूवँतायिमा४२। व२तेवसू। नकिष्टाऽ२३दा२। मि२नाताऽ२३यि३ता२३४ऽ३यि३। ओऽ२३ ४५यि५। डा५॥ १७॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९७.क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः॥

वाशम्—

१. क५ई५म्वे५दा५। सु२तायिसा२ऽचा४२। पिबंतंकद्वायो२ऽ

दाधा४रुयि२ । अ२यंयःपुरोविभिनत्ताओ२ऽजासा४रु । मं२
दानाऽ२३श्शी२३ । प्राऽरुया३२३४अ५हो५वा५ । धा३२३४
सा५ः ॥ १८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९८. यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि ।
अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय ॥

तौरश्रवसम्—

१. य२दिंद्राऽ२३शा४सो४अ५व्र५ता५म्५ । च्या२व२या२स२ ।
दा२३ सास्पारौ२ । वा२३२ । अ२स्माकामौ२ । वा२३२ ।
शुम्मघ२व२न्२ । पु२रुस्प्रेहौ२ । वा२३२ । व२साव्यायौ२ ।
वा२३ऽ२३ । धि२वौँऽ२३४बा५ । हा४ऽ५यो५६हा५ यि५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—बहवः-(पर्जन्यब्रह्मणस्पत्यदितयो विश्वेदेवाः)॥
छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९९. त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः ॥

त्वाष्ट्री साम—

१. त्व३ष्टा२३४ । नो४दै४वि५य५म्५ । व४चा५ः । प२र्जन्यो
ब्रह्म२णस्पाऽ२३ती२ः । पु२त्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु२पातूऽ२३ना२ः ।
दु२ष्टाराऽ२३त्रा२ । म२णम्वाऽ२३चा२३४ऽ३ः । ओऽ२३४५-
यि५डा५ ॥ २० ॥

ऋषिः—बालखिल्याः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३००.कदा च न स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥

अदिदसाम—

१. क५दा५च५ना५स्ता५६री५र५सा५ यि५। नेरन्द्रा२सा३२३४ श्चा५। सा२यि२दा२शू३२३४षा५यि५। उ३पो४पे३न्नु३ म४घ५व५न्भू३य४इ५त्५। हाऽ२यि२नू३२३४ता५यि५। दा२ नं२दा३२३४यि४ वा५। स्य२पोऽ२३४वा५। च्या४ऽ५तो५६ हा५यि५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०१.युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥

अजीगर्त्तम्—

१. आयिही४२। आयिहि२हायि। युंक्ष्वा२हि२वा२३र्त्रा४ऽ३ हं२त३म५। हारीइं२द्र२। प२रावा२ऽताऽ२३४ः। अ३र्वा२३४ ची३ना२ः। माघ२व२न्२त्सो। मपायिता२ऽयाऽ२३४यि४। उ३ग्रा२३४ऽऋ३ष्वा२३यि३। भि२रोऽ२३४वा५। गा४ऽ५हो- ५६हा५यि५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०२.त्वामिदा ह्यो नरोऽ पीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः।
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥

माधुछन्दसम्—

१. त्वा३मिऽदा५। होरुयिरु। हि३यो४न४रा५६ए५। अ५पायिष्य२ न्वा। त्रायिन्भूरुर्णा३२३४या५ः। सइंद्र२स्तोमवा२ह२स२ः। इ२हाश्रूधारु। अ३हो२३४वा३हा३यि२। उ२परस्वासारु। अ३ होर३४वा३हा२। र२मागाऽ२३हा२३४ऽ३ यि३। ओऽ२३४५ यि५। डा५॥ २३॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३०३. प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः।
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी॥

अषमः—

१. प्र२तायि। इ३हा२। आयि। इ३हा२। उ२व२द२। शी२३ आयती२। आयती२। उ२च्छा। इ३हा२। आ। इ३हा२। ती२दु२। ही२३र्तादिवा४२ुः। आदिवा४२ुः। अ२पो। इ३हा२। ओ। इ३हा२। माहीवृ२णु२ते२च२। क्षु२षातमा४२ुः। आतमा४२ुः। ज्यो२तायि। इ३हा२। आयि। इ३हा२। कृ२ णो२। ती२३सूनेरी४२ु। ओनरीऽ२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २४॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३०४. इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना।
अयं वामह्वेऽ वसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः॥

अश्विसाम—

१. इ२मा२उ२वा२न्दि२वि२ष्ट२या३२३४ऐ५ही५। उ२स्त्रा२ह२वं२ ते२अ२श्वि२ना३२३४ऐ५ही५। अ२यं२वा२म२ह्वे२व२से२श२ची२व२ सू३२३४ऐ५ही५। वि२श२म्वि२शः२ःहि२ग२च्छ२था३२३४ऐ५ही५। हो४ऽ५यि५ डा५॥ २५॥

ऋषिः—पौर आत्रेयः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३०५. कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः।
घ्नता वामश्नया क्षपमाणोंऽ शुनेत्थमु आद्वन्यथा॥

संयोजनम्—

१. कु४ष्ठ५ष्को४वा५म५श्वि५ना५आ४। तापानो२दे२। वामर्त्ता या२३ः। होवा२३हा२३४यि४। घ्न३ता२३४वा३मा२ऽ। [1]श्नाया२३। होवा२३हा२३४यि४। क्ष३पा२३४मा३णा२ः। आ२ःशूना२३। होवा२३हा२३४यि४। इ३त्था२३४मु३वा२३त्३। उवाऽ२उन्२उ। य३था२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥ २६॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३०६. अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु।
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे॥

आस्विसाम—

१. अ३या२३४म्४। अ४यं४वा५म्म४धु५म५त्ता५६मा५ः। सु२तस्सोमो२दिविष्टि२षु२। ओ२हा२। ओ३हा२३४। ओ३हा२। तामश्विनापिबतंतिरोअह्नि२य२म्२। ओ३हा२। ओ३हा२३४।

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'स्नाया...' इति पाठः। —सम्पादकः

ओ३हा२ । धत्ताः२रा२ऽत्ना४२ु । ओ३ँहा२ओ३ँहा२३४ । ओ३
हा२ । नि२दाऽ२३ । शूऽ२ुषा३२३४औ५हो५वा५ । ऊ३२३४
पा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—मेधातिथिमेध्यातिथी ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०७. आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या ।
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥

सोमसाम—

१. आ५त्वा५सो५मा५ । स्य२ । गल्दाऽ२ुया३२३४औ५हो५वा५ ।
सदा२ँयाचन्न२हञ्जियाऽ२३ । भूर्णा२ुओ३२३४वा५ । मृ२गन्न-
सवने२षु२चु२क्रु२ध२म्२ । क२ईशाऽ२३ना२म्२ । नायाचि२-
ष२त्२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—देवातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०८. अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।
उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥

अजमायवम्—

१. अ४ध्व४र्यो४द्रा४ऽ५व५या५तु४वा४म्४ । सोममिंद्रा४२ुः । पि२
पासा२ऽती४२ु । उपो२नू२ । २ नंयूयु२जे२वृ२ । षाणा२ऽ
हारी४२ु । आ२चाजाऽ२३गा२ु । म३वृ३त्र२हा । अ२३हो४वा५ ।
हो४ऽ५यि५ ॥ डा५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०९. अभीषतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन् बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥

प्रैषयमेधः—

१. अ५भी५ष५त५स्त५दा५हा५उ५ । भरा । इंद्रज्यायष्क२नीयाऽ २३सा२ः । पु२रू२वसु२ऋहिमघवन्ब२भूवाऽ२३यि३था२ । भरायिभाऽ२३रे२ । च२हव्य२ः । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २र
३१०.यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
३ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥

वैरूपे द्वे—

१. य२दिंद्राऽ२३या४व४त५स्तु५वा५म्५ । ए२तावदहमीशीया । स्तोताराऽ२३मी२त्२ । दाधिषे२ । र२दावा२ऽसा४२उ२ । न२पापाऽ२३४त्वा५ । यारौ२वा२ओ३२३४वा५ । सा४ऽ५यि५षो५६हा५ यि५ ॥ ३१ ॥

शाम—

२. य५दिं५द्र३या२व३त४स्तु५वा५म्५ । आयिता२३ । वादा२३हा४मी५ । शीया२३४२उ२ । स्तोता२रामीऽ२३त्३ । द४धि४षे५र५दा५ । वासा२उ४२उ२ । ना पा२पात्वाऽ२३ । यारौ२वा२ओं३२३४वा५ । सा४ऽ ५यि५षो५६हा५यि५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
३११.त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ ९ ॥

वैश्वदेवम्—

१. त्व४मिं५द्रो४हा४यि४। प्र५तू५र्त्ति५ष्वा४वा५। आभिवि२श्वा२ः। अ२सायिस्पा२ऽर्द्धा४२ुः। आशस्ति२हा२ज२नि२ता२वृ२। त्रातू२ऽरासा४२ुयि२। त्वान्तू२ऽ[1]रियि२ु। त३रु३ष्य२ता। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ३३॥

ऋषिः—नोधाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३१२. प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि।
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ॥

पुरीषम्—

१. प्र५यो५रि५रि५क्ष५ओ५ज५सा५६ए५। दि२वस्सदो२भ्य२स्परि। नत्वा। विँव्या। अ२होॅ३वा२। चा। रजः। अ२होॅ३वा२यि२। द्र२ पार्थिवाम्। अतिवाऽ२३यि३श्वा२म्२। वावक्षि२थ२। [2]इडाऽ२३४भा२३४ऽ३। [2]ओऽ२३४५यि५डा५॥ ३४॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३१३. असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा न स्तोममन्धसो मदेषु॥

प्राकर्षम्—

१. अ२सौ२हो२वा२३हा२ुयि२ु। वी३२३४दे५। वाऽङ्गोऽऋ। जी२ुक३मं४धा५ः। न्यौ२हो२वा२३हा२ु। स्मी३२३४नी५। द्रोजनु। षे२ुमु३वो४चा५। बो२धौ२हो२वा२३हा२ुयि२ु। मा३२३४सी५। त्वाहरि। अ२ुश्व३य४ज्ञै५ः। बो। २धौ२हो२वा२३हा२ुयि२ु। ना३२३४ स्तो५। म२मंध। सो२३४ऽ३। मा२३दा४ऽ५यि५ षू५६५६॥ ३५॥

---

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'यरि' इत्याद्यन्तविपर्यत्वेन पठितं, तूर्यशब्दस्य 'तूरिय' इत्येतेनैव भाव्यम्, न तु 'तूयरि' इति। २. मूलगानग्रन्थेऽत्र त्रुटिपूर्तिरित्थंकृता—इडाऽ२३भा२३४ ४ऽ३ इति। संशोध्यैतदस्माभिः प्रकाशितम्। —सम्पादकः

निहवः—

२. आयिही२३। आयिही२। ए३हि३या२। ओ३२३४वा५हा२यि२। अ२सा२वि२दे२व२ज्ञो२ऋ२जी२का२३माऽन्धा२३ः। आन्धा२ः। अ३न्धा२। ओ३२३४वा५। हा२यि२। न्य२स्मि२न्नि२द्रो२ज२नु२षे२मू२३वोचा२३। वोचा२। वो३चा२। ओं३२३४वा५। हा२यि२। बो२धा२म२सि२त्वा२ ह२र्य२श्वा२३याज्ञैः२३ः। याज्ञै२ः। य३ ज्ञा२। ओ३२३४वा५। हा२यि२। बो२धा२न२स्तो२ म२मं२ध२ सो२मा२३दायिषू२३। अयिषू२। ए३षु३वा२ओ३२३४वा५। ब्धा२यि२। आयिही२३। आयिही२। ए३हि३या२। ओ३२३४वा५। हा२३४। औ५हो५वा५। ई३२३४५॥ ३६॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३१४. योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि।
असो यथा नोऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः॥

योनिनीद्वे—

१. यो४नी५ः तआयि। द्रा२३सद। ना२अ३का४री५। ता४मा५। नृभायिः। पुरुहू२३। ता२प्र३या४ही५। आ४सा५ः। यथा। नो२३अवि। ता२वृ३ध४श्ची५त्५। दा४दा५ः। वसू। नी२३ममादा२३४ऽ३। चा२३सो४ऽ५मा५६५६यिद्ः॥ १॥

२. योनि२ष्ट३आ२यि२। द्र३स४द४ना५यि५। हो४वा५। आका२३रा२यि२त३मा४नृ४भी५ः। हो४वा५। पू। रु२हू२३। ता२प्र३या४ही५। हो४वा५। आसो२य३था२। नो३अ४वि४

ताप । होॅ४वाप । वार्द्धा२३ः । चा२ुयि२ुद्द३दो४व४सूप । हो४ वाप । नायिम२म३द२ुः । च३सो४मैपः । हो४वापहो४ऽपयिप । डाप ॥ २ ॥

ऋषिः—गातुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१५.अदर्दरुत् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः ।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद्दानवान् हन् ॥

औरुक्षये द्वे—

१. अ४द५र्द५रू४त्४ । स२म२सृ२जो२विखानि२[1] । त्व२मर्णाऽ- २३४वा५न्५ । ब२द्ब२धा२नाँ२अराम्णा२ः । म२हान्ताः२३४ मी५ । द्र२प२र्व्व२तं२वियाद्व२ः । सृ२जाद्धाऽ२३४रा५ः । अव२ यद्दा२न२वाऽ२३न्३हा२३४ऽ३न्३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

२. अ४द५र्द५रु४त्स५म४सृ५जा४ःविखानि । त्वमर्णवान्बद्बधा- नाँ२अ२राऽ२३म्णा२ः । म२हान्तमिंद्रपर्व्वतम्वि२याऽ२३ द्वा२ः । सृ२जाद्धा२रा४२ुः । अवा२ॅयद्दा२न२ । वाऽ२ु । या३२३४अ५हो५वा५ । हा३२ ३४५न्५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—पृथुर्वैन्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१६.सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तुविनृम्ण वाजम् ।
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्याम त्वोताः ॥

पाथे द्वे—

१. सू४ष्वा५णा४सा५ः । इं३द्र२स्तु३ । म२सि३त्वा५ । स४नि४ ष्यं३त४श्चि५तु५वि५नृ५ । म्णा३वा३२३४जा४म्५ । आ५न५ः ।

---

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'विषानि२' इति लिखितम् । —सम्पादकः

भ३रा२ओं३२ ३४वा५। सु५वि५तं४य४स्य५को५। ना४। ता४ना५त्मा४ना५।स२हि२या२।मा२३४ऽ३।तू२३वो४ऽ५ ता५६५६:॥५॥

२. ओं२३हो२३हो२यि२।सू३२३४ष्वा५।णासा:।इं३द्र२स्तु३। म२सि३ त्वा५।ओ२३हो२३हो२यि२।सा३२३४नी५।ष्यंता:। ची२३त्तुवि। नृ२म्ण३वा४जा५म्५। ओ२३हो२३हो२यि२। आ३२३४ना५:।भरा।सु२वि२ता३म्३।य२स्य३को४ना५। ओं२३हो२३हो२यि२। ता३२३४ना५। त्मनास२हि२या। मा२३४ऽ३।तू२३वो४ऽ५ता५६५६:॥६॥

ऋषि:—सप्तगु:॥ देवता—इन्द्र:॥ छन्द:—त्रिष्टुप्॥ स्वर:—धैवत:॥

३१७.जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम्।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दा:॥

सौपर्णे द्वे—

१. ज५गृ५ह्मा५ते५द५क्षि५ण५मो५हा५अ५हा५६ए५।इंद्रहाऽ२३ स्ता२म्२। व२सू२यवो। वसुपा२३। ता२यि२व३सु५। ना२म्२। ओं२३हा२। ओ२३। हा२३ए२। वि२द्माहित्वा। गोपती२३म्३।[1]शु२र३गो५ ना२म्२।ओ२३।हा२।ओ३२। हा२३। अ२स्मभ्यं चायि। त्रा२३म्वृष। ण२१२र३यिं५म्५। दा२:। ओ२३। हा२। ओ२३। हा२रयायिंदा३ उ३वा२३। ऊ२३४पा५।अ२होअ२हो-वाऽ२३४५हा५उ५।वा५।ई३२३ ४५॥७॥

१ वेदेऽत्र 'शूर' इति दीर्घोकारान्त: पाठ:। परं गानग्रन्थे 'शु' इति लघूकार: पठित:। -सम्पादक:

२. ज५गृ५ह्या४ते५द४क्षि५ण५म्। अ५हौ४हो४वा४हा५यि५। इं२द्रा२ु हा३२३४स्ता५म्।५ व२सू२यवो। वसुपा२३। ता२ुयि२ु व३सु५।नौ२।वा२ुओ३२३४वा५।हा२३हा२यि२। वि२द्मा हित्वा। गोपती २३म्।३ शू२ुर३गो५। नौ२। वा२ुओ३२३४ वा५। हा२३ हा२यि२। अ२स्मभ्यञ्चायि। त्रा२३म्३वृष।ण२ऽ२ुर३यि५म्५।दौ२।वा२ुओ३२३४वा५। हा२३हा२३४ अ५हो५वा५।ई३२३४५॥८॥

वात्सप्राणि त्रीणि—

३. होई४२ु।३।ज२गृ२ह्याते२दक्षि२ण२म्२।ई२ द्र२हास्ता४२ु म्२। हास्ता४२ुम्२। २। व२सू२यवो२॑व२सु२प२। ते२व२ सूना४२ुम्२।सूना४२ुम्२।२।वि२द्माहित्वा२गोपति२म्।२ शू२र२गोना४२ुम्२। गोना४२ुम्२। २। अ२स्मभ्य२ञ्चि२ त्रम्वृष२।णऽ२२या-यिदा४२ुः।आयिंदा४२ुः।२।हो[१]....२ु।२। होयाऽ२ु।वा३२३४ अ५हो५वा५।ई३२३४५॥९॥

४. आ४अ५हो५यि५२। आ४अ५हो५६वा५[२]...२यि२। २। अऽ२३ हो३वा२। ज२गृ२ह्याताथि। दक्षिणा२३म्३। इं२ुद्र३ह४-स्त५म्५द्र४ह४ स्त५म्५। द्र४ह४स्ता५म्५। व२सू२यवो। वसुपा२३। ता२ुयि२ुव३ सू४ना५म्५। व४सू५ना५म्५। २। वि२द्माहित्वा। गोपती२३म्। ३। शू२ुर३गो४ना५म्५।र४गो४ ना५म्५।२।अ२स्मभ्यञ्चायि। त्रा२३म्३वृष। णऽ२ुर३ यिन्दा५ः। र४यि४न्दा५ः। २। आ४अ५हो५यि५।२।आ४अ५ हो५६वा५।अ३॑हो२यि२। २।अऽ२३हो३वा२३४।अ५हो५ वा५।ई३२३४५॥१०॥

१,२. अत्र पत्रांशं नष्टमतोऽक्षरत्रयाभावो विद्यते। —सम्पादकः

५. हा५उ५३ । ओ । हौहोवा२ । ३ । ज२गृ२ह्णातायि२ । दक्षिणा२३म्३ । इं२ुद्रह४स्त५म्५ । द्र४ह४स्त५म्५ । द्र४ह४स्ता५म्५ । व२सू२यवो । वसुपा२३ । ता२ुयि२ुव३सू४ना५म्५ । व४सू४ना५म्५ । २ । वि२ द्माहित्वा । गोपती२३म् । ३ । शू२ुर३गो४ना५म्५ । र४गो४ना५म्५ । २ । अ२स्मभ्यञ्चायि[1] । त्रा२३म्३ वृषा । णः२ुर३यि४ दा५ः । र४यिं४ दा५ः । २ । हा५उ५३ । ओं । होहोवा२ । २ । ओ । हो । हो ऽ२ु । वा३२३४ । अ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
३१८. इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥

गौरीवितम्—

१. इं२द्र२न्ना३२३४रो५ । ने२मा२ुधा३२३४यि४र्ता५ । ह२वंता ऽ२३यि३ । य२त्पा२ुरा३२३४या५ः । यू२ना२ुजा३२३४ता५यि५ । धि२यास्ता ऽ२३ः । शू२रो२ुना३२३४ऋ४षा५ । ता२श्रा२ुवा३२३४सा५ः । च२कामा ऽ२३यि३ । आ२गो२ुमा३२३४ती५ । व्र२जा२ुयि२ुभा३२३४जा५ । त्वन्ना३ॅउ३वा२३ए२३ । उपा३२३४५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३१९. वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ २ ३ १ २ ३ २
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्द्धि चक्षुर्मुमुग्ध्या३स्मान्निधयेव बद्धान् ॥

---

१. अत्र मूलगानग्रन्थे 'अ२स्मभ्यश्चायि' इति पाठः । —सम्पादकः

वैदन्वतम्—

१. व५यो५हा५हा५उ५। सूपर्णाउपसेदुरायिंद्र२म्२। प्रि२यमेधाऽ ऋषयोनार्धमाऽ२३ना२ः। अपध्वांतमूर्णुहिपूर्धि२चाऽ२३क्षू२ः। मु२मु२ग्धि। औं३हो२३यि३। आ४२ऽ। स्मा२३न्निधा। ये२३-४ऽ३। वा२३। बा४ऽ५द्धा५६५६न्६ ॥ १३ ॥

ऋषिः—वेनो भार्गवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२०. नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥

महायामम्—

१. आ४२ुपाम्। अ३यी२यम्। अ३ॅहो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊ४२ु। नाकेसुपार्ण मुपयात्प३तं२ताम्प३तं२तम्। अ३ॅहो२३ यि३। आ४२ुयि२। ऊ२। आ४२ु याम्। अ३ या२ यम्। अॅ३ हो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊ४२ु। हृदावेनांतो अभ्यचाक्ष३त२ त्वा। क्ष३ त२त्वौ३ॅ। हो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊ४२ु। आ४२ुयाम्। अ३या२ यम्। अ३ॅहो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊ४२ु। हिरण्यपाक्षवरुणास्य३ दू२ताम्। स्य३दू२तम्। अ३ॅहो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊ४२ु। आ४२ुयाम्। अ३या२ यम्। अ३ॅहो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊ४२ु। यमस्ययोनौ शकुनांभु३र२ण्यूम्। भु३रण्युम्। अ३ॅहो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊ४२ु। आ४२ुयाम्। अ३या२यम्औं३हो२३यि३। आ४२ुयि२। ऊऽ२। वा२हा२३ऽउवाऽ२३। ए२३। दिवम्। २। ए२३। दिवाऽ२३४५म् ॥ १४ ॥

ऋषिः—बृहस्पतिर्नकुलो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२१.ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

ऋतसामनी द्वे—

१. ब्रह्मा । ब्राऽ२३ह्मा२ । ज२ज्ञा२नं२प्र२थ२मं२पुरास्ता२त्२ । विसायि । वाऽ२३यि३सी२ । म२त२स्सु२रु२चो२वे२न आव२ः । सबू । सा२३बू२ । ध्नि२या२उ२प२मा२अ२स्य वायिष्ठा२ः । सताः । साऽ२३ ता२ः । च२यो२नि२म२स२त२ श्चवायिवा२३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ १५ ॥

२. हुवेऽ३हा२३यि३ । २ । हिषाऽ३या२ । ब्रह्म२ज२ज्ञा । ना२३म्३प्रथ । मं२पु३र४स्ता५त्५ । वि२सीमताः । सु२रुचः । वे२न३आ४ वा५ः । स२बुध्नियाः । उ२पमाः । अ२स्य३वि४ष्ठा५ः । स२ तश्चयो । नी२३मस । त२श्च३वि४वा५ः । हुवेऽ३हा२३यि३ । २ । हि । षाऽ२ः । आ३२३४ । अ५हो५वा५ । ए२३ । ऋ२तम मृत२म्२ । २ । ए२३ । ऋ२तममृता३२३४५म्५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—सुहोत्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२२.अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचांस्यस्मै स्थविराय तक्षुः ॥

वारवन्तीयम्—

१. अ५पू५र्व्या५अ५हो४हो४हा५यि५ । पु३रु२त३ । मा२नि३य४-स्मै५ । म२हे्वीरा । या२३तव । सा२यि२तु३रा४या५ । वि२ रप्शि२ । ना२यि२व३ज्रि४णे५ । शा२३४ऽ३न्त२मा३नी५ ।

वर्चा॒ꣳसिया। स्मा२३यि३ स्थवि। रा२ुय३त४क्षू५:। स्थ३वि४ रा॒५य५त५क्षू५:। स्थ२वि२। रा२३४ऽ३। या२३ता४ऽ५ क्षू५६५६। स्थविरा॒२य२त२क्षू३२३ ४५:॥ १७॥

[इति] दशतिः॥

ऋषिः—द्युतानः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
३२३.अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदीयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नीहितिं नृमणा अधद्राः॥

क्षुरपविणी द्वे—

१. अ२व२द्रा३२३४प्सा५:आꣳ२शू२ुमा३२३४ती२म्५। आती२३। ष्ठा३२३४५ त्५। ई२या२ुना३२३४ष्कृ५। ष्णो२ दा२ुशा३२३४भी५:। साहा२३। स्त्रा३२३४५यि५:। आ२व२ त्ता३२३४मी५द्र२श्शा२ुची३२३४या५। धामा२३। ता३२३४ म्५। आ२प२ुस्नी३२३४ही५। ति२न्न२ुमा३२३४णा५:। अधाऽ२ु द्रा३२३४अ॒५हो॒५वा५। अ२धा२३द्राऽ२३४५:॥ १८॥

२. अ५व५द्र५प्सा५६ए५। आꣳशु२म३ती॒३म३ति२ष्ठाऽ२३त्३। ई॒३या२ुन३ष्कृ४ष्णा५:। दाश२भि३स्स३ह२स्त्राऽ२३यि३:। आ॒३व२ुत्त३मिं४द्रा५:। शाचि२या॒३ध३मं२ताऽ२३म्३। अ३ पा२ुस्नी॒३हि४ ती५म्५। नृमणाऽ२३:। अ४धा४ऽ५द्रा५:। हो४ऽ५यि५। डा५॥ १९॥

३. अ३व४द्र४प्सो॒३अ४ꣳ४शु५म४ती५म्५। अहो२३४यि४। औ॒३हो॒४वा५। आती२३ष्ठा२त्२। औ३ॅहो२३४यि४। अ॒३हो॒४ वा५ई॒३या२ु न३: कृष्णा५:। अ३ॅहो२३४यि४। अ॒३हो॒४वा५। दाश। भा२ुयि२ुस्स३ ह४स्त्रै५:। अँ३हो२३४यि४। अ॒३हो॒४

वा५ः। आ३व२ुत्त३मिं४ द्रा५ः। अ३ॅहो२३४यि४। अ३हो४ वा५। शाचि। या२ुध३मं४ता५ म्५। अ३ॅहो२३४ यि४। अ३हो४वा५। अ३पा२ुस्नी३हि४ती५म्५। अ३ॅहो२३४यि४। अ३हो४वा५। नृमाऽ२ुणा३२३४अ५हो५वा५। अ२धा२३-द्राऽ२३४५ः॥ २०॥

४. अ३व४द्र४प्सो३अ४ः४शु५म४ती५म्५। ए२३। अ२३हो४ऽ५ वा५६। आताऽ२३४५यि५ष्ठा५६५६त्६। ई२या२नष्कृ२ ष्णोद२शभि२रस्स२ हस्त्रै२ः। आवत्तम्। आयिंद्रा२३श्शचि। या२ुध३मं४ता५म्५। अ४प५स्नी४हि५ति५ नृ५म४णा५ः। ओ४वा५। अ२ध२द्रा२३आऽ२३४५॥ २१॥

ऋषिः—द्युतानः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३२४. वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि॥

द्यौते द्वे—

१. हा२३। ओ२३हा२३। ओॅ३हा२३। हा२यि२। वृ२त्रस्यत्वा। श्व२सथात्। ई२ुषमा४णा५ः। वि२श्वेदेवाः। अजहू२३ः। ये२ुस३खा४या५ः। म२ रुद्भिरायि। द्रा२३सखि। यं२ुते३ अ४स्तू५अ२थेमावायि। श्वा२३ष्पृत। ना२ुज३या४सी५। हा२३। ओ३ॅहा२३। ओ३ॅहा२३। हा२३४। अ५हो५वा५। आअ२३हो३२३४५ता॥ २२॥

२. होये२३। ह२याये२३। ह३या२ु। अ३हो३२३४वा५। हा२यि२। वृ२त्रस्यत्वा। श्व२सथात्५। ई२ुष३मा४णा५ः। वि२श्वेदेवाः। अजहू२३ः। ये२ुस३खा४या५ः। म२रुद्भिरायिं। द्रा२३सखि।

यं२ुते३अ४स्तू५। अ२थेमावायि। श्वा२३ष्पृत। ना२ुज३
या४सी५। होये२३। ह२याये२३। ह३या२ु। अ३हो३२३४।
वा५। हा२३४। अ५हो५वा५। आअ२ु३हो२। आअ२३ हो३२
३४५॥ २३॥

ऋषिः—बृहदुक्थः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३२५.विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान॥

सोमसामनी द्वे—

१. वी४धू५म्५। दद्रार्दद्रा। णा२३ꣳ३सम। ना२ुयि२ुब४हू५ना५
म्५। यू४वा५। नꣳसार्नꣳसा। ता२३म्पलि। तो२ुज३गा४रा५।
दे४वा५। स्यपाश्या२३ कावि। य२ुम्म३हि४त्वा५। आ४द्या५।
ममार्मा। रा२३सहि। या२३४ऽ३। सा२३मा४ऽ५ना५६
५६॥ २४॥

२. हꣳ३ऽ४। आ३४ऽ५। ह५ꣳ५। ह३ꣳ३२३४५। वि२धुंदद्रा।
णा२३ꣳ३सम। ना२ुयि२ुब३हू४ना५म्५। यु२वानꣳसा।
ता२३म्३पलि। तो२ुजं३ गा४रा५। दे२वस्यपा। श्या२३कावि।
य२ुम्म३हि४त्वा५। हꣳ३ऽ४। आ३४ऽ५। ह५हꣳ३२३४५।
अ२द्याममा। रा२३सहि। या२३४ऽ३ः। सा२३मा४ऽ५ना-
५६५६॥ २५॥

ऋषिः—द्युतानः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३२६.त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानोऽ शत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र।
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः॥

इं [द्र] वज्रे द्वे–

२. अ५हो५यि५तु५वा५म्४हरत्यत्स२सभ्यो२जायमा२ना३२३४:। अ५हो५अ५शा४। त्रुभ्यो२अ२भ२व२श्शत्रुरिं२द्रा३२३४। अ५हो५यि५गूढे४। द्यावापृ२ थि२वीअन्वविं२दा३२३४:। अ५हो५यि५वि५भू४। मद्भ्यो२भुवने२भ्यो२रणंधा३२३ ४५:॥ २६॥

३. त्वो४हा४यि४।ह३त्यौ२वा२ओं३२३४वा५।स२सभ्यो२जा-यमा२। नोवा२३।ओंवा२३४५।अ५शो४हा४यि४।त्रु३भ्यौ२ वा२ओं३२३४वा५।अभ२व२ श्शत्रुरि२।द्रोवा२३।ओंवा२३ ४५।गू५[1]ढे४हा४यि२वा२[1]।ओ३२३४[द्या]वा५।पृ२थि२ वी अन्ववि२।दोवा२३।ओंवा२३४५।वि५भो४ हा४यि४। म३द्भ्यौ२वा२ओ३२३४वा५।भुवने२।भ्योवा२३।ओवा २३४५।र४णा४ऽ५न्धा५:।हो४ऽ५यि५डा५॥ २७॥

ऋषि:—वामदेव:॥ देवता—इन्द्र:॥ छन्द:—त्रिष्टुप्॥ स्वर:—धैवत:॥

३२७. मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्स्नुम्।
करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे॥

ऋषिप्रमाणपदगणित अर्द्धवेय: सूर्यवर्च्चसस्सामनी द्वे–

१. मे४डी५म्५। नत्वावज्रिनंभृष्टि२माऽ२३न्ता२म्२। पु२रुं२ धस्मानं वृषभ॑ऽस्थि२राऽ२३प्स्नू२म्२। क२रोष्यर्यस्तरुषा-यिदुवाऽ२३ स्यू२:। आयिंद्रद्यु२क्षम्। वृत्राऽ२३। हाऽ२ ण३२३४अ५हो५ वा५।गृ२णी२३षेऽ२३४५॥ २८॥

१. अत्र नष्टलेखत्वात्त्रुटिपूर्त्यर्थं केनचिदेवं पाठो लिखित: 'हो४हा४यि४।मद्भ्यौ२'।—सम्पादक:

२. मे४डि५न्न५त्वा४। वा२३४अ४होऽ५। ज्रायि। ण२म्भारष्टा-
यिमौ२। वा२३ऽ२३४। ता५म्५। पु३रु२३४अ४हो५। ध२
स्मानंवृ। ष२भःस्थायिरौ२। वा२३ऽ२३४। प्स्नू५म्५। क३
रा२३४अ४हो५। षि२ अर्यस्तरुषायिर्ढूवौ२। वा२३ऽ२३४।
स्यू५ः। इ३द्रा२३४अ४हो५। द्यु२क्षम्वृत्राऽ२३। हाऽ२ुणा३२
३४अ५हो५वा५। गृ२णी२षे३२३४५॥ २९॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिपदाविराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

१ २ ३१ २३१२ ३१२ ३१ २३१२
३२८.प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्।
१ २ ३ १ २र ३ २
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः॥ ६॥

अहूशौ द्वौ—

१. प्र५वा४ः। माहेम२हे२वृ२धे[1]२। भराधू२३वा२म्२। प्र२चायि-
त२सायि। प्रासू२ुमा३२३४ती५म्५। कृणुध्वम्। ईहाऽ२ुवा३२-
३४यि४ शा५ः। पूऽ२३र्व्वी२ः। प्रचा। राऽ२३चा२। ष२णायि।
प्रा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५डा५॥ ३०॥

२. हं३२३४५। प्र२वो२म२हा२ुयि२ुमा३२३४हे५। वृ३धा२३४ऽ
३यि३। भ२रा३२३४ध्वा५म्५। हं३२३४५। प्र२चे२त२सा२ु-
यि२ुप्रा ३२३४सू५। म३ता२३४ऽ३यि३म्३। कृ२णू३२३४-
ध्वा५म्५। हं३२३४५। वि२श२ष्पू२र्व्वा२यि२ुः। प्रा३२३४
चा५। र३चा२३४ऽ३। ष२णा३२३४यि४प्रा५ः। हं३२३४५।
हा५उ५ हौ५हो४वा५६। हा५उ५वा५। ई३२३४५॥ ३१॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'वृ२द्धे२' इति पाठः। —सम्पादकः

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२९.शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि ॥

भारद्वाजम्—

१. शु५न४ऽ४हु५वे५म५म५घ४वा५न५मिं४द्रा४म्४। अ२स्मिन्भरे नृतमम्वाज२साऽ२३ता२उ२। शृ२ण्वन्तमुग्रमूतयेस२माऽ२३ त्सू२। घ्न। न्तम्वाऽ२३त्रा२३। होवा२३हा२। णि२सं२जित२ म्२। धनाऽ२३ नी२३। होवा२३हा२३४ऽ३यि३। ओ ऽ२३४५ यि५। डा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३०.उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ।
आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥

वैश्वदेवं मौरसश्च—

१. दिवया२। ओवा२। औ३हो२३वा२। उ२दुब्रह्मा। णी२३ऐर। त२श्र३ व४स्या५। इं२द्रं२समा। र्ये२३मह। या२व३सि४ष्ठा५। आ२ योविश्वा। नी२३श्रव। सा२त३ता४ना५। दिवया२। ओवा२। औ३हो२३ वा२। उ२प। श्रोता। म२ईव। तो२३४ऽ३। वा२३चा४ऽ५ऽ५सा५६५६यि६ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३१.चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात्।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥

पुरीषम्—

१. चइक्रं ४य४द५स्या५प्सु४वा४नि४ष५त्ता४म्४। उ२तोतदस्मैमध्विच्च२छ्छा२३द्या२त्२। पृ२थि२व्याम-[१]निषितंय२ दू२३धा२ः। पयोगो२३षू२। आदधा२ओषधी२षु२। इडा२३भा२३४३। ओ२३४५ यि५डा५॥ ३४॥

[इति] अष्टमप्रपाठकः॥

ऋषिः—अरिष्टनेमिस्ताक्ष्यः॥ देवता—ताक्ष्यः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३३२. त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये ताक्ष्यमिहा हुवेम॥

ताक्ष्यसामनी द्वे—

१. त्य५मू५षु५। वा२जि२। ना२३४५म्५। दे२व२जू२ता३२३४म्४। स५हो५वा३नं२ता। रु२ता२३। र२ुर३था४ना५म्५। अ२रि२ष्ट२ना ३२३४यि४मी५म्५। पृ२त२ना२३४३ज२मा३शु५म्५। स्व२स्त। यायि। ताक्ष्य२मि३हा२३४३। हू२३वा४५यि५मा५६५६॥ १॥

२. ई२य२इ२या२३हा२यि२। त्य२मू२षु२वा२जि२ना२३न्दे४३व२ जू३त५म्५। ई३४य५इ४या५। हा३२३४यि४। स५हो५वा३नं२ ता। रु२ता२३। र२ुर३था४ना५म्। ई२य२ई२या२३हा२यि२। अ२रि२ष्टा२३। नायि। मी२३म्पृत। ना२ुज३मा४शू५म्५। ई३४य५ ई४या५। हा३२३४५यि५। स्व२स्त। यायि। ताक्ष्य२मि३हा२३४३५हू२३वा४५यि५मा५६५६॥ २॥

---

[१] सामवेदसंहितायां '...पृथिव्यामतिषितम्' इति पाठः। —सम्पादकः

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३ २३ १ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २३ १ २
३३३. त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः॥

आत्रम्—

१. त्रा२तार२मिंद्रमविता। र२मीऽ२३न्द्रा२म्२। हवे२हवे२। [१]सुहवꣳशू। रमीऽ२३न्द्रा२म्२। हु२वायिनुशक्रंपुरुहूतमीऽ२३न्द्रा२ म्२। इ२दꣳह२। वायिः। म२घवा। वा२३४ऽ३यि३। तू२३ वा४ऽ५। यिं५द्रा५६५६ः॥ ३॥

ऋषिः—वसुक्रो विमदो वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
३३४. यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यां३ विव्रतानाम्।
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद्वि सेनाभिर्भयमानो वि राधसा॥

१. य५जा५म५हो४वा५। आयिंद्रंव२ज्र२। दक्षाऽ२३यि३णा२म्२। हरीणा२ꣳ२र२थ्यम्वि। व्रताऽ२३ना२म्२। प्रश्मश्रु२भि२र्द्दोधु२ व२त्२। ऊ। ध्वाधा२भू३२३४वा५त्५। विसायि। ना। भि२ र्भ२यमानाऽ२३ः। वाऽ२३यि३रा४ऽ३। धा२३४५सो५६हा५ यि५॥ ४॥

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २
३३५. सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम्।
२ ३ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः॥

१. स५त्रा५। ह३णा२३४अ३हो४वा५। दाधृ२षिं२तू। म्रामिंद्रा२ ओ३२३४म्५। म२हामपा२रंवृष२भꣳसु२वज्राऽ२३म्३। हंता ऽ२यो३२३४वृ५। त्राꣳसनितो२३४ऽ३। ता२३वा४ऽ५ जा५६ ५६म्६। दाता२म२घानिम२घवा२ꣳसु२राधा३२३ ४५ः॥ ५॥

---

१. मूलगानपुस्तकेऽत्र 'शु' इति पाठः। —सम्पादकः

२. स४त्रा४ह३णं४दा३धृ४षि५म्५ । तू२३४ऽ३म्२म्र२मिं३द्र५ म्५ । म२हामपा२रंवृष२भःसुवज्राऽ२३म्३ । हं२ता२यो३२३४ वृ५ । त्राःसनि । तो२३४ऽ३ता२३वा४ऽ५जा५६५६म्६ । दाता२ म२घानिम२घर्वा२सु२राधा३२३४५ः ॥ ६ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३६. यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा ।
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी ष्याम वृषमणस्त्वोताः ॥

आत्रम्—

१. यो३नो४व४नु४ष्य३न्न४भि५दा५ । ति३मा२३ऽ२३४र्त्ता५ः । उग-णावा मन्न्यमानस्तु२रोऽ२३वा२ । क्षि२धीयुधाशवसावा त२माऽ२३यिं३ द्रा२ । अभायिष्या२३मा२ । वृषामा२३ णा२३ः । त्वोऽ२३ता२३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३७. यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते ।
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन् यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः ॥

गार्त्समदौ द्वौ—

१. हा५उ५यं५वृ५त्रे५षू५ । क्षि२त२या२३ः । स्प२र्द्ध३मा४नाः५ । धमाना२३ः । ईऽ२३४य४इ४या४ । हा५उ५यं५यु५क्ते५षू५ । तु२२२या२३ । तो२ह३व४ता५यि५ । हवंता२३यि३ । ईऽ२३४ य४इ४या४ । हा५उ५य५ः५शू५र५सा५ । ता४ऽ३उ३य२म३ । पा२मु३ प४[1]ज्मा५न् । [1]उपज्मा२३न्३ । ईऽ२३४य४इ४या४ ।

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'उपय्मा...' इति पाठः । —सम्पादकः

हा५उ५यँ५वि५प्रा५सा५ः । वा४ऽ३ज२य३ । ता२युयि२स३इं४ द्रा५ः । सइंद्रा२३ः । ईऽ२३४य४ । ई५या५६ । हा५उ५वा५ । ई३२३४५ ॥ ८ ॥

२. यं५यं५या५ । हा५उ५यं५वृ५त्रे५षू५ । क्षि२त२या२३ः । स्प२ र्द्ध३मा४ना५ः । धमाना२ः । यं२यर्यां२या॒ऽम् । यं५यं५या५ । हा५उ५यं५यु५क्ते५षू५ । तु२२या२३ । तो२हु३वं४ता५यि५ । हवंते२ । यं२यंर्यां२या॒ऽम् । यं५ यं५या५ । हा५उ५य५ं५ शू५र५सा५ । ता४ऽ३उ३य२म३ । पा२मु३प४ज्मा[१]५न् । ५ । [१]उपज्म२न्२ । यं२यंया२ं२याम् । यं५यं५या५ । हा५उ५यं५वि५ प्रा५सा५ः । वा४ऽ३ज२य३ । ता२युयि२स३इं४द्रा५ः । सइन्द्र२ः । यंयंयाँ२या॒ऽम् । यं५यं५या५६ । हा५उ५वा५ । ई३२३ ४५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रापर्वतौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
३३८.इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता ॥

वैश्वामित्रम्—

१. इं४द्रा४हा५उ५ । हा२होयि । पर्व्वताबृहतारथाऽ२युयि२ना३उ३ वा२३ । ऊ२३४पा५ । वा४मी४रि४हा५उ५ । हा२होयि । इषआ वहतः सुवाऽ२युयि२रा३उ३वा२३ । ऊ२३४पा५ । वी४त४ः४ हा५उ५ । हा२होयि । हव्यान्यध्वरेषुदाऽ२युयि२वा३उ३वा२३ । ऊ२३४पा५ । व४र्द्धा४हा५उ५ । हा२हो । थाङ्गीर्भिरिडयाम- दाऽ२न्ता३उ३वा२३ । ऊ२३२३४पा५ ॥ १० ॥

---

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'उपयमा...' इति पाठः । —सम्पादकः

ऋषिः—रेणुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

३३९.इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रैरयत् सगरस्य बुध्नात् ।
यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥

सावित्रम्—

१. हा२३ । हा२यि२ । इं२द्रायगायि । रा२३अनि । शी२उत३स४र्गा५ः । अ२सा२उ२ । २ । इं२द्रायगायि । रा२३अनि । शी२उत३स४र्गा५ः । कु२वा२ । २ । इं२द्रायगायि । रा२३अनि । शी२उत३स४र्गा५ः । अ२या२म्२ । २ । अ२पष्प्रैरा । या२३त्सग । र२स्य३बु४ध्ना५त्५ । अविदा२३त्३ । अविद२त्२ । यो२अक्षेणायि । वा२३चक्रि । यौ२उश३ची४भी५ः । इ२हा२३ । ई२३४हा५ । वि२ष्वक्तस्ता । भा२३पृथि । वी२३४ऽ३म्३ । उ२३ता४ऽ५द्या५६५६म्६ ॥ ११ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

३४०.आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरू चिदर्णवां जगम्याः ।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अस्मिन् क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥

वैरूपम्—

१. आ४त्वा५स४खा५य५स५ख्या४व५वृ५त्यू४ः । ति२रष्पुरूचिदर्णवाञ्जगाऽ२म्यौ२ । हौ२हो२३वा२ । पि२तुर्न्नपातमादधीतवाऽ२यि२धौ२ । हो२हो२३वा२ । अ२स्मिंक्षयेप्रतरान्दीदियाऽ२नौ२ । हौ२ हो२३वा२ । अ२होऽ४२उ । इहा३२३४५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३४१.को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥

आमाहीयावम्—

१. को५अ५द्य५यु५ङ्क्ते५धु५रि५गा५ऽऋ५त५स्या५६ए५। शिमीवतो भामिनोदुऋहृ२णाऽ२३य्यू२न्२। आ२सन्नेषामप्सुवा होम२यो ऽ२३ भू२न्२। यएषांभृत्यामृणधत्सजायिवा३ॅउ३ वा२३। ऊ२३४ पा५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४२.गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽ र्चन्त्यर्कमर्किणः। ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥

शैखण्डिने द्वे—

१. गा३या२३ऽ। ति३त्वा२३ऽ२३४। गा४य५। त्रा२३यि३णा२ः। अ३र्च्चा२३ऽ। ति३या२३ऽ२३४। क४म५। का२३यि३णा२ः। ब्र३ह्मा२३ऽ। ण३स्त्वा२३ऽ२३४। श४त५। क्रा२३ता२उ२। उ३द्वा२३ऽ। श३मा२३ऽ२३यि३। व४या४ऽ५यि५मि५रा५ यि५। हो४ऽ५ यि५। डा५ ॥ १४ ॥

२. गा५यं५ति५त्वो४हा५यि५। गा३या२त्री३२३४णा५ः। अर्च्चंत्यर्क्कमा२ऽर्की२३णा२ः। अ२र्च्चं२ति२यो३२३४हा५। क३मा२र्क्की३२३४ णा५ः। ब्र२ह्माणस्त्वाशता२ऽक्रा२३ तो२। ब्र२ह्मा२ण२स्त्वो३२३४ हा५यि५। श३ता२क्रा३२३४

ता५उ५। उद्व२ःशमिवया२ऽयिमी२३ रे२। उ२द्वाः२ुश२मो३२३
४हा५यि५। व३या२३यि३। मा४ऽ५यि५रा५६५६ यि६ ॥ १५ ॥

३. गा४यं५ति५त्वा५गा५य५त्रि४ण५आ४। अर्च्चन्त्यर्क्कम-
र्क्काऽ२३यि३ णा२ः। ब्र२ह्माणस्त्वा४२ुहो२ऽयि। शतक्राऽ२३
ता२उ२। उद्व२ःशमिवया२ऽयिमी२३रे२। उ२द्व२ः२ुशा३२३४
मी५। वाया३ॅउ३वा२३। उ२पू२। माऽ२यि२रो२३ऽ५हा२
यि२ ॥ १६ ॥

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १२
३४३. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः।
३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥

शैखण्डिनानि त्रीणि—

१. इं५द्र५म्वि५श्वा५ः। आवी४२ुवृ२धान्। सामुद्र२व्या। चास२
ङ्गि२राः। राथीत२मा२३ऽउवा४२ु। र२थायिना४२ुम्२।
वा२जाना ऽ२३ः३सा२त्२। पातिम्प२ति२म्२। इडाऽ२३
भा२३४ऽ३। ओऽ २३४५यि५। डा५ ॥ १७ ॥

२. ओ२ुइं३द्रं४वि५श्वा५ः। अ२वी२। वृधान्। सा२ऽमू४२ु
द्राव्या४२ु। च२स२म्२। गिराः। रा२ऽथी४२ुतामा४२ुम्। २।
र२थी। नाम्। वाजा४२ुनाः२सा४२ुत्२। प२तिम्पाऽ२३ती२३४ऽ
३म्३। ओऽ२३४५यि५। डा५ ॥ १८ ॥

३. इं३द्रं४वि३श्वा४अ५वी५वृ५ध५न्५। स२मू२ुद्रा३२३४व्या५।
चा२३साङ्गी२३रा२ः। राथी२त२मा४२ुम् २ु। ऊ४२ु। हा४२ु
यि२। ऊ४२ु। र२थायिनाम्। वाजा२ना२ः२सा४२ु। ऊ४२ु।

हा४रुयि२।ऊ४रु ।प२तिम्पाऽ२३ती२३४ऽ३म्३।ओऽ२३ ४५यि५डा५॥१९॥

४. इं४द्रं५वि४श्वा५अ५वी५वृ५ध५।न्५।ऐ४या४हा५यि५।स२ मूद्रा२ऽव्या४रु।च२साङ्गा२ऽयिराऽ२३ः।ऐयाऽ२३हा२यि२। र२थायिता२ऽमा४रुम्२। र२थायिनाऽ२३म्३। ऐयाऽ२३। हा२यि२।वा२जाना२ऽ२साऽ४रुत्२।प२तायिम्पा२ऽतीऽ२३ म्३।ऐयाऽ२३हा२३४ऽ३यि३।ओऽ२३४५यि५डा५॥२०॥

महावैश्वामित्रे द्वे—

५. इं४द्रंवि४श्वा५अ५वी५वृ५ध५त्रै४या५दौ४। हो५६वा५। स२मु२द्रव्यच२स२म्२।गायिराऽ२३ः।ऐयाऽ२३न्३।अऽ२३ हो३वा२।र२थायितम२ऽ२र२।थायिनाऽ२३म्३।ऐयाऽ२३ न्३।अऽ२३ हो३वा२।वाजाना२ऽ२सत्पति२म्२।पातीऽ२३ म्३ऐयाऽ२३न्३।अऽ२३हो३वा२३४ऽ३।ओऽ२३४५यि५। डा॥२१॥

६. ह२या२यि२।ह२या२३।ओ४हा५ओ४हा५।३।इं२द्रं२वि२ श्वा२ः।अ३वी२वा२र्द्धा४रुन्२।स२मु२द्र२व्या२।च३सं२गा- यिरा४रुः।र२थी२त२म२म्२।र२थायिना४रु।म्२।वा२जा२ ना२ऽ२सा२ त्२। प३तिं२पाती४रुम्२। ह२या२यि२। ह२या२३।ओ४हा५ओ४हा५३।हो३ऽ४यि४डा५।२।हो३२३ ४५यि।डा॥२२॥

७. ह२याये२३।२।ह३या३२३४५।हऽ३२३।आऽ२३४यि४। द्रं४ वि३श्वा४अ४वी५।वृ३धा२३न्३।साऽ२३४।मु४द्र३व्य४ च५स५ म्।५।गिरा२३ः।राऽ२३४।थी३त४म५ऽ५र५थी५।

ना२३म्३।वा ऽ२३४।जा४ना४ऽ४स३त्प४ति५म्५।ए३ता२३ यि३न्३। ह२याये२३। २। ह३या३२३४५हऽ३२३४५। हो३ऽ४यि४।डा५।२।हो३२३४५यि५।डा५॥२३॥

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३४४.इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्।
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने॥

इन्द्रप्रियाणि चत्वारि—

१. इ२ममाऽ२३४यिं४द्रा५।सु२तम्।पाऽ२यि२बा३२३४।अ५ हो५वा५। ज्येष्ठ२ममार्त्ति२यं२मद२म्२। शु२क्रा२। स्य२ त्वा२भी२३याऽ२३।क्षाऽ२रा३२३४अ५हो५वा५।धारा२ऋ२ तस्य२सादने३२३४५॥२४॥

गौतमम्—

२. इ५म५मिं३द्र२सु३तं४पि५बा५। ज्ये२ष्ठाम२मा। ति२य२म्मं दाऽ२म्२।शु३क्रा२।अ३हो३२३४वा५।स्य२त्वा२भ्यक्ष२ र२न्२।धा३रा२।अ३हो३२३४वा५ऋ३ता२।अ३हो३२३४ वा५।स्य४सा४ऽ५द५ ना५यि५।हो४ऽ५यि५।डा५॥२५॥

३. इ४म४मिं४द्रा४ऽ५सु५तं५पि४बा४। ज्ये२ष्ठ२म२मा२३र्त्ता यंम्मादा४२म्२। अ४२। हौ४२। हुवायि। अ२३हो३२३४ वा४। शु२क्र२स्य२त्वा३भायिक्षारा४२न्२। अ४२। हौ४२। हौ४२हुवायि।अ२३हो३२३४वा५।धारा२ऽऋता४२।अ४२। हौ४२। हुवायि। अ२३हो३२३४वा५। स्य२सादाऽ२३ ना२३४ऽ३।ओऽ२३४५यि५।डा५॥२६॥

वासिष्ठप्रियम्—

४. इ२ममीऽ२३ । द्र४सु५तं४पि५ब५ । ज्ये४ष्ठा५म्५ । अ२मा२३
र्त्तायम्मादा४२उम्२ । शु२क्रास्यत्वा२३ । भियाऽ२उ । क्षा३२३४-
रा५न्५ । धारा२उओ३२३४वा५ । आर्त्ता२उओ३२३४वा५ ।
स्य४सा४ऽ५द५ना५ यि५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४५. यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥

वीकानि चत्वारि—

१. य४दिं५द्रो४हा४यि४ । चि२त्र२म२इ२हनाऽ२३ । आऽ२३४ ।
स्ति४त्वा४दा५ । हा२३यि३ । त२म२द्रायिवाऽ२३ः । राऽ२३४ ।
ध४स्त३न्नो४वि५दा५ । हा२३ । वा । साउ । उभयाहाऽ२३ ।
स्ति३ या२उ२वा२३४ऽ३ । भा२३४५रो५६हा५यि५ ॥ २८ ॥

२. य५दिं५द्र५चि५त्र५मौ५हो४वा५ । हा३२३४ना५ । अस्तित्वा
दातमोवा२३ । ओवा२उ । द्रा३२३४यि४वा५ः । राधस्तन्नो
विदोवा२३ । ओवा२उ । वा३२३४सा५उ५ । उभयाहस्ति
योवा२३ । ओवा२३४ऽ३ । भा२३४रो५६हा५यि५ ॥ २९ ॥

आकूपारम्—

३. य२दिंद्राऽ२३चि४त्र५ । म२इ२हा३२३४ना५ । अस्ता४२उयि२
त्वादा । त२म२द्रायिवो । रा२ध२स्तान्ना४२उः । वि२द२द्वसाउ ।
उ२ भ२याहाऽ२३ । स्ताऽ२३या४ऽ३ । भा२३४५रो५६हा५
यि५ ॥ ३० ॥

४.   य३दिं४द्र५चि५त्र५म५इ५ । ह३ना२३ । आ४स्ती५ । त्वादातम-
द्रिवः । राधस्ता ऽ २ ३न्ना२ः । वीवी४२ु । दद्वसाउ । उभयाऽ२३
हा२ । स्तायाऽ२३ । भाऽ२३रा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ ।
डा५ ॥ ३१ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४६. श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥ ५ ॥

तैरश्चे द्वे—

१.   श्रु५धी४हावा४२ुः२हावा४२ुम्२ । ति२र२श्चिया: । इं२द्रयाऽ
२३स्त्वा२ । स२पौ३ॅहो२ । र्यती३ॅया२ । सु२वीर्यस्यगोमताः ।
रा२यास्पूऽ२३र्द्धी२ । म२हाःऽ२३ । अ२सि३या२३४ऽ३ ।
ओऽ२३४५ यि५डा५ ॥ १ ॥

२.   श्रु५धी५हा२३वं४ति५र४श्चि४या५: । इं२द्राय२स्त्वा । स२प३
र्य२ताये२३४ । सु४वी५ । रि३या२ु । स्या३२३४गो५ ।
माता४२ुः । रायास्पुर्द्धी२३[१] । हा२३हा२यि२ । म४हाः४ऽ५अ५
सी५ । हो४ऽ५ यि५डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४७. असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥

वैश्वामित्रम्—

१.   अ३सा४वि४सो३म४इं५द्र५ते५ । शा२वि२ष्ठा३२३४धृ५ ।

---

१. मूलसामवेदेऽत्र 'पूर्धि' इति पाठः । —सम्पादकः

ष्णो२३आगा२३ही२।आत्वा२पृ२णा॑२३हा२३।क्तुई॑२ॖ-न्द्रा३२३४या५म्५। रजाः। सूर्यौ२वा२ॖओ३२३४वा५। न४रा४ऽ५स्मि५भीः।हो४ऽ५यि५।डा५॥ ३॥

ऋषिः—काण्वो नीपातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

३४८.एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम्।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो॥

काण्वे द्वे—

१. ए५न्द्रा२३या४हि५ह४रि४भा५यि५ः। उ२पा२क२ण्वा२३। स्यासु२ष्टु३२३४ती५म्५। दि२वो२अ२मू२३। ष्याशा२ॖसा३२३४ता५ः। दायिवं॑य२या२३ऽउवा॑२३। दा॑२३यि३वा४ऽ३।वा२३ ४५सो५६हा५यि५॥४॥

२. ए४द्र५या५हि५ह४रि५भि५ः।उ५हु४वा४हा५यि५।उपकण्व-स्य२ सुष्टुति२म्२।उ२हुवा॑२३हा२यि२।दि२वोअमू२३। ष्याशा२ॖसा३२३४ता५ः।दायिवं॑य३या२उ२।वा२३हि३२३४वा५।व४सो४ऽ५हा५।हो४ऽ५यि५।डा५॥५॥

ऋषिः—तिरश्चीः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३४९.आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः।
अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः॥

मध्यमं वेयगानस्य सामेदं परिकीर्त्तितम्।

आत्वागिरोरथीरीतिमेडिनश्चेत्युपश्रुतिः॥

१. आ५त्वा५गा२३यि३रो४र५थी४रि४वा। अ२स्थु२स्सु२ ते३ॅ षूगि॑र्व्वाणा३ॅः।ओ२३४वा५।ओ३२३४वा५।अ२भि२त्वा२ सा२३मानू२ऽषाता३ॅ। ओ२३४वा५। ओ३२३४वा५। गावोवा२३त्सा२३म्३। न२धोऽ२३४वा५। ना४ऽ५वा५६-हा५यि५॥ ६॥

ऋषिः—तिरश्चीः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३५०.एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु॥

शुद्धाशुद्धीये द्वे—

१. ए४तो५न्विं४द्र५ऽ५स्त४वा५मा४। शु२द्धंऽशुद्धेन२साऽ२३ म्ना२। शु२द्धै रुक्थै र्व्वा वृ२ध्वाऽ२३ऽ३सा२म्२। शु२ द्धैराऽ२३शी२३। र्व्वाऽ२ न्२। म३मा२३४अ५हो५वा५। तू३२३४५॥ ७॥

२. ए५तो५न्विं५द्र५ऽ५स्त५वा५६मा५। शु२द्धंऽशुद्धे२। न२। साम्ना४२। शुद्धायिरू२३क्था२३यि३ः। वावाऽ२ध्वां३२३४-सा५म्५। शु२द्धैराऽ २३शी२। र्व्वान्मम२त्तु२। इडाऽ२३ भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा॥ ८॥

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३५१.यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः।
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥

रयिष्ठे द्वे—

१. यो५र५यिं५वो५र५या५हा५उ५। ता३२३४मा५ः। योद्युम्नैर्द्युम्न-

वत्त२म२ः। सोमस्सुतस्सआ ऽ२३होयि। द्रँता४२ुयि२। अस्तिस्वधापताऽ२३होये२३। म३दो३२३४५यि५डा५ ॥ ९ ॥

२. यो३र४यिं३वो४र५यि५। त३मो३२३४हा५यि५। यो३द्यु४म्नै३र्द्यु४म्न४व५। त३मो३२३४हा५यि५। सो३म४स्सु४त३स्स४इ५। द्र३तो३२३४हा५यि५। अ३स्ति४स्व५धा५प५ते५। म३दो३२३४हा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ १० ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५२. प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर।
अरङ्गमाय जग्मयेऽ पश्चादध्वने नरः ॥

कौल्मलबर्हीये द्वे—

१. प्र५त्य५स्मै५पि५पा५हा५उ५। आयिषा२३ता२यि२। वायिश्वा२नि२वायि। दूषे२३हा२३यि३। भा२३रा२। आरा२ङ्ग२मा। याजा२३हा२३। ग्मा२३या२यि२। अपाऽ२३। श्चाऽ२ुदा३२३४अ५हो५वा५। ध्वने२ँन२रा३२३४५ः ॥ ११ ॥

२. प्र५त्य५स्मै५पी५६पी५ष५ता५यि५। वायिश्वा२नि२वायि। दूषे२ भारा४२ु। आरा२ङ्ग२मा। यजग्मा। यायि। अपश्चादध्वनाऽ२३होयि। न२रा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ १२ ॥

तोनदम्—

३. प्र३त्य४स्मै५पि४पी५। ष३ता२३यि३। वाऽ२३४यि४। श्वा४नि५वि५दु५षे५। भा४रा५। अ४रं४ग४मा३य४ज५। ग्म३यो३२३४हा५यि५। आ४प५श्चा४दा५। ध्व२नोऽ२३४वा५। ना४ऽ५रो५६हा५ यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—वामदेवः शाकपूतो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

३५३. आ नो वयो वयःशयं महान्तं गह्वरेष्ठाम् ।
महान्तं पूर्विनेष्ठामुग्रं वचो अपावधीः ॥

शाकपूतम्—

१. आ५नो५व५यो५व५य५श्शा५६या५म्५ । म२हा२न्तं२ग२ह्व२रा३२३४ यि४ष्ठा५म्५ । म२हा२न्तं२पू२र्व्वि२ना३२३४ यि४ष्ठा५म्५ । उ२ग्रंवाऽ२३चा२ुः । अ३पा२३वा४ऽ५धा५६५६ यि६ः ॥ १४ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५४. आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥

काल्मलबर्हिषे द्वे—

१. आ५त्वा५र५थं५य५थौ५होऽ४वा५ । ताया२ुयिसू३२३४म्ना५ । यवर्त्तयामसितुविकूर्म्मी२ुम्२ु । आ३२३४र्त्ती । ५ । षह२म्२ । आयिंद्रा२३२ु३शा४वी५ । ष्ठ२सत्याऽ२३ती२३४ऽ३म्३ । ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ १५ ॥

२. आ३त्वा४र३थं४य४थो५ । त३या२ुयि२ु । आ३त्वा४र५था५म्५ । य२थोताया२ु । अ३हो३२३४वा५ । ई३२३४हा५ । सु२म्ना२य२व२र्त्ता२३यामसि२ु । अ३हो२३ऽयि । अऽ२ुहो३२ ३४वा५ । तु२वि२कू२र्म्मि२मृ२३तायिष२ह२ुम्२ु । अ३हो२३ऽयि । अऽ२ुहो३२३४वा५ । इं२द्र२ं२श२वि२ष्ठा२३सात्पति२ुम्२ु । अ३हो२३ऽयि । अऽ२ुहो३२३४५वा५६५६ । ई३२३४हा५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—प्रगाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५५. स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे ।
यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे ॥

मधुश्चुंनिधनम्—

१. स५पू५र्व्यो५म५हो५म५हो५ना५६मे५ । वे२न२ष्क्र२तू२३ भायिरानजे२३ । हा२३हा२ । अ३ँहो२३वा२ । आयिही४२ु । य२स्य२द्वा२रा३ँमानुष्पिता२३ । हा२३हा२ । अ३ँहो२३वा२ । आयिही४२ु । दायिवेषुधा२३ । हा२३हा२ । यि । अ३ँहो२३वा२ । आयिही४२ु । य२आऽ२३ । नाऽ२ुजा३२३४अ५हो५वा५ । म२धु२श्चुता३२३४५: ॥ १७ ॥

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५६. यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा ।
पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥

औषसः—

१. य४दी५व४हं५त्या५श४व५: । य४ । द्यो४या४दी५ । ओयिवहंता आ२ऽशावा४२ु: । ओयिभ्राजमानारथायिषू२ऽवा४२ु । ओयि-पिबन्तो मदिराम्मा२ऽधू४२ु । ओयि । तत्रश्रवा२ऽसिकोवा२३ ओऽ२३४वा५ । ण्वा४ऽ५तो५६हा५यि५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—शंयुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५७. त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम् ।
इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्वववेदसम् ॥

१. त्य३मु४वो५अ५। प्र३हा२ु। हा३२३४णा५म्५। गृ२णी२षेशवस२ः। पतायिम्। आयिंद्रा२३म्वा४यि४श्चा५। सहा२३१ ३होये२३४। ना५र३मो२ २।ये३। श२चिष्ठाऽ२३४म्वी५। श्ववा२३ होऽ२३४। वा५। दा४ऽ५सो५६हा५यि५॥ १९॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—दधिक्रावा अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

३५८. दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत् प्र न आयूँषि तारिषत्॥

१. ओ४हा४यि४। द५धि५क्रा४व्णो५अ५का५रि५ष५म्५। ओ४हा४यि४। ओहायिजिष्णोरश्वस्यवाजिनाऽ२३होयि। सुर२भि। नोमु२खाकाऽ२३रा२त्२। प्रनाऽ२३होयि। आयूऽ२३हो। षि३ताराऽ२३यि३षा२३४ऽ३त्। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २०॥

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

३५९. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः॥

मारुतम्—

१. पु५रां५भिं३दु२र्यु३वा४क५वि५ः। अमितौजाअ२जायाऽ२-३ता२। आयिंद्रोविश्वा२३। स्याक२र्म्मा३२३४णा५ः। धर्त्ता। वाज्री२ वा२ुओ३२३४वा५। पु४रु४ऽ५ष्टु५ता५ः। हो४ऽ५यि५डा५॥ २१॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६०.प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे ।
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥

वामदेव्यम्—

१. प्र५प्र५व५स्त्रि५ष्टु५भ५मि५ष५मो५हा५ओ५हा५६ए५ । वं२ दद्वीरा२ । य२आयिन्दवे४२ु । ओ३ँहा२ । ओ३ँहा२३ए२ । धियावोमेधसा२ऽता२३या२यि२ । ओ३ँहा२ । ओ३ँहा२३ए२ । पुरान्धी२३या२३ । वि२वोऽ२३४वा५ । सा४ऽ५तो५६हा५ यि५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६१.कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति ।
ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य ॥

काश्यपम्—

१. क५श्य५प५स्य५सु५व५र्वि५दा५६ए५ । यावाहु२स्स२ । यु२जावा२ऽ यिती२३४ । य३यो४र्वि३श्व४म४पि५ । व्र३ता२३म्३ । यज्ञान्धी२३रा२ः । नि२चाऽ२३ । आऽ२ु या३२३४अ५ हो५वा५ । ओ३२३४ पा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६२.अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्णवर्चत ॥

प्रैयमेधम्—

१. अर्र्च्चर्तरप्रार्र्च्चर्तारुना३२३४रा५ः । प्रिरयरमेरधा२३सो४ऽ-

३अ२र्च्च३त५। अ२र्च्चन्तुपू ऽ२३। त्रा४ऽ३का२उ३त५।
पुरमिद्धाऽ२३।ष्णु३वा२३र्च्चा४ऽ५ता५६५६॥ २४॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३६३.उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे।
शक्रो यथा सुतेषु नो रारणत् सख्येषु च॥

बार्हदुक्थम्—

१. उ५क्थ५मिं५द्रा५य२शंऽसाऽ२३या२म्२।वार्द्धन२म्पु२।रु२
निष्षाऽ२३यि३धा२यि२। शक्रोया२३था२३। सूते२ुषू३२-
३४ना५ः।रा२रणाऽ२३त्सा२।खि२यायिषूऽ२३चा२३४ऽ३।
ओऽ२३४५यि५।डा५॥ २५॥

ऋषिः—प्रियमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३६४.विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः।
एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम्॥

काण्वे—

१. वि५श्वा५न५रा५।स्य२वा४रुस्पाती४रुम्।आनान२त२।स्य२
शावा२ऽसा४रुः। एवैश्चा२। च२र्ऋ२षणा४रुयि२नाम्।
ऊ४रुती।हु२वायिर२।थाऽ२३४नो५६हा५यि५॥ २६॥

२. वि३श्वा२३४।न४र४स्य५वौ५।हो४स्पा४ती५म्५।अ२नान-
ता२३।स्याशारुवा३२३४सा५ः।एवैश्चा२।च२र्ऋ२षणाऽ
२३४यि४ना५म्५।ऊ२तीहु२वायिर२।थाऽ२३४नो५६हा५
यि५॥ २७॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
३६५.स घा यस्ते दिवो नरो धिया मर्तस्य शमतः ।
३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ॥

१. स२घायस्ता२३यि३ । ए२ । दि२वोनरा२३ः । ए२ । धि२यामर्त्ता२३ । ए२ । स्य२शमता२३ः । ए२ । ऊ२तायिसब्रे२३ । ए२ । ह२तोदिवा२३ः । ए२ । द्वि२षोअं२हा२३ः । ए२ । नातर२ति२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा ॥ २८ ॥

२. स५घा५य५स्ता५यि५ । दि२वो२नराः । धि२या२मार्त्ता४२ु । स्य२ श२मताः । ऊ२ती२साब्रे४२ु । ह२तो२दिवाः । द्वि२षो२आं२हा४२ुः । नातर२ति२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
३६६.विभोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो ।
१ २ ३ १ २
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहय ॥

१. वि५भो५ष्ट५इं५द्र५रा५धा५द्सा५ । वि२भ्वीरार॑ । रतिश्शत२-क्र२तो२ । श२ता४२ुक्राताउ । आथानो२वि२श्वच२र्ष२-[ष] णे२ । श्व२चा४२ुर्ष२षाणायि । द्यु२म्नं२सुद२त्र२मं२ह२य२ु । त्र३मा२३ं२हा४ऽ५ या५६५६ ॥ ३० ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
३६७.वयश्चित्ते पतत्त्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि ।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥

१. व५य५श्चा२३यि३त्ते४प४त५त्रि५णा५ः। द्वि२पाच्चतुष्पादर्जु। नाये२३। ऊ४ष५ःप्रा४रा५न्५। ऋ२तू२ॱ२रनू। दि२वो२अन्तेऽ २३। भाऽ२३या४ऽ३ः। पा२३४५रो५६हा५यि५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—आप्त्यस्त्रितः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

३६८. अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः।
कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः ॥

१. अ५मी५ये५दे५वा५स्था४ना५। मध्यआरोचनेदिवा२ु। क२द्व२। ऋताम्। क२द२मार्त्ता४२ुम्२। काप्रत्नाव२आहूऽ२३ती२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५ ॥ डा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—ऋक्सामौ ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६९. ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते।
वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥

ऋक्सामनी द्वे—

१. ऋ४च५ॱ५सा४म५य५जा४। महायि। याभ्याङ्कर्म्माणि२-कृण्वाऽ२३ता२यि२। वितेसदसि२राजाऽ२३ता२ः। य२ज्ञन्दाऽ२३यि३वे२। षूवक्ष२त२ः। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५ ॥ ३३ ॥

२. ऋ५च५ॱ५सा२३मा४य५जा४म४हा५यि५। याभ्याङ्क२र्म्मा२। णि२ काण्वा२ऽवा४२ुयि२। ण्वाता४२ुयि२। वायितेस२द२-सि२राजा२ऽ ता४२ुः। जाता४२ुः। यज्ञान्दा२ऽयिवे४२ु। षूवक्ष-२तः। इडाऽ२३ भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५ ॥ डा५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७०.विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥ १ ॥

त्रैशोकम्—

१. विऽ५श्वो४हा४यि४ । पृतना२अ२भि२भू । त२र२३न्न२राः । स२ जूस्तत२क्षु२रायिद्रंज२ज२नूः । च२रा२जासो२३४हा५यि५ । क्र २त्वौहोयि । व२रौहोयि । स्थेमन्याऽ२मू३२३४री५म्५ । उ५तो४हा४यि४ । उ२ग्रमोऽ२३४जी५ । ष्ठं२ता२रा३२३४सा५ म्५ । हो२यि२ । त३रा२३४ । स्वि४न४म्४ । ओ५६वा५ । ओ२ यि२दी३२३४वा५ ॥ ३५ ॥

[इति] नवमः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—सुवेदाः शैलूषिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७१.श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽ हन् यद् दस्युं नर्यं विवेरपः ।
उभे यत्त्वा रोदसी धावतामनु भ्यसात्ते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः ॥

शैखण्डिने द्वे—

१. श्र३त्ते२३होयिद३धा२३होऽ२३४ । मि४प्र५थ५मा४य५म५ । न्य४वा५यि५न्य४वा५यि५ । अ३हा२३न्३होयि । य३द्वा२३ होऽ२३४ । स्यु४न्न४र्य५म्वि५वे४ः । अ४पा५अ४पा५ः । उ३ भे२३होयि । य३त्वा२३होऽ२३४ । रो४द५सी५धा४व५ता५ म्५ । अ४नू५अ४नू५ । भ्य३सा२३द्धोयि । ते३शू२३ होऽ२३४ । ष्मा४त्पृ५थि५वी४चि५द५ । द्रि४वो५द्रि४वा५ः द्रि४व५आ४ । अ५हो५वा५६ । हा५उ५वा५ । ई३२३४५ ॥ १ ॥

२. श्र३त्ता२३ऽयि। द३धा२३ऽ२३४। मि४प्र५थ५मा४य५म५। न्य४ वा५यि५न्य४वा५यि५। अ३हा२३ऽन्। य३द्दा२३ऽ२३४। स्यु४न्न४र्य५म्वि५वे४ः। अ४पा५अ४पा५ः। उ३भा२३ऽयि। य३त्वा२३ऽ२३४। रो४द५सी५धा४व५ता५म्५। अ४नू५। अ४नू५भ्य३सा२३ऽत्। ते३शू२३ऽ २३४। ष्मा४त्पृ५थि५वी४ चि५द५। द्रि४वो५द्रि४वा५ः। द्रि४व५ए४। हि५या५ह्हा५। हो४ऽ५ यि५। डा५॥ २॥

अविवर्त्तौ द्वौ—

३. अ३यो३२३४वा५। इ३या२उयो३२३४वा५। श्रा४त्ता५यि५। दाऽ२३४धा४। मि५प्र५थ५मा४य५मा५न्य४वा५यि५न्य४वा५ यि५। अ३यो३२३४वा५। अ३या२उयो३२३४वा५। आ४हा५ न्५। याऽ२३४द्द४। स्यु५न्न४र्य५म्वि५वे४ः। अ४पा५अ४। पा५ः। अ३यो३२३४वा५। अ३या२उयो३२३४वा५। ऊ४भा५यि५। याऽ२३४त्वा४। रो४द५सी५धा४वा५ता५म्। अ४नू५। अ४नू५। अ३यो३२३ ४वा५। अ३ या२उयो३२३४ वा५। भ्या४सा ५त्५। ताऽ२३४यि४ शु४। ष्मा५त्पृ५थि५वी४ चि५द५। द्रि४वो५द्रि४वा५ः। द्रि४व५आ४। औ५हो५वा५ह्। हा५उ५वा५। द्रि२व२औ२हो२३हाः२ऽऽ॥ ३॥

४. इ३यो३२३४वा५। इ३या२उयो३२३४वा५। श्रा४त्ता५यि५। दाऽ२३४धा४। मि५प्र५थ५मा४य५म५। न्य४वा५यि५न्य४ वा५यि५। इ३यो३२३४वा५। इ३या२उयो३२३४वा५। आ४ ह५न्५। याऽ२३४द्द४। स्यु५न्न४र्य५म्वि५वे४ः। अ४पा५अ४

पा५: । इ३यो३२३४वा५ । इ३या२ुयो३२३४वा५ । ऊ४भा५
यि५ । याऽ२३४त्वा४ । रो४द५सी५धा४व५ता५म्५ । अ४नू५
अ४नू५ । इ३यो३२३४वा५ । इ३या२ुयो३२३४वा५ । भ्या४
सा५त्५ । ताऽ२३४यि४शु४ । ष्मा५ त्पृ५थि५वी४चि५ द५ ।
द्रि४वो५द्रि४वा५:द्रि४व५आ४ । अ५हो५ वा५६ । हा५उ५
वा५ । द्रि२वा२इ२हो२३हा:२ऽऽ ॥ ४ ॥

५. आऽ२३या२३म्३ । श्रा४त्ता५यि५ । दाऽ२३४धा४ । मि५प्र५
थ५मा४य५म५ । न्य४वा५यि५न्य४वा५यि५ । आऽ२३या२३
म्३ । आ४हा५ । न्५ । याऽ२३४द्द४ । स्यु५न्न४र्य५म्वि५वे४: ।
अ४पा५अ४पा५: । आऽ२३या२३म् । ऊ४भा५यि५ । याऽ२३४
त्वा४ । रो४द५सी५धा४व५ता५म् । अ४नू५अ४नू५आऽ२३
या२३म्३ । भ्या४सा५त्५ । ताऽ२३४यि४शु४ । ष्मा५त्पृ५थि५
वी४चि५द५ । द्रि४वो५द्रि४ वा५: । द्रि४व५आ४ । औ५हो५
वा५६ । हा५उ५वा५ । द्रि२वो२३ द्रिवाऽ२३४५: ॥ ५ ॥

६. अ२यं२या२३: । श्रा४त्ता५यि५ । दधा२३ऽ२३४ । मि४प्र५थ५
मा४य५म५ । न्य४वा५यि५न्य४वा५यि५ । अ२यं२या२३: ।
आ४हा५न्५ । यद्दा२३ऽ२३४ । स्यु४न्न४र्य५म्वि५वे४: ।
अ४पा५अ४पा५: । अ२यं२या२३: । ऊ४भा५यि५ । यत्वा२३ऽ
२३४रो४द५सी५धा४ व५ता५म्५ । अ४नू५अ४नू५ । अ२यं२
या२३: । भ्या४ सा५त्५ । तायिशू२३ऽ२३४ । ष्मा४ । त्पृ५थि५
वी४चि५द५ । द्रि४वो५द्रि४वा५: । द्रि४व५श्रा४ । श्चौ५हो५
वा५६ । हा५उ५ वा५ । द्रि२वा२३ ईऽ२३४५ ॥ ६ ॥

७. औ५हो४हो४हा५यि५। श्रा४त्ता५यि५। दा३२३४धा५। मी२प्रा२ु था३२३४मा५। य२मं२न्या३२३४वे५। य२मं२न्या ३२३४वा५यि५। अ३हा२३ऽ२ुनू२ु। या३२३४द्दा५। स्यु२न्ना२ु री३२३४या५म्५। वि२वे२ुरा३२३४पो५। वि२वे२ुरा३२३४ पा५:। उ३भा२३ऽ२ु यि२ुया३२३४त्वा५। रो२दा२ुसी३२३४ धा५। व२ता२ुमा३२३४ नू५। २। भ्य३सा२३ऽ२ुता३२३४ यि४शू५। ष्मा२त्प्रे२ुथी३२३४वी५। चि२द२द्री३२३४व५:। चि२द२द्रा३२३४यि४वा५:॥ द्रि४व५ आ४। औ५हो५वा५६। हा५उ५वा५। ए२३। द्रि२व२इहा३२३४५॥ ७॥

८. श्र५त्ता५औ५हो४हो४हा५यि५। दधा२३ऽ२३४। मि४प्र५थ५ मा४य५। म५न्य४वा५यि४ न्य४वा५यि५। अ५हा५औ५हो४ हो४हो५ यि५। यद्दा२३ऽ२३४। स्यु४न्न४र्य५म्वि५वे४:। अ४पा५अ४पा५:। उ५भा५औ५हो४हो४हा५यि५। यत्त्वा२३ ऽ२३४। रो४द५सी५धा४व५ता५। अ४नू५भ्य५ सा५औ५हो४ हो४हा५यि५। तायि५। तायिशू२३ऽ२३४ष्मा४ त्पृ५थि५वी४ चि५द५। द्रि४वो५द्रि४वा५:। द्रि४आ५औ५हो५ वा५६। हा५उ५वा५। द्रि२व२ए२३द्रिवा ऽ२ ३४५:॥ ८॥

ऋषि:—वामदेव:॥ देवता—इन्द्र:॥ छन्द:—जगती॥ स्वर:—निषाद:॥

३७२. समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद् भूरतिथिर्जनानाम्।
स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषं तं वर्त्तनीरनु वावृत एक इत्॥

१. स४मा४हा५। आयितविश्वाओजसा२३। पतिमा२३यि३। दिवाऽ२३४:। हा३हो२यि२। य२आयिका२ऽई४२ुत्। २। भूरतिथि२:। जनाऽ२३ना२३४म्४। हा३हो२यि२। स२

पूर्व्वियाः४२ु। नूतन२मा२। जिगा ऽ२३ यि३। षा२३४म्४।
हा३हो२यि२। तं२वार्त्ता२ऽनी४२ुः। अनुवा२वृ२ते२।
आये२३। क३या२उ२ वा२३। वृ२धे२ऽऽ॥ ९॥

२. स५मे४त५वि४श्वा५ओ४ज५सा५प४ति५म्५। ए४पा४ती५म्५।
दिवया२। हौ४२ु। हौईहौ२३वा२। ईइँया२। य२ आयिका२ऽ
ई४२ुत्२। भूरतिथि२ः। जना ऽ२३ना२म्२। हौ४२ु। हौइँहो२३
वा२। ईइँया२। स२पूर्व्वियाः४२ुः। नूतन२मा२। जिगा ऽ२३
यि३षा२म्२। हौ४२ुहौइँहो२३वा२। ईइँया२। तं२वार्त्ता२ऽ
नी४२ुः। आनुवा२वृ२ते२। आये२३। क३या२उ२ वा२३।
म२हे२ऽ॥ १०॥

३. स५मे४त५वि४श्वा५ओज५सा५प४ति५म्५। ए४पा४ती५म्५।
दायिवा२ऽया४२ु। औ४२ु। हौइँ२ुहो२३वा२। ओमोवा२। य२
आयिका२ऽई४२ुत्२। भूरतिथि२ः। जना ऽ२३ना२म्२। अ४२ु।
हौइँहो२३वा२। ओमोवा२। स२पूर्व्वा२ऽयाः४२ुः। नूतन२
मा२। जिगा ऽ२३ यि३षा२म्२[1]। अ४२ु। हौइँहो२३वा२।
ओमोवा२। तं२वार्त्ता२ऽ नी४२ुः। अनुवा२वृ२ते२। आये२३।
क३या२वा२३। धर्म्मणे३२३४५॥ ११॥

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

३७३. इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः॥

१. इ५मे५त५आ५। इ२तेवयंपुरू४२ु ष्टुता४२ु। येत्वारभ्यचरामसि
प्रभू४२ुवासा४२ुउ२। न२हित्वदन्योगिर्व्वणोगिरा४२ुस्साघा४२ु

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र '...ष२त२' इति लिखितम्। —सम्पादकः

त्२। क्षो२णीरिवप्रतितद्धर्यनो४रुवाचाऽ२ुः। व३चा२ुओ३-
२३४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ १२॥

२. इ५मे५त५आ५। द्र२तेवयंपुरु२। ष्टुता। या२ऽयित्वा४रु
राभ्या४रु। चारामर२सि२प्र२भू२। वसाउ। ना२ऽही४रु
त्वादा४रुत्२। योगिर्व्व२णो२गिरः। सघात्। क्षो२ऽणी४रु
रायिवा४रु। प्रति२तद्ध२। र्यनोवाऽ२३चा२३४ऽ३ः।
ओऽ२३४५यि५डा५॥ १३॥

३. इ२मेताऽ२३ इं४द्र५ते४व५यं४पु५रु५ष्टु५तो४वा५। येत्वारा-
भ्या४रु। चरामसीऽ२३प्रा४ऽ३भू२व३सा५उ५। न२हित्वा-
दा४रुन्। योगिर्व्वणोऽ२३गी४ऽ३र२स्स३घ५त्५। क्षोणीरि
वा४रु। प्रतितद्धाऽ२३। र्य४नो४ऽ५व५चा५ः। हो४ऽ५ यि५।
यि५। डा५॥ १४॥

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

३७४. चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्या३मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत।
वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे॥

१. च५ऋ५ष५णी५धृ५त५ᳪ५हा५उ५। म२घवान२मुक्थाऽ२३
या२म्२। इंद्रंगिरोबृहतीरभ्य२नूषाऽ२३ता२। वावृधाना४रुम्२।
पूरुहूताऽ२३म्३। सुवाऽ२ुक्त्ती३२३४यि४भीप५ः। अमा४रु
र्त्ति२याम्। ज२रमाणाऽ२३म्३। दाऽ२३यि३वे४ऽ३दा२३४५
यि५वो५६हो५यि५॥ १५॥

ऋषिः—कृष्ण आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

३७५. अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत।
परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये॥

१. अ५च्छा५व५इं५द्रं५म५त५य५स्सु५व५र्यु५वा५६ए५। स२ध्रीचीर्विश्वाउशतीरनू४२षाता४२। परिष्वजंतजनयोयथा४२पाती४२म्। मर्य्यन्नाऽ२३शू२। ध्युम्म२। घवाऽ२। न३मू२३४औ५हो५वा५। त२या२३ईऽ२३४५॥ १६॥

२. आऽ२३४। च्छा४व५इं४द्र५म्म५। त४या५ः। सू२वर्य्युवाऽ२३ः। साऽ२३४। ध्रीं४ची५र्व्वि४श्वा५उ५। श४ती५ः। आ२नूषताऽ२३। पाऽ२३४। रि४ष्व५जं५त५ज४। न४या५ः। या२थापताऽ२३यि३म्३। माऽ२३४। र्य४न्न४शुं५ध्यु४म५घ४वा५। ना२मूतया२३ऽउ। वा२३४५॥ १७॥

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

३७६. अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम्।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत॥

१. अ५भि५त्या२३म्३मे४षं५पु४रु४हु५। त२मृ२ग्माया४२म्२। इं२द्र२ङ्गी२र्भा२यि२ः। म२दता२व२स्वा२३आर्णवम्। ओ२३४। हा३हो२ यि२। य२स्य२द्या२वो२न२वि२च२रं२ती२३मानुषम्। ओ२३४। हा३हो२यि२। भु२जे२मं२हि२ष्ठ२म२भि२वि२प्र२म२र्च्च२त२। दुराऽ२। ति३ना२३४ औ५हो५वो५। ऊ३२३४पा५॥ १८॥

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७७.त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः साकमीरते।
अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमिन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥

१. त्य५ऽ५सू२३मे४षं५म४ह४या५। सु२व२र्व्वायिदा४२म्२। श२तं२य२स्य२सु२भु२व२स्सा२का२३मायिरा२ऽता४२यि२। अ२त्य२न्न२ वा२ज२ऽह२व२न२स्या२३दाऽरा२ऽथा४२म्२। आयिंद्रं२। व२वृत्या२म। वसाये२३। सूऽ२वृ३२३४औ५ हो५वा५। क्ती३२३४ भी५ः॥ १९॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—द्यावापृथिवी ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७८.घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥

१. घृ४त३व५। ता४ऽ३यि३भु२व३ना४ना५म्५। अ५भि५श्रि५-या५। उ२र्व्वीपृथ्वीमधुदुघेसुपेशसाऽ२३होयि। द्यावापृथिवी वरुणा। स्या२धर्म्मणाऽ२३। होयि। वि२ष्काभाऽ२३यि३ते२। आजरे२। भूरि। राये२३। त३सा२उ२वा२३। ए२३। इंदु२स२मु२द्रमुर्व्वि२याविभा२रती३२३४५॥ २०॥

२. घृ५त४व५ती५भु४व५नाना५म५। भा४ऽ५यि५। श्रि५या४उ२र्व्वीपृथ्वी मधुदुघेसुपेशा४२सा। द्यावापृथिवीवरुणा। स्या२ धर्म्मणा। वायिष्क२भि२तायि। अ२जरें२इभूरि। राये२३। त३ सा२उ२वा२३। इंदुस२मु२द्रमुर्वि२याविभा२रती३२३ ४५॥ २१॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

३७९.उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव। महान्तं त्वा महीनां सम्राजं
चर्षणीनाम्। देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत्॥

१. उ५भे४य४दिं५द्र५रो४द५सा४यि४। आऽ२३पा२। प्राथउ२-
षा२३ऽउवाऽ२३। इ२व३आ२। म२हान्तंत्वामाहायिना२म्२।
संम्रौ३ँहो२। जञ्चऋ२षणा२३ऽउवाये२३। ना२३मा२। दे२-
वीजनित्रियाजी२ऽजाना४२ुत्२। भद्रौ३ँहो२। जानित्रि२य२-
जा२३ऽउवाऽ२३। ए२३। ज२न२दा३ऽ२ ॥ २२ ॥

ऋषिः—कुत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३८०.प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना।
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि॥

प्र२मं२दा३२३४यि४ने५। पि२तु२म२दा२३र्चा४ऽ३ता२ुव३-
च५ः॥ यष्का२३ओऽ२३४वा५। ष्णागर्भा२नि२रह२न्नृ२-
जिश्वना२३। अ२व२ स्या३२३४वा५ः। वृष२णं२वा। ज्राद२-
क्षा३२३४यि४णा५म्५। मारौ२वा२ुओ३२३४वा५। त्वं४तः४
स४ख्या४य४हु४वा४ऽ५यि५ म५हा५उ५। वा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—नारदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३८१.इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम्।
विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः॥

१. इं५द्रा४। सु२तेषुसोमे। षु२। होई४२ु। होऽ। वा२होयि।
क्रतुंपुनीष उक्तिथयाम्। वि२दायिवा२ऽर्द्धाऽ२३। स्या२३

दाक्षा२३स्या२। महाः२२३हि३षा२३४५३ः। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २४॥

२. इं३द्रा२३होयि। ह३वे२३होयि। सु२तेषुसोमेषुक्रतुंपुनीष-उक्त्थियाम्। वि२दायिवा२ऽर्द्धा४२। स्य२द२क्षस्या। मा२३ हाः४हि५। षा३२३४५ः॥ २५॥

३. इं५द्र५सु५ते५षु५सो५मे४षू५। क्रतू४२म्पुनायि। ष२उ२-क्त्थियाम्। वि२दे२वार्द्धा४२। स्य२द२क्षस्या। म२हा२ः२ हायिषा४२ः। महाः२२३हि३षा२३४५३ः। ओऽ२३४५यि५। डा॥ २६॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥
स्वरः—ऋषभः॥

३८२. तमु अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्। इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत॥

१. हा५उ५त५मू५व५भी५। प्र२गा२यता। हा५उ५। पु२रू२हु३२-३४ता५म्५। पु२रु२ष्टुताम्। हा५उ५। इं२द्रं२गा३२३४-यि४ र्भी५ः। त२वायिषाऽ२३मा२३४। हा५उ५। वि३वा२३सा४ऽ५ ता५६५६। दी३२३४वी५॥ २७॥

२. ता३ऽ४मू५व५भि५। हो२यि२। प्र३गा४य४ता५६ए५। पु२रू हू२३ता२म्२। पु२रुष्टू२३ता२३म्३। पुरुऽ२ष्टू३२३४ता५म्५। इं२द्राङ्गी२३र्भा२यि२ः। त२वायिषा२३मा२। वि२वासा२३-ता२३। विवाऽ२सा३२३४ता५। आयिंद्रा२३४म्४। गी३र्भा-२३यि३ः। तविषम्। आ। विवाऽ२३हा२३। साता२ओ-३२३४वा५। ऊ३२३४५॥ २८॥

३. तप्मू४ऽ३अ२भि३प्र४गा४य५ता५ । पु२रू । हूतंपुरू४२ुष्टूता४२ुम्२ । इं२द्रा४२ुः२गायिर्भी४२ुः । त२विषाऽ२३४मा५ । वि२वाऽ२३ । साऽ२ुता३२३४अ५हो५वा५ । ओ३२३४ का५ः ॥ २९ ॥

४. तप्मू४ऽ३अ२भि३प्र४गा४य५ते५दा५म्५ । पु२रू । [1]हूतंपुरु४२ुष्टूता४२ुम्२ । आयिंद्रङ्गी२र्भि२स्त२वि२ष२मा२ । वि२वासा२ऽता४२ु । आयिंद्रंगा२३४५यि५ । भा३२३४५यि५ः । त२वायि-षाऽ२३मा२३ । वाऽ२ुयि२ुवा३२३४अ५हो५वा५ । स२त२ए३२३४५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
३८३. तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् ।
३ १ २ ३ १ २
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥

१. तं४ते४ऽ५म५द५म्५ । गृ४णी४ऽ५[म५]सि५ । वृ२षा । णंपृक्षूसासा४२ुहायिम् । उलोका । कृत्नुमद्रायि । वोहाऽ२३री२३ । श्रीऽ२३या२३४ऽ३म्३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३१ ॥

२. ता३ऽ४न्ते५ । हो२ुयि२ु । म३दं४गृ४णी४म४सी५६ए५ । वृ२षा-हो४२ु । णंपृक्षसा२ऽसाही४२ुम्२ । उ२लो२क२कृ२त्नुम द्रिवो हा२ऽरी४२ु । श्रि२याम् । अऽ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा ॥ ३२ ॥

३. तं५ते५म५दं५गृ५णी५म५सी५६ए५ । वृ२षाअ२३हो२३४ । णं४पृ५क्षु४सा५स५ही४म्४ । उ२लाअ२३हो२३४ । क४कृ५त्नु४म५द्रि५वा४ः । ह२रोऽ२३४वा५ । श्रा४ऽ५यो५६हा५ यि५ ॥ ३३ ॥

---

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'हु' इति पाठः । —सम्पादकः

४. तं४ते४म४दा४ऽ५गृ५णी५म४सा४यि४। वारिषणं२पृ२। क्षु२सासा२३ ही२३म्३। होवा२३हा२यि२। उलो। का२३ क्रे२३।होवा२३हा२।त्सु२म ऽ२३।द्राऽ२यि२वा३२३४अ५ हो५वा५।ह२रि२श्रिया२३४५म्५॥ ३४॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः॥

ऋषिः—पर्वतः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
३८४.यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः॥

१. य५त्सो५म५मिं५द्र५वि५ष्णा४वी५। यद्वाघत्रितआप्तियायि। य२द्वा२म२रु२त्सु२मा३न्दासोऽ२३४हा५यि५।साऽ२मा३२ ३४अ५हो५वा५।ए२३।दुभी३२३४५ः॥ १॥

२. य४त्सो४म४मा४ऽ५यिं५द्र५वि५ष्ण४वा४यि४।य२द्वाघात्रित आप्ता४२यायि।य२द्वामा४२रुत्सुमा।दासाये२३।साऽ२मा३-२३४।अ५हो५वा५।दू३२३४भी५ः॥ २॥

३. हा५ओ५हा५य५त्सो५म५मा५।द्राऽ२वा३२३४अ५हो५वा५। ष्णा३२३४वी५ः। यद्वा२र्घ२त्रि२तआ२र्प्ति२ये। यद्वाम-रुत्सुमाऽ२३होऽ दँसा४२यि२। समाऽ२३होये२३। दु२भि२ रो३२३४५यि५।डा५॥ ३॥

४. अ३हो२३ऽयि। अऽ२हो३२३४वा५। य२त्सो२म२मी२३ न्द्रा४ऽ३वि२ष्णा३वा५यि५।अ३हो२३ऽयि।अऽ२हो३२३४ वा५।य२द्वा२घ२त्री२३ता४ऽ३आ२प्ति३या५यि५।अ३हो२३ऽ

यि। अऽ२ुहो३२३४वा५। य२द्वा२म२रू२३त्सू४ऽ३ मं२ुद३ साप्यि५। अ३हो२३ऽयि। ओअऽ२ुहो३२३४५वा५६ ५६। समिंदुभी३२३४५:॥४॥

ऋषि:—विश्वमना वैयश्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥
स्वरः—ऋषभः॥

३८५.एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः॥

१. ए३दु४म४धो५:।म३दा२३ऽ२ुयि२ुन्ता३२३४रा५म्।सिं२ चाध्वर्यो अंधसाऽ२ुः। धा३२३४सा५:। ए२वाहिवीर-स्तावताऽ२ुयि२ु। वा३२३४ता५यि५। स३दा२३वा४ऽ५। र्द्धा५६५६:॥५॥

२. ए४दु४म४धौ४हो४ऽ५र्म्म५दि५त४रा४म्४। सिं२चाहो४२ु यि२। अध्वर्योअँन्धासा४२ुः। आयिवा२ऽहिवी४२ु। रा४२ु स्तवतायि। स२दावृ। धा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥६॥

ऋषि:—विश्वमना वैयश्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥
स्वरः—ऋषभः॥

३८६.एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु।
प्र राधांसि चोदयते महित्वना॥

१. ए३ऽ४न्दु५मि५।न्द्रा४ऽ३या२३सिं४च४ता५।पिबाँ२ुतिर२सो२ म्यंमधु२।प्र२राधा२३ॅ३सी२।चोदयतायिमा२३ही२।त्व२ ना।अ२३हो४वा५।हो४ऽ५यि५डा५॥७॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३८७.एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम्।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत्॥

१. एऽ५तोऽ५न्विऽ५द्रऽ५ऽ५स्तऽ५वाऽ५६माऽ५। साखा२य२स्तोऽ२ऽ। मि३या२३४५म्५। नरमाकृ२ष्टीर्योविश्वा२अभि२। आ। स्तियाये२।काई२ऽ२ुदा३२३४अ५हो५वा५।ऊ३२३४५॥८॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३८८.इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥

१. इं५द्रा५य५सा५।मागाय२त२।वायिप्रा२ऽयाब४२ु।हातेबृ२ह२त्२।ब्राह्मकृते४२ु।वि२।पाऽ२३ः।चाऽ२ुयि२ुता३२३४अ५हो५वा५।प२न२स्यवेऽ२३४५॥९॥

२. इं३द्रा२३४।य४सा४म४।गा५या५६ता५।वायिप्रा२य२बृऽ२ु।ह३ता२३४५यि५।ब्रे३२३४हा५त्५।ब्र२ह्म२कृते२ॅवि२प२-श्चिते२ॅ। ओये२३। पाऽ२ुना३२३४अ५हो५वा५। स्या३२-३४वे५॥१०॥

३. अ२हौहोयि। अ२३हो४ऽ३यि३। ओ२३ऽ२३४५वा५६५६। इंद्रा२ॅय२सामगा२य२त२। विप्रा२ॅय२बृ२ह२तेबृ२हत्। ब्र२ह्म२कृते२ॅवि२प२श्चिते२ॅ। अ२हौहोयि। अ२३हो४ऽ३यि३। ओ२३ऽ२३४५ वा५६५६। ए२३। प२न२स्यवेऽ२३४५॥११॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

२३ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
३८९. य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग॥

१. य५ए५क५इ५दि५हा५हा५उ५। वि२दयतायि। वसुमाऽ२३र्त्ता२। य२दाशुषायि। ईशानोऽ२३आ२। प्रा२तिष्कुता२३ऽउवाऽ२३। ई३ २३४न्द्रा५:। अं२गा। अ२३हो४वा५। हो४५यि५। डा५॥ १२॥

२. या३२३४ए५। का३२३४ई५त्५। वी२दा२ुया३२३४ता५यि५। वासु२म२र्त्ताऽ२३हा२३। यादा२ुशू३२३४षा५यि५। आयिशा२नो२अ। प्रर्ताऽ२३हा२ुयि२ु। ष्कू३२३४ता५:। आयिंद्रो२अ२। गाऽ२ु। या३२३४अ५हो५वा५। ई३२३४न्द्रा५:॥ १३॥

३. य५ए५क५। इ५द्वि५दा५या५६ता५यि५। वासुमर्त्ताया२३दा२। हुँ। शू३२३४षा५यि५। आयिशा२नो२अप्रति२ष्कु२त२:। आयिशा२ु। नो३अ३प्र२तायि। ष्कू३२३४ता५:। आयिंद्रो२अ२। गाऽ२ुया३२३४अ५हो५वा५। ई३२३४न्द्रा५:॥ १४॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
३९०. सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे॥

१. स५खा५य५आ५हा५ओ५। शि३षा२३म४हे४हा५उ५। ब्रह्मा२३इं४द्रा४हा५उ५। य२वज्रिणायि। स्तूषऊषू२३हा२ यि२। वोनृतमाऽ२३हा२। य२धाऽ२३। ष्णाऽ२ुवा३२३४अ५ हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥ १५॥

२. स४खा५य५आ४शि५षा५म५। हा४यि४। ब्र५ह्मों५द्रा५-य५व५ज्रि५णो४वा५। आयिती२३वा२३। होवा२३हा२३। हा२यि२। स्तु३ष३ ऊ२षू२३४। वो४हो४हा५यि५। नार्त्ता२३मा२३। होवा२३हा२३। हा२। य२धा२३। ष्णा२वा३२३४अ५हो५वा५। ई३२३४५॥ १६॥

३. सा३ऽ४खा५य५ः। आ३शि४षा५। मा२३हा४यि४। ब्र४ह्मों४द्रा५य५व५ज्रि४णो४। हा४यि४। स्तु२ष२ऊ२षु२वो३ँ नार्त्तामा२। या३२३४धृ५। हा२३हा२यि२। वो२नार्त्तामा२। या३२३४धृ५। हा२३हा२। ष्णवा३ँयि३। अ२३हो२। अ३हो३वा२। ष्णा२वा३ँ यि३। अ२३हो२। अ३हो३वा२३४। अ५हो५वा५ऊ२३ऽ२३४वा५॥ १७॥

ऋषिः—प्रगाथः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

३९१. गृणे तदिन्द्र ते शव उपमां देवतातये।
यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते॥

१. हा४उ४गृ४णा५यि५। त३दा२३यिं३द्रा४ता५यि५। शवा२३ऽ२३ः। उ३पा२३मा४न्दे५। व२तातयायि। यद्धंसा२३यि३वा२। त्र३मो२३जा४सा५। शा४ची५। पते२। अ२३हो३वा२३४। अ५हो५वा५। द्यू३२३४भी५ः॥ १८॥

२. गृ५णे५। त३दा२३४। अ३हो४ऽ५यि५द्र५ते५श४वा४ः। उपमान्देव२ताता२३या२३४यि४। य३द्धा२३४ंऽ४सि३वा२। त्र२ मो२जसा। शा२३ची४प५। ता३२३४५यि५॥ १९॥

३. गृ४णे४त४दौ४हो४ऽ५यि५द्र५ते५श४वा४५उपमा२दे२॔वता२॔ त२ये२।उपमा२न्दे२।व२ताताऽ२३या२यि२।यद्धं॓सि२वृ२। त्रमोऽ२३ज३सा२उ२।वा२३।शा३२३४ची५।पा३२३४ता५ यि५।हो३२३४५यि५।डा५॥ २०॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

३९२.यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन्।
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब॥

१. य३स्या२३ऽ। त्य३छा२३ऽ२३४म्। ब४र५म्४। मा२३दा२ यि२।दि३ वो२३ऽदा३सा२३ऽ२३४।य४र५।धा२३या२न्२। अ३या२३ऽम्। स३सो२३ऽ२३४। म४इ५। द्रा२३ता२यि२। सु३ता२३ऽः। पि३बा२३। ओऽ२३४वा५। ऊ३२३४ पा५॥ २१॥

२. य४स्य४त्य४छा४ऽ५म्ब५रं५म४दा४यि४। दिवोदासाय-रन्धयन्।आयँ॓ससो२३।म४इ५।द्र३ता२३यि३।सूऽ२ता३२ ३४अ५हो५वा५।पी३२३४बा५॥ २२॥

३. य५स्य५त्या२३छा४म्४ब५रं४म४दा५यि५। दिवो२॔दा२ साय२२न्धयन्। आयँ॓ससो२३। म४इ५। द्र३ता२३यि३। सुत२आऽ२३ः। पाऽ२यि२बा३२३४अ५हो५वा५। ई३२-३४ती५॥ २३॥

४. या३ऽ४स्य५त्य५त्५।हो२यि२।श३म्ब३र४म्म४दा५ए५। दि२वो२दा२सा२य२२२न्ध२य२न्नया॓सा२३सो४। म४इ५। द्र३ता२३४। अ५हो५वा५। सू३२३४ता५ः। पि३बो३२-३४५यि५।डा५॥ २४॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९३.एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य । गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥

१. एं४द्र५ना४ः । ग२धिप्राऽ२३या२ । सात्राजि२त्२ । अ२गोहाऽ २३या२३४ । गि३रा२३४यि४र्न३वा२यि२ । श्व२ताष्पार्थू२३ः । पाऽ२ुता३२३४अ५हो५वा५ । दी३२३४वा५ः ॥ २५ ॥

२. एं४द्र४नो४ऽ५ग५धि५प्रा४या४ । सात्राजि२त्२ । अ२गोहायौ२ । हो२३वा२ । गि२रायिर्न्नवौ२ । हो२३वा२ । श्व२ताऽ२३ः । पाऽ२ुर्थू३२३४अ५हो५वा५ । पतिरुर्दि३वा२ऽऽः ॥ २६ ॥

ऋषिः—पर्वतः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९४.य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति ।
येना हंसि न्या३त्रिणं तमीमहे ॥

१. य४इं४द्र५ । सो५मापाऽ२३ता४मा५ः । म२दाश्श२वायि । ष्ठ२ चे२ततायि । यायिना२३हा२ं४सी५ । नि२य२त्रिणाम् । ता२३ मी४म५ । हा३२३४५यि५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९५.तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः समहसः कृणोतन ॥

१. तु४चे३तु४ना५ । य३ता२३ऽ२ुत्सू३२३४ना५ः । द्रा२घी२ुया३२ ३४यू५ः । जी२वासा४२ुयि२ । आदी४२ुत्यासा४२ुः । समर हसाऽ२ुः । कृ३णो२३ता४ऽ५ । ना३२३४५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—विश्वमनाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९६. वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् ।
अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥

१. वे४त्था५हि४नि४र्ऋ५ती५ना४म्४ । वाज्रह२स्त२प२रि२वृ । जाम् । अह२र२ । हाः । शुं२ध्युष्प२रि२ । पदा२३मा४ऽ५यि५ वा५६५६ ॥ २९ ॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९७. अपामीवामप स्त्रिधमप सेधत दुर्मतिम् ।
आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥

१. अ४पा४मी५वा५म४पा४ । स्त्रिधाम् । अपसेधत२दुर्म्मा३ऽ२३ती२ म्२ । आदी४रुत्यासा४रुः । यु२योतनानओवा२३ओऽ२३४अ५ । हा४ऽ५ सो५६हा५यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिपदा विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३९८. पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥

१. पि५बा४ । सोममिंद्रमंदतुत्वा४रु । यं२तेसुषावहरिया । श्वाऽ२३- द्री२ः । सोऽ२३तू२ः । बाहूभी२३या२३म्३ । सुयाऽ२ुता३२३४ अ५हो५ वा५ । ए२३ । नार्व्वाऽ२३४५ ॥ ३१ ॥

२. हा४उ४पि४बा५ । सोममिं२द्र२ । मा । दतुत्वा२३ । दतुत्वा२ । यं२तेसुषावहरिया । श्वा२ऽद्री४रुः । श्वाद्री४रुः । सो२तुर्ब्बाहु- भ्याम् । सुयता२३ः । २ । नाऽ२ुर्व्वा३२३४अ५हो५वा५ । ई३२३ ४५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
३९९.अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
३ १ २ ३ १ २
युधेदापित्वमिच्छसे ॥

१. अ४भ्रा४तृ४व्यो४ऽ५अ५ना५तु४वा४म्४। अ२नापि२रा-
यिंद्रा४२ु। ज२नुषाऽ२ु। स३ना२३४५त्५। आ३२३४सी५।
यु२धेदा२ॅपि२ त्वामेछ२से२ु। यु३धा२ऽऽ॥ ३३॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४००.यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे। सखाय इन्द्रमूतये॥

१. यो४नो४हा५उ५। इ२दाम्। इदंपुराऽ२३हा२उ२। प्र२वा। प्रवस्य
आऽ२३हा२यि२। नि२ना। निनाय तमु वाऽ२३हा२उ२।
स्तु२षायि। सखायाऽ२३हा२यि२। द्र२मूताऽ२३या२३४ऽ३-
यि३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ३४॥

२. यो५ना४ऽ३इ२द३मि४दं४पु५रा५यो न इदमिदा२ऽम्पू२३रा२।
प्रवस्यआनिना। य२ता२३मू४ऽ३व२स्तु३षा५यि५। निना।
य२ता२३मू४ऽ३व२स्तु३षा५यि५। स२खाया४२ुः। आऽ२३
यि३। द्र३मू२३ता४ऽ५या५६५६यि६॥ ३५॥

[इति] दशमप्रपाठकः ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४०१.आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः।
३ १ २
दृढा चिद्यमयिष्णवः॥

१. आ४गं५ता४। मा२रि२षण्याऽ२३ता२। प्रास्थावा२नो२
मापस्था२त२। सामॅन्यावा४२ुः। दृढाची२३द्या२३। म४यो४
वा५। ष्णा४ऽ५वो५६हा५यि५॥ १॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २ ३२उ ३१ २ ३ १२३१२ १२
४०२.आ याह्ययमिन्दवेऽश्वपते गोपत उर्वरापते। सोमं सोमपते पिब ॥

१. आ४या५ही४। अ२यमिन्दवे। श्वपाऽ२३ता२यि२। गोपत२उ२। र्व्वारा२ऽपाताऽ२३४यि४। सो३मा२३म्३। सोमाऽ२३। पाऽरु ता३२३४अ५हो५वा५। पी३२३४बा५ ॥ २ ॥

२. आ४या५हि५या४। या२३मायिन्दा२३वे२। आश्वप२ते२ गोपते। २। ऊ। र्व्वैराऽ२३हा२३यि३। पा२३ता२यि२। सोऽ२३४मं४ हा५यि५। सो। म। पते२३हा२३यि३। पाऽ२३४ यि४वा४। ए५हि५या५६हा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ ३ ॥

३. आ५या५ह्या५य५मिं५दा५६वा५यि५। अ२श्वापा२ऽता४रुयि२। गो२पाताऊ२३। र्व्वाराऽरुपा३२३४ता५यि५। सोमंसोमा२३ऽ। प२तायि। पिबा२३ओऽ२३४वा५। ऊ३२३४पा५। ऊ४पा५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २ ३ २ ३१ २र ३ १ २
४०३.त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि।
३ १ २र ३ १ २
संस्थे जनस्य गोमतः ॥

१. त्व५या५ह५स्वी५त्५। यूजाव२य२म्२। प्रातिश्वासा४रु। तम्वृष२भ२। ब्रूवी२ऽमाहाऽ२३४यि४। सं३स्था२३यि३। जानस्य२ गोऽ२३४वा५। मा३२३४ता५ः ॥ ५ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१ २ ३क २र ३२ ३ १ २
४०४.गावश्चिद्घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः।
३१२ ३ १ २ ३ २
रिहते ककुभो मिथः ॥

१. गा५व५श्चि५द्घा५सा५६म५न्य५वा५ः। स२जा२त्येनमरु तस्सबंधवाऽ२३होयि। रि२हतेकाकू२३भो२। मि२था। अ२३ हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ६॥

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—ककुबुष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

४०५. त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनासहम्॥

१. त्व४न्न५इं४। द्र२आभाऽ२३रा२। ओजोनृ२म्ण२म्२। शात क्रता२३उ३। वीच२ऋ२षा३२३४णा५यि। आवीरंपा२३ हा२३। ताऽ२ुना३२३४अ५हो५वा५। सा३२३४हा५म्५॥ ७॥

२. त्व४न्न५इं५द्रा४। आभाऽ२३रा२। ओजोनृ२म्ण२म्२। शात-क्रता२३उ३। वीच२ऋ२षा३२३४णा५यि५। आ२वीराऽ२३-म्पा२ु। त३ ना३स२हाम्। अऽ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ८॥

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—ककुबुष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

४०६. अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे।
उदेव ग्मन्त उदभिः॥

१. अ४धा५हि५या४। द्र२गिर्व्वाऽ२३णा२ः। उपत्वा२का२। म२ईमाऽ२३हा२यि२। स२सृग्माऽ२३हा२यि२। ऊदे४२ु। व२ग्माऽ२३न्ता२ः। उदाऽ२३भा२यि२ः। इ४डा४ऽ५भी५ः। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ९॥

१. अ५धा५ही५न्द्र५गि५र्व्वा५६णा५ः। ऊपत्वा२का२। माई२ऽ-माहा४२ुयि२। सासृग्माहा४२ुयि२। ऊदे२ऽवाग्माऽ२३। त४ओ४वा५। दा४ऽ५भो५६हा५यि५॥ १०॥

२. अ५धा५ही५न्द्र५गि५र्व्व५णा५६ए५ । उपत्वा२का२माई२ऽ माहा२३ यि३ । सासृ२ग्मा३२३४हा५यि५ । उ२दौ३ँहो२३ । वा३ँहा२३ । ग्माऽ२ु । त३ऊ२३४अ५हो५वा५ । द२भी२३ रेऽ२३४५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०७. सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे ।
अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ॥ ९ ॥

१. सा२३४यि४ । दं४त५स्ते५व४ । यो५या५६था५ । गो२श्रायिते२ म । धौ२म२दिरायि । वा२३यि३व४क्ष५ । णा३२३४५यि५ । अ२ भित्वामायिंद्रा२३नो४ऽ३ । नू२३४५ । मा३२३४५: ॥ १२ ॥

२. सी३द४न्त५स्ते५व४य५: । य३था२३ । गोऽ२३४ । श्री४ते५म४ धौ५म५ । दि४रा५यि५ । वि३वा२३ । हा२३ । क्षाऽ२३४णा५-यि५ । अ३भी२३ । हो२३यि३ । त्वाऽ२३४मी५ । द्र३नो२३ । नूऽ२३४ मा४: । उ५हु५वा५६हा५उ५ । वा५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०८. वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽ वस्यवः ।
वज्रिञ्चित्रं हवामहे ॥ १० ॥

१. व५य५मु३त्वा२ुम३पू४र्व्वि५या५ । स्थू२रन्नकच्चिद्भरंत-आवेंस्या वाऽ२३४: । व४ज्रि५न्५ । चि३त्रा२३म्३ । हाऽ२३ वा४ऽ३मा२३ ४५हो५६हो५यि५ ॥ १४ ॥

२. व५य४मु५त्वा४म५पू५र्व्य५स्थू५र४न्न४क४च्चि५द्भ५रं५-त५: । ओ४वा५ । हा२३हा२ुयि२ु । अ३व२स्यावाऽ२३४५: । हा२३हा२ुयि२ु । व३ज्रि३ञ्चि२त्राऽ२३४५म्५ । हा२३हा२ु

यिरु। ह३वा२३। माऽ२३४हा४यि४। उ५हु५वा५६हा५उ५। वा५॥ १५॥

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

४०९. स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वी रनु स्वराज्यम्॥

१. स्वा४दो३रि४त्था३वि४षू५। व३ता२३ः। माऽ२३४। धो४ष्पि५बं५ति५गौ५। रि४या५ः। याइन्द्रेण२। स२यावाऽ२३री२ः। वृष्णा२मद२। ति२शोभाऽ२३था२। वस्वायिरा२ऽनू४२ु। स्वाराजि२य२म्२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा॥ १६॥

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

४१०. इत्था हि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्॥

१. इ५त्था५हि५सो५। म२इन्माऽ२३दा२ः। ब्रह्म२च२का। र२वर्द्धाऽ२३ना२म्२। शविष्ठ२व२। ज्रि२न्नोजावोजाऽ२३सा२। पृ२थि२व्यानिश्श२शा२अहि२म्२। अर्च्चाना२ऽनू४२ु। स्व२रौहो४२ु। जियमोऽ२३४५यि५। डा॥ १७॥

२. इ४त्था४हि४सो४ऽ५म५इ५न्म४दा४ः। ब्रह्म२च२का। र२वर्द्धाऽ२३ना२म्२। शा२वि२ष्ठ३२३४वा५। ज्रि२न्नो२ुजा३२३४सा५। पृ२थि२व्यानिश्श२शा२अहि२म्२। अर्च्चा२३न्३होयि। अँनूऽ२३हो। स्वाराजि२य२म्२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १८॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४११.इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः।
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्॥

१. इं२द्रो२म२दा२य२वा२३।वा४र्द्धा५यि५।श२व२से२वृ२त्र२हा२३।त्रे४भी५ः।त२मि२न्म२ह२त्सू२वा२३।जा४यि४षु५।ऊ२ति२मर्भे२ह२वा२३।मा४हा५यि५।सा४वा५।जायिषुप्र२नोऽ२३४वा५।वा४ऽ५यि५षो५६हा५यि५॥ १९॥

२. इं४द्रो४म४दा४ऽ५य५वा५वृ४धा४यि४। शवसे२वृ२। त्र२हान्रेभी२३४ः। ता५म्५। इ२न्मा२ुहा३२३४त्सु५वा५६। हा५उ५। जा४ यि४षू५। ऊतिमर्भेहवा२ऽऽ। मा२३हा४यि४। सा४वा५। जायिषुप्र२ नोऽ२३४वा५। वा४ऽ५यि५षो५६हा५यि५॥ २०॥

३. इं४द्रो४म४दा४ऽ५य५वा५वृ४धा४यि४शवसे२वृ२।त्र२हा४२ुनृभि२ः। आअ२३हो२। अ२होवाऽ२३४५। हः३२३४५। त२मिन्मह।त्सु२ वा४२ुजिषु२।आअ२३हो२।अ२होवाऽ२३४५।हाः३२३४५।ऊ२तिमर्भे२।ह२वा४२ुमहे२।आअ२३हो२। अ२होवाऽ२३४५। हः३२३४५। सवाजेषू। प्रा२३नो४ऽ३।वा२३४५यि५षो५६हा५यि५॥ २१॥

४. इं४द्रो५म४दा५य५वा५वृ५धे५श४व५से५वृ४। त्र२हान्रे२ऽभी४२ुः।तामिन्म२ह२।त्सूआ२ऽजिषू२३।ऊती२ुमा३२३४र्भा५यि५।ह२वा४२ुमाहायि।सवाजेषूप्रा२३नो४ऽ३।वा२३४५ यि५षो५६हा५यि५॥ २२॥

५. इं३द्रो२३ऽ२३४। म४दा४। यवावृधेशवाऽ२ुसा३२३४यि४ वृ५।त्र२र्हाँ३।अ२हो२३वा२।आ३ँअ२ुहो३२३४वा५।नृ४ भा४यि४:।तमिन्महत्स्वाजिषूतिमाऽ२३र्भा२यि२।ह२वा३ँ। अ२हो२३वा२। आ३ँअ२ुहो३२३४वा५। म४हा४यि४। सवाजेषुप्रना३ँ। अ२हो२३वा२। आ३ँ। अ२ुहो३२३४वा५। वा४ऽ५।यि५षो५६हा५यि५ ॥ २३ ॥

६. इं३द्रो२३४।म४दा४य४।वा५वा५६र्द्धा५यि५।शवसे२वृ२। त्र२हान्त्रेभी२३:। हा४उ४हौ५। हो३वा२। तामिन्म२ह२। त्सूआ२ऽ जिषू२३। हा४उ४हौ५। हो३वा२। ऊतिम२र्भे२। ह२वामाहे२३।हा४उ४हौ५।हो३वा२।सवाजेषूप्रा२३नो४ऽ३। वा२३४५ यि५षो५६हा५यि५ ॥ २४ ॥

७. ओ५हा५यि५।इं३द्रो२३४।म४दा४य४।वा५वा५६र्द्धा५यि५। शवसे२वृ२। त्र२हान्त्रेभी२३:। आ४उ४हौ५। हो३वा२। तामिन्म२ह२।त्सूआ२ऽजिषू२३।आ४ओ४हौ५।हो३वा२। ऊ२तिमर्भायि।ह२वौ२हो२३वा२।माहा४२ुयि२।सवाजेषूप्रा२३ नो२।वि२षात्।अऽ२३हो४वा५।हो४ऽ५यि५डा५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१२. इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽ नुत्तं वज्रिन् वी र्यम्।
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम्॥

१. इं५द्र५तु५भ्य५मि५द५द्रि५वा५६ए५।आनुत्त२म्व२ज्रि२न्वी२ रियम्।यद्धात्या२ऽम्मा४२ु।यायिनंमृ२ग२म्२।तवात्या२ऽ- न्मा४२ु।यायाव२धीः।अर्च्चाना२ऽनू४२ु।स्वाराजि२य२म्२। इडाऽ२३ भा२३४ऽ३।ओऽ२३४५यि५॥डा५॥ २६ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१३. प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते।
इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽ चैन्ननु स्वराज्यम् ॥

१. प्रायिही४२ु। अ२भीहिधृष्णुहाअ२३हो२। नाता४२ुयि२। वज्रोनियंऽसताअ२३हो२। आयिंद्रा४२ु। नृ२म्णंऽहि ते शवाअ२३हो२। हाना४२ुः। वृ२त्रञ्जयाअपाअ२३हो२। आर्च्चा४२ुनानू४२ु। स्वाराजि२य२म्२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा॥ २७॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१४. यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्।
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽ स्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥

१. य४दु४दी४रा४ऽ५त५आ५ज४या४ः। धृ२ष्णवे२ॅधी२। य२तायिधा२ऽना४२ुम्२। युं२क्ष्वामदच्युता२३। हा४री५। क२ंऽ२हनष्कंवसा२३उ३। दा४धा५ः। अ२स्माँऽआऽ२३यिं३द्रा२। व२सौदाऽ२३धा२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २८॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१५. अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

१. अ३क्ष४न्न३मी४म५द५। त३ही२३। आऽ२३४। व४प्रि५या४अ५धू५। ष४ता५। अस्तो२ष२त२स्वभा२। न२व२ः। विप्रानाऽ२३वी२। ष्ठायाम२ती२। योजानू२३वा२३यि३। द्राऽ२ुता३२-३४अ५हो५वा५। हा३२३४री५॥ २९॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
४१६. उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथाइव ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३क २र ३ १ २
कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास इद्योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

१. उ३पो४षु३शृ४णु४ही३गि४र५ः । ए२३ । अ२३हो४ऽ५वा५ऽ । माघ२व२न्मा । तथाआ२ऽयिवाऽ२३४ । क३दा२३४न्न३सू२ । नार्त्ताव२त२ः । करइ२द२ । थाया२ऽसाईऽ२३४त्४ । यो३जा-२३४नु३वा२३यि२ । द्राऽ२ुता३२३४अ५हो५वा५हा३२३४-री५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २ ३ २
४१७. चन्द्रमा अप्स्वा३ऽ न्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥

१. चं२द्रमाआ२उ२वा२ । प्सु२वान्तारा२उ२वा२ । सु२पर२र्णोधा२ उ२वा२ । व२तेदिवि । नवोहिरा२उ२वा२ । ण्य२नायिमाया२ उ२वा२ । प२दंविंदा२उ२वा२ । ति२विद्युताः । वित्तंमाआ२उ२ वा२ । स्य२रोदाऽ२३सा२३४ऽ३यि३ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३१ ॥

२. चं४द्र४मा५आ४ । प्सू२३आन्ता२३रा२ । सूपर्णो२धा२व२ । ताऽ२३यि३ । दि२वि३या२ । नवोर्ऽहिरण्य२ने२म२य२ष्प२ दंविंद२ । ति२वि२द्यूतोऽ२३४हा५यि५ । वि२त्तंऽहोयि । मआऽ२३हो । स्य२रोदाऽ२३सा२३४ऽ३यि३ । ओऽ२३४५ यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

३. चं५द्र५मा२३आ४प्सु५व४न्त४रा५ । सूपर्णो२धा२ । व२तायि-
दा२ऽयिवी४२ु । नवो२ँहिरण्य२ने२म२य२ष्प२दं विंद२ ।
ति२वि२द्यूताऽ२३: । वि२त्त२ँहोयि । मआऽ२३हो । स्य२
रोदाऽ२३सा२३४ऽ३यि३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३३ ॥

४. चं५द्र४मा५अ५प्सु५वा४ । तरा । सुपर्णोधाव२तेदाऽ२३
यि३वी२ । नवाऽ२३होयि । हिरण्य२ने२म२य२ष्प२दंविंद२ ।
ति२वि२द्यूताऽ२३: । वि२त्त२ँहोयि । मआऽ२३हो । स्यऽरोऽ२३ ।
दाऽ२ुसा३२३४ अ५हो५वा५ । ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ ३४ ॥

५. चं५द्रौ४हो५मा५अ५प्सु४वं५त४रा४ । ओ५६वा५ । सु२प२र्णो
धावतेदायिवाये२३ । होवा२३होऽ२ुयि२ु । हु३वा२३४५यि५ ।
नवोहायिरण्यनायिमायाऽ२३: । होवा२३होऽ२ुयि२ु । हु३वा२३
४५यि५ । प२दंविंदति[1]वायिद्यूताऽ२३: । होवा२३होऽ२ुयि२ु ।
हु३वा२३४५यि५ । वि२त्तम्मेअस्यरोदासाये२३ । होवा२३
होऽ२ु । यि२ु । हु३वा२३ओ४ऽ५वा५६५६ । ऊ२३ऽ२३४
पा५ ॥ ३५ ॥

ऋषिः—अवस्युः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१८. प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् । स्तोता वामश्विनावृषि
स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥

१. प्राऽ२३४ । ति४प्रि५य४त५म५म्५ । रा४था५म्५ । वाऋषणं२
व२ । सु२वाहाऽ२३ना२म्२ । स्तोतावा२३मा२३ । श्विना२ुवा३२

१. विंवंतीति मूलगानग्रन्थे लिखितम् । —सम्पादकः

३४ऋ४षी५: । स्तोमायिभी२३र्भू२३ । षाति२प्रा३२३४ती५ । माध्वायिमा२३मा२३ । श्रू ऽ२३ता४ऽ३म्३ । हा२३४५वो५६ हा५यि५ ॥ ३६ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—वसुश्रुतः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१९. आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥

१. आऽ२३४ । ते४अ५ग्न५इ५धी५ । मा४हा५यि५ । द्यु२मं२त२दे२ वा२३ । आऽ२३ । ज२र२३मा२ । यद्धास्या२३ता२३यि३ । पानीऽ२ुया३२३४सी५ । स२मिद्दीरॅदय । ताऽ२३यि३ । द्य२वि३ या२ । इषाःस्तो२३त्रे२३ । भ्याऽ२३आ४ऽ३भा२३४५रो५६हा५ यि५ ॥ १ ॥

२. आ३ते४अ५ग्न५इ५धी५ । मा२३हा४यि४ । द्यु५म५न्ता२३न्दे४ व५अ४ज४र५म्५ । य३द्ध४ऽ५स्या३ते४प३नी४य५सी५ । स४मि३ दी४द३य४ता५यि५ । हुं३हुं२ु । द्या३२३४वी५ । इषःस्तोत्रेभ्या२३आ२ । हुं३हुं२३४ऽ३ । भा२३४५रो५६ हा५यि५ ॥ २ ॥

ऋषिः—विमदः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२०. आग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे ॥

१. हा२उ२ । अ२ुहो३२३४वा५ । आग्निन्नस्ववृक्ति२भी३२३४५: । हा२उ२अ२ुहो३२३४वा५ । होता२रं२त्वा३वृ२णी२म२हे३२-

३४५ । हा२उ२ । अ२ुहो३२३४वा५ । शी२रंपा२व२कशो२चिर
ष२ुम्२ु । वि३वो२ुमा३२३४दा५यि५ । हा२उ२ । अ२ुहो३२३४
वा५ । य२ज्ञायिषु२स्ती२र्णब२ऋ२हि२षा३२३४५म्५ । हा२
उ२ । अ२ुहो३२३४वा५ । विवक्ष२से३२३४५ ॥ ३ ॥

२. आ५ग्नि५न्न५स्व५वृ५क्ति५भि५रि५ह५द्व५हा५यि५ । होता२रं२
त्वा२वृ२णी२म२ह२इह२इहा२३ । हा२यि२ । शी२रंपा२व२-
कशो२चि२ष२मिह२इहा२३ । हा२ुयि२ु । वि३वो२ुमा३२३४दा५
यि५ । य२ज्ञायिषु२स्ती२र्णब२ऋ२हि२ष२मिह२इहा२३ । हा२३
यि३ । वाऽ२ुयि२ुवा३२३४अ५हो५वा५ । क्षा३२३४से५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—सत्यश्रवाः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२१. महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥

१. म३हा२३४यि४ । म४हे४नो५अ५द्य४ । बो५धा५६या५ ।
उषो२रा२ये२ । दि२वित्माऽ२३ती२ । यथाची२३न्ना२३ः । आबो२ु
धा३२३४या५ः । सत्याश्रा२३वा२३ । सिवाऽ२ुया३२३४या५
यि५ । सुजाता२३आ२३ । श्वाऽ२३सू४ऽ३ । ना२३४५त्तों५६हा५
यि५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—विमदः ॥ देवता—सोमः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२२. भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् । अथा ते सख्ये अन्धसो
वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे ॥

१. भ२द्रन्नोऽ२३अ४पि४वा५त५या५ । मनो२द । क्षाम् । ऊत२ुक्रा
३२३४तू५म्५ । आथा२ते२ । सा । ख्ये२ुअं३ध२सा२ुः । वि३

वो२ुमा३२३४दा५यि५। रणा२र्गावा२र्नय। वसाये२३। वा२ु
यि२ुवा३२३४अ५हो५वा५क्षा३२३४से५॥ ६॥

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

४२३. क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृते शवः।
श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवां दधे हस्तयोर्वज्रमायसम्॥

१. क्र५त्वा५म५हा५ऽ५। अ५नु५ष्व५धा५६मे५। भी२म२आ२
वा२व्रे२३तायिशा२ऽवा४२ुः। श्रि२यऽऋष्वा२३ः। ऊपा२ु
का३२३४यो५ः। नि२शि२प्री२ह२री२३वान्दा२ऽधा४२ुयि२।
हस्तायो२३र्वा२३ज्र२मो२३४वा५। या४ऽ५सो५६हा५
यि५॥ ७॥

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

४२४. स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम्।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्रा चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी॥

१. स३घा४तं३वृ३ष४ण५म्५। र३था२३४अ३हो४वा५। आधिति२
ष्ठा२। ति२गोवा२ऽयिदा४२ुमू२। य२ष्पात्रं२हा। र्यियो२ुजा३२
३४ना५म्५। पूर्र्ण मि। द्रा। चीके२ुता३२३४ती५। योजानू२३
वा२३यि३। द्रा२ुता३२३४अ५हो५वा५। हा३२३४री५॥ ८॥

ऋषिः—वसुश्रुतः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

४२५. अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः। अस्तमर्वन्त
आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर॥

१. अ५ग्निं५ता२३म्३म४न्ये५यो४व४सू५ः। अ२स्तं यं या२३।
तीधे२ुना३२३४वा५ः। अ२स्तमर्वा२३। ताआ२ुशा३२३४-

वा५ः। अ२स्तंनित्या२३। सोवाऽ२जा३२३४यि४ना५ः। इषां स्तो२३त्रे२३४। हा३हो३२३४हा५। भ्याऽ२३आ४ऽ३। भा२३४५रा५६हा५यि५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—अंहोमुग्वामदेव्यः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—उपरिष्टाद् बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४२६. न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः ॥

१. न४त४म४ं४हो५न४दु५रि५त४म्४। ई४य५इ४या४हा५यि५। दायिवा२ँसो२अष्ट२मर्त्तिय२मी। य२इयाऽ२३हा२यि२। स२जोषसो२यमर्य२माई। य२इयाऽ२३हा२यि२। मायित्रो नाया२३। तिवाऽ२रू३२३४५णा५६५६ः। अति२द्विषा३२३४५ः ॥ १० ॥

ऋषिः—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्रयः ॥ देवता—पवमानः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२७. परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ १ ॥

१. प४रि५प्र४ध५न्वा४। इंद्रायसोमास्वा२ऽदू३२३४ः। हा५यि५। मि२त्राया। पू२ष्णेभाऽ२३४हा५यि५। गाऽ२३४यो५६हा५ यि५ ॥ ११ ॥

२. प४रि५प्र४ध५न्वा४। इंद्रायसोमा। औ३ँहा२। २। स्वा२दुर्म्मि-त्राया। ओ३ँहा२। ओ३ँहा२। पू३ष्णा२३४अ५हो५वा५। भ२गा२३याऽ२३४५ ॥ १२ ॥

३. प३री२३होयि। प्रधा३२३४न्वा५। इं३द्रा२३हो। यसो३२३४ मा५। स्वा३दू२३ऋ३होयि। मित्रा३२३४या५। पू३ष्णे२३

होयि। भगा३२३४या५। पू४ष्णे३भ३गा४य५। पू३ष्णे२३४ऽ३। हो२३४ऽ३यि३। भा२३गा४ऽ५या५६५६। ए२३। सुवर्च्चे२ ते३२३४५॥ १३॥

४. हा२३हा२यि२। २। प२रि२प्रा२३धान्वा२। ए३२३४हि४या५। हा२३हा२यि२। २। इं२द्रा२या२३सोमा२। ए३२३४हि५या५। हा२३ हा२यि२। २। स्वा२दु२र्म्मी२३त्राया२। ए३२३४हि५ या५। हा२३ हा२यि२। २। पू२ष्णे२भा२३गाया२। ए३२३४ हि५या५। हा२३हा२३४ऽ३यि३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १४॥

५. प४र्ये४पा४री५। प्र२धन्वा। होवा२३होयि। इंद्रायसोमा। होवा२३होयि। स्वा२दुर्म्मित्राया। होवा२३होये२३। पू३ष्णौ२ वा२ओ३२३४वा५। भ४गा४ऽ५या५उ५। वा५॥ १५॥

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू॥ देवता—पवमानः॥ छन्दः—त्रिपदापिपीलिका-मध्यानुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

४२८. पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे॥

१. प२र्य्यू२षु२प्र२ध२न्वा२वा२जा२३सा। ताया२यि। ओयि। पा२री। ओयि। वृत्रा२णिः२। सक्षणिः। द्वायिषँस्तारा४२। धिया४२यि२। अर्णाया४२ः। ना४२ः। ईरासाऽ२३यि३। ओये२३र३सा२३४ऽ३यि३। ओऽ२३४५ यि५। डा५॥ १६॥

२. प५र्यू५षू५। प्र२धन्वावा२३। जासा२ता३२३४या५यि५। प२रि२ वृ२त्रा२णि२स२क्ष२णि२ः। द्विषास्ता२३रा२। धियाऽ ऋणया२ऽना२३ई२। हुं। रा२३४५सो५६हा५यि५॥ १७॥

३. प४। यें४पा४री५। ऊषुप्रधन्वावाजसातयेपरिवृत्राणिसत्तणि द्वर्ाऽ२३यि३षा२:। ताऽ२३रा२। धियाऽरिणयानओवा२३ ओऽ२३४ वा५रा४ऽ५सो५६हा५यि५॥ १८॥

ऋषि:—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्रय:॥ देवता—पवमान:॥ छन्द:—द्विपदापङ्क्ति:॥
स्वर:—पञ्चम:॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
४२९.पवस्व सोम महान्त्समुद्र: पिता देवानां विश्वाभि धाम॥ ३॥

१. प४व५स्व५सो५मा४। माहा२न्समुद्रा:। पि२तादेरॅवानाऽ२३ म्३। वाऽ२ुयि२ुश्वा३२३४अ५हो५वा५। भि२धामाऽ२३ ४५॥ १९॥

२. अ५हो५६वा५। अ२हो२३वा२। अ२होऽ२ुवा३२३४अ५हो५६ वा५। पवस्व२सो२म२। म२हान्त्समु२ द्र:। पि२तादेरॅवानारॅ म्२। विश्वा२भिधामाऽ२३४। अ५हो५६वा५। अ२हो२३वा२। अ२होऽ२ुवा३२३४अ५हो५६वा५। ए२३। धर्म्माऽ२३ ४५॥ २०॥

ऋषि:—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्रय:॥ देवता—पवमान:॥ छन्द:—द्विपदापङ्क्ति:॥
स्वर:—पञ्चम:॥

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
४३०.पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय॥ ४॥

३. ओं५हो५६वा५। ओं२हो२३वा२। ओं२होऽ२ुवा३२३४ओं५ हो५६ वा५। पवस्व२सो२म२। म२हेदक्षा२य२। अश्वो२ननि२क्त:। वारॅ जीधनारॅया३२३४। ओं५हो५६वा५। ओं२हो२३। वा२। ओ२ होऽ२ुवा३२३४ओ५हो५६वा५। ए२३विध२र्म्माऽ३२३४५॥ २१॥

१. प४व५स्व५सो५मा४। म२हे२दा२३क्षाया४२ु। अश्वोन-
निक्तो२३। वा३जा२३४। अ५हो५वा५। ध२ना२३या२३
४५॥ २२॥

ऋषिः—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः॥ देवता—पवमानः॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः॥
स्वरः—पञ्चमः॥

४३१. इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय॥ ५॥

१. इं४दु५ष्प५वि५ष्टा४। चा२३रू२ः। म२दा२या। अ२पा२
मुपा२३स्था२३यि३। का२ुवा३२३४अ५हो५वा५। भ२
गा२३या२३४५॥ २३॥

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू॥ देवता—पवमानः॥ छन्दः—त्रिपदापिपीलिका-
मध्यानुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

४३२. अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे॥

१. अ४नु५। अ५नू४। हायित्वा२सु२तꣳसो२म२दा२म३सि३। म३
दा३म२सा‌ये२३। म३हा२३४ऽ३यि३। सा२३४५मा५। र्य२
राज्ये२। वाजा२ꣳ२अ२भिपवमा२न्३। प३व३मा२ना। प्रागा२
ह२सा। अ२३ हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ २४॥

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

४३३. क ईं व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः॥

१. क४ई५म्व्या४ऽ५क्ता४ः। न२र२स्सा२३नायिडा४२ुः। रु२-
द्रस्यमर्या२३ः। आ२ुथा३२३४अ५हो५वा५। सु२वा२३-
श्वा२३४५ः॥ २५॥

२. क३ई२३४ऽ३म्३वि२य३क्ता५:। न३रा२३४ऽ३स्स२नी३ डा५:। रु२द्रस्यामैर्य्याऽ२३:। आऽ२था३२३४अ५हो५वा५। सु२वा२३ श्वाऽ२३४५:॥ २६॥

३. का४ई५म्५। वियाऽ२३। ओवा२३। आ४क्ता५:। ना४रा५:। सनाऽ२३। ओवा२३। आ४यि४डा५:। रू४द्रा५। स्यमाऽ२३। ओवा२३। आ४र्य्या५:। आ४था५। सुवाऽ२३। ओवा२३। आ४श्वा५:। हो४ऽ५यि५। डा५॥ २७॥

ऋषि:—वामदेव:॥ देवता—अग्नि:॥ छन्द:—पदपङ्क्ति:॥ स्वर:—पञ्चम:॥

४३४. अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम्। ऋध्यामा त ओहैः॥

१. अ५ग्ने५त५मा४द्या५। अ२श्व२न्न२स्तोमायि:। क्र२तु२न्ना२३ भाद्रा४२म्२। हार्दि२स्पृ२[1]शीम्। ऋ२ध्याऽ२मा३२३४अ५हो५ वा५। त२ओहा३२३४५यि५:॥ २८॥

२. अ५ग्ने५। हो२३४ऽ३यि३। त२म३द्य५। अ२श्व२न्न२स्तोमायि:। क्र२तुं२न्ना२३भाद्रा४२म्२। हार्दा२३ओयि। स्पृऽश२म्२। ऋ२ ध्याऽ२मा३२३४अ५हो५वा५। त२ओहो३२३४ यि५:॥ २९॥

ऋषि:—वामदेव:॥ देवता—वाजिनां स्तुति:॥ छन्द:—पुरउष्णिक्॥
स्वर:—ऋषभ:॥

४३५. आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो अग्मं देवस्य सवितुः सवम्। स्वर्गाँ अर्वन्तो जयत॥

१. 'शी' इत्यस्य स्थाने 'सी' इति मूलगानपाठः। —सम्पादकः

१. आ२विर्म्मा२३४र्य्या५ः। आवाजम्वाजिनोअग्मान्। दे२वस्य२ स२। वि२तुस्सा२३४वा५म्५। स्वर्ग्गाँअर्व्वा२३४५न्ता५६ ५६ः। जयता२३४५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः ॥ देवता—पवमानः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३६. पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महाँ अवीनामनुपूर्व्यः ॥

१. प४व५स्व५सो५मा४। द्यु३म्नी२३४ऽ३सु२धा३र५ः। माहाँ२ अवीनाम्। अनुपू२। र्व्वि३यो२३४५यि५डा५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३७. विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठमीमहे ॥

१. वि५श्व५तो५हा५उ५। दा२व२न्वि२श्वतोना२ः। ओ२३। हा२। ओ३२३४हा५यि५। आ२। भ२रा२। भाऽ२३रा२। यान्त्वा२-शविष्ठ२मायि। माहा२। अ३हो३२३४वा५। ऐ२ही२यै३-ही२ऽ ॥ ३२ ॥

२. वि४श्व५तो५दा५व५न्वि५श्व४तो५न५आ४। भ२रा२। भाऽ२३ रा२। यान्त्वा२शविष्ठ२मायिम२। हा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५ यि५। डा ॥ ३३ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३८. एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥ २ ॥

१. एऽषाप्‌ः। ब्राह्माय २आ२३ऽउवाऽ२३। ए२३। त्वि२य३आ२। आऽ२३यिं३द्रा२ः। नामश्रु२ता२३ऽउवाऽ२३। ए२३। गृ२ण३ आ२॥ ३४॥

२. एऽषाप्‌एऽषाप्‌ः। ब्राह्माऽ२ुब्राह्माऽ२ु। य२। ऋत्वियोवा२। ओवा२। आयिन्द्राऽ२ुआयिन्द्राऽ२ुः। नामश्रुतोवा२। ओवा२। गृ२णा। अ२३होऽवाप्‌होऽऽप्‌यिप्‌। डाप्‌॥ ३५॥

३. एऽषाप्‌ः। ओऽ। ओऽवाप्‌। ब्रह्मा२याः। ऋँत्वियाऽ२ुः। आयिन्द्रो२३हा२३यि३। ना२३मा२। श्रूऽ२३तो२। गृ२णा। अ२३होऽवाप्‌। होऽऽप्‌यिप्‌। डाप्‌॥ ३६॥

४. ओ३हो२३ऽऽ३ओ२३ऽहाप्‌। ए२षाब्राह्मा२३ऽऽ३। या२३ऽः। ऋप्‌त्विप्‌याऽः। ओ३ॅहा२३ऽऽ३। ओ२३ऽहाप्‌। इं२द्रोना मा२३ऽऽ३। श्रू२३ऽ। तोप्‌गृप्‌णाऽयिऽ। ओ३ॅहा२३ऽऽ३। ओ२३ऽप्‌ हाप्‌६प्‌६। ए२३सुवर्च्चते३२३ऽप्‌॥ ३७॥

५. ए२ष२ब्रह्मौहो। या२ऽऋत्वियाः। इं२द्रो२नामौहो। श्रु२तोगृणा २३उवाऽ२३। ऊ२३ऽपाप्‌॥ ३८॥

[इति] एकादशः प्रपाठकः॥ ११॥

ऋषिः—अवस्युः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—पञ्चमः॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४३९. ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ॥

१. हाप्‌उप्‌स्वप्‌रप्‌ताप्‌। ब्र२ह्माणाऽ२ुः। इंद्रम्। आ। म२हयाऽ२ु न्तो३२३ऽ। कैप्‌ः। अवाऽ२ुर्द्ध२यान्। अ२ह२ये२ह२ु। त३वा२३ऽप्‌ यिप्‌। ऊप्‌६प्‌६। श्लो२कयताऽ२३ऽप्‌॥ १॥

२. हा५उ५। अ५भि५स्व५र५ता५। ब्र२ह्माणआयिंद्रा४रुम्२। मर हयाऽरुन्तो३२३४। कै५ः। अर२व२द्धीया४रुन्२। अ२ह२ये२ ह२न्तवाऽ२३४५ऊ५६५६। श्लो३२३४का५ः॥ २॥

ऋषिः—अवस्युः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—पञ्चमः॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
४४०.अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्॥

१. हा५उ५स्व५र५ता५। स्व२र२त२स्वराऽ२३ता२। आनव२स्ते२ रथ२म२। श्वा२याता२ऽक्षूऽ२३४ः। हा५उ५स्व५र५ता५। स्व२र२त२स्वराऽ२३ता२। त्वष्टा२वज्र२म्पुरुहू२। ता५द्युँमान्ता ऽ२३४म्४। हा५उ५स्व५र५ता५। स्व२र२त२स्वाराऽ२। ता३२ ३४। अ५ हो५वा५। स्व२रा२३ताऽ२३४५॥ ३॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—पञ्चमः॥

२ ३२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
४४१.शं पदं मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्॥

१. अ३होरुयिरु। शं३प४दा५म्५। म२घ२ंरया२३ऽ२३४यि४। षि४ णा४यि४। नकाममव्रतोहिनोतिनस्पृश२त्२। र२यि२ मो३२३४५ यि५। डा५॥ ४॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—विश्वेदेवाः॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—पञ्चमः॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४४२.सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः॥

१. सा४दा५। गावःरॅशुचयोविश्व२धायाऽ२३सा२ुः। सा३२३४ दा५। दायिवाअ२रोऽ२३४वा५। पा३२३४सा५ः॥ ५॥

ऋषिः—संवर्तः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
४४३.आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः ॥

१. अ३हो२३यि३ । आ४याही५ । वना४२सासहा । गावस्स२च२ । तावर्त्तानी४२म्२ । यात् । ऊऽ२३ । ध२भि२रो३२३४यि५ । डा५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४४४.उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥

१. ओ४वा४ । उ४प५प्र५क्षे४म४धु५म५ति५क्षि५यं४त५ः । ओं४वा४ । ओंयि । पुष्येमरयिंधीमहेतआऽ२३ । यिं३द्रा२ । ओ । वाओवा२ओ । वा२ हा२३ऽउवा२३ । उ२३४पा५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २र
४४५.अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥ ९ ॥

१. अ४र्च्चं५ति५या४ । कम्मरुतस्सु२वाऽ२३ । र्क्का२ः । आस्तो२ भ२ तायि । श्रु२तोयुवासआयिंद्रा३ऽवा२३ । ऊ२३४पा५ ॥ ८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४४६.प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते ॥

१. प्र५वा४ः । आयिंद्रायवृत्रहान्तमाऽ२३या२ । वायिप्रायगाथं गा२ऽया२३ता२ । गाञ्जुजौ२वा२३ । उ२पृ२ । षाऽ२तो२३ऽ५ हा२यि२ ॥ ९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २
४४७.अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् न सुमद्रथः ॥

१. अ४चे५ती४। अ२ग्निः। चिकाऽ२३यि३ति२३४ः। हाऽ२३-
व्या२३। वाऽ२ु। ड्ना३२३४अ५हो५वा५। सु२मद्रथा३२-
३४५ः॥ १०॥

२. अ४चे५ति५या४। ग्नायिश्चायिक। यितीऽ२३ः। हौहोयि।
अ२३हो३२३४५।हव्याऽ२३।वाऽ२ुड्ना३२३४अ५हो५वा५।
ए२३।सु२ म२द्रथा३२३४५ः॥ ११ ॥

ऋषिः—बन्धुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
४४८.अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥

१. ओ४ग्ना५यि५।त्वन्नोऽ२३आ२।हुम्माऽ२३।ता३२३४मा५ः।
उ२तत्रा२ताशि२वोभु२व२ः।शि२वोभुवाऽ२३ः।व४रो४वा५।
था४ऽ५ यो५६हा५यि५ ॥ १२ ॥

२. अ५ग्नौ५। हो५यि५। त्वौ५हो५यि५। नो२अन्तमा२३ऽ
उवाऽ२३। ऊ३२३४ता५। त्रा३ता२ुओ३२३४वा५।
शि२वोभु२ वा३२३४५ः॥ १३ ॥

३. अ५ग्ने५। तू२३व४न्नो५अ४। न्त४मा५ः। उ२तत्रा२ताशि२-
वोभु२व२ः।वराऽ२३अ३हौ२ुहो३२३४वा५।था४ऽ५यो५६
हा५यि५ ॥ १४ ॥

४. अ५ग्ने५। हो२३यि३। त्व४न्नो५अ४। त४मा५ः। उ२ता४२ु।
हा४२ुयि२।अ३ँहो२३ऽयित्राताऽ२ु।शि३वो२३४५।भू३२-
३४वा५ः॥ १५ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
४४९.भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ॥

१. भा४गा५ः । नचित्रः । अग्निर्म्महोऽ२३ना२३म्३ । दाऽ२धा३२ ३४अ५हो५ । वा५ । ति२रत्ना३२३४५म्५ ॥ १६ ॥

२. भ४गो५न४चि५त्रा४ः । अ२ग्निर्म्महोऽ२३ना२३म्३ । दाऽ२ धा३२३४अ५हो५ । वा५ । ए२३ । ति२रत्ना३२३४५म्५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३२ ३२
४५०.विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन् यदि वेह नूनम् ॥

१. वि५श्व५स्या५ । प्र२स्तोभा४२ । पु२रो२वा२सा२३न्३ । यदिवे३२३४हा५ । नूऽ२३ । नौंऽ२२मा३२३४अ५हो५वा५ । धा३२३४ना५म्५ ॥ १८ ॥

२. अ५हो५यि५वि५श्व५स्या५ । प्र२स्तोभा४२ । पु२रौ२हो२वा२३ हा२यि२ । वासा४२न्२ । यदिवेहा । नूऽ२३ । नाऽ२मा३२३४ अ५हो५वा५ । धा३२३४र्म्मा५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—संवर्त्तः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४५१.उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥

१. उ५षा५अ५पा५ । स्वासु२ष्टा३२३४मा५ः । सम्वा४२र्त्त२या । तिवाऽ२र्त्ता३२३४नी५म्५ । सूऽ२जा३२३४अ५हो५वा५ । ए२३ । तता३२३४५ ॥ २० ॥

ऋषिः—भुवन आप्त्यः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
४५२.इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥

१. इ५मा४नु४कं५भू४ऽ५व४ना४। सी२षधाऽ२ुयि२ुमा३उ३वा२३। ई२३४हा५। इं२द्र२श्चवाऽ२ुयि२ुश्चा३उ३वा२३। ई२३४हा५।च३ दे२३।वाऽ२ुपा३२३४अ५हो५वा५।वी३२३४शा५:॥ २१॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—विश्वेदेवाः॥ छन्दः—द्विपदागायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
४५३.वि स्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः॥

१. वि४स्रु५वि४स्रू५। ताया४२ुस्ताया४२ुः। य२था[1]२पथः। आयिंद्रा४२ुत्वाद्याऽ२३।न्तु२रोऽ२३४वा५।ता४ऽ५यो५६हा५यि५॥ २२॥

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—द्विपदात्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
४५४.अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः॥

१. अ५या५वा५जा५म्५। दायिवहि। तः२ुस३ने४मा५। म२दे२म२ [2]शा२३तार्हिमा४२ुः। श२ताऽ२३। हाऽ२ुयि२ुमा३२३४अ५हो५ वा५।सु२वी२३राऽ२३४५:॥ २३॥

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—विश्वेदेवाः॥ छन्दः—द्विपदात्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४५५.ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र॥

१. ऊ४र्ज्जा५।मित्रोवरुणष्पिन्व२ताऽ२३यि३डा२ः।पीवरीमिषं कृणुहीनआयिंद्रा३ँउ३वा२३।ऊ२३४पा५॥ २४॥

---

१. 'था' इत्यस्य स्थाने मूलगानपाठे 'व्या' इति लिखितम्।
२. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'शा' इत्यस्य स्थाने 'सा' इति लिखितम्—सम्पादकः

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—एकपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४५६. इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥

१. इं३द्रो२३४। वि३श्व४स्य५रा५। ज२ति२हो३२३४५यि५। डा५ ॥ २५ ॥

२. इंद्रा४२३होऽ२यिऽ। वा४२३यि२श्वा। स्य२रा४२३जति२। होवाऽ२३ होऽ२३४५यि५डा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४५७. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशम्। स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥

१. ओ२३यि२३त्रि३क५। द्रुकायि। षू२३महि२षोऽ। यवा२३-शि३र५म्५। तु३वी२३शु३ष्म५ः। ओ२३यि२३त्रे३२३४म्पा५त्५। सोमाम्। अपिबा२३ द्वि। ष्णुना२३सु३त५म्५। य[1] ३था२३व३-श५म्५। ओ२३यि२३सा३२३४ ई५म्५। ममा। दा२३महि२क। मक२३र्त्त३वे५। म३हा२३मु३रु५म्५। ओ२३ यि२३सा३२३४ यि४ना५म्५। सश्चा। त्। दे२वोदे२वाम्। स४त्य४इं४दुः४ स४त्या४ऽ५मिं५द्रा५उ५। वा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—गौराङ्गिरसः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

४५८. अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्म। ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः ॥

१. अत्र यकारस्थाने 'मु' इति पाठो मूलगानपुस्तके। —सम्पादकः

१. अ५य५म्५स५हो४हा५यि५। स्त्र३मा२ुना३२३४वा५ः। दृ२ शाष्क२वी२नाम्मतिर्ज्यो। तिर्व्वि२धा३२३४र्म्मा५। ब्र२ध्नास्स२ मायिची२रु२षस२ः। स२मा यरा२ऽयाऽ२तू[1]२। अ३रा२३। होवा२३। पा४। स५स्स४चे५। त३सा२३ः। स्वासरे२। म२न्युम्माऽ२३न्ता२ुः। चि३तो२ु। या३२३४अ५ हो५वा५। गो३२३४५ः॥ २८॥

२. अ५य५ं५स५ह५स्त्र५मा५ना५६व५ः। दृ२शाष्क२वी२ नाम्मतिर्ज्योति२ र्व्विधाऽ२३र्म्मा२। ब्र२ध्नास्स२मायिची२रु२ षस२ः। स२मायिरा२ऽयाऽ२३त्३। ओ३वा२। अ२रे२पस२ स्सचे२त२स२ः। स्वासरे२। म२न्युमाऽ२३न्ता२ः। ओ३वा२ु। चि३ता२३ः। गोऽ२ुरा३२३४ अ५हो५वा५। वा३२३ ४५॥ २९॥

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अत्यष्टिः॥ स्वरः—गान्धारः॥

४५९. एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः। हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये॥

१. ए४न्द्र५या५ह्यु४प४ना४ः। पाराऽ२ुवा३२३४ता५ः। नायमच्छा। वि२दथानायि। वास२त्पा३२३४ती५ः। अस्तारा२३जे२३। वास२ त्पा३२३४ती५ः। ह४वा५म५हे५त्वा५प्र४य५स्वं५ता४ः। सु२ तायिषु२३वा२। पु२त्रासोना। पि२तरम्वा। जासा२ुता३२ ३४या५यि५। मं२हायिष्ठा२३म्वा२३। जाऽ२३सा४ऽ३। ता२३४५ यो५६हा५यि५॥ ३०॥

१. ''तू'' इत्यस्य स्थाने 'भू' इति लिखितं मूलगानग्रन्थे। —सम्पादकः

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

४६०.तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं श्रवांसि भूरि।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्त राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु
वज्री ॥

१. त४मिं४द्रं५जो५हु५वी५मि५म५घ४वा५ना४म्४।उ३२३४ग्रा५
म्५। स२त्राहोइ। दधानमप्रता ऽ २ुयि२ुष्कू३२३४ता५म्५।
श्रवा ऽ २ ३ॱ३सा ऽ २ुयि२ु। भू३२३४री। मॱहिष्ठोगीर्भिरा।
चॅया ऽ २ुज्ञा३२३४या५ः। वा२वार्ता४२ु। रा२येहोयि। नो२
वि२श्वा२सु२पा३२३४था५।कृ३णो२३।तू ऽ २ुवा३२३४अ५
हो५वा५।ऊ३२३४ पा५ ॥ ३१ ॥*

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

४६१.अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु त्यच्छर्द्धो दिव्यं वृणीमह
इन्द्रवायू वृणीमहे। यद्ध क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे।
अध प्र नूनमुप यन्ति धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥

१. अ५स्तु५श्रौ५षा५ट्५।पु२रोअग्निन्धि२यादधे२।हा।अ२३
हो३२३४वा५।आनुत्यछर्द्धों२दि।व्याम्।वॅृणा ऽ २३हा२ुयि२ु।
मा३२३४हे५।इंद्रावा२३यू२३।वृणी ऽ २ुमा३२३४हा५यि५।
यद्धक्राणाविवा२ ऽ स्वा२३ता२यि२। ना२भासंदायना२३।
व्या४ सा५यि५।अधप्रनूनमुपया।ति२धी२ताया ऽ २३ः।हा।
अ२३हो३२३४वा५।दायिवा२ॱ२ ऽ अच्छा ऽ २३।हा।अ२३हो३२
३४वा५।न२धो ऽ २३४वा५।ता४ ऽ ५यो५६हा५ यि५ ॥ ३२ ॥

* वज्रीति पदे 'ज्री' इत्यस्य पाठो गाने नास्ति, ज्रायि-इति पाठः स्यात्। —सम्पादकः

ऋषिः—एवयामरुत्॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

४६२.प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।
प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे॥

१. प्राऽ२३४। वो४म५हे४म४त४यो५यं५तु५वि४ष्णु५वो४। हा४यि४। म२रु२त्व२ता२३यि३गिरिजा२३४ः। हा३हो२यि२। ए२वायाऽ२ु। मा३२३४रू५तू५। प्रार्शर्द्धाया४२ु। प्रायज्यावाऽ-२३यि। सूखा२ु दा३२३४या५यि५। तवसे२भ२न्ददिष्ट२ये२। धुनायिव्रा२३ ता२३। याऽ२ुशा३२३४अ५हो५वा५। वा३२३४से५॥ ३३॥

ऋषिः—अनानतः पारुच्छेपिः॥ देवता—पवमानः॥ छन्दः—अत्यष्टिः॥
स्वरः—गान्धारः॥

४६३.अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः। धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः। विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः॥

१. आ४या५। रुचा। हरि। ण्या२ुपु३ना४ना५ः। विश्वाद्वेषा२ंसित-रतीऽ२३सा४ऽ३यु२ग्व३भि५ः। सू२रोऽ२३ना२३। साऽ२ुयू३२३४अ५हो५वा५। ग्वा३२३४भि५ः[१]॥ ३४॥

२. अ५या५रु३चा२ुह३रि४ण्या५। पु२ना२नः। विश्वाद्वाऽ२३यि३षा२। सायितर२। त्यौ२हो२। वा२३हा२३यि३। सायूऽ२ुग्वा३२३४भी५ः। सू२रोऽ२३ना२ु। स३यू२३ग्वा४ऽ५भा५६५६यि६ः[१]॥ ३५॥

१. एतयोर्गानभेदयो*र्धारा पृष्ठस्ये*त्युत्तरार्द्धभागस्य गानं न लिखितं मूलगानपुस्तके। —सम्पादकः

३. अ४या३रु४चा३ह३रि४ण्या५। पूऽ२३४। ना४नो४वि४श्वा५
द्वे४षा५। सायि *तर२ति२। सायुँग्वाभी४२ुः। सूरोना२३।
सायूऽरुग्वा३२३४भी५ः। धा४रा५पृ५ष्ठा४। स्यारो४रुच२
तायि। पु२नानोआ२३। रूषोरुहा३२३४री५ः। वि४श्वा५य५
द्रू४। पापरि२या२। साऽत्रॅँक्राभी४२ुः। सप्तासी२३ये२३।
भाऽ२३यि३रा४ऽ३। क्रा२३४५भो५६हा५यि५॥ ३६॥

ऋषिः—नकुलः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—अतिशक्वरी॥ स्वरः—पञ्चमः॥

४६४. अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि
प्रियं मतिम्। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत् सवीमनि
हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः॥

१. अ५भि४त्यं४दे५व४ऽ४स५वि५ता४र५म्५। अ५हौ४हो४वा४
हा५यि५। ओणाऽ२३४यो५ः। क२विक्राऽ२३४तू५म्५।
आ२र्च्चा२ुमी३२३४सा५। त्या२स२ुवा३२३४ऽ४रा५।
त्न२धामाऽ२३४भी५। प्रि२यम्माऽ२३४ती५म्५। अ२होअ२
होवाऽ२३४हा५उ५। ऊ२दूर्ध्वा२ु या३२३४स्या५। आ२मा२ु
ती३२३४र्भा५ः। अ२दिद्यूऽ२३४ता५त्५। स२वीमाऽ२३४
नी५। अ२होअ२होवाऽ२३४हा५उ५। ही२र२ ण्या३२३४पा५।
णी२रा२ुमी३२३४मी५। त२सुक्राऽ२३४तू५ः। अ२होअ२
होवाऽ२३४५हा५उ५। वा५। ए२३। कृ२पासुवाऽ२३
४५ः॥ ३७॥

* मूलगानग्रन्थेऽत्र 'सावि' इति लिखितम्। 'सि' इत्यस्य गानं 'सायि' इति भवति। —सम्पादकः

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

४६५.अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्। य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा। घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥

१. अ५ग्नि५ꣳ५हो५ता५।र२म्म२न्ये३ऽदास्व२त२म्२।ओ२३ वा२३। वासो२उस्सू३२३४नू५म्५।स२ह२सो२जा३ऽतावे२ऽ दासा४२उ म्२।वि२प्र२न्न२जा२।ओ२३वा२३।तवे२उदा३२३४ सा५म्५। य२ऊर्ध्वा२ऽया४२उ।सु२वाध्वा२ऽरा२ऽ२ः।दे२वो२ दे२वा२। ओ२३वा२३।चिया२ऽउका३२३४प्पा५।घृ५तो४ वा४।स्य२ विभ्रा२ऽष्टि२म्२।अ२नु२शु२क्र२शा२।ओ२३ वा२।चिषः। आजुह्वा२ऽ२३ना२।स्य२सा२।ओ२३वा२३।पा२ऽउयि२उषा३२ ३४अ५हो५वा५।ऊ३२३४पा५ ॥ ३८ ॥

२. अ४ग्निꣳ३हो३ता४र५म्म५न्ये५।दा२ऽ२३४।स्वं४त५म्व४सो५ स्सू५नु४म्४।स२ह२सो२जा३ऽतावे२ऽदासा४२उम्२।वि२प्र२ न्न२जा३ऽतावे२ऽदासा४२उम्२।[1] यँ२ऊ२र्ध्व२ या३ऽसूवैं२- ध्वा४२उः। दे२वो२दे२वा३ऽचा२या२ऽकृपा४२उ। घृ२तास्य२ विभ्रा२ष्टि२मनुशु२। क्राशो२ऽचिषा४२उः। आ३जूह्वा२३ ना२३।स्या२ऽ२३ सा४ऽ३।पा२३४५यि५षो५६हा५ यि५ ॥ ३९ ॥

३. अ३हा२वो२उहा३२३४वा५ः।अ२ग्निष्ट५[प५]ती।प्र३ति२ द३ह४ति५।अ२ग्निꣳहो।ता२र२म्मा२३न्ये४ऽ३दा२स्वं३त५

---

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'यकारस्थाने' 'जँ' इति लिखितम्। —सम्पादकः

म्५। व२सोः। सू२नु२ः२स२ह२सो२जा२३ता४ऽ३वे२उद३स५म्५।वि२प्राम्।न२जा२३ता४ऽ३वे२द३स५म्५।य२ऊ। ध्व२या२३सू४ऽ३व२ ध्व३र५ः। दे२वो। दे२वा२३ची४ऽ३या२उकृ३पा५। घृ२ता। स्य२ वि२भ्रा२ष्टि२म२नु२शू२३क्रा४ऽ३शो२उचि३ष५ः। आ२जू। ह्वा२ ना२३स्या४ऽ३स२र्प्पि३ष५ः। अ३हा२वो२उहा३२३४वा५ः। ३। अ२ग्निष्टपती। प्र३ति२द३हा४ऽ५ता५६५६यि६।ए२३विश्वं२समत्रिणंद२ह२।२।ए२३।विश्वं२समत्रिणंद२हा३२३४५॥४०॥

४. त्य२ग्ना२उयि२उः।प्र३ति२द३ह४ति५।हा२उउ२उहो३ऽ५हा५उ५। अ२ग्निंहो।ता२र२म्मा२३न्ये४ऽ३दा२उस्वं३त५म्५।व२सोः। सू२नुं२स२ह२सो२जा२३ता४ऽ३वे२उद३स५म्५।वि२प्राम्। न२जा२३ ता४ऽ३वे२उद३स५म्५।य२ऊ।ध्व२या२३सू४ऽ३ व२ध्व३र५ः। दे२वो। दे२वा२३ची४ऽ३या२कृ३पा५। घृ२ तास्य२वि२भ्रा२ष्टि२म२नु२ शू२३क्रा४ऽ३शो२उचि३ष५ः। आ२जू। ह्वा२ना२३स्या४ऽ३स२र्प्पि३ष५ः। त्य२ग्ना२उयि२उः। प्र३ति२उद३ह४ति५। हा२उ२हो३ऽ५हा५उ५। वा५। ए२३। विश्व२ः२समत्रिणन्द२ह२। ए२३। विश्व२व्यत्रिणंद२ह२। ए२३।विश्व२न्यन्त्रिणंद२हा३२३४५॥४१॥

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अष्टिः॥ स्वरः—मध्यमः॥

४६६.तव त्यन्नर्यं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम्। यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु रिणन्नपः। भुवो विश्वमभ्यदेवमोजसा विदेदूर्जं शतक्रतुर्विदेदिषम्॥

१. ताऽ२३४व४त्य४न्ना४ऽ५रि५य५नृ४ता४उ४। अ२पइंद्रा४२र। प्रथमंपूऽ२र। र्व्वि३य२रुन्दि३वि५। प्र३वा२र। चि३य२रुङ्कृ३त५म्५। यो२दे्वास्या४२र। शवसाप्राऽ२र। रि३णा२रअ३सु५। रि३ण२रुन्न३प५ः। भु२वोविश्वा४२रम्२। अभ्यदा२रयि२र। व३मो२रज३सा५। वि३दे२र दू३र्ज्ज५म्५। श३ता२रुक्का३२३४तू५ः। वि४दा४ऽ५यि५दि५षा५ उ५। वा५॥ ४२॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः॥ १ ॥[इति] ऐन्द्रपर्व्व॥

अतः परं पावमानम् [काण्डम्]

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २ ३१ २र ३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २
४६७.उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः ॥

१. उ५च्चा४। ते२जा३ताम्न्धासा४२ुः। दि२विसद्भूम्म्याददायि। उ२ग्रंःशाऽ२३र्म्मा२३। माऽ२ुही३२३४औ५हो५ वा५। उ२पू२। श्रा३२३४वा५ः॥ १॥

२. उ२च्चातेऽ२३४जा५। त२मन्धाऽ२३४सा५ः। दि२वायिसाऽ२३४द्भू५। मि२याददायि। उ२ग्रंःशाऽ२३र्म्मा२। म२हाये२३। श्राऽ२ु वा३२३४अ५हो५वा५। वा३२३४५यि५॥ २॥

३. हा५हा५उ५च्चा५ते५जा५। हा२३। हा२३यि३। तामाऽ२ुन्धा३२३४सा५ः। दि२विसद्भूमिया२ऽदा२३दे२। उ२ग्रंःरुशा३२३४र्म्मा५। ओंमो२३। म४हो४वा५। श्रा४ऽ५वो५६हा५यि५॥ ३॥

४. ऊऽ२३४च्चा४ते४जा४ऽ५। त५मौ५हो४ऽन्धा४सा५ः। दि२विसद्भूमिया२ऽदा२३दे२। उ२ग्रंःरुशा३२३४र्म्मा५। माहा३ँउ३वा२३४ऽ३। श्रा२३४५वो५६हा५यि५॥ ४॥

५. उ५च्चा५ते५जा५। त२म। धासाऽ२३ः। ओमो३ँवा२। दिविस२द्भू२। मि२यादा२ऽदेऽ२३। ओमो३ँवा२। उग्राःशा२ऽर्म्माऽ२३। ओमो३ँवा२३। माऽ२ुहा३२३४अ५हो५वा५। अ२वा२३ईऽ२३४५॥ ५॥

६. उ४च्चा५ते५जा५। त२मन्धाऽ२३सा२ः। दिविस२द्भू२। मि२यादाऽ२३दा२यि२। ऊग्रा२३ःऽ३हा२यि२। शार्म्मा२३ हा२। यि२। म३हा२३ होये२३। श्राऽ२वा३२३४अ५हो५वा५। ग्वा३२३४भी५ः॥ ६॥

७. उ५च्चा४ते५जा५त४मा४। धासाऽ२३ः। ओंमो३ँवा२। दिविस२द्भू२। मि२यादा२ऽदेऽ२३। ओमो३ँवा२। उग्राःशा२ ऽर्म्माऽ२३। ओमो३ँ वा२। म२हायो२३। श्राऽ२वा३२३४अ५ हो५वा५। ऊ२३ऽ२३४ पा५॥ ७॥

८. उ५च्चा५ते५जा५त५मं५धा४सा५ः। दि२विसद्भूम्याददायि। उ२ग्रःशाऽ२३४र्म्मा५। म३हा२३यि३श्रा४ऽ५वा५६५६ः॥ ८॥

९. उ५च्चा५ते५जा५त५म५न्धा५६सा५ः। दि२विसद्भू। म्यादाऽ २३दा२ यि२। उ२। ग्रःशाऽ२३र्म्मा२। मही४२। हा४२यि२। अ३ँहो२३ऽयि। श्रवा४२ः। हा४२यि२। अ३ँहो२३ऽयि। इ३या २३होयि। इ३यो३२३४५वा५६५६। ऊ३२३४५॥ ९॥

१०. उ३च्चा२३४अ३हो४वा५। तेजाऽ२। त३मा२३४५। धा३२३४ सा५ः। दि२विसद्भूम्म्याददे२। ऊग्रँःशाऽ२३र्म्माऽ२। म३हि३ श्र२वा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ १०॥

११. उ५च्चा५ते५जा५त५म५न्ध५सो५दो५हा५यि६। दो५हा५ए५। दि२विसद्भूम्म्याददे२। दो३ँहा२यि२। दो३ँहा२३ए२। उ२ग्रः शाऽ२३र्म्मा२। दो३ँहा२यि२। दो३ँहा२३ए२। म२हिश्राऽ२३ वा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ११॥

१२. उ३च्चा२ुते३जा४त४म५न्ध५सा५ः। दि२वायिसा ऽ२३४द्भू५। मि२या४२ुददे२। ओंम्। ओं३ॅवा२। २। ववा ऽ२३होयि। उ२ग्रः२शा ऽ२३र्म्मा२। ओ३ॅवा२। ववा ऽ२३होयि। म२हि३ श्र२वो ऽ२ु। या३२३४अ५हो५वा५। य२यु२रे३२३४५॥ १२॥

१३. उ४च्चा५ता२३यि३जा४त४मं५न्ध५सा५ः। दि२वायिसा२ऽ द्भू४२ु। मिया ऽ२३द३दा२यि२। उ२ग्रः२श२र्म्मा। महा ऽ२३ यि३श्र२वा२उ२। वा२३स्वौषे२३४५॥ १३॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
४६८. स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥

१. स्वादायिष्ठाया२मदायिष्ठाया२। पवस्व२सो२। माधा२ऽरा ऽ२३ या२। इंद्रायापा२। त२वायिसू ऽ२३ता२३४५३ः। ओ ऽ२३४५ यि५। डा५॥ १४॥

२. स्वा२दि२ष्ठया४२ु। इया४२ुइया। म२दि२ष्ठाया४२ु। प२व२ स्वसो४२ु। इया४२ुइया। म२धा२राया४२ु। इं२द्रा२यपा४२ु। इया४२ुइ या। त२वायिसू ऽ२३ता२३४ऽ३ः। ओ ऽ२३४५यि५। डा५॥ १५॥

३. स्वा२दि२ष्ठयौहो४२ु। इया। म२दि२ष्ठाया४२ु। प२व२ स्वसौहो४२ु। इया। म२धा२राया४२ु। इं२द्रा२ययौहो४२ु। इया। [पा२] त२वायिसू ऽ२३ता२३४ऽ३ः। ओं ऽ२३४५यि५। डा५॥ १६॥

४. ओंरुयिरुस्वा३२३४दि५। ष्ठ२या३ॅमार्दिँष्ठयार्। ओ३२३४ वा५। पवस्व२सो२म२धा२र्या२३। ओंरुई३२३४न्द्रा५। याऽरु पा३२३४अ५हो५हो५वा५। त२वे२सु३ता२ऽः॥ १७॥

५. उ३हु३वारुयिरु। स्वा३२३४दिँ५। ष्ठ२या३ॅमार्दिँष्ठयारु। ओं३२ ३४वा५। पवस्व२सो२म२धा२र्या२३। उ३हु३वा२यि२। इंध्द्राध्ऽ ५य५पा५। ताऽरुवा३२३४अ५हो५वा५। सू३२३४ता५ः॥ १८॥

६. स्वा४दा४यि४ष्ठ५या५। म२दि२ष्ठ२या२३। पावा२३स्वा४ सो५। म२धा२र२या२३। आयिंद्रा२३या४पा५६। हा५उ५। त४वा४ऽ५यि५सु५ता५उ५। वा५॥ १९॥

७. स्वा४दि५ष्ठ५या५म४दि५ष्ठ५या५प४व५स्व५सो५म५धा४ र५या५इ४। द्रा४ऽ५य५पा४। त२वा४रुयि२। ऊ४रु। त२ वा४रुयि२। ऊऽ२त३वा२३४अ५हो५वा५। सू३२३४ ता५ः॥ २०॥

८. अ५हो५हुं५। हा५ए४हि४या५। हा२३हा२यि२। स्वादायिष्ठा या२। मा३२३४दि५। ओरु यि४रुमा३२३४दि५। अ५हो५हुं५ हा५ए४हि४या५। हा२३हा२यि२। ष्ठ्यापाव२। स्वा३२३४सो५। ओरुख३२३४सो५। अ५हो५हुं५हा५ए४हि४या५। हा२३हा२ यि२मधारया२। इ३२३४न्द्रा५। ओरुइ३२३४न्द्रा५। औ५हो५ हुं५। हा५ए४हि४या५। हा२३हा२यि२। यपातवारुयिरु। सू३२३४ता५ः। ओरुयिरु। सू३२३४ता५ः। अ५हो५हुं५हा५ ए४हि४या५हा२३हा२३४। अ५हो५वा५। ई३२३४५॥ २१॥

९. स्वा४दि५ष्ठ५या५म५। दा४ऽ५यि५ष्ठ५ या४। प२वा४२ु। स्वाऽ२३सो२। मधा४२ुराया। आऽ२३यिं३द्रा२। या४२ुपा। तॅवाऽ२३।हा२उ२वा२३।सू३२३४ता५:॥ २२॥

ऋषि:—भृगुर्वारुणि:॥ देवता—पवमान: सोम:॥ छन्द:—गायत्री॥ स्वर:—षड्ज:॥

१ २ ३ १२ ३१ २ ३२ २ ३ १ २३ १ २
४६९.वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सर:। विश्वा दधान ओजसा॥

१. वृ५षा५प५वा५।स्व२धा२राया४२ु।म२रुत्वतायि।चमत्साऽ-२३रा२:। वायिश्वाऽ२३। दाऽ२ुधा३२३४अ५हो५वा५। न२ ओजसा३२३४५॥ २३॥

२. वृ४षा४हा५उ५। पा३२३४वा५। स्वा२धा२ुरा३२३४या५। मा३२ ३४रू५।त्वा३२३४ता५यि५।चा२मरु२त्सा३२३४रा५:। वायिश्वा२द२धाऽ२३। नाऽ२ुओ३२३४औ५हो५वा५। जा३२३४सा५॥ २४॥

३. वृ४षा५प५व४। स्व५धा५रा५६या५। मारुत्वता२३यि३। चामाऽ२ुत्सा३२३४रा५:। विश्वादा२ऽधाऽ२ु। न३ओं२३। जाऽ२३४सो५६ हा५यि५॥ २५॥

४. आ४यि४वृ५षा४। प२वा। इ३हा२अ३ँहो२। स्व२धाराऽ-२३४या५। म२। रू। त्वते२३हा२यि२। च२। मा। त्सँराऽ-२३हा२३४यि४। वि५श्वा५ द४धा५हा५उ५। न५ओ५ज५-सा५हा५उ५। ओ२वा२३४ऽ३ ओ२३४५वा५६५६। अ२स्मेरार्याँ२उ२तश्रवाऽ२३४५:॥ २६॥

५. वृ५। षा५। प३वा२३। ए४हि४या५। स्व२धाऽ२ु। र३या२३-४अ३हो४वा५मारू२३४। अ३हो४वा५। त्वतेचमा२ऽ-त्सा२३रा२ः। अ३ॅहो२३ऽये२३। अ३हो३२३४५वा५६५६। विश्वा२दधा२ न२ओजसा३२३४५॥ २७॥

६. वृषापावाऽ२३। हौहोयि। अ२३हो३२३४५। स्वधाराऽ२३। हौहोयि। अ२३हो३२३४५। मरूत्वातेऽ२३हौहोयि। अ२३-हौ३२३४५। चमात्साराऽ२३ः। हौहोयि। अ२३हो३२३४५। विश्वादाधाऽ२३। हौहोयि। अ२३हो३२३४५। नओजसाऽ२३। हौहोयि। अ२३हो२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २८॥

७. वृ२षापावा२ु। अ३हौ३हो३२३४वा५। स्व२धाराया२ु। अ३हौ३हो३२३४वा५। म२रूत्वाता२ु। अ३हौ३हो३२३४ वा५। च२मात्सारा२ु। अ३हौ३हो३२३४वा५। वि२श्वादावा२ु। अ३हौ३हो३२३४वा५। न२ओजासा२ु। अ३हौ३हो३२३४ वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ २९॥

८. अ५हो४हो४हा५यि५। वृ४षा५। प२व२स्वा२३धाराया२३। मारूऽ२ुत्वा३२३४ता५यि५। ओयि। चैँमाऽ२३। चैँमाऽ२ु त्सा३२३४राः५ः। अ५हो४हो४हा५यि५। वि४श्वा५। दधाऽ२ु ना३२३४ओ५। जा२ुसा३२३४अ५हो५वा५। ओ२यि२। [१]ज्व२र३आ२॥ ३०॥

९. वृ५षा५अ५हो४हो४हा५यि५। प२वा२३स्वाधा२ऽराया२३। मारूऽ२ुत्वा३२३४ता५यि५। च३मा२३। ओयिचैँमाऽ२ुत्सा३२३४ रा५ः। वि५श्वा५अ५हो४हो४हा५यि५। दधाऽ२ुना३२-

[१]. अत्र क्ष्वज्वसदृशं किमक्षरमिति लिपिभेदान्न पठितुं शक्यते। —सम्पादकः

३४ओ५ । जा ऽ २ुसा३ २३४अ५हो५वा५ । ओ २ुयि२ु । जू३२-
३४वा५ ॥ ३१ ॥

[इति] द्वादशः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७०. यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा । देवावीरघशंसहा ॥

१. या४स्ता५यि५ । मादो । वारा २ुओ३२३४वा५ । णी३२३४
या५ः । ता४ यि४ना५ । पा५वा । स्वा३ँआ २ुओ३२३४वा५ ।
धा३२३४सा५ । दा४यि४वा५ । वायिरा । घाशा २ुओं३२३४
वा५ । सा३२३४ हा५ ॥ १ ॥

२. य४स्ते४म५दा५ः । व२रा२यि२ुणि३या२ः । तायिनापावा२३
स्वा२३ । अं२ुध३सा२ । दायिवावायिरा२३४ । हा५उ५ । घ४
शा४ऽ५ऽ५स५हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २ ॥

३. य३स्ता२३ऽ२ु । यि२ु । मा३२३४दा५ः । व२रायिणाया२ु ।
ओं३२३४ वा५ । हा२ु । ओ३२३४वा५ । हा२यि२ । तायिनाप२
व२ । स्व२ आन्धासा२ु । ओ३२३४वा५ । हा२ु । ओ३२३४
वा५ । हा२यि२ । दायिवावायिरा२ु । ओ३२३४वा५ । हा२ु ।
ओ३२३४वा५ । हा२३यि३ । घाऽ२ुशा३२३४अ५हो५वा५ ।
स२हो२र२यी२३ष्ठाऽ२३४५ः ॥ ३ ॥

४. य२स्तायिमाऽ२३दो४व४रे५णि५या५ःतायिनाप२व२ ।
स्व२आन्धा२ऽसा४२ु । दायिवा४२ुवायिराऽ२३ । घ२शोऽ२३४
वा५ । सा४ऽ५हो५६हा५यि५ ॥ ४ ॥

५. य५स्ते५। मा२३दो४। वा५। ई४या५। रायिणा२ऽया४२ुः। तायिनाप२ व२। स्व२। औ३होर्ु। वा३हा२। धसा४२ु। दायिवाऽ२३। वाऽ२ुयि२ुरा३२३४अ५हो५वा५। घ२श२ु-स३हा२ऽऽ॥ ५॥

६. य५स्ते५म५दो५वरे५णि५या५६ए५। ते२नापवस्वान्धसादे२ वावीराऽ२३हा२यि२। घाशा२उ२वा२। साहा२उ२वा२३। ऊ२३ऽ२३४पा५॥ ६॥

ऋषिः—त्रितः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४७१. तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्॥

१. ति५स्रो५वा५चा५ः। उदायि। उ२दा२३ऽउ। वाये२३। रा३२३४ते। गा५वो५मि५मा५। ति२धायि। ति२धा२३ऽउ। वाये२३। ना३२३४वा५ः। हा५रि५रे५ति५। क२नायि। क२ना२३ऽ उवाये२३। क्रा३२३४दा५त्॥ ७॥

२. ति५स्रो५वा५चा५ः। उदायिरा२३ते२। गावोमिमन्तिधा२ऽयिना२३वा२ः। ह२रि२रे२तो३२३४हा५यि५। काऽ२ुना३२३४अ५हो५वा५। क्रा३२३४दा५। तू५॥ ८॥

३. ति२स्रो२वाचोऽ२३४हा५यि५। उ२दी२रतायि। गा२वो२ मिमाऽ२३४हा५यि५। ति२धे२नवा४ः। हा२रि२राऽयेतोऽ२३४हा५यि५। क२नाये२३। क्राऽ२ु दा३२३४अ५हो५वा५। अ२स्मत्प२...२[1]तु२विन्त२मा३२३४५म्५॥ ९॥

---

१. अत्रानुदात्तचिह्नयुक्तं किमक्षरमिति न पठितुं शक्यते, अशोभनाक्षरत्वात्। —सम्पादकः

४. तिऽस्त्रो४वा४च५उ४दी५र५तो४। वा४हा५यि५। गा२वो२मि२मा२३। तीधे२ुना३२३४वा५ः। हा४रि५र४यि४ती५। काऽ२ुना३२३४अ५हो५वा५। क्रा३२३४दा५त्५॥ १०॥

५. ति४स्त्रो३ऽ५वा५। चा४ऽ३उ३दी३र४ता५यि५। गावोमिम२ति२धायिना२ऽवाऽ२३ः। होवा२३हा२यि२। हरायिरा२ऽयितीऽ२३। होवा२३हा२यि२। क२नाये२३। क्राऽ२ुदा३२३ [४]। अ५हो५वा५। दी३२३४शा५ः॥ ११॥

६. ति४स्त्रो४वा४चा४ऽ५उ५दी५र४ता४यि४। गा२वोमिमन्ति२धेनवः। हरिराऽ२३यि३ती२। क२नौ४२ु। हुवायि। होवा२३। क्राऽ२ुदा३२३४अ५हो५वा५। हा२ओवा३२३४५॥ १२॥

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३१ २३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३१२
४७२. इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्॥

१. इ५न्द्र५ये५न्दा५उ५। म२रु२त्वातायि। प२वस्वामा४२ु। धु२म२त्तमः। अ२र्क्क२स्यायो४२ुनि२माऽ२३। साऽ२ुदा३२३४अ५हो५वा५। इ२षोवृधे२ऽऽ॥ १३॥

२. आ३२३४यि४न्द्रा५। या३२३४यि४न्दो५। म२रूत्वते२३। पा३२३४। वा५। स्वा३२३४मा५। धु२मात्तमा२३ः। आ३२३४र्क्का५। स्या३२३४यो५। नि२मास२दा३२३४५ म्५॥ १४॥

३. इ२न्द्रा२यायिन्दोऽ२३। हा। अ२३हो३वा२। म२रु२त्वातेऽ२३। हा। अ२३हो३वाप२वा२स्वामाऽ२३। हा। अ२३। हो३वा२। धु२म२त्तामाऽ२३ः। हा। अ२३हो३वा२। अ२र्क्क२स्यायोऽ२३। हा। अ२३हो३वा२। नि२मा२सादाऽ२३म्३। हा। अ२३हो३वा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ १५॥

४. इं४द्रा५ये५न्दो५ । ए४ऽ५ । म४रू४ । त्वतायि । पवस्वमधु२-
मत्ताऽ२३ मा२: । हु२वायि । हो३ँवा२ । अ२क्कार्स्याऽ२३योर२ ।
हु२वायि । हो३ँवा२ । नि२मास्माऽ२३दा२३४ऽ३म्३ । ओऽ२३
४५यि५ । डा५ ॥ १६ ॥

५. इं५द्रा५ये५न्दो५हा५उ५ । म२ । रू । त्वते२३हा२उ२ । पवस्व२
म२धु२ । मा । त्तमाऽ२३हा२उ२ । अ२ । का । स्ययोऽ२३ ।
हा२३यि३ । निमाऽ२३ । हो३२३४वा५ । सा४ऽ५दो५६हा५
यि५ ॥ १७ ॥

६. इं५द्रा५यें५दो४वा५ । ओं४वा५ । म२रु२त्वतोवा२ । ओंवा२ ।
प२व२ स्वमोवा२ । ओवा२ । धु२म२त्तमोवा२ । ओवा२३ ।
अ४क्कर्४हा५उ५ । स्य४यो४हा५उ५ । नि२मोवा२३ओंऽ२३४
वा५ । सा४ऽ५दो५६ हा५यि५ ॥ १८ ॥

७. इं४द्रा५ये५न्दो५म५रु४त्व५ते५ । ओं४हा४यि४ । पवस्व२मधु२
म२त्त२म२: । ओं३ँहा२३४ऽ३ओ२३४ । हा५ । आर्क्कस्यायोऽ
२३ । नाऽ२उयि२उमा३२३४ औ५हो५वा५ । उ२प्र२ । सा३२३४
दा५म्५ ॥ १९ ॥

८. इं५द्रा५यें५दो५म५रु५त्वा५६ता५यि५ । पवस्व२म२ । धु२
मात्ता२ऽमाऽ२३४: । अ५क्कं५स्य५यो५नि५मा५६हा५उ५ ।
सा४ऽ५दो५६हा५यि५ ॥ २० ॥

ऋषि: —जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः —गायत्री ॥ स्वरः —षड्जः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ १ २
४७३. असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः । श्येनो न योनिमासदत् ॥

१. आ४सा५। वियꣳशु२र्म्मा२३ऽउवाऽ२३। दा३२३४या५। आ४प्सू५ दा४क्षा५ः। गि२रा२३ऽउवाये२३। ष्ठा३२३४५ः। श्ये२नोनाऽ२३ यो२। नि२मा२३ऽउवाऽ२३। सा३२३४-दा५त्॥ २१॥

२. अ४सा५वि५या४। शूर्म्मदा४२। य२। आप्सुदाक्षा४२ः। गायिरिष्ठा२ः। श्यायिनो२ऽनायोऽ२३। नि२मोऽ२३४वा५। सा४ऽ५दो५६ हा५यि५॥ २२॥

३. अ५सा५। वि३या२ओ३२३४वा५। शूर्म्मदाया२। ओ३२३४ वा५। आप्सा२ओ३२३४वा५। दक्षोगिरायिष्ठा २। ओ३२३४ वा५। श्ये२नोनयोनिमास२दा३२३४५त्५॥ २३॥

४. अ५सा५। वि३यौ२वा२ओ३२३४वा५। शु२र्म्मदायौ२। वा२ ओ३२३४वा५। अ५प्सु५। द३क्षौ२वा२ओ३२३४वा५। गिरायि। ष्ठौ२वा२ओ३२३४वा५। श्ये५न५ः। न३यौ२वा२ ओं३२३४वा५। निमा। सा। दो२वा२। ओं३२३४वा५। हो४ऽ५यि५डा५॥ २४॥

५. अ४सा५। व्यु५हु४वा४हा५यि५। अꣳ२शुर्म्मदायाऽप्सुदक्षौ-गिरिष्ठ्र उहुवाऽ२३होयि। श्याऽ२३यि३नो२३। नाऽ२यो३२३४ औ५हो५वा५। नि२मास२दा३२३४त्५॥ २५॥

६. अ४सा५व्य५ꣳ५शु४ः। अ५हो४वा४हा५यि५। मदाऽ२३या२। आप्सुद२क्षो२गि२रि२ष्ठ्र२ः। श्यायिनोना२३यो२३। नाऽ२युयि२ मा३२३४औ५हो५वा५। उ२प२। सा३२३४दा५त्५॥ २६॥

७.　इं३हा२३ऽ२३४। इ४हा४। सा५व्य५ऽ५शु४र्म्म४दा५य५। इ४हा४।अ२प्सुदक्षोगिरिष्ठा२३४५ः।ई३२३४हा५।श्ये२नोन-योऽ२ुनि३मा२३४५। ई३२३४हा५। आऽ२ुस३दा२३४५-त्५ई३२३४ हा५॥ २७॥

८.　अ३सा३२३४।वि४य५ऽशु५ः।म३दा३२३४या५६।हा५उ५। आ२प्सू२ुदा३२३४क्षा५ः। गि२रायिष्ठाऽ२३४हा५यि५। श्यायिनोना२३यो२३। नायिमाऽ२३हा२३४ऽ३यि३। साऽ२ ३४दो५६हा५यि५॥ २८॥

ऋषिः—दृढच्युत आगस्त्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

४७४.पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥

१.　प४व५स्व५दौ५। हौ४हो४वा४हा५यि५। क्षासा२ध२र्ना३ः। औ२३हो२३४यि४। औ४हो५। वा३हा२यि२। दे२वेभ्य२ ष्पायि। त२ये३ह२रा३ँयि३। अ२३हो२३४यि४। अ४हो५। वा३हा२यि२। म२रुद्भ्यो२वा३ँ। अ२३हो२३४यि४। अ४ हो५।वा३हा२३यि३।याऽ२ुवा३२३४अ५हो५वा५।मा३२३४ दा५ः॥ २९॥

२.　प४व५स्व५द५क्ष५सा४ध५न५ः।ओ५६वा५।दे२वेभ्यष्पीत-या४२ु ओयि।ह२रा४२ुयि२।म२रुद्भ्यो२वा४२ु।ओऽ२३। य४वो४वा५।मा४ऽ५दो५६हा५यि५॥ ३०॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

४७५.परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥

१. पा४री५। स्वा२नो२गि२रि२ष्ठा२ः। प२वाऽ२ुयि२ुत्रे३२३४ सो५। मो२अ२क्षारा४२ुत्२। मदायिषूसा२३। ई३ँया२३। र्व्वं२धोऽ२३४वा५।आ४ऽ५सो५६हा५यि५॥ ३१॥

२. प४र्ये४पा४री५।स्वा२नो२गि२रि२ष्ठा२ः।प२वाऽ२ुयि२ुत्रे३२ ३४सो५। मो२अ२क्षारा४२ुत्२। मदायिषूसा२३हा२३। र्व्वाऽ२ुधा३२३४ अ५हो५वा५।ए२३।असी३२३४५॥ ३२॥

३. पा३ऽ५रि५।स्वा५नो४ऽ३गा२३यि३रि४ष्ठा५ः।प२वित्रे२सो। मो२अ३क्ष२रात्।प२वित्रे२।सोमोऽ२३।क्षा४रा५त्५।ओयि। मदौ२। वा२३४ऽ३अ२३४वा५। षु५वा४। स२र्व्वं२धाः। असाये२३।माऽ२ुदा३२३४अ५हो५वा५।षू२३।षु२स२र्व्वं२ धाअसी३२३४५॥ ३३॥

४. अँ३हो२यि२।इह२हा३ह२हायि।अऽ२ुहो३२३४वा५।प२रा२ु यि२ुस्वा३२३४नो५। गि२रा३२३४यि४ष्ठा५ः। पा२वि२ु- त्रे३२३४सो५। मो२अ२ुक्षा३२३४रा५त्५। म२दा२ुयि२ु षू३२३४सा५।र्व्वं२धा२ुआ३२३४सी५।अ३ँहो२यि२।इह२ हा३ह२हायि। अऽ२ुहो३२३४५वा५६५६। ए२३। उपा३२३ ४५॥ ३४॥

५. प४।यें४स्वा४ना५ः।गा४२ुयि२।रि२ष्ठा४२ुया।हा३हा२यि२। उवाऽ२३होयि।पावित्रेसो२।मोअँक्षाराऽ२ुत्२ु।हा३हा२यि२। उवाऽ२३होयि।मदाऽ२ुयि२ुषु३सा२ु।हा३हा२यि२ु।उवाऽ२३ हो।र्व्वं२धोऽ२३४वा५।आ४ऽ५सो५६हा५ यि५॥ ३५॥

६. प५र्यौ५हो५वा५हा५यि५ । स्वा४ना५ः । गा४रुयि२ । रि२ष्ठा४रु या । ओ३२३४ । हा३होरुयिरु । हा३हा२ । होवा२ । २ । पावित्रे सो२ । मोअँक्षाराऽरुतारु । ओ३२३४ । हा३होरुयिरु । हा३हा२ । होवा२ । २ । मदाऽरुयिरुषु३सारु । ओ३२३४हा३हो३होरुयिरु । हा३हा२ । होवा२ । होवा२३ । र्व्व२धोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५ सो५६हा५यि५ ॥ ३६ ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

४७६. परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः । स्वानैर्याति कविक्रतुः ॥

१. प५रि५प्रि५या५दि५व५ष्का४वी५ः । वयाꣳसिनप्त्योऋहितः । स्वानैर्याऽ२३ । ती२ । आया४रु । इया४रुइइँयारु । क३वि३क्र२ तोऽरु । या३२३४औ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ ३७ ॥

२. प४रि४प्रि४या४ऽ५दि५व५ष्क४वा४यि४ः । वयारँहो२ऽवाꣳ सि२नप्त्योवोऋहि२तः । स्वानैर्याऽ२३ती२ । हु२वा । होवा२ । २ । हुवा४रुयि२ । इइँयारु । क३वि३क्र२तोऽरु । या३२३४अ५ हो५वा५ । ई२३याऽ२३४५म्५ ॥ ३८ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७७. प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् । सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥

१. प्र२सोरुमा३२३४सा५ः । म२द२च्युत२ः । औऽ२३हो३वा२३ । श्रवाऽरुसा३२३४यि४ना५ः । ओयिमैघोना४रुम्२ । सुताऽ २३ः । वाऽरुयिरुदा३२३४अ५हो५वा५ । थे२अ२क्र२मू३२३-४५ः ॥ १ ॥

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
४७८.प्र सोमासो विपश्चितोऽ पो नयन्त ऊर्मयः । वनानि महिषाइव ॥

१. प्र५सो५मा५सा५ः । वायिपश्चि२त२ः । आपो२ऽनाया४२ु । ताऊ२र्म्म२य२ः । वाना२ऽनिमा४२ु । आऔ२३हो२ । हिषा२ इ२व२ । इडाऽ२३ भा२३४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४७९.पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने ।
२ ३ २ ३ १ २
विश्वा अप द्विषो जहि ॥

१. प४व४स्वे४न्दो४ऽ५वृ५षा५सु४ता४ः । कृ२धीनोयशसोजनाये २३ । वा२यि२श्वा२ुआ३२३४पा५ । द्वाऽ२ुयि२ुषा३२३४औ५ हो५वा५ । जा३२३४ही५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
४८०.वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे । पवमान स्वर्दृशम् ॥

१. वृ४षा५हि५या४ । सि२भानूऽ२३ना२ । द्यु२मंतंत्वाहावा२ऽ माहाऽ२३४यि४ । प३वा२३ । मानसु२वोऽ२३४वा५ । द्रे३२३४ शा५म्५ ॥ ४ ॥

२. वृ४षा४हि४या४ऽ५सि५भा५नु४ना४द्यु२मंतंर्त्वा२हवॉ२म२हे२ । हा४२ुयि२ । ऊ४२ु । हो३ँवा२ । पवमा२न२सु२व२र्दृश२म्२ । हा४२ुयि२ । ऊ४२ु । हो३ँवा२ु । हु३वो२३४५यि५ । डा५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
४८१.इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः । सृजदश्वं रथीरिव ॥

१. इं३दू२रौ३होऽवाऽहा५यि५ । पा४वी५ । ष्ट२चा२यि२ । त२-
नो३२३४हा५ । हा२होयि । हो३हा२ । प्रि२याष्क२वी२ ।
नांमाति२रो३२३४हा५ । हा२होयि । हो३हा२ । सृजा२त्२ ।
अ२श्वो३२३४हा५ । हा२होयि । हो३हा२३ । रा२था३२३४
औ५हो५वा५ई३२३४ वा५ ॥ ६ ॥

२. इं४दु५ष्प५वि५ष्ट५चे४त५न५ष्प्रि५य४ष्क५वा४यि४ ।
हुं३म्३हुं२ । ना२म्मा३२३४ती५: । सृजादा२३श्वा२म्२ । हूँ३ ।
हुं२३ । रा२था३२३४ औ५हो५वा५ । ई३२३४वा५ ॥ ७ ॥

३. इं४दु५ष्प५वि५ष्ट५चे४त५न५ष्प्रि५य४ष्क५वी५ना४म्म५
ति४सृ५ । जा४५द५श्वा४म्४ । ओवा२३ । २ । रा२था३२
३४औ५हो५वा५ । ई३२३४वा५ ॥ ८ ॥

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८२. असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ॥

१. अ५सृ५क्षा२३ता४प्र५वा४जि४ना५: । गाव्या४२सोमा४२ ।
सो२ अ२ । श्वया । शू२क्रा४२सोवी४२ । र२या४२शव२: ।
ओं२३४५यि५ । डा५ ॥ ९ ॥

२. अ५सृ५क्ष५ता५प्रा५६वा५जि५ना५: । ग२व्यासोमासोअश्वया
२३होयि । शु२क्रासोवा२३यि । र२या२३ । शा२वा३२३४
अ५हो५ वा५ । ग्वा३२३४भी५: ॥ १० ॥

३. अ३सृ४क्ष४त४प्र३वा४जि४न५: । ए२३ । ग४व्या४सो५मा५ ।
सो२३ आश्वा२३या२ । शुक्रा२सो३२३४वी५ । र२यो२३४
वा५ । शा४५वो५६हा५यि५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
४८३.पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा ॥

१. पा४व५स्वा४दे५। व३या२३। वाऽ२या३२३४अ५हो५वा५ यू३२३४षा५क्५। आ४यिं४द्रं५ग४छा५। तु३ता२३यि३। तूऽ२ता३२३४अ५हो५वा५। मा३२३४दा५ः। वा२यू४२ः२ हो२ऽयि। आऽ२३रो२। ह३धा२३। हाऽ२धा३२३४अ५हो५ वा५। ओलिमा३२३४णा५ ॥ १२ ॥

२. प३व४स्व५दे५व५ऐ५। ही२ऐ२ही३२३४या५। आयुषागै४२ हीऐ४२ही३ँया२। इंद्रंगच्छतुतेमदऐ४२हीऐ४२ही३या२। वायू- मारो२३ऽ२३। ह२धोऽ२३४वा५। मा४ऽ५णो५६हा५ यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २ ३२ ३२
४८४.पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥

१. पा४वा५। मानो। अ३जी२जा३२३४ना५त्५। दि२वश्चित्राम्। नतन्यतूम्। ज्योति२र्वै२श्वाऽ२३। नाऽ२रा३२३४अ५हो५वा५। ब्रे३२३४हा५त्५ ॥ १४ ॥

२. प५व५मा५ना५ः। अजायिजा२३ना२त्२। दि२वश्चि२त्राऽ२ ३ः३हा२३यि३। नात२न्या३२३४तू५म्५। ज्यो३२३४ती५ः। वा३२३४ यि४श्वा५। न४रो४वा५। ब्रे४ऽ५हो५६हा५ यि५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ १ २ ३ १ २
४८५. परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया॥

१. पा४री५। स्वा२ना२स२इ२न्द२वो२म२दा२य२ब२। हणाऽ२३ गि३ रा२३४। म३धो२३४अ३ऋ३षा२३। ति२धोऽ२३४वा५। रा४ऽ५ यो५६हा५यि५॥ १६॥

२. पा४री५। स्वा२नासइन्दवाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२३ईया। मदायबऋहणागिराउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२३२ईया। मधोअर्षंतिधारयाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२३२ईयाऽ२३। वा३२३४ औ५हो५वा५। ऊ३२३४ पा५॥ १७॥

३. पा३ऽ५रि५। स्वा५ना४ऽ३सा२३इं४द४वा५ः। मदा३ँय२ब२ ऋ२हणा३ँगि२राऽ। मधोऽ२३ऋ३षा२। ऊर्म्मिरिवा४२३। ई२ॅया२३। ति३धा३ र२या। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ १८॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २
४८६. परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः।
३ १ २र ३ १ २
कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम्॥

१. प५रि५प्रा५सी५। ष्य२द२त्कावी४२३ः। सिंधोरूर्म्मावार्धि- श्रिता४२३ः। कारूऽ२३म्३। बाऽ२३यि२३भ्रा३२३४औ५हो५ वा५। पु२रु२ स्पृहा३२३४५म्॥ १९॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
४८७.उपो षु जातमप्सुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः ॥

१. ई२हा४२ुइ२हा। उपोषुजातमा४२ुप्तु२राम्। इहा। इ२हा४२ु इ२हा। गोभिर्भङ्गम्परा४२ुयि२ष्कृताम्। इहा। इ२हा४२ुइ२हा। इंदुन्देवाअया४२ुसि२षूः। इहा२ऽऽ ॥ २० ॥

२. ऊपोषुजातमा४२ुप्सु२राम्। उपा। गोभाऽ२३यि३ऋ३होयि। भंगम्परा४२ुयि२ष्कृ२ताम्। उपा। इन्दूऽ२३ः३होयि। देवा-अया४२ु। सिषु२रा२३ऽउवाऽ२३। ऊ२३ऽ२३४ याप् ॥ २१ ॥

३. उ४पो५षौ४। हो४यि४जा४ता५म्५। आप्सू[1]२३रा२म्२। औँ३हो२३ वा२३। गोभि२र्भा३२३४ङ्गा५म्५। ओंयिपारिष्कृ-ता४२ुम्२। इन्दूऽ२३म्२३दे३वा२३४औ५हो५वा५। अ२या२-सि२षू३२३४५ः ॥ २२ ॥

ऋषिः—बृहन्मतिराङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
४८८.पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥

१. पु५ना५नो५आ५। क्रा२मी२ुदा३२३४भी५। विश्वाऽ२ुमा-३२३४र्द्धा५ः। वी२च२ऋ२ु षा३२३४णी५ः। शुम्भाऽ२ुन्ता३२ ३४यि४वी५। प्राऽ२ुन्धा३२३४अ५हो५वा५। ती३२३४-भी५ः ॥ २३ ॥

१. अत्र मूलगानग्रन्थे 'द्यू' इति पाठः। —सम्पादकः

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८९.आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः ।
इन्दुरिन्द्राय धीयते ॥

१. आ४वि५श५न्का५ला५६श५ॅ५सु५ता५ः । वायिश्वा२अर्क्षर
न्२ । अ२भायिश्राया२३ः । ओ३ॅहा२३ । ओवा२ । ओ३२३४
हा५यि५ । इन्दूऽ२३ः । आऽ२ुयिं२ुद्रा३२३४औ५हो५वा५ । य२
धी२य२ते३२३४५ ॥ २४ ॥

२. आ४वि४श३न्क४ल४श५म्५ । सु३ता२३ः । वा४यि४श्वा५ः ।
अर्क्षर२न्२ । अ२भायिश्राया२ । अ३हौ३हो३२३४वा५ ।
अहौ२हो२ऽयि । इंदूरा२ऽयिंद्रा४२ । य२ । धीयाऽ२ुता३२३४
अ५हो५ वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—प्रभूवसुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९०.असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः ।
कार्ष्मन् वाजी न्यक्रमीत् ॥

१. अ५स५र्जि५रा५ । थि२ । योयाऽ२३था२ । प२वित्रे२ । चा ।
मुवोऽ२ुस्सू३२३४ता५ः । का२र्ष्मन्वाऽ२३जी२ । नियक्र२
मायित् । अऽ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५डा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

४९१.प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥

१. प्र४य४द्धा५उ५। गा२वो२ना२३भूर्णा२ऽया२३४ः। त्वे३षा२३ः।आया२सो२अ२क्र२मू२ः।घ्नं२ताष्का२३र्ष्णा२म्२। अ२पात्वच२म्२। अ२होऽ२हा३२३४अ५हो५वा५। ऊ२३ऽ२३४पा५॥ २७॥

२. प्र२यद्गा२३वो४न४भू५र्ण५या५ः। त्वायिषाअ२या२। सोअँक्रमूऽ२३ः।घ्नाऽ२३४न्तो४हा५यि५।काऽ२ष्र्णा३२३४अ५हो५वा५।अप२त्वचा३२३४५म्५॥ २८॥

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४९२.अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम्॥

१. अ५प५घ्नौ४।हो४यि४पा४वा५।सायिमा२ऽर्द्धा४२ः।क्रातु-वि२त्सो२म२मात्सा२ऽरा४२ः। नुदाऽ२३। स्वाऽ२दा३२३४अ५हो५वा५।व२यु२ञ्जनाऽ२३४५म्५॥ २९॥

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४९३.अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः॥

१. ए५अ५या५प५वा५।स्व२धा४२।रया२३ऽउवाऽ२३।ऊ२३४पा५। ययासूर्यमरो४२। चया२३ऽउवाऽ२३। ऊ२३४पा५। हिन्वानोमानुषाऽ२३यि३ऋ३होयि।आप२आ२३ऽउवाऽ२३। ऊ२३ऽ२३४पा५॥ ३०॥

ऋषिः—अमहीयुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४९४.स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। वव्रिवांसं महीरपः॥

१. स३हो२३४ऽ३यि३ । प२व३स्व५ । यआ४ऽ३विर२था ऽ । इं२द्रं वृत्रा२३ । याहं२ता३२३४वे५ । ओवा२३ओ४वा५ । व२त्रिवाऽ २३ऽ३सा२म् । माही२र२पा । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ डा५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९५. अया वीती परि स्त्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन्नवतीर्नव ॥

१. अ५या५वी५ती५ । पा२रिस्त्रवा । य२स्त२इंदाउ । मा२दायि षुवा । अवाहा२३न्ना२३ । व२तोऽ२३४वा५ । ना४ऽ५वो५६हा५ यि५ ॥ ३२ ॥

२. अ२यावीती२ । अ३होवा२ । अ३हो२३४यि४ । अ२ । होऽ२ । वा३२३४ । अ५हो५वा५ । परिस्त्र२व२ । य२स्तइन्दा२ । अ३ होवा२ । अ३हो२३४यि४ । अ२ । होऽ२ । वा३२३४ । अ५हो५ वा५ । मदे२ँषु२वा । अवाहन्ना२ । अ३होवा२ । अ३हो२३४ यि४ । अ२ । होऽ२ । वा३२३४ । अ५हो५वा५ । व२तीर्न्नवाऽ२ ३४५ ॥ ३३ ॥

३. अ४या३ऽ५वी५ । ता४ऽ३यि३पा२३रि४स्त्र४वा५ । यास्तइ२ दो२ । म२दायिषू२ऽवा४२ । अवाहा२३न्ना२ । व३ती३र्न्न२वा । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५डा५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—उचथ्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९६. परि द्युक्षं सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा । स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥

१. प५रि५द्यु५क्षा५म्५ । ओयि । सनद्रायी४२म्२ । ओयि । भरद्वाजा४२म्२ । ओयि । नोअन्धासाऽ२३४ । स्वा३नो२३४ अ३ऋ३षा२३ । प४वो४वा५ । त्रा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ ३५ ॥

[इति] त्रयोदशः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

४९७.अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः । सं सूर्येण दिद्युते ॥

१. अ२चि२क्र२दा२३त्३ । आःचिक्रदा२३त्३ । अ४चि४क्र४-दा४ऽ५दे५ । वृ२षा२ह२रा२३यि३ । वाऋषा२३यि३ । वृ४षा४ ह४रा४ऽ५एयाम२हा२न्मि२त्रा२३ः । माहान्मित्रा२३ । म४हा४ न्मि४त्रा४ऽ५ए५ । नु२द२ऋ२श२ता२३ः । नादऋ-शता२३ः । नु४द४ऋ४श४ताः४ऽ५ए५ । सं२सू२रि२या२३यि३ । साः सूरिया२३यि३ । सं४सू४रि४ या४ऽ५ए५ । ए५ । ण२दि२ द्यु२ता२३ । यि३ । णादिद्युता२३यि३ । ण४दा४ऽ५यि५ द्यु५ ता५उ५ । वा५ ॥ १ ॥

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

४९८.आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥

१. आ५ते५द५क्षा५म्५ । म२योभू२३वा२म्२ । वह्नि२म२ । द्या । वृँणीऽ२मा३२३४हा५यि५ । पान्तमा२३ । ई३ँया२ । पु२रूऽ२३ । स्प्रेऽ२हा३२३४अ५हो५वा५ । ऊ२३ऽ२३४ पा५ ॥ २ ॥

२. आ२ते२दा३२३४क्षा५म्५ । मा२यो२भू३२३४वा५म् । व३-ह्नि४म४द्या३वृ४णी५ । म३हो३२३४हा५यि५ । पान्ता२३मा२३ । ई३ँया२३ । पूऽ२रू३२३४अ५हो५वा५ । स्प्रे३२३४हा५ म्५ ॥ ३ ॥

३. आ३ते४द३क्षं४म५य५ः। भु३वो३२३४हा५यि५। व३ह्नि४म४ द्या३वृ४णी५। म३हो३२३४हा५यि५। पान्ता२ऽमा४२। पुरुस्पृ२ह२म्२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि। डा५॥४॥

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

४९९.अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे॥

१. अ२ध्वर्योऽ२३४आ५। द्रि२भायिस्सू२३ता२३म्३। सोमाऽ२ म्२पा३२३४वी५। त्राआ२ऽनाया४२। पुनाऽ२३। ही३द्रा२३४ अ५हो५वा५। य२पात२वे३२३४॥५॥

२. अ४ध्व५र्यौ५। हो४अ४द्री५। भि२स्सु२तम्। अ३हो२३वा२३। सोमाऽ२म्२पा३२३४वी५। ओंत्राआ२ऽनाया४२। पुनाऽ२३। हाऽ२यि२न्द्रा३२३४अ५हो५वा५। य२पात२वे३२३४५॥६॥

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ १ २

५००.तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत् स मन्दी धावति॥

१. त५र५त्स५मा५। दी२धावा२ऽताऽ२३यि३। धाराऽ२सू३२३४-ता५। स्य२आऽ२३। धाऽ२सा३२३४अ५हो५वा५। तरत्स मन्दीधा२व२ ती३२३४५॥७॥

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र

५०१.आ पवस्व सहस्त्रिणं रयिं सोम सुवीर्य्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय॥

१. आ५प५व५स्वा५। स२ह२स्त्रिणाम्। हुवायि। हुवाऽ२३हो। र२यिः२सोमा। सु२वी२रियाम्। हुवायि। हुवाऽ२३होयि। अ२स्मे२श्रवा। सि२धा२रया। हुवायि। हुवाऽ२३होऽ२। वा३२३४अ५हो५वा५।ऊ३२३४पा५॥ ८॥

ऋषिः—असितः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

५०२.अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः। रुचे जनन्त सूर्यम्॥

१. अ५नु५प्र५त्ना५स५आ५या५द्वा५ः। प२दन्नवीयोअक्रमूः। रुचायिजना।ता२३सू२।हुम्माये२३।री३२३४या५म्५॥ ९॥

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ २ ३ २ ३ २ ३ २

५०३.अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन् योनौ वनेष्वा॥

१. अ२ऋ२षा।इहा।सोमद्युमा४२त्त२मा।इहा।अ२भायि।इहा। द्रोणानिरो४२रु२वा। इहा। सी२दा। इहा। योनौवना४२-यि२षु२वा।इहा२ऽऽ॥ १०॥

२. अ४ऋ४षा४हा५उ५।सोमद्युमत्तमो।भिद्रोऽ२३णा२।नि२रा औ२३हो२।रूवाऽ२३त्३।सी३दा२उ२वा२।योनौवा२३ने२। हुम्माये२३।षू३२३४वा५॥ ११॥

३. अ३ऋ३षा४सो५म५द्यु५म५। त३मा२ः। अ३ऋ३षा४सो५ मा५।द्युमत्त२म२ः।अभि२द्रो२णाऽ२३हा२।नि२रोरुव२त्२। सायिदन्यो२नाऽ२३उ३हा२यि२।व२नायिषूऽ२३वा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५।डा५॥ १२॥

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

५०४.वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥

१. वृ५षा५सो५मा५। द्यु२मा॑४२ुआसा४२ुयि२। वृषादेवा२३
हा२३यि३।वाऋष२ुव्रा३२३४ता५ः।वृषाधर्म्मा२३।ई३ँया२।
णायिदध्रि२षे२। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५।
डा५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

५०५.इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः।इन्दो रुचाभि गा इहि॥

१. इ५षे५प५वा५।स्व२धा२र२यौ२हो२वा२३हा२३४।अ५हो५
वा५। मृ२ज्यमा२ँनो२म२नी२षिभि२ुः। इं३। दो२ुरु३चा५।
अ२भि२गौ२हो२वा२३हा२३४। अ५हो५वा५। उपू। इ२
ही३२३४५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—असितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०६.मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः। अव्या वारेभिरस्मयुः ॥

१. म५न्द्र५या५सो५।म२धारया।वृषापाऽ२३वा२।स्व२दायिवा
ऽ२३यू२ः।अव्याऽ२३ः।वाऽ२ुरा३२३४अ५हो५वा५।भिर२२ु
स्म३यू२ऽः ॥ १५ ॥

ऋषिः—कविः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०७.अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्नभ्यवर्धथाः। मन्दान इद् वृषायसे ॥

१. अ५या४ऽ३सो२३म४सु४कृ५त्य५या५ । म२हान्त्सन्ना । भ्यँवाऽ रुर्द्धा३२३४था५ः । मान्दाऽ२न२आये२३त्३ । वृ३षा२३या४ऽ५ सा५६५६यि६ ॥ १६ ॥

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०८. अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति । हिन्वान आप्यं बृहत् ॥

१. आ२ु । अ३हौ४होऽ४वा४हा५यि५ । अ५य५म्वि५चा५ । ष२णा यित्रहायिता२ु । अ३हौ४हो४वा४हा५यि५ । प५व५मा५ना५ः । स२चायितातारु । अ३हौ४हो४वा४हा५यि५ । हि५न्वा५न५ आ५ । पि२यौ३हौ२३ । ह४वो४वा५ । ब्रे४ऽ५हो५६हा५ यि५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—अयास्य आङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०९. प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि । अभि देवाँ अयास्यः ॥

१. प्र३न४इ५न्दो५ऐ५ । ही२ऐ२ुही३२३४या५ । म२हेतुनऐ४२ुही- ऐ४२ुहीऽ३या२ । ऊ२र्म्मिन्नबिभ्रदऋषसऐ४२ुहीऐ४२ुहीऽ३या२ । अभाये२३ । दाऽ२ुयि२ुवा३२३४अ५हो५वा५ । अ२यासि२- या३२३४५ः ॥ १८ ॥

२. प्र३न४इ५न्दो५ * । इ२या२३४ऽ३ई२३४या५ । म२हेतुनइया४२ु ई३या२ । ऊ२र्म्मिन्नबिभ्रदऋषसइया४२ुई३या२ । अभाये२३ । दाऽ२ुयि२ुवा३२३४अ५हो५वा५ । ए२३ । अ२यासि२- या३२३४५ः ॥ १९ ॥

* 'न्द्रो' इति मूलगानग्रन्थे पाठः । स तु न मन्त्रानुकूलः । —सम्पादकः

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५१०. अपघ्नन् पवते मृधोऽ प सोमो अराव्णः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

१. होरुई३२३४या५ । २ । इ४या४हा५यि५ । अ२पघ्नाऽ२३न्-पा२३४५ । होरुई३२३४या५ । २ । इ४या४हा५यि५ । व२तायि । माऽरु । र्धा३२३४ । अ५हो५वा५ । अपसोमो२अरा२व्णा२३४५ः । होरुई३२३४या५ । २ । द्र४या४हा५यि५ । ग२छन्नाऽ२३यिं३द्रा२३४५ । होरुई३२३४या५ । २ । इ४या४हा५यि५ । स्य२नायिः । काऽरु । ता३२३४ । अ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ २० ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽ त्रिर्विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः * ॥
देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५११. पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः ॥

१. पु५ना५न५स्सो५ । माऽरुधा३२३४अ५हो५वा५ । रा३२३४या५ । अ२पोवसा२नो२अ२ऋ२ष२सि२ । आरात्ना२३धा२ः । योनायिमा२३र्त्ता२३ । स्याऽरुसा३२३४अ५हो५वा५ । दा३२३४सी५ । उत्सोदे२३वो२३ । हाऽरुयिरुरा३२३४अ५हो५वा५ । ण्या३२३४या५ः ॥ २१ ॥

२. इया४रुइ३ॅया२ । पुनानस्सोऽरु । [1]म४ऽ३धारुरा३४या५ । अ२पोवसानो२अऋषाऽ२३सी२ । आरत्नधायोनिमृतस्य२सीदाऽ२३सीरु । उ३त्सो३दे२वोऽ२३ । हाऽरुयिरुरा३२३४अ५हो५वा५ । ण्या२३ याऽ२३४५ः ॥ २२ ॥

१. अत्र मूलगानग्रन्थे 'मध३' एवं पाठः प्रतीयते । —सम्पादकः

३. पु५ना५न४स्सो५म५धा४र५या४। अ२पोवसा२नो२अ२ ऋ२ष२। स्यो३ँहा२। औँ३हा२। आरत्न२धायोनिमृ२तस्य२ सी२द२। स्यो३ँहा२। औँ३ँहा२। उत्सोदा२ऽयिवा४२ुः। औँ३ँ हा२। २। हि२रण्याऽ२३या२३४ऽ३:। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ २३॥

४. पु४ना४न४स्सो४ऽ५म५धा५र४या४। आपो४२ुवासा४२ु। नो२ अर्षसी। आरा४२ुत्नाधा४२ुः। यो२नि२मार्त्ता४२ु। स्य२सीदसी। ऊत्सो४२ुदायिवा४२ुः। हि२रण्याऽ२३या२३४ऽ३:। ओंऽ२३-४५यि५। डा५॥ २४॥

५. आ४यि४पु५ना४। नास्सोम२ऽ। धारया। आपोवसा२३ऽ। नो२ अऋषसी। आरत्नधा२३ऽः। योनिमृता। स्य२सीदसी। ऊत्सो-देवा२३ऽः। हि२रण्याऽ२३४ऽ३:। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ २५॥

६. पु५ना५न४स्सो५म५धा४र५या५। पो५व५सो४वा५। नोअऋष२-सि२। आरत्न२। धाउवाऽ२३। होवा२३हा२यि२। योनिमृ२-तस्य२सी२द२ सि२। उत्सो२दे२। वाउवाऽ२३। होवा२३हा२ यि२। हि२रण्याऽ२३या२३४ऽ३:। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ २६॥

७. पु५ना५न४स्सो५म५धा४। हो४ऽ५र५या४। अ२पोवसान२ आहो४२ु। षासी४२ु। आरत्नधायोनिमृतस्य२साहो४२ुयि२। दासी४२ु। उत्सा४२ुहो२ऽयि। दाऽ२३यि३वो२३। हि२रोऽ२-३४वा५। ण्या४ऽ५यो५६हा५यि५॥ २७॥

८. पु५ना५न५स्सो५म५धा५हा५उ५हो४वा५ । राया२ुआ३२३४ पो५ । वसाऽ२ु । न३आ२३४५ । षा३२३४सी५ । आरा२३४ । अ३हो४वा५ । त्वधायोनिमृताऽ२ु । स्य३सा२३४५यि५ । दा३२३४सी५ । उत्सा२३४ । औहो४वा५ । दायिवोऽ२ु । हि३रा२३४५ । ण्या३२३४या५ः ॥ २८ ॥

९. पू५ना५न४स्सो५म५धा४र५या४ । अ२पोवसा । नो२३आ ऋषा२३ सी२ । आ२र२त्व२धा२यो२नि२मृ२त२स्या२सी२द२ सा३२३४ऐ५ही५ । उ२त्सोदाऽ२३४यि४वा५ः । हि२रा२३ऽ उवाऽ२३ । ए२३ । ण्य२य३आ२ ॥ २९ ॥

१०. पु४ना४न३स्सो४म४धा३र४या५ । ए२३ । अ२३हो४ऽ५वा५ऽ । आपो२३ । वसाऽ२ु । न३आ२३४५ । षा२३सी२ु४२ । आरत्व२ धाः । योनिमृ२ता । स्यासा२३आ । अ२३हो४ऽ३ । दा३२३४ सी५ । उ२त्साअ२३हो२ । दायिवोऽ२ु । हि३रा२३४५ । ण्या२३ याऽ२३४५ः ॥ ३० ॥

११. पु५ना५न५स्सो५म५धा५र५या५ओ५हा५ओ५हा५६ए५ । अ५हो५अ५हो५६वा५ । अ२पोवसा२नो२अ२ऋ२ष२ । स्यो३ॅहा२ । ओ३ॅहा२३ ए२ । औ३ॅहो२यि२ । अ३ॅहो२३वा२ । आरत्व२धायोनिमृ२ तस्य२सी२द२ । स्यौँ३हा२ । ओ३ॅहा२३ ए२ । अ३हो२यि२ । अ३हो२३वा२ । उत्सोदा२ऽयिवा४२ुः । ओ३ॅहा२ । ओ३ॅहा२३ए२ । अ३ॅहो२यि२ । अ३ॅहो२३वा२ । हि२र । ण्याऽ२ुया३२३४अ५हो५वा५ । प२दो२विसा३२३ ४५ः ॥ ३१ ॥

१२. ओं४२ुहो२ऽ। वाओवा२। २। ओ४२ुहो२ऽ। वाओवा२३। ओऽ२ुवा३२३४अ५हो५वा५। पु२ना२नस्सो२म२धारया२ पोवसा२नो२ अ२क्र२ष२सि२। आरत्न२धायोनिमृ२तस्य२सी२ द२सि२। उत्सो२ दे२वाः। ओं४२ुहो२ऽ। वाओवा२। २। ओ४२ुहो३ऽ। वाओवा२३। अऽ२ुवा३२३४अ५हो५वा५। ए२३। हि२र२ण्यया२ऽ३४५ः॥ ३२॥

१३. ओ२३। हो२ऽ। वाओवा२३। ओऽ२ुवा३२३४अ५हो५वा५। पु२ना२नस्सो२म२धारया। पोवसा२नो२अ२क्र२ष२सि२। आरत्न२धायोनिमृ२तस्य२सी२द२। स्यो२३। हो२ऽ। वाओवा२३। ओऽ२ु वा३२३४अ५हो५वा५। उत्सो२दे२वोहि२ र२ण्य२य२ः। इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ ३३॥

१४. हा२। वो२३हा२। वो२३। हा२३। हा२ु। ओ३२३४वा५। हा२यि२। पू२ना२ुना३२३४स्सो५। मा२धा२ुरा३२३४या५। आ२पो२ुवा३२३४सा५। नो२ुअ२क्र२षा३२३४सी५। आ२ुर२त्ना३२३४धा५ः। यो२नी२ुमा३२३४र्त्ता५। स्या२सी२ु दा३२३४सी५। उ२त्सो२ुदा३२३४यि४ वो५। हा२यि२र२ु ण्या३२३४या५ः। हा२। वो२३हा२। वो२३ हा२३। हा२ु। ओं३२३४वा५। हा२३४। अ५हो५वा५। ए२३। अति२विश्वा२ नि२दु२रि२तात२रे२मा३२३४५॥ ३४॥

१५. पु२ना२न२स्सो२म्मा२३धाराऽ२३४या५। आपोवसानोअक्रष- स्यारत्नधायोनिमृतस्यसाऽ२ुयि२ुद३सा२यि२। ओहा२३उ३ वा२। उत्सोदेवोहिराऽ२३हा२यि२। ओहा२३उ३वा२। ण्य२या। अ२३हो४वा५। हौ४ऽ५यि५डा५॥ ३५॥

१६. पुइना२३ऽ। ना२३स्सो४। म५। धा२ुरा३२३४या५। आपो२३। वसाऽ२ु। न३आ२३४५। षा३२३४सी५। आ२रात्न२धाः। यो२। निमृताऽ२ु। स्य३सा२३४५यि५। दा३२३४सी५। उ२त्सा४२ुः। दायिवोऽ२ु। हि३रा२३४५। ण्या३२३४ या५ः॥ ३६॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ २
५१२. परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः।
३ १ २र ३ २ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वा३न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः॥ २॥

१. प५री५तो५षी५। च२ता२३ऽउवाऽ२३। सू३२३४ता५म्५। सोमो२ॅ यउत्त२मं२ह२वीऽऽः। सो५मो५य५उ५। त२मा२३ऽ उवाऽ२३। हा३२३४वी५ः। द२ध२न्वा२ङ्योनर्यो२ॅप्सुवंत२रा। द५ध५ न्वा५ङ्या५ः। नर्यो२ॅ। आ। प्सु२वा२३ऽउवाऽ२३। ता३२३४रा५। सु२षावसोममद्रिभी३२३४ः। सु५षा५व५सो५। म२मा२३ऽ उवाऽ२३। द्रा३२३४यि४भीः॥ १॥

२. प५री५तो५षी५। च२तासू२३ता२म्२। अँ३हो२३वा२। २। ई३ॅया२। ई३ॅया२३४। हा५। हा२उ२वा२। सोमो२ॅयउत्त२ मं२ह२वीऽः। सो५मो५य५उ५। त्त२मा२हा२३वी२ः। अ३ॅहो२३वा२। २। ई३ँया२। ई३या२३४। हा५। हा२उ२वा२। द२ध२न्वाङ्योनर्यौ२ॅ प्सुवंत२रा। द५ध५न्वा५ङ्या५ः। नर्यो२ॅ। आ। प्सू२३आन्ता२३रा२। अ३ॅहो२३वा२। २। ई३ॅया२। ई३ॅया२३४। हा५। हा२उ२वा२। सु२षावसोममद्रि भी३२३४ः। सु५षा५व५सो५। म२माद्री२३भा२ यि२।

अ३ँहो२३वा२। २। ई३ँया२। ई३ँया२३४। हा२। हा२उ२
वा२३।ऊ२३ऽ२३४पा५॥ २॥

३. औ५हो५यि५प५री५तो५षी५।च२ता२सु२तम्।औँ३होरुयि२।
अ३हो२यि२। आ३ँ। अ२हो२३वा२। सोमो२ँयउत्त२मꣳह२
विः।औँ३होरुयि२।अ३हो२यि२।आ३ँ।अ२हो२३वा२।द२
ध२न्वाꣳङ्योनर्यो२प्सुवंत२रा।अ३ँहोरुयि२।अ३हो२यि२।
आ३ँ।अ२हो२३वा२।सु२षावसोममद्रिभिः२ः।औँ३होरुयि२।
औ३हो२यि२।आऽ२३४।उ५ हु५वा५६हा५उ५।वा५॥ ३॥

४. प४।यैँ४पा४री५।तो२षिंचतॉ२सु२तम्।आउवाऽ२३।हा२
उ३हा२उ३। हो३ँवा२। सोमो२ँयउत्त२मꣳह२विः। आउवाऽ
२३।हा२उ३हा२उ३हो३ँवा२।द२ध२न्वा२योनर्यो२ँप्सुवन्त२
राउ। वाऽ२३। हा२उ३हा२उ३। हो३ँवा२। सु२षावाऽ२३
सो२३। हा२उ३हा२उ३। हो३ँवा२। म३म२। द्राऽ२३४यि४
भा४यि४[:]।उ५हु५वा५६हा५ उ५।वा५॥ ४॥

५. [१]प५री५तो५षिं५च५ता५सु५त५म्५। ए५। सो२मो२य२
उ२३त्तॉमैꣳ हावि२ः।दा३२३४धा५।हा२यि२।न्वाꣳङ्योनर्यो
अप्सूअँन्तारा२।सू३२३४षा५।हा२यि२।वासोम२मोऽ२३४
वा५।द्रा४ऽ५यि५ भो५६हा५यि५॥ ५॥

६. प५री५तो५षिं५च५ता५सु५त५म्५। ए५। ए५। सो२मो२
य२उ३त्तामैꣳहावि२ः।दा३२३४धा५।हा२३हा२यि२।न्वाꣳ
ङ्योनर्यो अप्सूअँन्तरा२। सू३२३४षा५। हा२३हा२यि२।
वासोम२मोऽ२३४ वा५।द्रा४ऽ५यि५भो५६हा५यि५॥ ६॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'य५' इति पाठः। —सम्पादकः

७. प४री५तो४षिं५च५ता५सु५त४म्४।इ४हा४सोमोयउत्त२मः हाऽ२३वि२ः।इहा२।द२ध२न्वाःङ्योनर्योअप्सु२वन्ताऽ२३ रा२।इहा२।सु२ षावाऽ२३सो२।इहा२।म२माऽ२३।द्राऽ२ यि२भा३२३४औ५हो५ वा५।ई३२३४हा५॥७॥

८. इ४हा४प४री५तो४षिं५च५ता५सु५त४म्४।इ४हा४।सोमोय उत्त२मःहाऽ२३वी२ः।इहा२उ२वा२३।ऊ२३४पा५।द२ध२ न्वाःङ्योनर्योअप्सु२वंताऽ२३रा२।इहा२उ२वा२३।ऊ२३४ पा५। सु२षावाऽ२३सो२। इहा२उ२वा२३। ऊ२३४पा५। म२मद्राऽ२३यि३भी२ः।इहा२उ२वा२३।ऊ२३२३४ पा५॥८॥

९. प४री५तो४षिं५च५ता५सु५ता४म्४।सो२मोय२उऽ।त्त२मः३ ह२वायिः।दाधा२ओ३२३४वा५।ऊ३२३४पा५।न्वाःङ्यो नर्यो अप्सु२वंताऽ२३रा२।सु२षावाऽ२३सो२।मामद्रि२भि२ः। इडाऽ२३ भा२३४ऽ३।ओऽ२३४५यि५।डा५॥९॥

१०. प४री५तो४षिं५च५ता५सु५त४म्४। ओ५६वा५। सोमोरॅ यउत्त२मःह२विः।दधान्वाःङ्यो२३।हा२३हा२यि२।नर्योरॅ प्सुवत२रा।सुषावासो२३।हा२३हा२।मामद्रि२भि२ः।इडाऽ २३भा२३४ऽ३।ओऽ२३४५यि५डा५॥१०॥

११. प४री५तो४षिं५च५।ता४ऽ५सु५ता४म्४।सोमोयउत्तामा४२ऽ २म्२। हावी४२ः। द२ध२न्वाःङ्योनर्योअप्सुवा४२ऽ२। तारा४२। सु२षावाऽ२३सो२३। म२मोऽ२३४वा५। द्रा४ऽ५ यि५भो५६हा५ यि५॥११॥

१२. परीतोषा४रुयि२ । चतासुता४रुम्२ । ऐही४रु । २ । ऐहि२हा४रु यि२ । उवा४रुयि२ । ईऽ३ऽया२ । सोमोयऊ४रु । तमःहवी४रुः । ऐही४रु । २ । ऐही२हा४रुयि२ । उवा४रुयि२ । ईऽ३ऽया२ । दधन्वाःऽयोनर्यो४रु । प्सुवंतरा४रु । ऐही४रु । २ । हा४२यि२ । उवा४रुयि२ । ईऽ३ऽया२ । सुषावसो४रु । ममद्रि[१]भा४रुयि२ । ऐही४रु । २ । ऐही२हा४रुयि२ । उवा४रुयि२ । ईऽ३ऽया२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ १२ ॥

१३. उ३पारुउ३प५ । उ३या२३ऽ । उ३पारुउ३य५ । प२री२तो२ षिंरुच३ तारुसु३तरुम्रु । उ३पारुउ३प५ । उ३पा२३ऽ । उ३पारु उ३प५ । सो२मो२य२उ२त्त३मःरुह३विरुः । उ३पारुउ३प५ । उ३पा२३ऽ । उ३पारुउ३प५ । द२ध२न्वा२ः२ङ्यो२न२ र्यो३ प्सु२वंरुत३रारु । उ३पारुउ३प५ । उ३पा२३ऽ । उ३पारुउ३ प५ । सु२षा२व२सोरुम३मरुद्रि३भिरुः । उ३पारुउ३प५ । उ३पा२ ३ऽ । उ३पा२३ऊ४ऽ५ पा५६५६ । ऊ३२३४ पा५ ॥ १३ ॥

१४. हा५उ५ । २ । हा५उ५वा५ । परीतोषिंच२ता२सु२तम् । उपा३२- ३४५ । हा५उ५३वा५ । परीतोषिंच२ता२सु२तम् । इहा । उपा३२ ३४५ । हा५उ५३वा५ । परीतोषिंच२ता२सु२तम् । श्रवोबृ२हत् । उपा३२३४५ । हा५उ५३वा५ । परीतोषिंच२ता२ सु२तम् । सोमोरॅयउत्त२मःह२विः । द२ध२न्वाःङ्योनर्योरँप्सुवंत२रा । सुषावसो३२३४५ । हा५उ५३वा५ । ए२३ । म२ । मद्रिभी३२ ३४५ः ॥ १४ ॥

---

१. मूलगानपुस्तकेऽत्र 'हि' इतिपाठः, स चाशुद्धः । —सम्पादकः

१५. हा२ुओ३२३४वा५।२।हा२३ओ२३४वा५।हा२उ२वा२। परीतोषिंच२ता२सु२तम्। सोमोरॅयउत्त२मᳲह२विः। द२ध२ न्वाᳲङ्ग्योनर्योरॅप्सुवंत२रा। सुषावसोममा। हा२ुओ३२३४वा५।२। हा२३ओं२३४वा५। हा२उ२वा२३द्रा२३यि३भी२३-४५ः॥ १५॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
५१३. आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया।
२ ३ २ ३ २ ३क २र ३ २ ३ २ ३ १ २
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे॥

१. आ३२३४सो५। म२स्वा२नो३ॅआ। द्रायिभा२ुओ३२३४वा५। तिर रोवारारॅणि२अ२व्यया२३। जाना२ुओ३२३४वा५। नापा२ु ओ३२३४वा५। रिचमुवोरॅर्व्वि२श२द्धरी२३ः। सादा२ु ओं३२३४वा५। वाना२ुओ३२३४वा५। षु४दा४५ध्रि५षा५ यि५। हो४५यि५ डा५॥ १६॥

२. हा५वा५सो५म५स्वा५। नो२अ२ुद्रा३२३४यि४भी५ः। ति२रो२ु वा३२३४रा५। णि२या२३उवा२३। व्या३२३४या५। ज२ नो२ुना३२३४पू५। रा२यि२चा२ुमू३२३४वो५ः। वि२शा२३ उवा२३। हा३२३४री५ः। स२दो२ुवा३२३४ने५। षु२दा२३ उवा२३। ध्री३२३४षे५॥ १७॥

३. आ४सो५म५स्वा५नो४अ४द्रि५भा४यि४ः। ति२रोवाराणि आव्या२या४२ु। जनोनपुरिचामू२वो४२ुः। वि२शाद्धा२-री२ुः। स३दो३व२नायि। षू२ुद३ध्रि२षो२३४५यि५। डा५॥ १८॥

४. आ३सो४म४स्वा४नो३अ३द्रि४भिः५ । ति५रो५वा२३रा४णि५ अ४व्य४या५ । जनोनपुरीचमुवोर्व्वि२शब्द्धरिः । औ४२ु । हुवायि। हो३ऽवा२ । सदोवनेषु२दौ४२ु । हुवायि । हो३ऽवा२ । ध्रि२षा । औ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५डा५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५१४.प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥

१. प्र५सो५म५दा५ । वा२वी२ुता३२३४या५यि५ । सिं२धूर्न्नापा यिप्य२आ२३ऽउवाऽ२३ । णा३२३४सा५ । आं२शो२ुष्या३२३४ या५ । सा२मदायिरो[1]न२जा२३ऽउवाऽ२३ । ग्रे३२३४वी५ः । आ२च्छा२ुको३२३४शा५म्५ । म२धा२३ऽउवाऽ२३ । श्चू३२ ३४ता५म्५ ॥ २० ॥

२. प्र३सो४म५दे५व४वी५ । त३यो३२३४हा५यि५ । सिं३धु२र्न्न३ पि४प्ये५अ५ । ण३सो३२३४हा५यि५ । आं३शा२ुओ३२३४ वा५ । पाया२ुओ३२३४वा५ । सा४म४दि४रो३न४जा५ । ग्रे३२ ३४ । वी५६ुऋ६हा५ यि५ । आच्छा२ुओं३२३४वा५ । कोशा२ु ओ३२३४वा५ । म४धू४ऽ५श्चु५ता५म्५ । हो४ऽ५यि५ डा५ ॥ २१ ॥

३. प्र२सोमाऽ२३दे४व४वी५त५या५यि५सायिंधुर्न्नीपिप्ये अर्णसाः शोष्पयसामदिरोन२जौ३हो२३ । हुम्मा४२ु । ग्रेऽ२३वी२ः । अच्छाकोशाम्म२धौ३हो२३ । हुम्मा४२ु । श्चु२ताम् । औऽ२३ हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २२ ॥

१. 'मदायितरो' इति पाठो मूलगानग्रन्थे । —सम्पादकः

४. प्र३सो४म४देु४व३वी४त५ये५ । सि५न्धु५ः । न३पा२३४औ३
हो४ वा५ । प्ये२अर्णसाऽ२ । हा२३ऽउवाऽ२३ । ऊ२३४पा५ ।
अं३शो२३ष्प४या४ । औ५हो४वा४हा५यि५ । सामदि२रो ।
न२जा२गृवि२ः । हा२३ऽउवा२३ । ऊ२३४पा५ । अ३च्छा२३
को४श४म्४ । औ५हो४वा४हा५यि५म३धू२३श्चू४ऽ५ता५६
५६म्६ । ऊ३२३४५ ॥ २३ ॥

५. प्र५सो५म५दा५यि५वा५६वी५त५या५यि५ । सिं२धूर्न्न२पायि ।
प्ये२अ२र्णसा४२ु । इहा२३ । आं३शो२३ष्पा४या५ । हा२ु
हो३२३४हा५ । सामदि२रो । न२जा२ग्रेऽ२३वी२ः । इहा२३ ।
आच्छा२३को४शा५म्५ । हा२ुहो३२३४हो५ । म३धू२३श्चू४ऽ
५ता५६५६म्६ । हे३२३४५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

५१५. सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् ।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥

१. हाउ४सो४मा५ः । उ२ष्वा२णा२३स्सोत्रे२५भी४२ुः । आधि२-
ष्णुभि२ रवी२ँना२म्२ । आश्वौ३ँहो२ । येवहरितायातायिधा२ऽ
राया४२ु । मंद्राया२३या२३४ । हा५ओ४वा५ । ति२धारया३२-
३४५ ॥ २५ ॥

२. सो५म५ऊ२३ष्वा४ण५स्सो४तृ४भा५यि५ः । आधिष्णु२भि२
र२वी२ना२म्२ । आश्वँये२२३४वा५ । ह२रितायातिधा२ऽ
रा२३या२ । मं२द्रा२ुया३२३४या५ । ता३२३४यि४धा५र२या ।
अ२३हो४वा५हो४ए५यि५ । डा५ ॥ २६ ॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'म४' इत्यस्य स्थाने 'स४' इति पाठोऽनवधानेन लिखितः । —सम्पादकः

३. सो४म५उ५ष्वा५ण४स्सो५तृ४भि५:।प४ऽ५अ४धी४ष्णुभिर२-
रा२३२उवाऽ२३।वी३२३४ना५म्।आऽ२३।श्वा२।ये़वहरि
तायाति२धा२३ऽउवाऽ२३। रा३२३४या५। माऽ२३न्द्रा२।
यायाति२धा२३ऽउवाऽ२३।रा३२३४या५॥ २७॥

४. सो४म५उ५ष्वा५ण४स्सो५तृ४भि५:। ए४ऽ५अ४धी४।
ष्णुभिर२वीरँ।नाम्।आश्वये२व२।हारिताया४२।तायिधार२
या२। मान्द्रयायौ२वा२। ती३२३४धा५। र२या। अ२३हो४
वा५।हो४ऽ५यि५।डा५॥ २८॥

५. सो४म५उ५ष्वा५ण४स्सो५तृ४।भा४यि४।अ४धि५ष्णु४भि५
र४वी५। ना५म्५। आधि२ष्णुभि२रवीर२। नाम्। अश्वयेवा।
ह२रितायाताऽ२३यि३धा२।र२या२३ऽउवाऽ२३।मा३२३४
द्रा५।या२या२ती३२३४धा५।र३या२औ३हो४वा५।हो४ऽ५
यि५डा५॥ २९॥

६. सो३म४उ४ष्वा४ण३स्सो४तृ४भि५:।अ३हो२३यि३।आऽ२
३४।धि४ष्णु४भि५र४वी५ना५म्५।आश्वये२व२ह२रि२ ता२
या२।ति२ धारायौ२।वा२ओ३२३४वा५।मं२द्रयायाती२३
धा२।हुं३।हुं२३४ऽ३म्३।रा२३४५यो५६हा५ यि५॥ ३०॥

[इति] चतुर्दशः प्रपाठकः

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

५१६.तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीँ रति ताँ इहि॥

१. तप्वाप्हः५सो५ ।मरराष्ठुरश्णा ।रण ।सख्यइन्दोदिवा४२ु यिरदिरवायि। दिवे। पुरूणिबभ्रोविचरंतिमा४२ुमश्वा। अवा५। परिधीःरतिताः४२ुइरहाऽ२३यि३। आऽरुयिरु। हा३२३४।अ५हो५वा५ ।ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ १ ॥

२. त४वा५। त५वा४। अरहःसोमरारण। सख्याई२३न्दोर। दिरवा अ२३होर।दायिवे४२ु।पूररुणिबभ्रोनिचरंतिमा२ऽ मा२३वा२। प२राअ२३हो२। धायिःरति२तोऽ२३४वा५। आ४ऽ५यि५हो५६ हा५यि५ ॥ २ ॥

३. त५वा५हःसो५मा५६रा५र५णा५ ।सा२ख्या२ुई३२३४न्दो५। दिर वे२ुदा३२३४यि४वे५। पु४रू३णि४ब४भ्रो४नि३च४ र५न्ति५मा५म्५ ।आवाऽ२३४हा५यि५ ।पा४री५धा४यिः४ रा५ ।ति२तोऽ२३४ वा५ ।आ४ऽ५यि।हो५६हा५ ।यि५ ॥ ३ ॥

४. त४वा५हः४सो५म५रौ५ ।हो४ऽ५र५णा४ ।साख्य२इन्दोऽ२ु। दि३ वा२३४५यि५ ।दी३२३४वे५पूरू४२ुणायिबा ४२ुभ्रौनि- चरा२ु। ति३मा२३४५म्५। आ३२३४वा५। पारी४२ुधायिः राऽ२ुति३ ।ताः२३४५ ।ई३२३४ही५ ॥ ४ ॥

५. त३वा४हः३सो४म५रा५र५ण५। स५ख्य५ई२दो३दि४वे४- दि५वा५यि५ ।स२ख्यइन्दोदि२वेदाऽ२३यि३वे२ ।पु२रूणि बभ्रो निचरं ति२मामाऽ२३वा२ ।प२रायिधाऽ२३यिः३रा२। ति२ताःऽ२३इ३हा२३४ऽ३यि३ ।ओऽ२३४५यि५ ।डा५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

३ १ २ ३ १ २र
५१७. मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥

१. मृ५ज्य५मा५ना५ः। सु२ह२स्ति२या२३। सामू२३द्रा४यि४ वा५। च२मि२न्व२सा२३यि३। रायी२३म्पा४यि४शा२। ग२ म्ब२हु२ला२३म्३। पूरू२स्प्रे३२३४हा५म्५। पवमा२। ना। अ२३हो२। भि२योऽ२३४ वा५। षा४ऽ५सो५६हा५यि५॥ ६॥

२. मृ५ज्य५मा५ना५ः। सु२ह२स्ताया४२। समुद्रे२वा२। चार्मिन्वा- साऽ२३४यि४। र३या२३४यि४। म्पि३शा२। गबहुलंपूरुस्पृहा- ४२म्२। पवाऽ२३। माऽ२ना३२३४अ५हो५वा५। भिया२ँत्रः२ ष२सी३२३४५॥ ७॥

३. मृ५ज्य५मा५ना५ः। सु२ह२। स्तिया। सा२ऽमू४२द्रायिवा४२। च२मि२। न्वसायि। रा२ऽयी४२म्पायिशा४२। गम्बहु२ लंपुरु२। स्पृहाम्। पा२ऽवा४२मानाऽ२३। भाऽ२या३२३४ अ५हो५वा५। षा३२३४ सी५॥ ८॥

४. मृ५ज्या५६ए५। मानस्सुहस्तियाऔ२३हो२। स२मु२द्रेवाच- मिन्वसाऔ२३हो२। [१]र२यिम्पिशङ्गम्बहुलं पुरुस्पृहाऔ२३ हो२। प२वमाऽ२३ना२३। भि२योऽ२३४वा५। षा४ऽ५सो५६ हा५यि५॥ ९॥

५. मृ५ज्य४मा५न५स्सु५ह५स्त्यो४। वा४हा५यि५। स२मु२द्रा यिवा। चॅमीऽ२न्वा३२३४सी५। र३या२३४म्पि३शा२। गम्बहु२लं२। पुरुँस्पृहाऽ२३४म्४। प३वा२३४मा३ना२३। भि२योऽ२३४वा५। षा४ऽ५सो५६हा५यि५॥ १०॥

१. 'र२यिम्विशङ्गम्'......इति मूलगानग्रन्थे पाठः। —सम्पादकः

६. मृ४ज्य४मा५ना४ऽ५स्सु५हा५स्ति४या४। समू४रुद्रायिवा४रु। चमा४रुयिरन्वासी४रु। र२यिम्पिशङ्गं बहुलंपुरुस्पृहाअ२३ हो२। प२वमाऽ२३। ना२ २। भि२योऽ२३४वा५। षा४ऽ५ सो५६हा५यि५ ॥ ११ ॥

७. मृ५ज्य४मा५न५स्सु५ह५स्त्या५। स५मु५द्रे५वो४वा५। चामिन्व२ सि२। रायिँम्पिशा२३। हा२३हा२। गम्बहु२लंपुरु२स्पृह२म्२। पवमाना२३। हा२३हाभि२यत्रृषाऽ२३सा२३४ऽ३यि३ओंऽ२ ३४५यि५डा५ऽ ॥ १२ ॥

८. मृ५ज्य४मा५न५स्सु५हा४। स्तिया४रु। समू४रुहो। द्रेवा४रुहो। चा२मिन्वसायि। रया४रुयि२ः२होयि। पिशा४रुहो। गं२ बहुलम्। पू२रुस्पृहाम्। पवा४रुहो। माना४रुहो। भी२यत्रृषसा २३ऽउवाऽ२३। वा२जीजिगी२३वाः२ऽऽ ॥ १३ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
५१८. अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥

१. हा२३हा२यि२। अ२भि२सो२मा२सा२३आया२ऽवा२३ः। हा२३हा२यि२। प२वं२ते२म२दी२३याम्मा२ऽदाऽ२३म्३। हा२३हा२यि२। स२मु२द्र२स्या२धि२वि२ष्ट२पे२मा२३ नायिषा२ऽयिणाऽ२३ः। हा२३हा२यि२। म२त्स२रा२सो२ मा२३दाच्यू२ऽताऽ२३ः। हा२३हा२३४ऽ३यि३। ओऽ२३४५ यि५डा५ ॥ १४ ॥

२. आ४भी५सो४मा५। स२आ२३ऽउवा२३। या३२३४वा५:। पा४व५न्ता४यि४मा५। दि२या२३ऽउवाऽ२३। मा३२३४-दा५म्५। सा४मु५ द्र४स्या५। धि२विष्टापेम२ना२३ऽउवाये२३। षी३२३४णा५:। मा४त्सा५ रा४सा५:। म२दा२३ऽउवाऽ२३। च्यू३२३४ता५:॥ १५॥

३. अ२भिसो२३मा४स४आ५य५वा५:। पवन्ते२मदिय२म्मादा। अ२३होर। आअ२३हो२। स२मु२द्रस्याधिवि२ष्टपेम२नी२षि। णा। अ२३हा२। आऔ२३हो२। म२त्स२रासोम२द२च्यु। ता। अ२३हो२। आअ२३हो२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १६॥

४. अ५भि४सो४मा५स५आ५। हो४ऽ५य५। वा४:। पवंतेम-द्यम्मदम्पवंतेम। दि२या२होयि। माऽ२३दा२म्२। स२मु२द्रस्या धिविष्टपेमनीषिणा:। म२नाहोयि। षाऽ२३यि३णा२:। म२त्स२ रासोमदच्युता:। म२दाहोयि। च्यूऽ२३ता२३४ऽ३:। ओंऽ२३ ४५यि५। डा५॥ १७॥

५. अभाऽरुयिरुसो३मा२३४। अ३हो४ऽ५स५आ५य४वा४:। पवाऽरुन्ते३मा२३४। अ३हो४ऽ५दि५य५म्म४दा४म्४। समुऽरु द्र३स्या२३४अ३हो४ऽ५धि५वि५ष्ट४पा४यि४। ओये२३। माऽरुना३२३४अ५हो५वा५। षी३२३४णा५:। ऊ३२३४पा५। २। म३त्स३रा२ सोऽ२३। माऽरुदा३२३४अ५हो५वा५। च्यू३२ ३४ता५:॥ १८॥

६. औ४हो५वा४। अ५भि४सो४मा५स५आ५य४व५:। औ४हो५ वा४। पवाऽरु। ते३मा२३ओं४ऽ५वा५६५६। दि२य२म्मद२ म्२। समूऽरु। द्र३स्या२३ओ४ऽ५वा५६५६। धि२वि२ष्टपे२म२

नी२ षिणा२ँ:। अँ३हो२३ऽयि। मत्सा॒ऽ२ु। रा३सा२३ओ४ऽ५
वा५६५६। म२द२च्युता३२३४५:॥ १९॥

७. अ५भि५सो५मा५स५आ५या५६वा५:। पवा॒ऽ२ु। ते३मा२३
ओ४ऽ५वा५६५६। दि२य२म्मद२म्२। समू॒ऽ२ु। द्र३स्या२३
ओं४ऽ५वा५६५६। धि२वि२ष्टपे२ँम२नी२षिणा२ऽ:। मत्सा॒ऽ२ु।
रा३सा२३ओं४ऽ५ वा५६५६। म२द२च्युता३२ ३४५:॥ २०॥

८. अ५भि५सो५मा५स५आ५या५६वा५:। पवंतायिमा। दिँया॒ऽ२ु
मा३२३४दा५म्५। स३मु३द्र२स्या। धि२विष्टपायि।
मना२३यि३षा४यि४णा५:। मात्स२रा२सो॒ऽ२३। मा॒ऽ२ुदा३२
३४अ५हो५वा५। च्यू३२३४ता५:॥ २१॥

ऋषि:—भरद्वाज: कश्यपो० ॥ देवता—पवमान: सोम: ॥ छन्द:—बृहती ॥
स्वर:—मध्यम: ॥

५१९. पुनान: सोम जागृविरव्या वारै: परि प्रिय:।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष ण:॥

१. पु५ना५न४:सो५म५जा४गृ५वि५र४व्या:। वारैष्पारिँप्रिया४ऽ२ु:।
त्पंविप्रोअभवोऽङ्गायिरा॒ऽ२३४। स्त३मा२३। माध्वा२य२
ज्ञा॒ऽ२३म्३। मा॒ऽ२ुयि२ुमा३२३४अ५हो५वा५। क्षा३२३४
णा५:॥ २२॥

ऋषि:—भरद्वाज: कश्यपो० ॥ देवता—पवमान: सोम: ॥ छन्द:—बृहती ॥
स्वर:—मध्यम: ॥

५२०. इन्द्राय पवते मद: सोमो मरुत्वते सुत:।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायव:॥

१. इं५द्रा५य५पा५ ।व२ता४२ुयि२मादा४२ुः। सोमोमरुत्वता४२ु यि२सूता४२ुः। स२। हास्त्रधा२२२ः। अतिअव्यमा४२ुऋ२ षाती४२ु।त२मा४२ुयिमार्ज्जा४२ु।ति२आया५२३वा२३४५३ः। ओ५२३४५यि५डा५॥ २३॥

२. इं५द्रा५य५पा५।व२ते२मदाः।सो२मो२मारू४२ु।त्वतेहो४२ु यि२।सूता४२ुः।स२।हास्त्रधा२२२ः।अतिअव्यमा।षाता२ु ओं३२३४वा५।ऊ३२३४पा५।तमीहो४२ुयि२।मार्ज्जा४२ु। ति२ आया५२३वा२३४५३ः।ओं५२३४५यि५डा५॥ २४॥

३. इं५द्रा५या२३पा४व५ता४यि४म४दा५ः।सोमोमरुत्वता२ऽ- यिसू२३ ता२ः।स२।हास्त्रधा२२२ः।अतिअव्यमा२३।षा४ ती५। त२माअ२३हो२३यि३। मा४र्ज्जा५। ता५२ुया३२३४ अ५हो५वा५।या३२३४वा५ः॥ २५॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
५२१.पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्या।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
त्वं समुद्रः प्रथमे विधर्मं देवेभ्यः सोम मत्सरः॥

१. प४व५स्व५वा५ज५सा४। इ४हा४ता३२३४मा५ः। अ२भि विश्वा२नि२वारिया२।त्वंसा५२ुमू३२३४अ५हो५वा५।द्रष्प्र२ थ२मेविध२र्म्म२नु२[१]।दायिवाये२३।भ्या५२ुस्सो३२३४अ५ हो५वा५।म२म२ुत्स३रा२ऽः॥ २६॥

---

१. सामवेदेऽत्र 'विधर्मं' इति पाठः। तमनुसृत्य 'विध२र्म्म२म्२' इतिपाठः स्यात्। परमत्रगाने नकारान्तो धर्मन्शब्दः पठितः, सोऽप्युकारसहितः। —सम्पादकः

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

५२२. पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया।
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च ॥

१. प४व५मा५ना५अ५सृ५क्ष५त५प५वा४यि४। त्रामतिधारयामरु त्वंतोमत्सराइंद्री२३या२ः। हया२ः। मा5२३यि३धा२म्२। अभाये२३। प्रा5२ुया३२३४अ५हो५वा५। सी३२३४चा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

५२३. प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष।
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽ च्छा बर्हीं रशनाभिर्नयन्ति ॥

१. ओ२ुयि२ुप्र३तु५। इ३हा२३5द्र२वा। परिको२३। श२ु न्निषी४ दा५। ओ२ुयि२ुनृ३भि५ः। इ३हा२३5५। पु२ना। नो२३अभि। वा२ुज३म४ऋ४षा५। ओ२ुअ३श्श्व५म्५। इ३हा२३5। न२ त्वा। वा२३जिनम्। म२र्ज्ज२य४न्ता५ः। ओं२ुअ३च्छ५। इ३हा२३5। ब२ऋ२हायिः। र२शना। भा२३४5३यि३ः। ना२३या४5५न्ता५६५६। यि६ ॥ २८ ॥

२. प्र४तु५। ए४प्र४तू५। द्र२वा। २। परिको२३। श२ुन्नि३षी४ दा५। नृ४भि५ः। ए४नृ४भि५ः। पु२ना। २। नो२३अभि। वा२ु ज३म४ऋ४षा५। अ४श्श्व५म्५। ए४अ४श्वा५म्५। न२त्वा। २। वा२३जिनम्। म२र्ज्ज३य४ता५ः। अ४च्छ५। ए४अच्छा५। ब२ऋ२हायि। ब२ऋ२ हायिः। र२श२नाभि२ुः। न३ये२३४ हि५या५६हा५उ५वा५। ता३२३४५यिपा ॥ २९ ॥

३. प्र४तु५द्रा४। वापरिकोशाम्। निषी२३दा२। सायिदा४२ु। अ३होरुयिरु। अ३हो३ॅवा२। नृभिष्पुनानोअभिवा। जॅमा ऽ२३ ऋ३षा२। आऋषा२ु। अ३होरुयिरु। अ३हो३ॅवा२। अश्वन्नत्वा वाजिनम्मा। जॅया ऽ२३ न्ता२ः। यांता२ु। अ३होरुयिरु। अ३हो३ॅवा२। अ२च्छाब२ऋ२ हायिः। र२श२नाभिरुः। न३ये२३४। हि५या५६हा५उ५वा५। ता३२३४५यि५॥ ३०॥

४. हा५ओं५६हा५। उ३हु३वा२३४। ओ५६हा५। प्र२तुद्रवा। परिको२३। श२ुन्नि३षी४दा५। नृ२भायिष्पु२ना। नो२३अभि। वा२ुज३म४ऋ४षा५। अ२श्वन्नत्वा। वा२३जिनम्। म२र्ज्ज३-य४न्ना५ः। हा५ ओं५६हा५। उ३हु३वा२३४। अ५६हा५। अ२च्छाब२ऋ२हायिः। र२शना। भा२३४ऽ३यि३ः। ना२३-या४ऽ५न्ता५६५६यि६॥ ३१॥

५. प्रा४तू५। द्रवापरिकोशाम्। नीषी२३दा२। नृ२भायिष्पु२ना। नो२३ अभि। वा२ुज३म४ऋ४षा५। अश्वन्नत्वावाजिनम्मा। जॅया ऽ२३न्ता२ः। अ२च्छाब२ऋ२हायिः। र२शना। भा२३ ४ऽ३यि३ः। ना२३या४ऽ ५न्ता५६५६यि६॥ ३२॥

ऋषिः—वृषगणो वासिष्ठः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५२४. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ १ २
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्॥

१. प्रा४काविया४२ुम्२। उशनेवा४२ु। ब्रु२वा ऽ२३णा२ः। देवो-देवा४२ु। नाञ्जनिमा४२ु। वि२वा ऽ२३क्ती२। महिव्राता४२ुः।

शुचिबंधू४२ुः । पा[1]२वा२३का२ः । पदावारा४२ु । होअभि-
याऽ२ुयि२ु । ति३रा२३४ अ५हो५वा५ भा३२३४५न्५ ॥ ३३ ॥

२. प्रकाविया४२ुम्२ । उशनेवा४२ु । ब्रु२वाणा४२ुः । देवोदेवा४२ु । नाञ्जनिमा४२ुः । वि२वाक्ती४२ु । महिव्राता४२ुः । शुचिबंधू४२ु पा*२वाका४२ुः । पदावारा४२ु । होऽ२ु । भि३या२३४अ५ हो५वा५ । ति२रेभा३२३४५न्५ ॥ ३४ ॥

३. प्र२का२व्य२मु२श२ने२व२ब्रू२३वाणो२ु । दे३२३४वा५ः । दे२ वा२ना२ञ्ज२नि२मा२वी२३वाक्ती२ु । मा३२३४हि५ । व्र२त२ श्शु२चि२बं२धु२ष्पा२३वाक२ुः । पा३२३४दा५ । व२रा२हो२अ२ भ्ये२ति२राऽ२३ । हा२उ२वा२३ । भा३२३ ४५न्५ ॥ ३५ ॥

४. हा५उ५हु२ । प्र२काविायाम् । उ२शने । व२ब्रु३वा४णा५ः । दे२वोदेवा । ना२३ञ्जनि । मा२ुवि३व४क्ति५ । म२हिव्रताः । शुचिबा२३ । धु२ष्पा३[2]वा४का५ः । हा५उ५ । २ । हु२ । प२दावरा । हो२३अभि । आ२३४ऽ३यि३ । ती२३रा४ऽ५यि५ भा५६५६न्६ ॥ ३६ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

५२५. तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् । गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥ ३ ॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'प२' इति लिखितम् 'पा२' इति पाठः स्यात्, 'पावकः' इति मूलपाठत्वात् ।
२. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'धु२ष्प३ वा४का५ः' इति पाठोऽस्ति, मूलवेदे तु पावकः । —सम्पादकः

१. होयि। हो। हा२३होयि। ति२स्त्रोवाचाः। ई२३रय। ति२प्र३
व४ह्नीप५ः। होइया ऽ२३होयि। ति२स्त्रोवाचाः। ई२३रय। ति२प्र३
व४ह्नीप५ः। आ२। होइया ऽ२३होयि। ति२स्त्रोवाचाः। ई२३रय।
ति२प्र३व४ह्नीः५ः। होइहा। इ२होईहा। औ३हो२३ऽयि। इहा।
ति२स्त्रोवाचाः। ई२३रय। ति२प्र३वह्नीप५ः। होइया। ई२योइया।
औ३हो२३ऽयि। इया। ति२स्त्रोवाचाः। ई२३रय। ति२प्र३
व४ह्नीप५ः॥ १॥

२. इ३होरुइ३ह५। इ२हो२इ२हा२३होऽ। वा३होरुइ३ह५। ति२स्त्रो
वाचाः। ई२३रय। ति२प्र३व४ह्नीप५ः। इ५हो४वा४ऽ५। इ२
होवाऽ२३। ई२३४ह४हा५यि५। ई४ऽ५ई४हा४। ति२स्त्रो-
वाचाः। ई२३रय। ति२प्र२व४ह्नीप५ः। इ२होवाऽ२३। ई२३४ह४
हा५यि५। इ४हा४। ति२स्त्रोवाचाः। ई२३रय। ति२प्र३व४
ह्नीप५ः। आअ२३हो२। आअ२३हो२३४। अ५हो५वा५। हा२३
हा२यि२। ति२स्त्रोवाचाः। ई२३राय। ति२प्र३व४ह्नीप५ः। आ।
अ२३हो३वा३हा२३४। अ३हो४वा५। ति२स्त्रोवाचाः। ई२३
रय। ति२प्र३ व४ह्नीप५ः॥ २॥

३. ओ३हा२३। ओ४हा५। २। ऋ२तस्यधायि। ती२३म्३ब्रह्म।
णो२म३नी३षा५म्५। हह२होयि। हह२हा३ह२होयि। गा२
वोयन्तायि। गो२३पतिम्। पृ२च्छ३मा४ना५ः। इह२होयि। इह२
हा३ह२होयि। सो२मंयंतायि। म२तयः। वा२३४ऽ३।
वा२३शा४ऽ५ ना५६५६ः॥ ३॥

ऋषिः—वसिष्ठो मैत्रावरुणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

५२६. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥

१. अ३स्या२३४अ३हो४वा५ । प्रेषा । हे२३मना । पूरुय३मा४
नाप५ः । उ३हु३वा२ुयि२ु । अ३स्या२३४अ३हो४वा५ । प्रेषा ।
हे२३मना । पूरुय३मा४ना५ः । हा२यि२ । उ२हु२वा२ु । दे३वा२३
४औ३हो४ वा५ । देवायि । भी२३स्सम । पृ२क्त३र४सा५म्५ ।
हा२उ२ । हो२ुयि२ु । सु३ता२३४अ३हो४वा५ । पवायि । त्रा२३
म्परि । ए२ुति३रे४भा५न्५ । हा५ । हा२अ२हो२ुयि२ु । मि३
ता२३४अ३हो४वा५ । वसा । द्मा२३पशु । मं२ुति३हो४ ता५ ।
पशु । मा२३४ऽ३ । ती२३हो४ऽ५ता५६५६ ॥ ४ ॥

२. अहो२वा३हा२३होयि । इ३हा२ । अ२स्यप्रेषा । हे२३मना ।
पू२ुय३मा४ना५ः । दे२वोदेवायि । भी२३स्सम । पृ२क्त३र४
सा५म्५ । सु२तष्पवायि । त्रा२३म्परि । ए२ुति३रे४भा५न्५ ।
अहो२वा३हा२३होयि । इ३हा२ । मि२तेवसा । द्मा२३पशु ।
मा२३४ऽ३ । ती२३हो४ऽ५ता५६५६ ॥ ५ ॥

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

५२७. सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥

१. सो२म२ष्प२व२ते२ज२नि२ता२मा२३तायिना४२ुम्२ । ज२
नि२ता२दि२वो२ज२नि२ता२प्रे२३थायिव्या४२ुः । ज२नि२ताऽ

ग्नेर्ज्जनितासू। रिंया ऽ२३ स्या२। ज२नि२तेऽन्द्रा। स्या२३जनि। तो२३४ऽ३। ता२३वा४ऽ५यि५ष्णो५६५६:॥ ६॥

२. सो३म४ष्प५व५ते५ज५नि५ता५। ए२३। अ२३हो४ऽ५वा५ऽ। माताऽ२३४५यि५ना५६५६म्६। ज२नि२तादि२वोजनि२ता-पृथि२व्याः। जनाऽ२ुयि२ुता३२३४ग्रे५:। ज२नि२ता२। सू२३४ऽ३। री२३ या४ऽ५स्या५६५६। ज२नितेंद्रस्य२जर२नि२तोतविष्णो३२३४५:॥ ७॥

३. हा५उ५ज४न४त्४। ३। ज४न४द्धा५उ५। ३। होयि। जनत्। २। होयि। जनात्। सो२मष्पवा। ते२३जनि। ता२ुम३ती४ना५ म्५। ज२नि२तादायि। वो२३जनि। ता२ुपृ४थि३व्या५:। ज२नि२ ताऽग्नायिः। ज२निता। सू२ुरि३य४स्या५। हा५उ५ज४न४ त्४। ३। ज४न४द्धा५उ५। ३। होयि। जनत्। २। होयि। जनात्। ज२नि२तेंऽद्रा। स्या२३जनि। तो२३४ऽ३। ता२३वा४ऽ५ यि५ष्णो५६५६:॥ ८॥

४. ज४न४द्धा५उ५। ३। ज४न४दा५उ५। ३। जनत। होइ। ३। सो२मष्पवा। ते२३ऽजनि। ता२ुम३ती४ना५म्५। ज२नि२ तादायि। वो२३जनि। ता२ुपृ३थि४व्या५:। ज२नि२ताऽग्नायिः। ज२निता। सू२ुरि३य४स्या५। ज४न४द्धा५उ५। ३। ज४न४दा५ उ५। ३। जनत्। होयि। ३। ज२नि२तेऽन्द्रा। स्या२३जनि। तो२३४ऽ३। ता२३वा४ऽ५यि५ ष्णो५६५६:॥ ९॥

ऋषिः—वसिष्ठो मैत्रावरुणः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

५२८. अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि॥

१. ओर३हायि। ओंॲहार३। ओ३हार। इया४र३। ओॲहार३एर।
अरभित्रिपा। ष्ठार३म्३वृष। णर३म्व३यो४धा५म्५। अरङ्गो-
षिणाम्। अरवाव। शर३। न्त३वा४णी५ः। वरनावसा। नोर३
वरु। णोर३न३सिं५धू५ः। ओर३हायि। ओॲहार३। ओ३हार।
इया४र३। ओॲहार३एर। विररत्नधाः। दरयते। वार३४ऽ३।
रीर३या४ऽ५ णा५६५६यि६ ॥ १० ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

१ २ ३१ २३१ २र ३१२ ३ १ २र ३२
५२९. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मं जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः।
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २र
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥

१. हो। होयि। अक्रार२न्सर२मुर२द्रष्प्रर२थर२मेविधर२। मान्। हो।
होयि। जरनयन्प्ररजाभुवनरस्यरगोर। पाः। हो। होयि। वृषार
परवित्रेरअधिरसानोरँअ। व्यायि। हो। हो। बृर हत्सोमोरॅवार
वृरब्धेरस्वारनोअ। द्रा। अरहो३वा३हार उरवार३। एर३।
स्वारनोअ। द्रीऽर३४५ः ॥ ११ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
५३०. कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं जनयत स्वधाभिः ॥

१. का४नी५। क्रान्ती४र३क्रान्ती४र३। हररिररारसृरज्यमाऽर३-
नार३ः। सा४यिदा५न्५। वाना४र३वाना४र३। स्यरजरठररेर
पुनाऽर३नार३ः। त्रे४भी५ः। याता४र३याता४र३ः। कृरणुतेर

निर्णिजाऽ२३ऽ३गा२३म्३। आ४ता५ः। माती४रुम्माती४रु
म्२। जनयताऽ२३। स्वाऽरुधा३२३४अ५हो५वा५। भी३२३
४५ः॥ १२॥

२. क३नि४क्र५न्ती५हा५। हो२यि२ह२रि३रा२सृ३ज्य२। मा३२
३४ना५ः। हा२होयि। सीदन्वनस्यजठरेपु२नाऽ२३ना२ः। हा२
होयि। नृभिर्यतष्कृणुतेनिर्णि२जाऽ२३ङ्गा२म्२। हा२होयि।
अतोमतायिम्। जँनयताऽ२३स्वाऽरुधा३२३४अ५हो५वा५।
भी३२३४५ः॥ १३॥

ऋषिः—उशना: काव्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

५३१. एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात्॥

१. ए४षा५ए४षा५ः। स्य३ता२३ऽ२३४यि४। म४धु५मा५ऽ५इं५
द्र५सो४म५ः। वृ५षा५वृ५षा५६ए५। वृ३ष्णा२३ऽ२३४ः। प४
रि५प५वि४त्रे५अ५क्षा५ः। स५ह५स५हा५६ए५। स्र३दा२३ऽ
२३४ः। श४त५दा४भू५रि५दा४वा५। श५श्व५च्छ५श्वा५६
दे५। त३मा२३ऽ २३४म्४। ब४र्ह४हि४रा४वा५जि४ये४ऽ५।
हि५या५६हा५उ५ वा५। स्था३२३४५त्५॥ १४॥

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

५३२. पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये।
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सरः इन्द्रपानः॥

१. हा२ुओ३२३४हा५यि५ । इ३हा२३ऽ । प२वस्वसो । मा२३मधु । मा॰२ुऽऋ३ता४वा५ । अ२पोवसा । नो२३अधि । सा२ुनो३ अ४व्या५यि५ । अ२वद्रोणा । नि२३घृत । वं२ुति३रो४हा५ । हा२ुओ३२३४हा५यि५ । इ३हा२३ऽ । म२दिंतमो । म२त्सरः । आ२३४ऽ३यि३ । द्रा२३पा४ऽ५ना५६५६ः ॥ १५ ॥

ऋषिः—प्रतर्दनः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

५३३. प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
भद्रान्कृण्वन्निन्द्र-हवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥

१. हो३ऽ४वा५ । उ३हु३वा२३ । हो४वा५ । प्र२सेना२[ना]यिः । शूरोआ२३ । ग्ना२ुयि२ुर३था४ना५म्५ । ग२व्यन्ने२तायि । हऋषता२३यि३ । अ२ुस्य३से४ना५ । भ२द्रान्कृ२ण्वान् । इंद्रहा२३ । वा२ु[1]न्स३खि४भ्या५ः । आ२सोमो२वा । स्त्रा२३रभ । सा२ुनि३द४त्ता५यि५ । हो३ऽ४वा५ । उ३हु३वा२३ । हो४ वा५६ । हा५उ५ वा५ ॥ १६ ॥

२. अ५हो४ऽ३वा२३४५ । प्र२सेना२नायिः । शूरोआ२३ । ग्ना२ुयि२ुर३था४ना५म्५ । ग२व्यन्ने२तायि । हऋषता२३यि३ । अ२ुस्य३से४ना५ । भ२द्रान्कृ२ण्वान् । इन्द्रहा२३ । वा२ुन्त्स३ खि४भ्या५ः । अ५हो४ऽ३वा२३४५ । आ२सोमो२वा । स्त्रा२३ रभ । सा२३४ऽ३ । नी२३दा४ऽ५त्ता५६५६यि६ ॥ १७ ॥

३. अ५हो४ऽ३वा२३४५ । प्र३से३ना२नायिः । शूरोआऽ३ । ग्ना२ु यि२ुर३था४ना५म्५ । ग३व्य३न्ने२तायि । हऋषता२३यि३ । अ२स्य३से४ना५ । भ३द्रा३न्कृ२ण्वान् । इंद्रहा२३ । वा२ु३न्स३

१. 'न्स्व३' इति मूलगानग्रन्थे पाठः । —सम्पादकः

खि४भ्या५ः । ओ५हो४ऽ३वा२३४५ । आ३सो३मो२वा । स्त्रा२
३रभ । सा२३४ऽ३ । नी२३दा४ऽ५ । ता३२३४५ यि५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २र
५३४.प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम् ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
पवमान पवसे धाम गोनां जनयन्त्सूर्यमपिन्वो अर्कैः ॥

१. हा२उ२हो२वा२३हा२यि२ । प्र२ते२धा२रा२म२धु२मा२३
तायिरसृग्राऽ२३४५न्५ । हा२उ२हो२वा२३हा२यि२ । वा२रं२
य२त्पू२तो२अ२ती२३यायिषिआव्याऽ२३४५म्५ ।
हा२उ२हो२वा२३हा२यि२ । प२व२मा२न२प२व२से३धामें
गोनाऽ२३४५म्५ । हा२उ२हो२वा२३यि२ । ज२न२य२न्त्सू२
र्य२मा२३पायिन्वोअर्क्काऽ२३४५यि५ः । हा२उ२हो२वा२३
हा२उ२ । वा२३४५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

१ २ ३क २र ३ १ २र ३ १ २र
५३५.प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय ।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः ॥

१. प्र२गायता । अ२भिय । चा२म३दे४वा५न्५ । सो२मं२हिनो ।
ता२३मह । ते२ध३ना४या५ । स्वा२दुष्पवा । ता२३मति । वा२
र३म४व्या५म्५ । आ२सीदतूक२लशम्दा२३४ऽ३यि३ । वा२३
आ४ऽ५यिं५दू५६५६ः ॥ २० ॥

ऋषिः—वसिष्ठो मैत्रावरुणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

५३६. प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिषन्नयासीत् ।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः ॥

१. हा२उ२हो२वा२३हा२यि२ । प्र२हिं२न्वा२नो२ज२नि२ता२ रो२३४ऽ३द२सी३यो५ः । हा२उ२हो२वा२३हा२यि२ । र२थो२ न२वा२जं२स२नि२षा२३४ऽ३न२या३सी५त्५ । हा२उ२हो२ वा२३हा२यि२ । इं२द्रं२गच्छ२न्ना२यु२धा२सा२३४ऽ३ं३शि२ शा३न५ः । हा२हो२वा२३हा२यि२ । वि२श्वा२व२सु२ह२स्त२ यो२रा२३४ऽ३द२धा३न५ः । द४धा४ऽ५ना५उ५ । वा५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मृडीको वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

५३७. तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्मं द्युक्षोरनीके ।
आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥

१. त३क्ष४द्य४दी५ । हो३२३४५यि५ । म३न४सो४वे३न४त५ः । वा३२३४५क्५ । ज्ये३ष्ठ४स्य५धा५ । हो३२३४५ । मं४द्यु४ क्षो३र४नी५ । का३२३४५यि५ । आ३दी४मा५य५न्५ । हो३२ ३४५यि५ । व३र४मा३वा४व५शा५ । ना३२३४५ः । जु३ ष्टं४ प४ति५म्५ । हो३२३४५यि५ । क४ल४शे४गा४ऽ५व५ः । इ५ । दा५उ५ । वा५ ॥ २२ ॥

२. त२क्षद्यदा२३ऽ२३४यि४ । म३न४सो४वे३न४त५ः । वा३२३ ४५क्५ । ज्ये२ष्ठस्यधा२३ऽ२३४ । म४द्यु४क्षो३र४नी५ । का३२ ३४५यि५ । आ२दायिमाया२३ऽ२३४न्४ । व३र४मा३वा४व५

शा५। ना३२३४५ः। जु२ष्टम्पता२३ऽ२३४यि४म्४। क४ल४
शे४गा४ऽ५वः। इ५। दा५उ५। वा५॥ २३॥

ऋषिः—नोधा गोतमः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
५३८. साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी॥

१. सा४का५म्५। उक्षोमर्ज्जयन्तस्व२सा२२३रा२ः। दाशा४२ु। धीरस्यधीतयोध२नूऽ२३त्री२ः। हारी४२ुः। पर्य्यद्रवज्जास्सू-र्य्याऽ२३स्या२। द्रोणा४२ुम्२। ननक्षेअत्योनवाऽ२३। हा२उ२ वा२३। जी३२३ ४५॥ २४॥

२. सा५क५मु५क्षा५६ए५। ए२३ऽ२३४। म४र्ज५यं५त५स्व४-सा५र५ः। द५श५धी५रा५६ए५। ए२३ऽ२३४। स्य४धी५त४ यो५ध४नु५त्री५ः। ह५रि५ष्प५र्य्या५६ए५। ए२३ऽ२३४। द्र४ व५ज्जा४स्सू४र्य५स्य५। द्रो५ णं५न५ना५६ए५। ए२३ऽ२३४। क्षे४अ४त्यो५न४वा५६। हा५उ५वा५। जी३२३४५॥ २५॥

ऋषिः—कण्वो घौरः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
५३९. अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः।
३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
अपो वृणानः पवते कवीयान् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म॥

१. अ४धि५य५दा४। स्मायिन्वाँ३जिनीरॅव२शु। भाः। स्पर्द्ध२न्ते२ धियस्सू। रा२ुयि२ुन३वि४शा५ः। अ२पोवृणानष्पवतायि। कॅवीऽ२३। या२न्२। व्र२जन्ना। पा। शु२वर्द्ध। ना२३४ऽ३। या२३मा४ऽ५न्मा५६५६॥ २६॥

ऋषिः—मन्युर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

५४०. इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥

१. इं२दू२३र्व्वाजी४२३। पवतेगोनियोघा२ः। इं२द्रायिसोऽ२३४ माप५ः। साहइन्वन्मदाया२। हं२तायिराऽ२३४क्षाप५ः। बाधते पर्य्यरातिर२म्२। व२रायिवाऽ२३४स्कृ५। ण्व२न्वृ२जानाऽ२३। स्या। रा३ँजौ२वा२३ओ३२३४वा५। हो४ऽ५यि५डा५ ॥ २७ ॥

२. इं४दु५र्व्वा५जी४प५व५तौ५। हौ४हो४वा४हा५यि५। गोनिँ-योघौ२। वा२३ओ३२३४वा५। इंद्रे२ँसोमा२ँस्सह२इ। न्वान्मँ दायौ२। वा२३ओ३२३४वा५। हन्ति२रक्षो२बाध२ते२। पार्य्येरा। तौ२। वा२३ओ३२३४ वा५। वरिव२स्कृ२ण्वन्वृजना२३। स्या। रा२ँजौ२वा२३ओ३२३४ वा५। हो४ऽ५यि५। डा५ ॥ २८ ॥

३. इ५न्दु५रौ५हो५वा५हा५ई४या५। वा२जा२उ२। वा२३। हा२उ२वा२। प२व२ते२गो२नियोघा२उ२। वा२३। हा२उ२ वा२। इ२द्रायिसोम२ः। स२हइन्वा२उ२। वा२३। हा२उ२ वा२३। माऽ२३ दा३२३४अ५हो५वा५। या३२३४५। ह२न्ता-यिरक्षो२। बा२धातायिपा२उ२। वा २३। हा२उ२वा२३। र्याऽ२३रा३२३४अ५हो५वा५। ती३२३४५म्५। व२रायि-वस्कृ२। ण्वर्न्वृजना२उ२। वा२३। हा२उ२वा२३। स्याऽ२३ रा३२३४अ५हो५वा५। जा३२३४५ः ॥ २९ ॥

४. ईं५दु५र्व्वा५जी५प५व५ते५गो५नि५यो४घा५ः। इं५द्रे५सो५म५ स्स५ह५इ५न्व५न्म५दा४या५। हं५न्ति५र५क्षो५बा५ध५ते५ प५र्य्य५रा४ती५म्५। व५रि५व५स्कृ५ण्व५न्वृ५ज५न५स्य५

रा४जा५। रा३जा२३४औ५हो५वा५। ए२३। स्य२राजा३२३ ४५॥ ३०॥

[इति] पंचदशः प्रपाठकः॥

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

५४१. अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात्॥

१. औ५हो४हा५यि५। अ५यो४हो५यि५। पवापवस्वैनाव२ सू२३नी२। अ३ँहोरुयि२। इ३हा२। ई३ँया२। मा२श्च२त्व२ इंदोसरसिप्र२धा२३न्वा२। अ२३ँहोरुयि२। इ३हा२। ई३ँया२। ब्र२ध्नश्चिद्यस्यवातोन२जू२३ती२म्२। अ३ँहोरुयि२। इ३हा२। ई३ँया२। पुर२रु२मेधाश्चित्तकँवेन२रा२३न्धा२त्२। औ३ँहोरु यि२। इ३हा२। ई२। या३२३४। अ५हो५वा५। ए२३। दी२ दि३ही२॥ १॥

२. अ५यो४हा५यि५। प५वो४हा५यि५। पवस्वैनाव२सू२३नी२। इ२हो२इ२या२३। ई३या२। मा२श्च२त्वइन्दोसरसिप्र२धा- २३न्वा२। इ२हो२इ२या२३। ई३ँया२। ब्र२ध्नश्चिद्यस्यवातोन२ जू२३ती२म्। इ२हो२इ२या२३। ई३ँया२। पुर२रु२मेधाश्चित्त- कवेन२रा२३न्धा२त्२। इ२ हो२इ२या२३। ई२। या३२३४। औ५हो५वा५। ए२३। दी२ दया२३४५त्५॥ २॥

३. हा२ओ३२३४वा५। २। हा२३ओ२३४वा५। हा२उ२वा२। अ२यापर२वापर वर२स्वै२नावसू२नि२। इह२इ२। हिया४२। इहा२। २। मा२श्च२त्वइन्दो२सरसि२प्रध२न्व२। इह२इ२।

हिया४२ु।इहा२।२।इ४हा२३।हा२ुओ३२३४वा५।२।हा२३
ओ३२३४वा५।हा२उ२वा२।ब्र२ध्नश्चि२द्यस्य२वातोनजू२
तिं।इहइ२हिया४२ु।इहा२पु२रु२मेधा२ँश्चि२त्तकवे२नरन्धा२
त्२।इह२इ२।हिया४२ु।इहा२।इहा३२३४५॥ ३ ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः ॥

५४२. महत् तत् सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽ वृणीत देवान्।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽ जनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥

१. म२ह२त्त२त्सो२मो२म२हि२ष२श्चा२३कारा४२ु।अ२पां२य२
द्ग२र्भो२वृ२णी२ता२३दायिवा४२ुन्२।अ२द२धा२दिं२द्रे२
प२व२मा२ना२३ओजा४२ुः।अ२ज२न२य२त्सूर्ये३ँज्यो३२३।
ति२रिं३दा२उ२वा२३।ए२३।अजन२य२त्सूर्ये२ज्योति२रि।
दू३२३४५ः॥ ४ ॥

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः ॥

५४३. असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा।
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्वच्छ॥

१. अ२साअ२३हो२। जि२वाक्वा४२ु। रथ्र्ययिया२३४। त्था५।
जा३२३४५। उ५। धि२याअ२३हो२। म२नोता४२ु। प्रथमा
मा२३४।नी५।षा३२३४५।द२शाअ२३हो२।स्व२ सारा४२ुः।
अधिसानो२३४।अ५।व्या३२३४५यि५।मृ२जाअ२३हो२।
ति२वाह्नी४२ुम्२। सदनायिषू२३४। अ४च्छ५३२उ२।
वा२३४५॥ ५ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
५४४. अपामिवेदूर्मयस्तर्त्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चाच विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥

१. अ५पा४मि५वे४दू५र्म्म४य५स्तौ४। हो४वा४हा५यि५। तु३रा२णा३२३४ः। हा३हो२यि२। प्रमनी२। षाः। ई२र२ते२३। सो२म३म५। च्छा२३४हा३हो२यि२। न२म२स्य। तायिः। उपचा२३। य२न्ति३स५म्५। चा२३४। हा३हो२यि२। चाच२ वि२। शा। ति२ यु२श३ती२रु३श५। ता२३४म्४। हा३ हा२३४। अ५हो५वा५। वा२३हाऽ२३४५ः॥ ६॥

ऋषिः—अन्धीगुः श्यावाश्विः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५४५. पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥

१. पु५रो५जि५ती५। वो२अं२धा३२३४सा५ः। सु२तायामाऽ२द२या२३ऽ३वायि२३। त्ना३२३४वे५। अपश्वानाऽ२ऽ२श्न२था२३ऽउवाये२३। ष्टा३२३४ना५। सखायोदी ऽ२र्घ२जी२३ऽउवाये२३। ह्वी३२३४या५ म्५॥ ७॥

२. पु५रो५जि५ती५। वो२३ओंन्धा२३सा२ः। सूता२य२मा४२उ। ऊ४२उ। हा४२उयि२। ऊऽ२। दा२३यायित्ना२३वे२। आपश्वा२-ना४२उम्। २। ऊ४२उ। हा४२उयि२। ऊऽ२। श्ना२३थायिष्टा२३ना२। साखा२यो२दा४२उयि२। ऊ४२उ। हा४२उयि२। ऊऽ२३। घाऽ२उजी३२३४अ५हो५वा५। ए२३। ह्वियाऽ२३४५म्५॥ ८॥

३. पु५रो५हा५हा५उ५।जा३२३४यि४ती५।वो२आऔ२३हो२३।
धा४सा५ः। सु२ताअ२३हो२३। या४मा५६। हा५उ५वा५।
द२यि२त्वर्वें२।उपा२।अपश्वा्नं१श्वथा२ऽयिष्टा२३ना२।स२
खाऔ२३हो२३।यो४दा५६।हा५उ५वा५।घ२जि२ह्वियम्।
उपा३२३४५॥ ९॥

४. पु५रो४जि५ती५वो५अं४ध५स५ः।उ४वा४हा५यि५।सु२ताय
मादयित्वव उवाऽ२३होयि।अपश्वानं१श्वथिष्टनउवाऽ२३होयि।
साखा२यो२दायि।घाजि२ह्वा३२३४५या५६५६म्६।सु२वृ२
क्तिभि२र्नृ२मादनं२भरे२रँषु३वा२ऽऽ॥ १०॥

५. पु३रो२३ऽ।जी२३ती४।वो४अ५।धा२३स४ः।ए४हि४या५।
सू। तायमादा। यि२। त्वा४२ुयि२। एुहिया४२ु। अ२ प२
श्वानां१श्वा२३थी४ऽ३। ष्टा३२३४ना५। ऐ२हा४२ुयि२।
एुहिया४२ु।स२खा२योदायिर्घा२३जी४ऽ३।ह्वी२३४५यो५६
हा५ यि५॥ ११॥

६. पु५रो५जि५ती५वो५ऽं४धा४सा५ः।सु२तायामादाऽ२३या२।
हुम्मा४२ुऽ२। त्ववेअपश्वानं१श्व२थि२ष्ट२न२। साखा२३उ२
वा२। यो४२ुदी। घाऽ२३जी२। ह्वियाम्। अऽ२३हो४वा५।
हो४ऽ५यि५डा५॥ १२॥

ऋषिः—नहुषो मानवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
५४६.अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे॥

१. अ२यं२पूषोहो।रा२यिर्भगाः।सो२म२ष्पु२ना२३।नोआ२३ ऋ३षा४ऽ५ता५६५६यि६। प२ति२र्व्विश्वा२हो। स्या२ भूमनाः। वि२य२ख्य२द्रो२३। दासी२३ऊ४ऽ५भा५६५६ यि६॥१३॥

२. अ५य५म्पू५षा५।२।र२यि२र्भगाः।सो२म२ष्पूना४२।नो२ अ२ऋ२षतायि२पति२र्व्वायिश्वा४२।ओस्याभू२ऽमाना४२ः। ओयिवियख्या ऽ२३द्रो२।दासीउ२भ२।इडाऽ२३भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५ डा५॥१४॥

३. अ४यं३पू४षा५। होर। र३यि४र्भ४गा५६ए५। सोमा४२ ष्पुनाऽ२न३आ२३४५। षा३२३४ति५। पतिर्व्विश्वस्य२ भूमन२ः। वि२यख्याऽ२३द्रो२। द२सीऊऽ२३भा२३४ऽ३ ओऽ२३४।५।यि५डा५॥१५॥

ऋषिः—ययातिर्नाहुषः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५४७.सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥

१. सु५ता५सो५मा५धु२मा२३त्त२मा२ः। सोमाइं२द्रा२३य२ मा२३।ए२३।दि२न३आ२।पवायित्र२वा२३न्तो२३।ए२३ क्ष२र३न्ता२। दायिवाऽन्गा२च्छा[1]२३तु२वा२३ः। ए२३। म२दा३आ२॥१६॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'ऽना२' इति पाठोऽस्ति, स चानवधानत्वेनैव। —सम्पादकः

२. सु५ता४सो५म४धु५म५त्त५मा४ः। सोमा४२ु। इंद्राऽ२ु। य३मा२३४५। दी३२३४ना५ः। प२वित्रवं२तो२अ२क्ष२ र२ुन्२ु। दे३वा३न्गा२च्छा। तु२वोमाऽ२३दा२३४ऽ३ः। ओंऽ२३४५ यि५। डा५॥ १७॥

३. सु५ता४सो५म४धु५म५त्त५मा५ः। सो४मा४इ५न्द्रा५। य२मं२-दिनः। पार्वित्रावा४२ु। तोअक्ष२र२न्२। दायिवान्गाच्छौ२वा२ु। तू३२३४वा५ः। म२दा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५ डा५॥ १८॥

४. सु५ता४सो५म४धु५म५त्त५मा५ः। सो४मा४हा५उ५। ई२र्द्रॉ३-यार्मॅन्दिनाऽ२ुः। इं३द्रा२३होयॅमाऽ२ुन्दा३२३४यि४ना५ः। प२वि२त्र२वा३न्तोऑक्षाराऽ२ुन्२ु। त्र३वा२३होतोऽ२ुक्षा३२ ३४ रा५न्५। दे२वा२न्ग२च्छा२३न्तूवो२ऽमादाऽ२ुः। दे३वा२३ न्३ होयि। गच्छो३२३४हा५। तुऽ२ुवा३२३४अ५हो५वा५म२ दा२३आऽ२३४५॥ १९॥

५. सु५ता५सो५म५धु५म५त्त५मा५६ए५। सो२मा२इं२द्रा३ॅया मॅन्दिना४२ुः। दायिना४२ुः। प२वि२त्र२वा३न्तोऑक्षारा४२ु न्२। क्षारा४२ुन्। दे२वा२न्ग२च्छा२३न्तूवो३ऽमादा४२ुः। मादाऽ२ुः। दे३वा२३न्३होयि। गच्छो३२३४हा५। तूऽ२ु वा३२३४अ५हो५वा५। म२दा२३ईऽ२३४५॥ २०॥

६. सुतासोमा२३हा२ु। धु३म२त्तामा४२ुः। सोमाइंद्रा२३हा२ु। य३मं३दायिना४२ुः। पवित्रवा२३हा२ु। तो३अ२क्षारा४२ुन्२। देवान्गाच्छा२३हा२ु। तु३वो२३होऽ२३४। वा५। मा४ऽ५दो५६ हा५यि५॥ २१॥

७. सु५ता५। सो३मा२३। हा२३हा२। धु३म२त्तामा॒ऽ२३४ः।
सो४मा५ः। इं३द्रा२३। हा२३हा२। य३मं२दायिनाऽ२३४ः।
प४वि५। त्र३वा२३। हा२३हा२। तो३अ२क्षाराऽ२३४न्४।
दे४वा५ न्५। ग३च्छा२३। हा२३हा२। तु३वो२३होऽ२३४।
वा५। मा४ऽ५ दो५६हा५यि५॥ २२॥

८. सु५ता५सो२३मा४धु५म४त्त४मा५ः। सो२मा इं२द्रा। य२मं२
दिनः। पावा२ओं३२३४वा५। त्र२वं२तो२अ२क्ष२र२न्२।
दे३वा३न्ग२च्छा। तु२वोमाऽ२३दा२३४ऽ३ः। ओंऽ२३४५
यि५। डा५॥ २३॥

ऋषिः—मनुः सांवरणः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५४८. सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः॥

१. हा४उ४सो४मा५ः। प२वा३न्ताइन्दावा२उ२। वा२३। हा२उ२
वा२। अ२स्मभ्यङ्गातू[1]वित्तोमा२उ२। वा२३। हा२उ२वा२।
मि२त्रास्वानाआरे२ऽपासा२उ२। वा२३। हा२उ२वा२३४।
सु४वा५। धि३या२३ः। सूऽ२३वा४ऽ३ः। वा२३४५यि५दो५६
हा५यि५॥ २४॥

२. सो५मा५ष्प३वं२त३इ४न्द५वा५ः। अ२स्माभ्य२ङ्गा। तु२वि३
त्त२मा५ः। मायित्रा२ओ३२३४वा५। स्वा२नाअरे२पस४र२ः।
सु३वा३धि२। य[2]ः। सु२वर्व्वाऽ२३यि३दा२३४ऽ३ः। ओऽ२
३४५यि५। डा५॥ २५॥

---

१. 'गार्तू' इति मूलगानपाठः।
२. अत्र कतमा संख्येति हस्तलेखेऽस्पष्टत्वान्न ज्ञायते। —सम्पादकः

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

५४९.अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम्।
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥

१. अ५भी५नो५वा५ । जाऽ२ुसा३२३४अ५हो५वा५ । ता३२३४ मा५म्५ । र२यिमऋ२ष२श२त२स्पृह२म्२ । इंदोसहस्रभाऽ२३ हो । णँसा४२ुम् । २ । तुविद्युम्नम्वि *भाऽ२३होये२३ । स२ह२ मो३२३४५यि५डा५ ॥ २६ ॥

२. अ५भी५नो५वा५ । जासात२म२म्२ । र२यिमाषाउवाऽ२३ । होवा२३हा२यि२ । श२त२स्पृह२म्२ । इंन्दो२ँस२ । हाउवाऽ२३ । होवा२३हा२ । स्रभर्णसम् । तुवायो२३ । द्यूऽ२ुम्ना३२३४ अ५हो५वा५ । वि२ भा२सहा३२३४५म् ॥ २७ ॥

३. अ२भी४२ुहोयि । नो२वा२जा२३सा४ऽ३ । हा२ुता३२३४ मा५म्५ । र२यी४२ुः२होयि । अ२ऋ२ष२शा२३ता४ऽ३ । हा२ु स्प्रे३२३४हा५म्५ । इं२दो४२ुहोयि । स२ह२स्रा२३ भा४ऽ३ । हा२ुर्णा३२३४ सा५म्५ । तु२वा४२ु । होयि । द्यु२ म्नंवी२३ भा४ऽ३ । हा२३ सा४ऽ५हा५६५६म्६ ॥ २८ ॥

४. अ२भीनोवा२३ऽ२३४ । ज४सा५ । त३मा२३म्३ । र२यिम-ऋषा२३ऽ२३४ । श४त५ । स्पृ३हा२३म्३ । इं२दोसाहा२३ऽ २३४ । स्र४भ५ । ण३सा२३म्३ । तु२वायिद्यूम्ना२३ऽ२३म्३ । वि४ भा४ऽ५स५हा५उ५ । वा५ ॥ २९ ॥

* 'तुविद्युम्नन्विभा' इति मूलगानपाठः । —सम्पादकः

५. अ४भी४नो४वौ४हो४ऽ५ज५सा५त४मा४म्४। र४यि४म४ ऋ४षौ४हो४ऽ५श५त५स्पृ४हा४म्४। इं४दो४स४हौ४हो४ऽ५ स्त्र५भ५र्ण४सा४म्४। तु४वि४द्यु४म्नौ४हो४ऽ५वि५भा५स४ हा४म्४। स४ह५म्५। तु५वि५द्यु५म्नं४वि५भा५६। हा५उ५ वा५। स२हा२३ मेऽ२३४५॥ ३०॥

ऋषिः—ऋजिष्वाम्बरीषौ॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

५५०.अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः॥

१. आ३२३४भी५। ओयिनवन्तआद्रू२ऽहा४२ुः। ओयिप्रिय मिंद्रस्य कामा२ऽया४२ुम्२। ओयिवत्सन्नपूर्व्वआयू२ऽनी४२ु। ओयि। जातꣳरिहंतिमो२ऽ२३४। वा५। ता४ऽ५रो५६हा५ यि५॥ ३१॥

२. अ५भी५। न३वा२३२। त४आ४ऽ५द्रु५हा५ः। प्रि२या२मिं२-द्रा२३। स्याका२ुमा३२३४या५म्५। व२त्स२न्न२पू२३। र्व्वाआ२ुयू३२३४नी५जा। ता२३ꣳ३होयि। रिहा२३हो। ति२माताऽ२३रा२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ ३२॥

३. अ५भी४न४वं५ते५अ५द्रु४ह५ः। ओ४हा४यि४। प्रि५य४मिं४-द्र५स्य५ का४मि५य५म्५। ओ४हा४यि४। व५त्स४न्न४पू४-र्व्व५आ४यु५नि५। अ५ हो४वा४हा५यि५। जातꣳरिहौ२वा२ु। ती३२३४मा५। त२रा। अ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ३३॥

---

* 'तुविद्युम्नविभा' इति मूलगानपाठः। —सम्पादकः

ऋषिः—प्रजापतिर्वाच्यो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

५५१.आ हर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम्।
शुक्रा वि यन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे महीयुवः ॥

१. आ३हा२३। ओंऽ२३४वा५। र्य२तायधृ२ष्णवेँ२। ध३नू२३ः। ओंऽ२३४वा५। त२न्वं२ति२पौ२ंसिय२म२। शु३क्रा२३ः। ओंऽ२३४वा५। वियन्त्यसुरा२य२निर्२णिर्जे२। वि३पा२३। ओऽ२३४ वा५। अग्रे२ँम२ ही२युवाऽ२३४५ः ॥ ३४ ॥

२. हा२३हा२यि२। आहर्यता२। या३२३४धृ५। हा२३हा२३४। अ५हो५वा५। ष्णा३२३४वे५। हा२३हा२यि२। धनूष्टान्वा२। ती३२३४पौ५। हा२३हा२३४। अ५हो५वा५। सी३२३४या५ म्५। हा२३हा२यि२। शुक्राविर२य२। ताअँसुरा२। या३२३४ नी५। हा२३हा२३४। अ५हो५वा५। णी३२३४जे५। हा२३हार यि२। विपाम। ग्रा२यि२। मा३२३४ही५। हा२३हा२३४। अ५हो५वा५। यू३२३४वा५ः ॥ ३५ ॥

३. आ४ह५र्य५ता४य५धृ५ष्णा४व५आ४। धनुष्टा२ऽन्वा४२। तिपौ२ंसा२ऽया४२म्२। शुक्राऽवि२य२। ताअँसुरा२३। यानीऽ२र्णा३२३४यि४जा५यि५। विपा। मा२ऽग्रा४२यि२। ओयि। माऽ२३ ही४ऽ३। यू२३४५वो५६हा५यि५ ॥ ३६ ॥

४. आ३ऽ४ह५र्य५। ता३ऽ४य५धृ५। ष्णा२३४वे४। ध४नु४ष्ट५ न्वा५। ति२ पौ२ंसि३या२मू२। शुक्राविर२य२। ताअँसुरा२। य३ना२ उ२वा२३। णी३२३४जे५। वायिपा२३ः३हा२यि२। आग्रे२३हा२यि२। म२ही२यूऽ२३वा२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५ यि५। डा५ ॥ ३७ ॥

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥
स्वरः—निषादः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२
५५२.परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
२ ३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति ॥

१. प३रि४त्यः३ह४र्य४तः३ह४रि५म्५ । पाऽ२३४ । रि४त्यः४हौ४ होऽ५र्य५त५ः५ह४रा४यि४म्४ । ब४भ्रुं३पु४नं४ति४वा३रे४ ण५ । बाऽ२३४ । भ्रुं४पु४नौ४होऽ५न्ति५वा५रे४णा४ । यो३ दे४वा३न्वि३श्वाः४इ३त्प४रि५ । योऽ२३४ । दे४वा४न्वौ४ होऽ५आ५ः५इ५त्प४ रा४यि४ । म३दे४न४स४[1]स४ह३ ग३च्छ४ति५ । माऽ२३४ । दे४न४सौः होऽ५ह५ग५ । च्छाऽ५तो५६हा५यि५ ॥ ३८ ॥

ऋषिः— कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥
स्वरः—निषादः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
५५३.प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥

१. प्र२सुन्वाऽ२३ना४य४अ५न्ध५सा५ः । मर्त्त२ः । नवाऽ२ । ष्ट३ त२द्वा३२३४चा५ः । अ२प२श्वा२न२म३रा२ । धा३२३४सा५ म्५ । ह२तामाऽ२३ख२म्२ । न३भ्रे२३गा४ऽ५ वा५६५६ः ॥ ३९ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

---

१. अत्र मूलगानपाठे 'स४' इत्यधिकं प्रतीयते । —सम्पादकः

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥
स्वरः—निषादः ॥

५५४.अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद् विचक्षणः ॥

१. आ२भि२प्री३२३४या५।णी२पा२वा३२३४ता५यि५।चा२नोहिता२३ः। ना२मा२नी३२३४या५। ह्वो२अ२धी३२३४ये५।षू२वर्द्धताये२३।आ२सू२री३२३४या५।स्या२ब्रे२हा३२३४ता५ः।ब्रे२हन्नधाये२३।रा२थ२वा३२३४यि४ष्वा५।चा२मा२रू३२३४हा५त्५। वि२चा२३ऽउवाऽ२३। क्षा३२३४णा५ः॥ १ ॥

२. ए४ऽ५।अ४भि४प्रि५या५ऽ२।णि३प४व४ता५यि५।ए४ऽ५। च४नो४ हि५ता५ः।ए४ऽ५।ना४मा४नि५या५ऽऽ२।ह्वो३अ४। धि४य५ यि५।ए४ऽ५।षु४व४र्द्ध५ता५यि५।ए४ऽ५।आ४ सू४रि५या५ऽ२।स्य३बृ४ह४ता५ः।ए४ऽ५।बृ४ह४ न्न४धी५। ए४ऽ५।र४थं४वि५ ष्वा५ऽ२।च३म४रु४हा५तू५।ए४ऽ५। वि४च४क्ष५णा५ः।हो४ऽ५ यि५।डा५॥ २ ॥

३. अ५भ्यौ५हो५वा५हा५यि५प्रि५या४णी५।पवता२यि२चा३२-३४नो५।हि२ताः।ना२मानि२य२ह्वो२अ२धि२ये२षु२व२र्द्ध२तायि।आ२सूर्य२स्य२बृ२ह२तो२बृ२ह२न्न२धायि।र२थम्। वायिष्व२ञ्च२म२रुह२त्२।वि२चा२३ऽउवाऽ२३।क्षा२३णाऽ२३४५ः॥ ३ ॥

४. अ२भि२प्रिया।णी२पवतायि।होयिहोवा२३होये२३४।च४नो५हि५ता४ः।हा५हो४।वा४हा५यि५।ना२मा२निया।ह्वो२अधियायि। होयिहोवा२३होये२३४। षु४व५र्द्ध५ता४यि४।

हा५ हो४। वा४हा५यि५। आ२सू२रिया। स्या२बृहताः। होयिहोवा२३ होये२३४। बृ४ह५न्न५धी४। हा५हो४। वा४ हा५यि५। र२थं२ विष्वा। चा२मरुहात्। होयिहोवा२३ होये२३४। वि४च५क्ष५ णा४ः। हा५हो४। वा५६हा५उ५। वा५। वा२जीजिगी२३ वाः२ऽऽ॥ ४॥

५. अ२भि२प्रिया। णी२पवतायि। चा२नोहिताः। होवा२३होयि। ना२मा२निया। ह्वो२अधियायि। षू२वर्द्धतायि। होवा२३होयि। आ२सू२रिया। स्या२बृहताः। ब्रे२हन्नधायि। होवा२३हो। र२-थ२म्विष्वा *। चा२मरुहात्। वी२चक्षणाः। होवा२३होऽ२। वा३२३४अ५हो५वा५। वा२जीजिगी२वाविश्वा२धना२ँ नी३२ ३४५॥ ५॥

६. अ५भ्यो४वा४। प्रि२याणिपवतायि। च२नो२हायिता४ऽ२ः। नामानियह्वोअधियायि। षु२व२र्द्धाता४ऽ२यि२। आसूर्यस्य बृहतो। बृ२ह२न्नाधीऽ२३। राथा२३म्३वा४यि४ष्वा५। च२म२ रूहाऽ२३त्३। वायिचा२३क्षा४ऽ५णा५६५६ः॥ ६॥

ऋषिः—ऋषिगणः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥
स्वरः—निषादः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १२
५५५. अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद् देवेषु हरयः।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वि चिदश्नाना इषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः॥

१. अ२चो२दासोऽ२३। नो२ध२नूवाऽ२३। तू२इन्दवाः। प्र२स्वा२ नासोऽ२३। बृ२ह२द्दायिवेऽ२३। षू२हरयाः। वि२चि२

* 'न्विष्वा' इति मूलगानग्रन्थे पाठः। —सम्पादकः

दाश्नाऽ२३। ना२इ२षायाऽ२३। आ२रातयाः। अ२र्यो२ नास्साऽ२३।तू२स२ नायिषाऽ२३।तू२नोधियार३ऽउवाऽ२३ ४५॥७॥

२. आचो२द३सो२ु।नो३ध४नु४वं४तू५।इं४द४वा५ः।प्रास्वा२- ना३सो२ु। बृ३ह४द्दे४वे४षु५। ह४र४या५ः। वायिचि२द३ श्ना२ु।ना३इ४ष४यो४अ५।रा४त४या५ः।आर्या२न३स्सा२ु। तु३स४नि४ष५।तु४नो४ऽ५धि५या५उ५।वा५॥८॥

३. हा२उ२हो२वा२३हा२यि२। अ२चो२द२सो२र्नो३धा। नु२ वा२३न्तू४ऽ३। ई२द२वा३२३४५ः।हा२उ२हो२वा२३हा२ यि२।प्र२स्वा२ना२सौ२ब्रे२३हात्।दे२वे२३षू४ऽ३।ह२र२ या३२३४५ः।हा२उ२हो२वा२३हा२यि२।वि२चि२द२श्ना२ र्नो३आयि।ष२यो२३आ४ऽ३।रा२त२या३२३४५ः।हा२उ२ हो२वा२३हा२यि२। अ२र्यो२न२स्सं२तू२३सा। नि२षा२३ न्तू४ऽ३।नो२धि२या२३ऽउ२वा२३४५॥९॥

४. अ५चो४हा४यि४।दासोनोधनुवा।तु२ई२दावा४२ुः।प्रस्वाना- सोबृहद्देवायि। षु२ह२राया ऽ२ुः। वि३चो३२३४हा५यि५। अ३श्नो३२३४हा५यि५।ना२इ२ष२य२ुः।अ३रो३२३४हा५ यि५।ताया२ः।अ२र्यो३२३४हा५यि५।न३स्सो३२३४हा५। तू२सा२ुनी३२३४षा५। तूर्नो३ उ३वा२३। धी३२३४ या५ः॥१०॥

५. अ५चौ५हो४वा५।दासोनोधनुवा।तु२ई२दावा४२ुः।प्रस्वाना- सोबृहद्देवायि।षु२ह२रायाऽ२३ः।वायिची२३दा४श्ना५।ना२ु इ२षा३२३४या५ः।हो२ुयि२ु।अ३रा२ुता३२३४या५ः।हो२३

यि३ । आर्यो२३ना४स्सा५ । तू२सा२ुनी३२३४षा५ । होर२ु ।
तु३नो२३धा४ऽ५या५६५६: ॥ ११ ॥

६. अ५चो४ । वा४हा५यि५ । दासोनोधनुवा । तु२इ२न्दावा४र२ु: ।
प्रास्वानासोबृहद्देवायि । षु२ह२राया५२३: । वा५२३यि३ची२
त्२ । आऽ२३श्ना२३४ । ना३इ४ष३यो४अ४रा५ । ता२३या२: ।
आऽ२३र्यो२ । नाऽ२३स्सा२३४ । तु४स३नि४ष५ । तु३नो२३
धा४ऽ५या५६५६: ॥ १२ ॥

ऋषि:—कविर्भार्गव: ॥ देवता—पवमान: सोम: ॥ छन्द:—जगती ॥
स्वर:—निषाद: ॥

५५६. एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टम: ।
अभ्यृ३तस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनव: ॥

१. ए२षप्रकोशे४र२ु । म२ । धुमा॑ऽ२ु । अ३चा२ुयि२ुक्रा३२३४
दा५त्५ । इं२द्रास्य२वाज्रा४र२ु: । व२ । पुषोऽ२ु । व३पु२ष्टा३२
३४मा५: । अ२भाऽऋ२तास्या४र२ु । सु२ । दुघाऽ२ु: । घृ३ता२ु
श्चू३२३४ता५: । वा२श्राअ२ऋ२षान्ती४र२ु । प२ । यसाऽ२३ ।
च३धा२३यि३ना४ऽ५वा५६५६: ॥ १३ ॥

ऋषि:—ऋषिगण: ॥ देवता—पवमान: सोम: ॥ छन्द:—जगती ॥
स्वर:—निषाद: ॥

५५७. प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम् ।
मर्यइव युवतिभि: समर्षति सोम: कलशे शतयामना पथा ॥

१. प्रो२ुया३२३४सी५त्५ । इंदुरिन्द्राऽ२३ । स्या४ऽ३नि२ष्कृ३
त५म्५ । स३खा२ुस२ख्यु५: । नप्रमिनाऽ२३ । ती४ऽ३स२ङ्गि३
र५म्५ । म३र्य्य२इ३व५ । युवतिभाऽ२३यि३: । सा४ऽ३म२ऋ२

षइतिप।सोइमरष्कइलाप।शेशतयाऽ२३।मइना२३पा४ऽ५
थाप६प६॥ १४॥

२. प्रोइया४सी४दिंइदु४रिंइद्र४ऽयपनिपः। कृइता२म्२। कृ२
ता३२३४५म्५।सइखा२३ऽ२३४।स४ख्युपर्न्न४प्र४ मिपनाप
तिपसपम्प। गि४रापऽपगि४रापम्प। मइर्य्या२३ऽ२३४ः।
इ४वपयुपवपति४भिपसा४मप।ष४तापयिपष४ तापयिप।
सो३मा२३ऽ२३४ः। क४ल४शेपशप [1]त४यापा। मइना२३
पा४ऽपथा[2]प६प६॥ १५॥

३. प्रो२अ२यासायित्।ई२दु२रिंद्रा।स्या४२निष्कृताम्।स२खा२
सख्यूः।न२प्रमिना।ता४२यि२सङ्गिराम्।म२र्य्य२इवा।यु२व२
तिभा[3]यिः।सा४२मत्रृषतायि।सो२म२ष्कला।शे२शतया।
मा४२ना पथा२३ऽ।ऊवाऽ२३४५॥ १६॥

४. प्रो२अ२यासायित्। इं२दु२रिंद्रा। स्या२निष्कृताऽ२३म्३।
सइखा२सइख्युपः।नइप्रा२ मिइनाप। तिइसं२गा३२३४-
यि४रापम्प। म२र्य्य२इव। यु२व२तिभायिः। सा२मत्रृष
तायि२३। सोइम२ष्कइलाप। शेइशा२तइयापमइना२३
पा४ऽपथा[4]प६प६॥ १७॥

५. आ४२यि२। इया। प्रोअयासायिर्दिन्दुरिन्द्राऽ२३। स्या४ऽ३
नि२ष्कृइतपम्प।सखासख्यूर्न्नप्रमिनाऽ२३।ती४ऽइस२ङ्गिप-
रपम्प।पअमर्य्यइवायुँवतिभाऽ२इयिइः।सा४ऽइम२त्रृ२षइतिप।

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'त४' इत्यस्य स्थाने 'न४' इत्यशुद्धं लिखितम्।

२. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'था' इत्यस्यस्थाने 'या' इत्यशुद्धं लिखितम्।

३. अत्र 'तिभा' इत्यस्य स्थाने 'विना' इत्यशुद्धपाठो लिखितः।

४. 'था' इत्यस्य स्थाने 'या' इति पाठो गानग्रन्थे, स च लिपिकरप्रमादजन्य एव।

५. 'मर्य' इति पाठो मूलवेदे। —सम्पादकः

आ४रुयिर ।इया।सोमष्कलशेर५शतया५२३ ।म३ना२३पा४५५-
था५६५६ ॥ १८ ॥

ऋषिः—रेणुर्वैश्वामित्रः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

५५८.धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा ॥

१. धर्त्तादायिवा२३ । ओ४वा४५५एप । प२व२ते२कृ२त्वी२३-
योरासा२३ । ओं४वा४५५एप । द२क्षोदायिवा२३ । ओ४वा४५
५एप । ना२म२नु२मा२दी२३योन्रेभा२३ । ओ४वा४५५एप ।
ह२रायिस्साज़ा२३ । ओ४वा४५५एप । नो२अ२ति२यो२ ना२३
सात्वाभा२३ । ओ४वा४५५एप । वृ२थापाजा२३ । ओ४वा४५५
एप । सि२कृ२णु२ षा२यि२न२दायिषूवा२३ । ओ४वा४५५
एप । हो४५५यिप । डा५ ॥ १९ ॥

२. ध५र्त्ता५अ५हो४हो४हा५यि५ । दि२वः । पवतेका२उ । अ३र्हौ३
हा२३ । हा२ । त्वि२यो२सो । दक्षोदेवा२उ । अ३र्हौ३हा२३ । हा२ ।
नामनुमा । दि२योनृभायिः । हरायिःसाज़ा२उ । अ३र्हौ३हा२३ ।
हा२ । नोअतियो । न२सत्वभायिः । वृथापाजा२उ । अ३र्हौ३
हा२३ । हा२ । सि२कृ२णूषा२उ । अ३र्हौ३हा२३ । हा२यि२उ ।
न३दी३षु२वा । अ२र्हौ३हा२३ । हा२३४ । अ५हो५वा५ । ए२३ ।
न२दीषुवा२५५ ॥ २० ॥

ऋषिः—वेनो भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥
स्वरः—निषादः ॥

५५९.वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः।
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्यविशन्मनीषिभिः ॥

१. वृ२षा२माती॒ऽ२३ । ना२म्प२वाता॒ऽ२३यि३ । ए२३ । वि२च२क्ष२ण२ए२३ । सो२मो२आह्ला॒ऽ२३म्३ । प्र२त२रायिता॒ऽ२३ । ए२३ । उ२ष२सा२न्दि२व२ए२३ । प्रा२णा२सायिन्धू॒ऽ२३ । ना२ङ्क२लाशाः॒ऽ२३ । ए२३ । अ२चि२क्र२द२दे२३ । इं२द्र२स्याहा॒ऽ२३ । दि२या२ वायिशा२३म्३ । ए२३ । म२नी२षि२भि२रे२३४ऽ३ । ओं॒ऽ२३४५ यि५ । डा५ ॥ २१ ॥

२. वृषा२म२ती२नाम्पव । तायिवा२ऽयिचा॒ऽ२३४ । क्ष५ । णा३२-३४५ः । सोमो२अह्ला२म२प्रतरी२ । तोवा२ऽसा॒ऽ२३४म्४ । दि५ । वा३२३४५ः । प्रा२णासिंधू२ना२ङ्क२ल । शाःआ२ऽचा॒ऽ२३४यि४ । क्र५ । दा३२३४५त्५ । आयिंद्रस्य२हार्दियावि । शान्मा२ऽना॒ऽ२३४ यि४ । षि४भा५ऽ२ । उ । वा२३४५ ॥ २२ ॥

३. वृषा४२उमता४२उयि२ । नाम्पवतेवि२चक्षा॒ऽ२३णा२ः । सोमो४२उअह्ला४२उम्२ । प्रतरि । तोष२सान्दा॒ऽ२३यि३वा२ः । प्राणा४२उसिंधू४२उ । नाङ्कल२शाःअ२चिक्रा॒ऽ२३दा२त्२ । इंद्रा४२उस्यहा४२उ । दियाविशन्म२नीषा॒ऽ२३यि३भा२३४ऽ३यि५ः । ओ॒ऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥
स्वरः—निषादः ॥

५६०. त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि ।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत ॥

१. त्रा॒ऽ२३४यि४ः । अ४स्मै५स५प्त४धे५न४वो५दु५दौ५ । हो४ह्ला४यि४रा५यि५ । स२र्त्याँमाशिरंपरमायि । वि२यो२मानी४२उ ।

चरत्वार्यन्या भुवना। निरनिरर्णायिजाऽ२३यि३। चारूरु णा३२३४यि४चा५। क्रे२यदृतै२ः। आवा२३र्द्धा४ऽ५ता५६ ५६॥ २४॥

ऋषिः—वत्सप्रीः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

५६१.इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह।
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः॥

१. इंरद्रा। यरसोरमरसुरषुरता२३ष्पा४ऽ३रि२स्त्र३व५। अ२पा। मी२वा२भ२व२तु२रा२३क्षा४ऽ३सा२स३ह५। मा२तायि। र२स२स्य२म२त्स२ता२३द्वा४ऽ३या२वि३न५ः। द्र२वायि। ण२ स्वं२त२इ२ह२स२। तु३वा२३यिं३दा४ऽ५वा५६५६ः॥ २५॥

२. इं४द्रा५य५सो५म५सु४षु५त५ष्प४र्यौ५। हो४यि४स्रा४वा५। अपामीवाभवतुरक्षसा२ऽसा२३हा२। मा ते रसस्य मत्सत द्वया२ऽवी२३नो२। द्रा३२३४वी५। णा३२३४स्वा५। ताइ२ह३ सा२३। हाऽ२३। तु३वा२३यिं३दा४ऽ५वा५६५६ः॥ २६॥

ऋषिः—अत्रिर्भौमः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥
स्वरः—निषादः॥

५६२.असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्॥

१. अ२सा२विसो। मो२अरुषोऽ२३४। वृ४षा५ह४रा४यि४ः। रा२जे२वदा। स्मो२अभिगाऽ२३४ः। अ४चि५क्र४दा४त्४। पु२ना२नोवा। रा२ मतियाऽ२३४यि४। षि४अ५व्य४या४म्४।

श्ये२नो२नयो। निं२घृतवाऽ२३। त४मा४ऽ५स५दा५त्५।
हो४ऽ५यि५डा५॥ २७॥

२. आ२सा२ुवी३२३४सो५।मो२ुअ२रू३२३४षा५ः।वा२ऋ२-
षाहराये२३ः। रा२जे२ुवा३२३४दा५। स्मो२अ२भी३२३४
गा५ः।आ२चिक्रदाऽ२३त्३।पू२ना२ुनो३२३४वा५।रा२मा२ु
ती३२३४ये५। षी२अव्यया ऽ२३म्३। श्ये२नो२ु ना३२३४
यो५।निं२घा२ुर्त्ता३२३४वा५।त३मा२३।साऽ२ु दा३२३४
अ५हो५वा५।दे२३।दिवीऽ२३४५॥ २८॥

३. अ४सा५वि५सो४मो५अ५रुषो४वृ४षा५ह४।रा४यि४ः।रा४
जे५व५द५स्मो४अ५भि४गा४अ५चि५क्र५।दा४त्४।पु५ना५
नो४वा४र५म४त्ये५ष्य४व्य।या४म्४।श्ये५नो४न४ यो४निं५
घृ५त४। वा४। त३मा२३। साऽ२ुदा३२३४अ५हो५ वा५।
ए२३।दिवीऽ२३४५॥ २९॥

ऋषिः—पवित्र आङ्गिरसः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥
स्वरः—निषादः॥

२ ३२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
५६३.प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽ सिष्यदन्त गाव आ न धेनवः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्त्रिया निर्णिजं धिरे॥

१. प्रा४दे५।व२मच्छा२मधु२म२।त२आ४२ुयिं२द२वाः।आसि२
ष्या३२३४दा५।त२गावआ२।न२धा४२ुयि२न२वाः।ब२र्हि२
षा३२३४दा५ः।व२च२नावा२।त२ऊ४२ुध२भायिः।पारि२
स्रू३२३४ता५म्५।उ२स्त्रियानिर्णिजिन्धायिवाये२३।धा३यि३
रा२३४अ५हो५वा५।धा२३यि३राऽ२३४५ यि५॥ ३०॥

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र
५६४.अञ्ज ते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते॥

१. अं२जतायि। वि२यं२जतायि। स२मं२जाता४३युयि२। क्र२तुः२ रिहा। ती२मधुवा। भि२य२ञ्जाता४३युयि२। सिं२धो२रुच्छ्वा। से२पतया। त२मु२क्षाणा४३युम्२। हि२र२ण्यपा। वा२ष्प शुमाप्सू२गृभ्णता२३ऽउवाऽ२३४५॥ ३१॥

२. अं३जा२३हो। ते२३होयि। वि२यं२ज२ते२३सा४ऽ३मं२ज३-ता५यि५। क्र३तू२३ः३होयि। रि३हा२३हो। ति२म२धु२ वा२३ भी४ऽ३अं२ुज३ता५यि५। सिं३धो२३ऋ३होयि। उ३च्छ्वा२३ होऽ३। से२प२त२या२३न्ता४ऽ३मु२क्ष३ण५म्५। हि३रा२३ हो। ण्य३पा२३हो। वा२ष्प२शु२म२ु। प्सु३गा२३ भ्णा। ४ऽ५ ता५६५६। यि६॥ ३२॥

३. हा४वा४ञ्जा५। ताऽ२३४यि४। वि३यं ४ज५ते५स३मं४ ज५ ते५। एहि३या२। एहि३ या२३४। हा४उ४क्रा४तू५म्५। राऽ२ ३४यि४। हं४ति४म३धु४ वा४भि३यं४ज५ते५। एहि३ या२। एहि३या२। एहि३या२३४। हा४उ४सा४यिं४धो५ः। ऊऽ२३४ त्४। श्वा४से३प४त३य४न्त५मु५क्ष४ण५म्५। एहि३या२। एहि३या२३४। हा४उ४हा४यि४रा५। ण्याऽ२३[1]। पा४वा३ ष्प४शु३म४प्सु३गृ४भ्णा५ते५। एहि३या२। एहि३या २३४। हा५उ५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ ३३॥

१. अत्र 'ना४' इत्यनावश्यकपाठोऽधिकः प्राप्यते हस्तलेखे। —सम्पादकः

ऋषिः—चक्षुर्मानवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५६५. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद् वहन्तः सं तदाशत ॥

१. प२वित्रंते२विततं२ब्रह्मण२स्प२ते२३ । हुवेऽ२३ । २ । होवा२३ हा२३ । हा२यि२ । प्र२भुग्गात्रा२णि२परिये२षि२वि२श्वताऽ २३ः । हुवेऽ२३ । २ । होवा२३हा२३ । हा२यि२ । अतप्त२त२नू२ र्न्नेतदा२रॅमोअश्नु२ते२३ । हुवेऽ२३ । २ । होवा२३हा२३ । हा२ यि२ । शृ२तास२इद्व्ह२न्त२स्संतदा३ॅ । श२त२ । हुवेऽ२३ । २ । होवा२३हा२३ । हो२३४अ५ हो५वा५ । अ२र्क्कोदिवानाँरॅम्प२ र२मेवियोरॅमा३२३४५न्५ ॥ ३४ ॥

२. प२वित्रंते२विततं२ब्रह्मण२स्प२ते२३ । हुवायि । अ२होवा४२ु । प्र२भुग्गात्रा२णि२परिये२षि२वि२श्वताऽ२३ः । हुवायि । अ२ होवा४२ु । अतप्त२त२नू२र्न्नतदा२रॅमोअश्नु२ते२३ । हुवायि । अ२ होवा४२ु । शृ२ता२[स२]इद्व्हं२त२स्संतदा२रॅश२त२ । हुवायि । औ२ । होऽ२ु । वा३२३४ । अ५हो५वा५ । अ२र्क्कस्य२ दे२वाष्प२र२मेवियो२मा३२३४५न्५ ॥ ३५ ॥

[इति] षोडशप्रपाठकः ॥

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५६६. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥

१. इं५द्र५म५च्छा५ । सु२ताइमा२ु । अ३हो३२३४वा५ । वृषणं२ य२ । तूर्हरया२ु । अ३हो३२३४वा५ । श्रु२ष्टायिजा२ता । स२इं३

दरवाः। सुरवर्व्वाऽ२३यि३दा२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १॥

२. इं५द्र५म५च्छा५। सुरताइमा२३यि३। ताई२३मा२यि२। वृषणं२य२। तूहॅरया४२ुः। हारा२३या२ः। श्रुरष्टे२जा२र्ता३ साईन्दवा४२ुः। आयिंदा२३वा२३ः। सुवरा२३४। अ५हो५ वा५। विरदो२वी२३दाऽ२३४५ः॥ २॥

३. इं४द्र५म्५। इं५द्रा४म्४। अरच्छा२३सूता२ऽइमे४२ु। आयिमे४२ु। वृषणं२य२। तूहॅरया४२ुः। राया४२ुः। श्रुरष्टे२जा२ता३ँसा ईन्दवा४२ुः। दाऽ२वा३ः। सुवरा२३४। अ५हो५हा५वा५। विरदो२३विदाऽ२३४५ः॥ ३॥

४. इं३द्र४म३च्छ४सु४ता३इ४मे३वृ३ष४णं५यं५तु५हा५। हो२३४ऽ३। र२य३आ२। श्रूष्टा२उ२वा२। जाता२उ२वा२३४। स४इं३द४व५स्सु५वा५। हो२। विरद३ओ२३४५यि५। डा॥ ४॥

५. इं२द्रामा२३च्छ४सु५। तारुई३२३४मा५यि५। वृ२षाणं२या। तूहारुरा३२३४या५ः। श्रुरष्टायिजाता। सँईऽरुन्दा३२३४५। वा५६५६ः। सुरव२र्व्विदा३२३४५ः॥ ५॥

ऋषिः—पर्वतनारदौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

५६७. प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव।
द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम्॥

१. प्र२ध२न्वासौहोयि। अ२३हो३२३४वा५। म२जागृ२वि२ः। इं२द्रा२येन्दौहोयि। अ२३हो३२३४वा५। परिस्र२व२। द्यु२म२

त्तᳲशौहोयि। अ२३हो३२३४वा५। ष्म२माभ२२२। सु२व२ र्व्विदौहोयि।अ२३हो३२३४५वा५६५६।ऊ३२३४पा५॥६॥

२. प्र२धं२न्वासौहो। वा२३हो। म२जा२गृवी४२ुः। इं२द्रा२ येन्दौहो। वा२३होयि। प२रि२स्रावा४२ु। द्यु२मं२तᳲशौहो। वा२३हो। ष्म२मा२भारा४२ु। सु२व२र्व्विदौहो। वा२३होऽ२ु। वा३२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥७॥

३. अ२हौहोयि। प्र२ध२न्वासो४२ु। अ२हौहो। म२जा२गृवी४२ुः। अ२हौहोयि। इं२द्रा२यायिंदो४२ु। अ२हौहोयि। प२रि२ स्रावा४२ु। अ२हौहोयि। द्यु२मं२ताᳲशू४२ु। अ२हौहो। ष्म२मा२भारा४२ु। अ२हौहोयि। सु२व२ः। वाऽ२ुयि२ु। दा३२३४। अ५हो५वा५। ऊ३२३४पा५॥८॥

४. हुवा४२ुयि२। २। हुवाऽ२३होयि। प्र२ध२न्वासो४२ु। म२जा२-गृवी४२ुः। इं२द्रा२यायिंदो४२ु। प२रि२स्रावा४२ु। द्यु२मं२ताᳲ शू४२ु। ष्म२मा२भारा४२ु। सु२व२र्व्वायिदा४२ुम्२। हुवा४२ु यि२। २। हुवाऽ२३होऽ२ु। वा३२३४अ५हो५वा५। ऊ३२३४ पा५॥९॥

५. प्र२धन्वाऽ२३सो४म४जा५गृ५वि५ः। इंद्राऽ२ुया३२३४यिं४ दो५। ओयि। पा२३रायिस्रा२३वा२। द्युमाऽ२ुन्ता३२३४ᳲ४ शू५। ओष्मॅमाऽ२ुभा३२३४५रा५६५६। सु२व२र्व्विदाऽ२३४५ म्५॥१०॥

ऋषिः—त्रित आप्त्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

५६८. सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत।
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये॥

१. स२खा३ँयाआ४२। नि२षीदता। पुनाना२३या२। प्र२गायता। शिशुन्ना२३या२। ज्ञै२ष्प२रायिभू४२। ष२ताश्रा२३या२३४ऽ३ यि३। ओ२३४५यि५। डा५॥ ११॥

२. सा४खा५या४आ५। नि२षी२दा३२३४ता५। पुना२ना३२३४या५। प्रा२गा३२३४अ५हो५वा५। या३२३४ता५। शिर-शून्न२या। ज्ञै२ष्प३रि२भू२३। षा२ता३२३४औ५हो५वा५। श्रि२ये२ऽऽ॥ १२॥

३. स४खा५य५आ४नि४। षी५दा५६ता५। पु२ना२नायप्रगायाता। शिशुन्नयज्ञैष्परा४२यि२। भूषा२३ता२३। श्रा२३या२३४ऽ३ यि३। ओ२३४५यि५। डा५॥ १३॥

४. ओं५हा५यि५। स४खा५य५आ४नि४। षी५दा५६ता५। पु२ना२नौहोयि। पु२ना२नौहोये२३। या४प्रा५या४प्रा५। गा२यतौहोयि। गा२यतौहोये२३। शा४यि४शू५ऽ५शा४यि४ शू५म्५। न२यज्ञौहोयि। न२यज्ञौहोये२३। पा४री५। पा३रा२३४ अ५हो५वा५। ए२३। भू२ष२त२ श्रि३ये२ऽऽ॥ १४॥

५. स५खा५। य३आ२ओं३२३४वा५नि२षायि। दाता२ओं३२३४ वा५। पु२ना२नायप्रगा२य२त२। शायिशा२ओ३२३४वा५। नयज्ञैष्परिभू२३। षाता२ओं३२३४वा५। श्रि२ये२ऽऽ॥ १५॥

ऋषिः—मनुराप्सवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

५६९. तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत।
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः॥

१. ता३२३४म्व५ः। सा३२३४खा५। यो२मदा२३या२। पूनान२म२। भि२गाया२३ता२। शायिशु२न्नह२। व्यै३स्व३द२

याऽ२३। त२गू३र्त्ति३भा२३४ऽ३यि३:। ओंऽ२३४५यि५। डा५॥ १६॥

२. ओं२ुयि२ुतं३व४स्स५खा५। यो२म। दाया२ुओ३२३४वा५। पु२ना२नमभिर्गा३। आ२ु। ओं३२३४वा५य३ ता२ुओं३२३४ वा५ शिशु२न्नह२व्यैस्स्व२द२या२३। आ२ु। ओं३२३४ वा५। त३गा२ुओं३२३४वा५। ती३२३४भि५:॥ १७॥

३. तं५व५स्स५खा५यो५म५दा५६या५। पु२ना२नमभिगा२ॅय२ त२। शायिशुॅन्नहा२३। व्यै४स्व५। द३या२३। ताऽ२३गू४ऽ३। ता२३४५ यि५भो५६हा५यि५॥ १८॥

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

५७०. प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता॥

१. प्रा४णा५। शा३२३४यि४शू५:। म२हा३२३४यि४ना५म्५। हिन्वाऽ२ुना३२३४र्त्ता५। स्या२३दायिधी२३ती२म्२। वायिश्वा२परि। प्रि२या३भु२वाऽ२३त्३। अ२ध३द्वि३ता२३४ऽ ३। ओऽ२३४५यि५। डा५॥ १९॥

२. प्रा४णा५प्रा४णा५। शायिशू४२ुश्शायिशूऽ२ु:। म२हा२३ऽ उवाये२३। ना३२३४५म्५। हि२न्वंनार्त्तस्य२दा२३ऽउवाये२३। धी३२३४ती५म्५। विश्वापारिप्रि२या२३ऽउवा२३। भू३२३४ वा५त्५। अ२धौ४२ु। हौ४२ु। हुवाये२३। द्वाऽ२ुयि२ु ता३२३४ अ५हो५वा५। ऊ२३ऽ२३४पा॥ २०॥

३. प्रा२णा५शि५शू४:। म२हाऽ२यि२ना२म्२। अ२हो२३वा२। हि२न्वंन्नृतस्यदीधि२ति२म्२। वायिश्वा२उ२वा२। पारा२उ२

वा२। प्रि२या४२भुवत्। अ३धा२उ२वा२३। ए२३। द्वि२ ता२ऽऽ॥ २१॥

४. प्रा५णा५हो२३यि३। इ४या४हा५यि५। शायिशु२र्म्म२हायि। नाऽ२३म्३। आ२उ३हा२उ३। होइँवा२। हि२न्वंनृतस्यदीधि- तायिम्। आ२उ३हा२उ३। होइँवा२। विश्वापा। यां२उ३ हा२उ३। होँ३वा२। प्रि२याऽ२३४। भूऽ२वा३२३४अ५हो५ वा५। अध२द्वि३ता२ऽऽ॥ २२॥

५. प्रा५णा५। ह३हो२यि२। शा३२३४यि४शू५ः। ह३हो२३यि३। म२हीनाऽ२३म्३। होवा२३होये२३४। हि५न्व५न्५। ह३हो२ यि२। आ३२३४र्त्ता५। र३हो२३। स्य२दीधिताऽ२३यि३म्३। होवा२३ होये२३४। वि५श्वा५। ह३हो२यि२। पा३२३४री५। ह३हो२३यि३। प्रि२याभुवाऽ२३त्३। होवा२३होये२३। आऽ२३वा४ऽ३। द्वा२३४५यि५तो५६हा५यि५॥ २३॥

ऋषिः—द्वित आप्त्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

१ २   ३ १ २   ३ २   ३   १ २ ३ १ २

५७१. पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा।

२   ३ २ ३ १ २

आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः॥

१. पवस्वदाऽ२यि२। व३वी२ता३२३४या५यि५। आयिंदोधा राऽ२। भि३रो२जा३२३४सा५। आकाल्शाम्। माधू२मा३२ ३४न्त्सो५। मनए२मानाऽ२३ः। स४दा४ऽ५ए५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ २४॥

२. प५व५स्व५दा५। व२वीतयायि। इन्दोधा२३रा२३४। भि४ रो४ज४सा५६ए५। आका२३हा२। लाशा४२म्२। माधू२३

हा२यि२ । मान्त्सोऽ२३ । म२नोऽ२३४वा५ । सा४ऽ५दो५६
हा५यि५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

१ २　　३ २　३ २उ　　　३　२ ३　१　२
५७२. सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।
१ २　३ १　　२र　३　१　२
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥

१. सो५म१ष्पु५ना५ । न२ऊ२र्म्मिणा । अ२व्यं२वारा४२म् । वि२ धा२वतायि । अ२ग्रे२वाचा४२ः । प२व । माऽ२ना३२३४ अ५हो५वा५ । कनिक्र२द२दे२उपा३२३४५ ॥ २६ ॥

२. सो५म५ष्पु५ना५ । न२ऊ२र्म्मिणोवा२३ । ओऽ२वा३२३४ । अ५हो५वा५ । अव्यंवारंविधा२व२ति२ । अ३ग्रे२३ । होवा२३ । होऽ२ । वा३२३४ । अ५४हो५वा५ । वा२चष्पवमा२न२ः । क३ ना२३ । होवा२३ । होऽ२ । वा३२३४ । अ५हो५वा५ । क्रा३२३४ दा५त्५ ॥ २७ ॥

३. सो४म५ष्पु५ना५न४ऊ४ । मिणा । अव्यम्वारंवि२धावाऽ२३ ती२ । अग्रेवाचाः । प२वमानाः । का२३नि४क्र५ । दा३२३४५ त्५ ॥ २८ ॥

४. सो२म२ष्पु२ना२न२ऊ२र्म्मि२णा३२३४ऐ५ही५ । अ२व्यं२वा२ रं२वि२धा२व२ता३२३४ऐ५ही५ । अ२ग्रे२वा२च२ष्प२व२ मा२ना३२३४ । ऐ५ही५ । का४नी५ । क्र२द२दे३२३४ । हि५या५६हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २९ ॥

५. सो३म४ष्पु५ना५ । न३ऊ२३ऽ२र्म्मी३२३४णा५ । अव्यम्वा२-र२म्२ । वि२धावति२ । अग्रा३ऽ२यि२ । वा३२३४चा५ः ।

पवा३ऽ२ु । मा३२३४ना५: । क३ना२३यि३क्रा४ऽ५दा५६५६
त्५६ ॥ ३० ॥

६. सो३म४ष्पु५ना५ । हो२ु । न३ऊ४र्म्मि४णा५६ए५ । अव्यम्वा-
रम्विधा२ऽवा२३ती२ । अ२ग्रे२ुवा३२३४५ । चा३२३४५: ।
प२वमाऽ२३ना२३: । काऽ२ुना३२३४अ५हो५वा५ । क्र२द२
दे३२३४ ॥ ३१ ॥

ऋषि:—पर्वतनारदौ ॥ देवता—इन्द्र: ॥ छन्द:—उष्णिक् ॥ स्वर:—ऋषभ: ॥

५७३. प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते । भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥

१. प्र२पुनाऽ२३ना४य४वे५ध५सा५यि५ । होयि । २ । सोमायवचा
उँच्याता४२ुयि२ । भृ२तिन्नभरार्मतिभा४२ुयि२: । जु२जोषाऽ२३
ता२३४ऽ३यि३ । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

२. प्र४पु४ना४नौ४हो४ऽ५य५वे५ध४सा४यि४ । सो२माअ२३
हो२३४ । य४व४च५उ५च्य५ता४यि४ । भृ२ताअ२३हो२३४ ।
न४भ५रा५म५ति४भा४यि४: । जु२जा२३ऽउवाऽ२३ । षा३२
३४ते५ ॥ ३३ ॥

ऋषि:—अग्निश्चाक्षुष: ॥ देवता—इन्द्र: ॥ छन्द:—उष्णिक् ॥ स्वर:—ऋषभ: ॥

५७४. गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुत: सुदक्ष धनिव ।
शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥

१. गो३ऽ४म५न्न५: । हो२ुयि२ु । इ३न्दो४अ४श्व५वा५६दे५ ।
सूतस्सुदक्षधा२ऽनी२३वा२ । शु२चिं२च२वा३२३४५ । ण२
म२धि२गो३२३४अ५हो५वा५ । षू३२३४धा५ । र२या । अ२३
हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—द्वित आप्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५७५. अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत ।
गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥

१. हा४वा४स्मा५ । भ्या३२३४न्त्वा५ । वा२सूरुवी३२३४दा५म्५ । अभाऽरुयिरुवा३२३४णी५ः । अ३नारुओं३२३४वा५ । षा३२ ३४ता५ । गो॒भिर२ष्टे॒२व । ण२म३भिर२वाऽ२३ । स२या॒२म२सि२ हो३२३४५ यि५ । डा५ ॥ ३५ ॥

ऋषिः—गौरिवीतिः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५७६. पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या । अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥

१. प५व५ते॒५हा५ । र्य२तो॒हरिः । अ२३हो२३ऽयि । अऽरुहो३२३४ वा५ । आति२ह्वरा॒२ॅः२सि२र२ःहि२या॒रु । अ॒३हो२३ऽयि । अऽरु हो३२३४वा५ । अ२भ्यऋष२स्तो॒२तृभ्यो॒२वी । अ२३हो२३ऽ यि । अऽरुहो३२३४वा५ । राऽरुवा३२३४अ॒५हो॒५वा५ । य२शो॒२ यशा३२३४५ः ॥ ३६ ॥

२. प३वा२३ । प४व४ते॒५हा५ । र्य२तो॒हरिः । अ॒२होयि । अ३ॅहोरु यिरु । अ॒३हो२यि२ । आति२ह्वरा॒२ॅः२सि२र२ःहि२या॒२ । अ॒२ होयि । अ३ॅहोरुयिरु । उ॒५हो२यि२ । अ२भ्यऋष२स्तो॒२ तृभ्यो॒२ वी । अ॒२होयि । अ३ँहोरुयिरु । अ॒३हो२३ । राऽरुवा३२ ३४अ॒५ हो॒५वा५ । य२शो॒२ यशा३२३४५ः ॥ ३७ ॥

३. प३व४ते॒५ह५र्य५त५ः । ह३री२३ः । आऽ२३४ । ति४ह्व४रा५ॅः५ सि५र४ । हि४या५ । अ२भ्यऋषाऽ२३४ । स्तो॒४तृ५ । भ्यो॒३ वा२३ यि३ । राऽरुवा३२३४अ॒५हो॒५वा५ । या३२३४शा५ः ॥ ३८ ॥

ऋषिः—ऊर्ध्वसद्मा आङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५७७. परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति।
अभि वाणीर्ऋषीणां सप्ता नूषत ॥

१. प२रिको२३श४म्म४धु५श्चु५ता५म्५। सोमष्पु२ना२नो अऋष२ति२। होये२३। अ२भि२वा३२३४५। णी२र्ऋषी२ णा२ऽ२स२। प्ताना२ओ३२३४वा५। षा३२३४ता५ ॥ ३९ ॥

[इति] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—ऋजिश्वा भरद्वाजः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

५७८. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः ॥

१. पा४वा५। स्वमाधुमा। तामा२ओं३२३४वा५। ई३२३४द्रा५। य२सो२म२क्र२तु२वित्तमो२मदा२३ः। ओंयि। माहा२ओं३२३४वा५। द्यु२ क्षतमो२मदा३२३४५ः ॥ १ ॥

२. पा२३४। व४स्व५म४। धु५म५त्ता५६मा५ः। आयिंद्रा४२। य२सोमा४२। क्र२तुवायित्ता२३मो४ऽ३। मा२३दा२ः। महिद्युक्षा-ता२३मो४ऽ३। मा२३४५दो५६हा५यि५ ॥ २ ॥

३. प४व५स्व५म४धु५मा५। इ४हा४। तमः। इंद्रायसोमक्रतुवित्त२ मोमाऽ२३दा२ः। इहा२। म२हायिद्यूऽ२३क्षा२। इहा२। त२मोमाऽ२३ दा२३४ऽ३ः। ओऽ२३४५यि५। डा५ ॥ ३ ॥

४. प४व५स्व५मा४। ए४ऽ५। धु४मा४। तमाः। इं२द्रा२य२सो२३। हा। अ२३हो२। माक्रातूवीऽ२३दा२३। हा। अ२३हो२३४।

तइमो२३४म३दा२ः। महाये२३। द्यू२रुक्षा३२३४अ५हो५ वा५।त२मो२मदा३२३४५ः॥४॥

५. प२वस्वा२३म४धु५।म२त्त३२३४मा५ः।इं२द्राय२सोमा४रु। क्र२तुवायित्ता२३मो४ऽ३। मा२३ऽ२३४दा५ः। म२हायि। द्युक्षाता२३मो४ऽ३।मा२३४५दो५६हा५यि५॥५॥

ऋषिः—कृतयशा आङ्गिरसः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—ककुबुष्णिक्॥
स्वरः—ऋषभः॥

५७९. अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्।
वि कोशं मध्यमं युव॥

१. अ२भायि।द्यु२म्ना२३म्३बृ४ऽ३ह२द्य३श५ः।इ२षाः।प२ते२ दि२दी२हि२दे२३वा४ऽ३दे२व३यु५म्५।वि२को।श२म्म२रु। ध्य३मां२३यू४५वा५६५६॥६॥

२. अ५।भ्ये४द्यू४म्ना५म्५।बृ२हाद्या२ऽशा४रुः।इषास्पतायि। दीदी२रुहा३२३४यि४दे५। व३दा२रुयि२रुवा३२३४यू५म्५। वि२कौ२वा२रुओ३२३४वा५। शम्मध्य२मा२३ऽउवाऽ२३। यू३२३४वा५॥७॥

३. अ५भि४द्यु५म्नं४बृ५ह४त्४।इ४हा४।यशः।इषस्पतेदिदी- हिदेव२देवाऽ२३यू२म्।वि२कौ२हो२वा२३हा२यि२।शम्मार्२ ध्य२मंयुव२।इडाऽ२३भा२३४ऽ३।ओंऽ२३४५यि५।डा५॥८॥

४. अ५भि५द्यु५म्नं५बृ५६ह५द्य५शा५ः।इ२ष२स्पतायि।दि२दी२ हिदायि।वा२देवयूम्।विकोशम्मध्यमाऽ२३ः३होयि।यूऽ२३४ वा४।ए५।हि५या५६हा५।हो४ऽ५यि५।डा५॥९॥

ऋषि:—ऋणञ्चय: ॥ देवता—पवमान: सोम: ॥ छन्द:—यवमध्या गायत्री ॥
स्वर:—षड्ज: ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५८०.आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम्॥

१. आ५सो५ता५पा५। राऽ२ुयि२ुषा३२३४अ५हो५वा५। चा३२ ३४ता५। अ२श्व२न्नस्तोमम२प्तुराँ२ः२र२जस्तुरम्। ओये२३। व३ना२३। ओये२३। प्र३क्षा२३४। अ५हो५वा५। उ२द२ प्रुता३२३४५म्५ ॥ १० ॥

२. आ५सो५ता५पा५। रि२षि२। चता४२ु। ऊ४२ु। हा४२ुयि२। ऊ४२ु। अश्व२न्नस्तोमम२। प्तुरा४२ुम्२। ऊ४२ु। हा४२ुयि२। ऊ४२ु। र२ज२। स्तुरा४२ुम्२। ऊ४२ु। हा४२ुयि२। ऊ४२ु। व२न२। प्रक्षा४२ुम्२। ऊ४२ु। हा४२ुयि२। ऊऽ२ु। उ३द२। प्रूऽ२ुता३२३४ अ५हो५वा५। ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ ११ ॥

३. आ५सो५ता५पा५। रि। षायि। चता। [1]अश्वाँन्नस्तो। माम२ प्तु३२३४रा५म्५। र३जा२ुस्तू३२३४रा५म्५। व५नो४हा४ यि४। प्राक्षामू२३दा२। हुम्माये२३। प्रू३२३४ता५म्५ ॥ १२ ॥

४. आ५सो५ता५पा५री५६षिं५च५ता५। आश्वा२ुओ३२३४वा५। नस्तोमम२प्तुरा२ः२र२ज२स्तुराऽ२३म्३। होयि। वाना२ु ओं३२३४वा५। प्र२क्षमुद२प्रुता३२३४५म्॥ १३ ॥

५. आ३सो२३४अ३हो४वा५। तापरायिषिँञ्चाताऽ४२ु। आश्वन्न२ स्तो२। मामॅप्तूराऽ२ुम्२ु। र३जा२ुस्तू३२३४रा५म्५। व५नो४हा४। यि४। प्राक्षमु२दा२३ऽउवाऽ२३। प्रू३२३४ता५म्५ ॥ १४ ॥

---

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'अस्वाँन्नस्तो' इति पाठ:। —सम्पादक:

६. आ३सो४ता५पा५ । हो२ु । रि३षिं४च४ता५६ए५ । आश्वन्न२ स्तो२ । मार्मृरा४२ुम्२ । राजस्तु२२म्२ । वार्न्प्राक्षाऽ२३म्३ । ऊऽ२३दा४ऽ३ । प्रू२३४५तो५६हा५यि५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—शक्तिर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५८१. एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ४ ॥

१. ए४ता५म्५ । ऊत्याम् । मॅदाऽ२ुच्यू३२३४ता५म्५ । स२ हास्रधा२ । राम्वृषभा२३म्३ । दिवोऽ२ुदू३२३४हा५म्५ । विश्वा४२ुहो२ऽयि । होयि । वाऽ२३सू२३ । नाऽ२ुयि२ुबी३२३४ अ५हो५वा । भ्रा३२३४ता५म्५ ॥ १६ ॥

२. ए४ता५मू४र्त्यं५म्५ । म२दा२३ऽउवा२३ । च्यू३२३४ता५म् । स२हस्रधा२२२म्वृ२ष२भन्दिवो२दुहा३२३४म३ । वा४यि४श्वा५ वा४सू५ । नि२बा२३ऽउवाये२३ । भ्रा३२३४ता५म्५ ॥ १७ ॥

३. ए५त४मु५त्य४म्४ । ए४ऽ५ । म४दा४ । च्युताम् । सहस्रधारं वृषभन्दि२वोदू२३हा२म्२ । वायिश्वा४२ुवासूऽ२३ । नि२बोऽ२ ३४वा५ । भ्रा४ऽ५तो५६हा५यि५ ॥ १८ ॥

४. ए५त४मु५त्य४म्४ । ओं४हा४यि४ । म५द५च्यु४त५म्५ । ओ४हा४यि४ । सा२ह२स्रा३२३४धा५ । र२म्वा२ुऋ२ुषा३२३४ भा५म्५ । दि२वो२दु२ह२मो३२३४हा५यि५ । विश्वा४२ुहो२ऽयि । वाऽ२३सू२३ । नाऽ२ुयि२बा३२३४अ५ हो५वा५ । भ्रा३२३४ ता५म्५ ॥ १९ ॥

५. ए५ता५मु३त्य२म्२म३दा४च्यु५ता५म्५। सहस्रधा२। राम्वृँषा-
भा४२म्२। दि२वो४२। दुहमोयि। विश्वावसूनिबा ऽ२३होयि।
भ्रात२मा२३ऽउवाऽ२३। ऊ२३ऽ२३४पा५॥ २०॥

६. ए३ता२३४म्४। उ४त्य४म्म५दा५। च्यु४ता५म्। ५। स२हस्र
धारॅम्वृ२। ष२भम्। दिवोऽ२३ऽ२३। दूऽ२३४हा५म्५।
विश्वावसूनि बी२३ओये२३। भ्राऽ२३४ता४म्४। ए५हि५या५६
हा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ २१॥

ऋषिः—उरुराङ्गिरसः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)॥ स्वरः—मध्यमः॥

५८२. स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्।
सोमो यः सुक्षितीनाम्॥

१. सा४सू५। न्वेयोवसूऽ२३ना२म्२। योरा४२यामा४२। ने२ता२
य२इडाऽ२३ना२म्२। सोऽ२३मा२ः। यस्सुक्षि२ ताऽ२३४५
यि५नो५६हा५यि५॥ २२॥

२. स४सु४हा५उ५। न्वेयोवसूनाऽ२३१३हा२उ। योरा४२यामा४२।
ने२ता२य२ः। इडानाऽ२३१३हा२उ२। सोमोयस्सू२३हा२उ२।
क्षि३ती२नाम्। ओऽ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५। डा५॥ २३॥

३. स४ः। [1]स्वे४सा[४सू]५। न्वेयोव२सा२३ऽउवाऽ२३।
ना३२३४५म्५। योरा२यामा२ने२ताय२इडा२ना२३म्३।
सो३मौ२व... [2]ओं३२३४ वा५। यस्सुक्षि२ता२३ऽउवाये२३।
ना३२३४५म्५॥ २४॥

---

१. अत्र 'खे४' इत्यपि पठितुं शक्यतेऽस्पष्टत्वात्।
२. अत्र नष्टपत्रत्वात् न पठितुं शक्यते का संख्या किमक्षरं वेति। —सम्पादकः

४. स२सुंन्वेऽ२३यो४व४सूप्नाप्म्५यो२रायाऽ२माऽ२३ने२।ता२ य२इडाऽ२३४५ना५६५६म्६। सोमो२ॅयस्सुक्षि२ती२नाम्। सोमाऽ२३४ऽ५॥ २५॥

५. स४सु५न्वे५या५ः। ए४वा४सू५। नां२योरा२ऽयाऽ२३मा२। ने२ता२य२इडाऽ२३ना२३४म्४। सो३मा२३ः। यस्सुक्षि२। ताऽ२३४५ यि५।ना३२३४५म्५॥ २६॥

ऋषिः—उरुराङ्गिरसः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)॥ स्वरः—मध्यमः॥

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५८३. त्वं ह्या३ङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः। अमृतत्वाय घोषयन्॥

१. त्व५ऽ५हि५या५।गा२दा२यि२वि२य२प२व२मा२न२ज२नि२मा२ नी२३द्यूमा४२ु।तामा४२ुः।आमा४२ुर्त्तात्वाऽ२३।य२घोऽ२३४ वा५।षा४ऽ५यो५६हा५यि५॥ २७॥

२. त्व५ऽ५हि५या५।ग२दायिविय२।पवमा२न२।होवा२३हा२ यि२।ज२निमाऽ२३नी२३४।द्यु४म५।ता२३मा२ः।अमाऽ२३। ताऽ२ुत्वा३२३४अ५हो५वा५।य२घो२३ षयाऽ२३४५न्५॥ २८॥

३. त्वंऽ४ह्य५ङ्ग५दा४।विय।पवमानजनिमानिद्यु२मत्ता२३मा२ः। अ२मार्त्ताऽ२३त्वा२३।य२घोऽ२३४वा५।षा४ऽ५यो५६हा५ यि५॥ २९॥

४. त्व५ऽ५हो२३अ४ङ्ग५दै४वि४या५। प२वमा४२ुना। ज२नि मा४२ुनाये२३४।द्यु४म५।ता२३मा२ः।अमार्त्ता२३त्वा२३। य२घोऽ२३४वा५।षा४ऽ५यो५६हा५यि५॥ ३०॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३ १ २र ३ २ ३ १२ ३ १ २
५८४.एष स्य धारया सुतोऽ व्या वारेभिः पवते मदिन्तमः ।

१ २ ३ २ ३ १ २
क्रीडन्नूर्मिरपामिव ॥

१. ए४षा५ः । स्याधार२या२३ऽ३वाऽ२३ । सू३२३४ता५ः । अव्यार्वारेभिर२ष्प२व२ते२म२दिन्तम२ः । क्री२डानू२ऽ र्म्माऽ२ऽः । अ३पा२३म्३ । हुंऽ२३ । वा४ऽ३ । आयिवाऽ२३ ४५ ॥ ३१ ॥

२. ए४षा४हा५उ५ । स्याधार२या२३ऽउवाऽ२३ । सू३२३४ता५ः । अव्यार्वारेभिर२ष्प२व२ते२म२दितमा३२३ः । क्री४ऽ४ [डा] न्हा५उ५ ऊर्म्मिर२पा२३ऽउवाऽ२३ । ई३२३४वा५ ॥ [३२] ॥

३. एषस्यधा । राया२ऽसूताऽऊः । अ३व्या३वा२रायि । भायि ष्पवते२ । म३दि३त२माः । क्री२डन्नूऽ२३र्म्मी२३ः । आऽ२३ पा४ऽ३म्३ । आ२३४५यि५वो५६हा५यि५ । ३३ । [३४] ॥

४. ए२षस्या२३धा४र४या५सु५ता५ः । अव्या४२यि२ । वारेभिष्प- वतेमादिन्तामा४२ः । क्रीडा४२न्२हो२ऽयि । ऊऽ२३र्म्मी२ः । अ३पा३मि२वा । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ । ३४ । [३५] ॥

५. ए४ष४स्य४धा४ऽ५र५या५सु४ता४ः । अ२व्यावा२रायि । भिर ष्प३व२ताऽ२३यि३ । म२दिं३त३मा२ः । क्रीडन्नूर्म्मिरपोवा२३ ओंऽ२३४वा५ । आ४ऽ५यि५वो५६हा५यि५ । ३५ । [३६] ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
५८५. य उस्त्रिया अपि या अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्तदोजसा ।

३ २ ३ १ १ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज ॥

१. यउस्त्रिया॒ऽ२ँअपियाअंतरश्मनी३२३ । नि४र्गा४हा५उ५ । आकृन्त२दा२३ऽउवाऽ२३ । जा३२३४सा५ । अ२भि व्रजन्तत्नि२ षे॒२गव्यमश्विया३२३म्३ । व४र्म्मी४ हा५उ५ । वाधृष्ण२ वा२३ऽउवाऽ२३ । रू३२३४जा५ ॥ ३३ ॥ [३७]* ॥

सामसंख्या ११९७

सप्तदशः प्रपाठकः समाप्तः ॥

[॥ इति पवमानकाण्डम् ॥]

शुभमस्तु । समाप्तमिति ॥

संवत् १५३१ समये पौष बदि ५ ।

१६६८ वर्षे भाद्रपदवदि षष्ठी भौमे लिखितं यत्पुस्तकगान.... । सत्र १७ संग्रामकायस्थेन रूप्यमुद्रया १ अंके एकमा......... केशवहरे [ण] विक्रीता ॥ एतदर्थे साक्षी भटभीम जोशीराम साक्षी भलापुरा [भ] जबाप संग्राम...चर्तुथे ॥



* मन्त्रोऽयमस्थाने लिखितो हस्तलेखे । एकत्रिंशत्—द्वात्रिंशत्संख्यावन्तौ मन्त्रौ मेलयित्वा लिखितौ स्तः । अतोऽग्रे पुनः पूर्वस्यैव ''एषस्य धारया'' इति मन्त्रस्य गानं पठितम् । —सम्पादकः

परिशिष्ट - १

मन्त्रों में पाठाधिक्य

इस सामगान में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनमें कुछ अंश मूलमन्त्रों में नहीं हैं, वे बाहर से जोड़े गए हैं। जैसे—

मूलमन्त्र	सामगानसंख्या	अधिकपाठ
४० अग्ने विव०	३५	विदा वसु
९० जात: परेण०	३१	योनिमिन्द्रश्च गच्छथ:
९२ इत एत०	२	आरोहन्
११० मा नो हृणी०	३४	य होता स्वध्वर: (गानरहित पाठ)
१२० त्वमिन्द्र०	१४	वावृधे
१२२ यदिन्द्राह०	१८	अग्निराहुति:
१२२ यदिन्द्राह०	१९	अग्ने शुक्र आहुत:
१२७ य आनयत्०	२९	इन्द्रो अग्ने
१३० इन्द्रं वयं०	३	इहि वाला
१३२ वयमिन्द्र त्वा०	७	अस्मभ्यं गातु वित्तम:
१४१ अद्या नो०	२४	इह श्रुधि, दक्षाय
१४३ उपह्वरे गिरी०	३०	गोष्पदे पृ
१५१ इष्टा होत्रा०	१२	उदधिर्निधि:
१५४ सोम: पूषा०	१५	गावो अश्वा:
१५५ पान्तमा वो०	१८	ओक:
१५६ प्र व इन्द्राय०	२३	ददा
१६४ आ त्वेता०	१२	घृतश्चुत:
१७२ ये ते पन्था०	२९	अप्सु दक्षा:
१७५ ईंखयन्ती०	३२	वावृधे
१९० क इमं नाहुषी०	१५	आ गहि ये हिता इमे
१९५ गिर्वण: पाहि०	२१	हरी श्री:
२०६ सुनीथो घा स०	३३	अति द्विष:
२३५ अभि प्र व:०	३१	सुभूतये
२३५ अभि प्र व:०	३२	वसु
२३६ तं वो दस्म०	३५	भगाय
२४१ न हि वश्चरमं०	१७	जनित्रम्

परिशिष्ट - २

सामगान के भेदों के नाम

(मूल गानग्रन्थ में मन्त्र संख्या ६९ से ३७१ तक के गान भेदों पर ही नाम मिलते हैं उन्हीं की सूची यहाँ दी जा रही है)

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
६९	वामदेव्यम्	१
७०	वैश्वज्योतिष	२
७१	याम	२
७२	इन्द्रस्य वैराजम्	२
७३	श्यैतम्	१
७४	शुक्रम्	१
७६	कौत्सम्	१
७७	काश्यपम्	२
७८	घृताचेरांगिररस्य	१
७९	भरद्वाजस्य प्रासहम्	१
८०	राक्षोघ्नम्	१
८२	आग्नेयम्	१
८३	वामम्	१
८४	आग्नेयं बृहत्	१
८५	कौमुदस्य साम	१
८६	यद्वाहिष्ठीयम्	२
८७	विशोविशीयम्	१
८८	प्रजापतेश्च कनिनीकम्	२
८९	श्रौतवर्णम्	१
९१	बार्हस्पत्यम्	१
९२	यामम्	१
९४	त्वाष्ट्री	१
९५	अगस्त्यम्	१
९६	मानवम्	१
९७	तौदम्	२
९६	दैर्घतमानि	३
९९	प्रजापतेः श्रुधीयम्	२
१००	प्रजतेः सदो हविर्धानानि	३
१०२	अर्कजभम्	१
१०५	अगस्त्यस्य राक्षोघ्नम्	१
१०७	इन्द्रस्य प्र मांहिष्ठीयानि	४
१०८	भरद्वाजस्य	१
१०९	सौभराणि	३
११०	सौभरस्य	२
१११	दैवानीकम्	१
११२	गौतामम्	१
११३	जमदग्नेः सांवर्गम्	१
११५	रौद्रम्	२
११५	मार्गीयवम्	२
११७	मैटतम्	२
११८	श्रौतकक्षम्	२
११९	तन्वस्य पार्थस्य	२
११९	वासिष्ठम्	१
११९	इडानां संक्षारः	१
१२०	सार्यायानि	३
१२१	इन्द्राण्याः	१
१२२	गौसूक्तम्	१
१२२	आश्वसूक्तम्	१
१२३	गौवितम्	१
१२४	गराणि	३

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद	साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
१२५	सौपर्णानि	३	१५८	श्रौतकक्षम्	१
१२५	विलम्बसौपर्णम्	१	१५९	सौमित्रम्	२
१२६	साकालम्	१	१५९	(इहवद्) दैवोदासम्	१
१२७	भारद्वसवम्	२	१६०	रैणवम्	२
१२८	तान्वम्	२	१६२	कौत्सम्	२
१२९	रोहितकुलीम्	२	१६३	सौमेधानि	३
१३२	मारुतम्	२	१६५	अंगिरसानि	३
१३२	दिवोदासम्	३	१६५	राधुछन्दसं क्रोचम्	१
१३३	एध्मवाहानि	३	१६६	वाम्रानि	३
१३६	पौषम्	१	१६७	गौरीवीतम्	२
१३७	सिन्धु	१	१६७	औपालवेणवम्	२
१३८	हाविष्मतम्	२	१६८	महागौरिवीतम्	१
१३८	हाविष्कृतम्	२	१६९	वाचः	२
१३९	काक्षीवतम्	१	१७०	सत्रासाहीयम्	२
१४०	औषसम्	१	१७३	सोमम्	१
१४१	भारद्वाजस्य मोक्षम्	२	१७५	त्वाष्ट्री	१
१४२	भारद्वाजानि	३	१७६	गोधा	१
१४३	शाक्त्यम्	२	१७८	एषः	१
१४४	प्रस्तोकः	२	१८४	प्रतीचीनकांक्षितम्	१
१४५	औपगवम्	२	१८७	शैखण्डिनम्	१
१४६	त्वाष्ट्री	१	१९१	सौमेरम्	१
१४७	त्वाष्टुरातिथ्यम्	२	१९३	धरासाका माइवम्	१
१४९	श्यावाश्वम्	२	१९४	यामम्	१
१५०	प्रजापतेः सुतं रयिष्ठीयम्	२	१९५	हरिश्रीनिधनम्	१
१५१	इष्टाहोत्रीयम्	१	१९६	वैतहव्यम्	१
१५२	निधनकामम्	१	१९७	आसितम्	१
१५३	वाजदावर्यम्	१	२००	अभयंकरः	१
१५४	सोमाः पौषम्	१	२०१	त्वाश्री	१
१५५	वैतहव्यानि	३	२०५	वैरूपम्	१
१५५	ओको निधनम्	१	२०७	तौभम्	१
१५६	शाक्त्यानि	६	२०८	श्रौतम्	१
१५७	काण्वम्	२	२०९	आभीश्यवम्	१
१५८	गौरीवीतम्	२	२११	क्षुरपविम्	१

२४१ न हि वश्चरमं०	१८	जनित्रम्
२४८ त्वमिन्द्र यशा०	३४	सुवर्म्महा
२५७ (क) स त्वा हिन्वति०	२१	यह मन्त्र सामवेद में नहीं मिलता।
२६१ वयं घ त्वा०	३०	अभि
२६१ वयं घ त्वा०	३१	दिशः
२७१ क्वेयथ०	११	सुशꣳसः
२७१ क्वेयथ०	१२	सुशꣳसः
२७१ क्वेयथ०	१३	[वा ५]प्सु [अप्सु]
२८३ इत ऊती वो०	३३	स्तुषे
२८३ इत ऊती वो०	३४	स्तुषे
२९१ महे च न०	१२	महो विशे
३२० नाके सुपर्णं०	१४	अपमियम्
३२१ ब्रह्मा जज्ञान प्रथमं०	१६	ऋतममृतम्
३३० उदु ब्रह्मण्यैरत०	३३	दिवया (२ वार)
३३९ इन्द्राय गिरो०	११	असौ, कुवा, अयम्, अविदत्
३७२ समेत विश्वा०	९	वावृधे
३७२ समेत विश्वा०	११	धर्म्मणे
३७६ अभि त्यं मेषं	१८	दुरति नावा
३७८ घृतवती०	२०	इंदुः समुद्रमुर्व्विया विभाति
३८२ तमु अभि प्र०	२७	दिवि
३८२ तमु अभि प्र०	२९	कः
३८२ तमु अभि प्र०	३०	दाम्
३८७ एतो न्विन्द्रं०	८	(नरम्) आ (कृष्टी)
३९१ गृणे ते इन्द्र०	१८	द्युभिः
४२७ परि प्र धन्वे०	१३	सुवर्च्च ते
४२९ पवस्व सोम०	२०	धर्म्म
४३९ ब्रह्माण इन्द्रं०	१	स्वरत। श्लोकयत
४३९ ब्रह्माण इन्द्रं०	२	अभिस्वरत। श्लोकः
४४० अनवस्ते०	३	स्वरत (१० वार)
४४७ अचेत्यग्नि०	१०	वाण्न (पाठभेद)
४४७ अचेत्यग्नि०	११	वाण्न (पाठभेद)
४५० विश्वस्य प्र०	१८	धनम्
४५० विश्वस्य प्र०	१९	धर्म्म

४५२ इमा नु कं०	२१	विशः
४६५ अग्निं होतारं०	४०	अग्निष्टपति प्रतिदहति (आद्यन्त में)
४६५ अग्निं होतारं०	४०	विश्वं समत्रिणं दह (अन्त में २ वार)
४६५ अग्निं होतारं०	४१	ते अग्नये। प्रति दहति (आरम्भ में)
४६५ अग्निं होतारं०	४१	ते अग्नये। प्रति दहति, विश्वं समात्रिणं दह (३ वार)
४६७ उच्चा ते जात०	६	ग्वाभिः
४६७ उच्चा ते जात०	१२	ययुः
४६९ वृषा पवस्व०	२६	अस्मे राय उत श्रवः, ज्वर आ ?
४७० यस्ते मदो०	३	सहो रयिष्ठाः
४७१ तिस्रो वाच०	९	अस्मत्प—तुविन्तमायम्
४७१ तिस्रो वाच०	११	ईशः (दिशः ?)
४८२ असृक्षत प्र०	१०	ग्वाभिः
५११ पुनानः सोम०	३१	पदो विसः
५११ पुनानः सोम०	३४	अति विश्वानि दुरिता तरेम
५१२ परीतो षिञ्चता०	१४	श्रवो बृहत् (मन्त्र के मध्य में)
५१७ मृज्यमानः सुहस्त्या०	१३	वाजी जिगीवान्
५२७ सोमः पवते जनिता०	८	जनत् जनद्धा
५४१ अया पवा पवस्वैना०	१	दीदिहि
५४१ अया पवा पवस्वैना०	२	दीदयात्
५४५ पुरोजिती वो०	१०	सुवृक्तिभिर्नृमादनं भरेषु वा
५५४ अभि प्रियाणि०	४	वाजी जिगीवान्
५५४ अभि प्रियाणि०	५	वाजी जिगीवान् विश्वा धनानि
५६२ असावि सोमो०	२८	दिवि
५६५ पवित्रं ते विततं०	३४	अर्क्को देवानां परमे व्योमन्

मन्त्रों से अतिरिक्त इन पदों को मूलमन्त्र के गान में जोड़ने से क्या अभिप्राय है, यह सामगों के लिए विचारणीय है।

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
२१४	कौत्सम्	२
२१६	औषसम्	१
२१७	भारद्वाजम्	१
२१८	कौत्सम्	१
२१९	औषसम्	१
२२१	मरुत्	१
२२२	विष्णुः	१
२२३	कौत्सप्रम्	१
२२४	काश्यपम्	१
२२५	बार्हदुक्थम्	२
२२७	कौत्सानि	३
२२९	और्ध्वसद्मनम्	२
२३४	भारद्वाजम्	२
२३५	सान्नतम्	२
२३५	श्यैतम्	१
२३६	नविकम्	१
२३६	अभीवर्त्तः	१
२३६	आभीवर्त्तम्	१
२३६	नौधसम्	१
२३७	लौशम्	२
२३७	क्षुल्लकालेयम्	१
२३७	कालेयम्	२(१)
२३७	कालेयम्	२
२३७	महाकालेयम्	१
२३८	एषिरम्	२
२३८	गौरीवितम्	२
२३९	पृष्ठम्	१
२३९	शौल्कम्	१
२३९	जमदग्नेरभीवर्त्तम्	२
२४०	कौल्मालाबर्हिषम्	२
२४१	जनित्रम्	२
२४२	मैधातिथम्	१
२४३	वैखानसम्	१
२४३	पौरूहन्मनम्	१
२४४	प्राकर्षम्	१
२४५	भारद्वाजानि	४
२४६	वाम्राणि	३
२४७	गौङ्गवम्	१
२४८	यशः	१
२४८	साधम्	१
२४८	वैरूपम्	१
२४८	समीचीनः	१
२४९	यौत्कश्रूचम्	१
२५०	आन्त्राणि	३
२५१	वासिष्ठानि	३
२५३	हारायणानि	३
२५४	वाम्राणि	३
२५५	वरुणानि	३
२५६	वषट्कारणिधनम्	१
२५७	मारुतम्	१
२५७ (क)	सांश्रवसः	१
२५८	श्रवसः	१
२६०	आंगिरसम्	२
२६१	आष्कारणिधनकाण्वम्	१
२६१	वैष्टम्भम्	१
२६१	आभीनिधनकाण्वम्	१
२६१	महावैष्टभम्	१
२६२	श्नौष्टीगवम्	१
२६३	वृषकम्	१
२६४	घातम्	२
२६५	कार्तयशम्	१
२६७	श्रायन्तीम्	१
२६८	वामम्	१
२६९	वासिष्ठानि	३
२६९	वैयश्वम्	१
२७०	निधनकामम्	१

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
२७१	इन्द्रप्रियाणि	३
२७२	वासिष्ठसामासितम्	१
२७३	प्राकर्षणम्	१
२७४	अभयंकरम्	१
२७५	कवषम्	२
२७६	सूर्य:	१
२७७	आश्वम्	२
२७८	वैरूपम्	१
२८०	कौसुदम्	२
२८१	वाच:	१
२८३	प्रहित:	२
२८४	आत्रम्	२
२८५	गौरीवीतम्	२
२८७	साम	१
२८८	पञ्चाणि	३
२८९	सौभरम्	२
२९०	वैयश्वम्	१
२९१	सुस्रातीयम्	२
२९२	इन्द्राण्या:	१
२९३	सौभवम्	१
२९४	गार्त्समदम्	१
२९५	वाच्य:	१
२९६	बार्हदुक्थम्	१
२९७	वाशम्	१
२९८	तौरश्रवसम्	१
२९९	त्वाष्ट्री	१
३००	अदिदम्	१
३०१	अजीगर्त्तम्	१
३०२	माधुछन्दसम्	१
३०३	अषम:	१
३०४	अश्वि	१
३०५	संयोजनम्	१
३०६	आस्वि	१
३०७	सोम	१
३०८	अजमायवम्	१
३०९	प्रैषयमेध:	१
३१०	वैरूपम्	२
३१०	शाम	१
३११	वैश्वदेवम्	१
३१२	पुरीषम्	१
३१३	प्राकर्षम्	१
३१३	निहव:	१
३१४	योनिनी	२
३१५	औरुक्षयम्	२
३१६	पाथम्	२
३१७	सौपर्णम्	२
३१७	वात्सप्राणि	३
३१८	गौरीवितम्	१
३१९	वैदन्वतम्	१
३२०	महायामम्	१
३२१	त्रइतम्(त्रैतम्)	२
३२२	वारवन्तीयम्	१
३२३	क्षुरपविणी	२
३२४	द्यौतम्	२
३२५	सोम	२
३२६	इन्द्रवज्रम्	२
३२७	ऋषिप्रमाणपदगणित अर्द्धवेय: सूर्यवर्च्चस:	२
३२८	अहूश:	२
३२९	भारद्वाजम्	१
३३०	वैश्वदेवं मौरस:	१
३३१	पुरीषम्	१
३३२	तार्क्ष्यम्	१
३३३	आत्रम्	१
३३६	आत्रम्	१
३३७	गार्त्समद:	२

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
३३८	वैश्वामित्रम्	१
३३९	सावित्रम्	१
३४०	वैरूपम्	१
३४१	आमाहीयावम्	१
३४२	शैखण्डिनम्	२
३४३	शैखण्डिनानि	३
३४३	महावैश्वामित्रम्	२
३४४	इन्द्रप्रियाणि	४
३४४	गौतमम्	१
३४४	वासिष्ठप्रियम्	१
३४५	वीकानि	४
३४५	आकूपारम्	१
३४६	तैरश्चम्	२
३४७	वैश्वामित्रम्	१
३४८	काण्वम्	२
३५०	शुद्धाशुद्धीयम्	२
३५१	रयिष्ठम्	१
३५२	कौल्मलबर्हीषम्	१
३५२	तोनदम्	१
३५३	शाकपूतम्	१
३५४	काल्मलबर्हिषम्	२
३५५	मधुश्चुनिधनम्	१
३५६	औषसः	१
३५९	मारुतम्	१
३६०	वामदेव्यम्	१
३६१	काश्यपम्	१
३६२	प्रैयमेधम्	१
३६३	बार्हदुक्थम्	१
३६४	काण्वम्	१
३६९	ऋक्साम	२
३७०	त्रैशोकम्	१
३७१	शैखण्डिनम्	१
३७१	अविवर्त्तः	२

—०—

मन्त्र संख्या ३७२ से ५८५ तक के गानभेदों पर नामों का निर्देश मूलगान ग्रन्थ में नहीं मिलता।

परिशिष्ट-३

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में प्रदर्शित सामवेद का महावामदेव्य गान।

ओं भूर्भुवः स्वः। कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ १॥
ओं भूर्भुवः स्वः। कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥ २॥
ओं भूर्भुवः स्वः। अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये॥ ३॥

काऽ५या। नश्चा३ यित्रा३ आभुवात्। ऊ। ती सदावृधः स। खा। औ३ होहायि। कया२३ शचायि। ष्ठयौहो३। हुंमा२। वाऽ२र्तो३ऽ५हायि॥ (१)॥
काऽ५स्त्वा। सत्यो३मा३दानाम्। मा। हिष्ठोमात्सादन्ध। सा। औ३होहायि। दृढा२३ चिदा। रुजौहो३। हुंमा२। वाऽ२सो३ऽ५हायि॥ (२)॥
आऽ५भी। षुणा३ः सा३खीनाम्। आ। विता जरायि तृ। णाम्। औ२३ हो हायि। शता२३म्भवा। सियोहो३ हुंमा२। ताऽ२ यो३ऽ५हायि॥ (३)॥

—साम० उत्तरार्चिके। अध्याये १। खं० ४। मं० १, २, ३॥

(प्रस्तुत पुस्तक में मन्त्र संख्या १६९ में प्रथम मन्त्र का गान देखें।)

परिशिष्ट-४

श्री रा० नारायणस्वामीदीक्षित द्वारा संशोधित, परिष्कृत और सम्पादित तथा पंडित व० श्री सातवलेकर द्वारा १९४२ ईसवी में मुद्रित और प्रकाशित 'ग्रामेगेय [वेय, प्रकृति] गानात्मक' प्रथम भाग के कुछ पृष्ठ तुलनार्थ दिए जा रहे हैं—

(१) पर्कः ॥ (गोतमो, गायत्री, अग्निः ।)

(१।१) ओं । ओऽग्नाइ ॥ आयाहिऽ३वोइतोयाऽ२इ । तोयाऽ२इ । गृणानोह ।
व्यदातोयाऽ२इ । तोयाऽ२इ ॥ नाइहोतासाऽ२३ ॥
त्साऽ२इवाऽ२३४औहोवा ॥ हीऽ२३४षी ॥* (झा। १)

(दी० ३ । प० ९ । मा० ९)

(२)× बर्हिष्यम् । (कश्यपो, गायत्री, अग्निः ।)

(१।२) अग्नआयाहिवीऽ॥ तयाइ । गृणानोहव्यदाताऽ२३याइ ॥
निहोतासत्सिबर्हाऽ२३इषी ॥ बर्हाऽ२इषाऽ२३४औहोवा ॥ (तू। २)
बर्हीऽ३षीऽ२३४५ ॥+ (दी० ९ । प० ६ । मा० ६)

(३) पर्कः ॥ (गोतमो, गायत्री, अग्निः ।)

(१।३) अग्नआयाहि । वाऽ५इतयाइ ॥ गृणानोहव्यदाऽ१ताऽ३ये ॥
निहोताऽ२३४सा ॥ त्साऽ२३इवाऽ३ । हाऽ२३४इषोऽ६हाइ । (तू। ३)

(दी० ४ । प० ६ । मा० ६)

॥ सौपर्णं सुपर्णौ; (वैश्वमनसम् । विश्वमना, गायत्री, अग्निः ।) ॥

(२) त्वमग्नेयज्ञानाम् । त्वमग्नाइ ॥ यज्ञानाँ होता ।
विश्वेषाँ हाऽ२३इताः ॥ देवेभाऽ२३इर्मा ॥ नुषंजना । (झ। ४)
औऽ३होवा । होऽ६इ ॥ डा ॥

(दी० १२ । प० ९ । मा० ६)

(११०।१)   ॥ पक्थस्य सौभरस्य सामनी द्वे । द्वयोः पक्थःककुबग्निः ॥

मा। नाः॥* हर्णाऽ३थाअतिथीऽ३म् । वाम्नराऽ२३४ग्नीः॥ पुरोहावाऽ२हाइ। प्रशौहावाऽ२हाऽ३॥

स्तओऽ२३४वा । आऽ५इषोऽ६हाइ॥   (बै । १७५)

(दी० ५ । प० ८ । मा ८)३४

(११०।२)

मानोहाउ॥* हाऽ२३४ । णीथाअतिथिम् । वाम्नराऽ२३४ग्नाइः॥ पुरोहहोइ । प्रशौहहो ॥

स्ताऽ२३४एपाः । एहियाऽ६हा । होऽ५इ ॥डा॥   (ञो । १७६)

(दी० ७। प० १०। मा० ९)३५

(१११।१)   ॥ देवानीकं सफम् । देवानीकः ककुबग्निः ॥

भद्रोऽ४नः । होइ । अग्निराहुताऽ६ए॥ भद्राराताइः । सुभगभाऽ२ । द्रोऽ२ध्वाऽ२३४राः ॥

भद्राऊऽ२३ताऽ३॥ प्राऽ२३शाऽ३ । स्ताऽ३४५योऽ६हाइ ॥   (धै । १७७)

(दी० ४ । प० ९ । मा० ८)३६

(११२।१)   ॥ गौतमं साध्यं वा । साधिः ककुबग्निः ॥

याऽ५जि । ष्ठंत्वाऽ३वाऽ३वृमहाइ॥ देवंदेवत्राहोताऽ२३राम् । आमर्तियम् ॥ आस्ययाज्ञाऽ२३ ।

स्याऽ२३स्नूऽ३ । क्राऽ३४५तोऽ६हाइ ॥   (थी । १७८)

(दी ४ । प० ७ । मा० ४)३७

(११३।१)   (१) ॥ संवर्गः । जमदग्न्युष्णिगग्निः ॥

तदग्नेद्यूऽ५म्नम् । आभरोवा॥ यत्सासाऽ२३हा । सदाऽ२३नाइ । कंचिदत्राऽ२३इणाम् ॥

मान्युंजनस्यदूऽ२३हो॥ ढाऽ२३४याम् । एहियाऽ६हा । होऽ५इ ॥ डा ॥   (नू । १७९)

(दी० ४ । प० १० । मा० ६)३८

(११४।१)   (१) ॥ राक्षोघ्नम् । अगस्त्योष्णिगग्निः ॥

यद्वाऊऽ२३विश्पतिःशिताः ॥ सुप्रीतामनुषाविशे ॥ विश्वाइदाऽ२३ग्नीः॥ प्रतिरक्षा ।

सिसेधता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥   (दी० ७ । प० ८ । मा० ५)३९ (जु । १८०)

चतुर्दशद्वादशः, द्वादशः खण्डः १२ ॥ दशतिः ॥

अथैन्द्रं पर्व ॥

(११५।१)   (१) ॥ मार्गीयवम् । मृगयुर्गायत्रीन्द्रः ॥

तद्वोहोवा॥ गायाऽ२ । सुताइसाऽ२३४चा । पुरुहूता । यसात्वाऽ१नाऽ२इ ॥ शंयत् । हा ।

औऽ३होइ । गाऽ२३४वाइ॥ नाऽ२शाऽ२३४औहोवा॥ एऽ३ । किनेऽ२३४५ ॥ (फ्रा । १८१)

(दी० ५ । प० १२ । मा० ६)१

(११५।२)   (२) ॥ रौद्रे द्वे । द्वयोरुद्रो गायत्रीन्द्रः ॥

तद्वोगाया॥ सुताइसचाऽ३ । पूरुऽ२३हूताऽ३४ । हाहोऽ३ । यासत्वाऽ२३४नाइ ॥

शंयद्गाऽ२३वे॥ नशौऽ२ । होऽ२ । हुवोऽ२३४ । वा । काऽ५इनोऽ६हाइ ॥   (नी । १८२)

(दी० ८ । प० ११ । मा० ८) २

(४६६।१) ॥ ऐन्द्रम् । इन्द्रोऽग्निरिन्द्रः ॥

ताऽ२३४वस्यन्नाऽ५रियन्नृताउ॥ अपइन्द्राऽ२ । प्रथमंपूऽ२ । वियंदिवि ।
प्रवा । चियंकृतम् । योदेवास्याऽ२ । शवसाप्राऽ२ । रिणाअसु । रिणन्नपः ।
भुवोविश्वाऽ२म् । अभ्यदाऽ२इ । वमोजसा । विदेदूर्जम् ॥ शताक्राऽ२३४तूः ॥
विदाऽ६इदिषाउ ॥ वा ॥ (दी० ९ । प० १७ । मा० ११)४२ (थ । ८१३)

षोडश नवमः, द्वादशः खण्डः ॥ १२ ॥ दशतिः ॥ ८ ॥

॥ इति ग्रामे गेय-गाने द्वादशस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

॥ इत्यैन्द्राख्यतृतीये गाने इन्द्रपुच्छाख्यं सप्तमं तन्त्रं समाप्तम् ॥

॥ इति ऐन्द्रं काण्डम् ॥

अथ पावमानं काण्डम् ।

(४६७।१) ॥ आजिगम् । अजिगो प्रजापतिर्वा गायत्री सोमः ॥

उच्चा । तजाऽ३तामन्धासाऽ२ः । दिविसद्भूम्याददाइ ॥ उग्र२शाऽ२३र्माऽ३ ॥
माऽ२हाऽ२३४ओहोवा॥ उप् । श्राऽ२३४वाः ॥ (दी० ३ । प० ७ । मा० ५)१ (खु । ८१४)

(४६७।२) ॥ आभीकम् । अभिरसो गायत्री सोमः ॥

उच्चातेऽ२३४जा । तमन्धाऽ२३४साः । दिवाइसाऽ२३४द्भू॥ मियाददाइ ॥
उग्र२शाऽ२३र्मा॥ महायेऽ३ । श्राऽ२वाऽ२३४औहोवा ॥ वाऽ२३४५इ ॥
(दी० ४ । प० ८ । मा० ५)२ (दु । ८१५)

(४६७।३) ॥ ऋषभः पावमानम् । ऋषभो गायत्री सोमः ॥

हाहाउच्चातेजा॥ हाऽ३ । हाऽ३इ । तामाऽ२०धाऽ२३४साः ।
दिविसद्भूमियाऽ१दाऽ३दे ॥ उग्र२शाऽ२३४र्मा॥ ओमोऽ३ । महोवा । श्राऽ५वोऽ६हाइ ॥
(दी० ५ । प० ९ । मा० ४)३ (भी । ८१६)

(४६७।४) ॥ आभीकम् । अंगिरसो गायत्री सोमः ॥

ऊऽ२३४च्चातेजाऽ६ । तमोहो०धासाः॥ दिविसद्भूमियाऽ१दाऽ३दे ॥
उग्र२शाऽ२३४र्मा॥ माहाऽ३उवाऽ२४३ । श्राऽ३४५वोऽ६हाइ ॥
(दी० ४ । प० ३ । मा० ३)४ (ति । ८१७)

(५८३।४)

त्व२ंहो॒ऽ३अंगदैविया ॥ पवमाऽ२ना । जनिमाऽ२नायेऽ३४ । द्युम ।

ताऽ३माः ॥ अमात्तोऽ३त्त्वाऽ३ ॥ यघोऽ२३४वा । याऽ५योऽ६हाइ ॥

(दी० १ । प० ८ । मा० ३)३०(गि । ११९२)

(५८४।१) ॥ गायत्रपार्श्वम् । देवाः ककुप् सोमः ॥

एषाः ॥ स्याधारयाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४ताः । अव्योऽ२वारेभिःपवतेमदिन्तमः ॥

क्रीडान्नूऽ१र्मीऽ२ः ॥ अपाऽ३म् । हिम्ऽ२३स्थिबाऽ३ ॥ आइवाऽ२३४५ ॥

(दी० ६ । प० ८ । मा० ८)३१(गै । ११९३)

(५८४-५८५।२) ॥ सन्तनि । देवाः ककुप्युष्णिया अभिव्रजन्तेति विष्टारपंक्तिः सोमः ॥

एपाहाउ ॥ स्याधारयाऽ३१उवाऽ२३ । सूऽ२३४ताः । अव्योऽ२वारेभिःपवतेमदिन्तमाऽ२३ ॥

क्रीडन्हाउ ॥ ऊर्मिरपाऽ३१उवाऽ२३ ॥ ईऽ२३४वा ॥ छ्र ॥ १ ॥

यउस्त्रियाऽ२अपियाअन्तरश्मनीऽ२३ ॥निर्गाहाउ ॥आक्रन्तदाऽ३१उवाऽ२३। जाऽ२३४सा॥झु॥२॥

अभिव्रजन्ततिनिपेगव्यमश्वियाऽ२३म् ॥ वर्माहाउ ॥ वाधृष्णवाऽ३१उवाऽ२३ ॥ रूऽ२३४जा॥धि३॥

(दी० १० । प० १५ । मा० १४)३२(मी । ११९४–११९५)

(५८४।३) ॥ सोम सामानि त्रीणि । सोमः ककुप् सोमः ॥

एपस्यधा । रायाऽ१सुताऽ२ः ॥ अव्यावाराइ । भाइःपवते । मदिन्तमाः ॥

क्रीडन्नूऽ२३र्मीऽ३ः ॥ आऽ२३पाऽ३म् । आऽ३४५इवोऽ६हाइ ॥

(दी० ६ । प० ८ । मा० ८)३३(गै । ११९६)

(५८४।४)

एपस्याऽ३धारयासुताः ॥ अव्याहोऽ२इ । वारेभिःपवतेमादिन्तामाऽ२ः ॥

क्रीडाऽ२न्होऽ१इ । ऊऽ२३र्मीः ॥ अपामिवा । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥

(दी० ८ । प० ९ । मा० ६)३४(हृ । ११९७)

(५८४।५)

एपस्यधाऽ२रयासुताः ॥ अव्यावाराइ । भिःपवताऽ२३इ । मदिन्तमाः ॥

क्रीडन्नूर्मिरपोवाऽ३ओऽ२३४वा ॥ आऽ५इवोऽ६हाइ ॥ (दी० ६ । प० ६ । मा० ७)३५(के । ११९८)

पञ्चत्रिंशत्, एकादशः खण्डः ॥११॥ दशतिः ॥२॥ इति प्रै.मे गेय-गाने सप्तदशः प्रपाठकः ॥१७॥

॥ इति ग्राम-गेयगानं समाप्तम् ॥

सामगानपठित-मन्त्रानुक्रमणिका